

अर्थ मातृव

[मूल स्त्री से प्रेरित]

मक्सिम गोर्की

सम्पूर्ण तथा प्रसिद्ध



प्रभात प्रकाशन दिल्ली

प्रकाशक

प्रभात प्रकाशन

२०२, चावड़ी बाजार

दिल्ली

★★

अनुवादक

महाप्रत विद्यालक्ष्मण

★★

सम्पूर्ण तथा असंक्षिप्त

संस्करण

★★

फरवरी १९५६ ई०

★★

सर्वाधिकार सुरक्षित

★★

मुद्रक

सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस

दिल्ली

मद्रास

★★

मूल्य :

छ रुपया

अनुवादक की ओर से—

हमें प्रसन्नता है कि विद्वत् विभूत रूसी-साहित्यकार गोर्की के एक महान् अद्भूत-कान्ति-उत्तरवर्ती प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपांतर पाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं। इसी भाषा में इसका नाम वध सो घातमानोविद्र है परन्तु हिन्दी भाषा की बहुमर्याता के कारण इसके दो सार्थक अर्थप्राय हाते हैं—१—‘भात मानव’ (दु ली मानव) तथा २—‘अर्थमानव’ (धन सञ्चय रत मानव)। इससे रूसी हिन्दी की ध्वनिसमानता और अर्थसमानता से इस उपन्यास का नाम ‘अर्थमानव’ ही उचित समझा गया है।

गोर्की के दृष्टों में इस उपन्यास के प्रारम्भ की गाथा इस प्रकार है—एक बार जब वे स्वयं तास्ताय से घातमाप कर रहे थे उन्होंने अपने एक परिचित रूसी व्यापारी परिवार का विक्रम किया जिससे मनुष्य-जीवन के मनोवैज्ञानिक विकास पर सम्पत्ति के प्रभाव की भूमक पड़ती थी। स्वयं तास्ताय में उन्हें वाह से शिनाते हुए कहा— ‘हाँ, हाँ, बिस्कुस ठीक ! मैं भी एक ऐसे परिवार को जानता हूँ जो तुसामगर में रहता था। इस सम्बन्ध में सुतम्यत एक बिस्तृत उपन्यास अक्षय लिखा जाना चाहिए।’

उनकी धार्ष्टि अमक उठी—‘बही परिवार जिसका एक व्यक्ति सब के पापों का प्रायश्चित्त करने को गिरजे में जाता है। निम्सन्वेह वड़ा उत्तम विचार है। यह एक नई चीज होगी। जिस परिवार का एक व्यक्ति धधे और धन-सञ्चय म फँसा हुआ है।’

इस वातावरण के घारे में गोर्की ने ब्लादिमीर इत्येच सेनिन से भी जिक्र किया और उपन्यास की रूप-रेखा सामन रखी, और बताया कि वे प्रतीक रूप एक ऐसा उपन्यास लिखना चाहते हैं जिसमें एक रूसी व्यापारी परिवार का सौ वर्ष का सक्षिप्त सारगमित इतिहास हो ।

फलत १९२३ में गोर्की का यह नवीन उपन्यास सत्तार के सामने आया जो एक प्रकार से रूसी पूँजीवाद के जन्म और पतन का सक्षिप्त इतिहास है ।

जीवन में शान्ति-पूर्ण श्रम के लिए मानवीय स्वतंत्रता समाजवादी-क्रांति की एक महान् शक्ति है । मानवीय-व्यक्तिगत समकी सम्पूर्ण शक्तियों और सम्भावनाओं के विकास और प्रस्फुटन के लिए उत्सुक होना परमायुष्मक है । गोर्की ने अपने इस विचार को कफिटसिगम, सरमायादारी या पूँजीवाद के विकास में भी प्रदर्शित किया है और बताया है कि पूँजीवादी परिस्थितियों में मनुष्य का विकास किस प्रकार होता है ।

गोर्की ने इस प्रश्न का अपनी अग्र्य कृतियों में भी उपस्थित किया है । बन्यास तथा 'फोमा गार्देयेव' (व्यापारी का बेटा) में उन्होंने इस प्रश्न को पृथक घटना के रूप में चिह्नित किया है परन्तु प्रस्तुत उपन्यास अर्धमास में उसे क्रमबद्ध एक ही रूसी पूँजीपति परिवार का परत्यम-सुष्ठन तथा शापण सम्पन्न-पूँजीपति समाज में उसकी तीन पीढ़ियों के वैयक्तिक जीवन का अनुशीलन किया है । इस प्रकार गोर्की ने पूँजीपति-समाज के गढ़ पर आक्रमण किया है ।

इस उपन्यास में गोर्की ने बताया है कि एक व्यक्ति और उसके परिवार के साथ जब दूगरीय श्रम के शोषण के आघार पर सम्पत्ति सञ्चय करने लगते हैं, ता ये बिना प्रकार धन धन मनुष्यता या मान बसा स होन हुने लगते हैं और इस प्रकार के हीन धन-सञ्चय से वे

किस प्रकार शारीरिक, प्रात्मिक और मानसिक रूप से पतित और ह्रासित होन लगते हैं। पर-श्रम-सुष्ठन से जिसके बिना पूँजीपतियों का समाज सञ्जा ही नहीं रह सकता मनुष्य कितना पतित और क्षयग्रस्त हो जाता है ! पूँजीवाद जो अपन कल कारखानों व्यापार और व्यवसाय के बल पर सञ्जा है वही पूँजीपति और फलतः पूँजीपति समाज को भी मनुष्यता के सब उत्तम गुणों से वञ्चित कर देता है। मार्क्स के शब्दों में पर-श्रम-शोषण से मनुष्य अमानव और पिशाच बन जाता है।

श्रम का महत्त्व

गार्की के उपन्यासों को समझने के लिए श्रम-महत्त्व को समझना बहुत आवश्यक है। अपन एक भाषण में गार्की ने कहा था—

यदि मैं एक आलोचक होता और मक्सिम-गार्की के विषय में लिखता तो बताता कि वह शक्ति जिसने गार्की को जसा कि आज वह आप के सामने है बनाया है वह है कि वे रूसी साहित्य में हो सकता है कि जीवन में ऐसे प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने, श्रम के उच्च महत्त्व को भसीभाँति समझा है जिसके द्वारा मनुष्य में नाना अमूल्य पदार्थों और सुन्दरताओं को जन्म मिलता है।”

उन्होंने एक अर्थ स्थान पर लिखा है—‘मेरा विश्वास है कि हमारे जीवन का रहस्य और सब दुःखान्त नाटक इस श्रम से ही होते हैं।’

इसी श्रम से मनुष्य दूसरे मनुष्य का दास बनाता है, उसके श्रम को खूटकर धन-सञ्चय करता है और इसी धन-सञ्चय से मानव व्यक्तियों में पड़कर शारीरिक मानसिक और प्रात्मिक दृष्टि से पतित हो जाता है। वह मनुष्य नतिक पतन से ही धन-सञ्चय करता है और पुनः उससे भी अधिक नतिक पतन में धन का अपव्यय करता है। यही पूँजीपति और पूँजीपतियों के समाज का धनवस्त-भ्रम है। जब

समाज अमलुण्ठन का पूरा शिकार हो जाता है, तो उससे मुक्ति पाने के लिए वह विप्लव करता है और एक नवीन समाज वादी-क्रांति के रूप में इसी धम द्वारा समाजवादी-समाज का सूत्रपाट करता है। वही धम जो सरमायादार समाज में वैयक्तिक समृद्धि और पतन का कारण बना हुआ था अब साम्यवादी समाज में सामाजिक धम में रूपान्तरित होकर साधजनिक उन्नति और समृद्धि का कारण बन जाता है। पूँजीवादियों व्यक्तिवादियों और उनकी स्वतन्त्रता के पक्षपातियों का इससे अधिक मुँहताड़ जवाब और क्या हो सकता है ?

दूसरा के अम-सृष्टन से धम रहित हा जीवन भी निस्तार और दून्य हा जाता है और मनूय मे माना प्रकार के नैतिक पतन हाने लगते हैं जसा कि हम प्योत्र उसकी पत्नी नताल्पा और उसक सङ्क याकोव म दर्शन हैं। इस परिवार का पूर्वज इस्या अर्तामानोव एक किसान परिवार का पुत्र है। वह अपने जाहुवम से ससार म अपना स्थान बनाता है। उसम अनेक उन्नम गुण है। वह निर्माणक है प्रवल इच्छामुक्त और विद्याल हृदय है। अपनी परिपक प्रायु तक भी उसका अमिक-अनता क जापन स पार्यक्य नहीं हुआ है। शक्ति उसमे उवास ला रही हाती है। वह युद्धिमान है धम और जीवन का प्रमी है और दूसरा का भा धम और जीवन का अवसर दना चाहता है। इन्हीं मानवीय गुणों के कारण लोग उसक सामने भुक्ते हैं। वह शरीर म बलवान् है अनेसा तीव्र शक्तियों का मुकाबिला कर सकता है। और भासे से रीछ का शिकार करता है। और उसक सह्यास में ही उसकी बिषया समधिम उन्माना याहमाजावा अपने का वस्तुत गुणा और सोभाग्यवती अनुभव करती है।

पूँजीपति-समाज म भी प्राय एसा ही हाता है। प्राय प्रयत्न पूवजा में सब उत्तम गुण होत हैं। परन्तु जब इन गुणों का दुरुपयोग कर के तमरा के धम का लुण्ठन और उनका दोषण करन लगत है समाज का ठग कर सम्पति-सञ्चय करन लगत है वही गुण उनके

धीरे-धीरे के अहितकारी शत्रु बन जाते हैं। इत्या अर्त्तमानोव जिस अनुपात से अमता से दूर होता जाता है उतना ही वह अधिक शोषक धीरे समाज का शत्रु बनता जाता है।

धीरे-धीरे इत्या अर्त्तमानोव को अपने कारोबार में सफलता मिलती है। जैसे-जैसे उसके परिवार की सम्पत्ति बढ़ती जाती है, उसका काड़े का कारखाना धीरे अधिक उन्नति करता है और वह अमजीवियों के 'अतिरिक्त-धर्म' पर जीवन-यापन करने लगता है। उसका जीवन-स्तर साधारण लोगों से ऊपर उठ जाता है जनता से सम्पर्क क्षीण होता जाता है और क्रियाशक्ति के साथ उसका आत्मिक-हास भी बढ़ने लगता है।

प्योत्र अर्त्तमानोव

फिर भी उसके पुत्र प्योत्र में पिता के गुण बहुत कुछ विद्यमान रहते हैं। परन्तु जैसे-जैसे उसका कारखाना अमजीवियों की शक्ति से उन्नति करता जाता है उसमें ये सब गुण क्षीण पड़ते जाते हैं। मम और आत्मा में वह नीरस और विचारों में कुण्ठित पड़ता जाता है।

उसकी पत्नी नताल्या में भी धीरे-धीरे परिवर्तन हो जाता है। प्रारम्भ में वह सीधी-साधी सुन्दर और कोमल स्वभाव की लक्ष्मी है। विवाहित जीवन में नताल्या का अपना माँ देवर निकिता और अलक्सेई के प्रति व्यवहार उसकी अन्वादिनी तथा कोमल और भावुक स्वभाव को प्रदर्शित करता है। परन्तु, धनकृष्टि के साथ-साथ उसमें निष्क्रियता बढ़ने लगती है। उसका सीधा-सादा चेहरा कठोर हो जाता है और मिचने लगते हैं और घ्राँसों में एक विक्रम तेजावीपन आ जाता है। ईर्ष्या भावधन धनतृष्णा और स्वार्थवश वह प्योत्र से पूछती है—

'अब देखें हमारा कितना रुपया अमा है? तुम्हें विश्वास है कि यह बैंक अच्छी है और कहीं दिवासा तो न निकल सकेगी?'

वह तिनभर खाने-पीने में हाँ ब्यस्त रहता है। मूस से यदि

वह कभी कोई गमीर बात कहता या पूछता भी पावती है तो उसका अपना ही घंटा मञ्जूस में कहता है—

‘माँ मन्धा हो कि तू कुछ और था।’

और वह अभिप्रासपूर्वक भेषती हुई कहती है—

‘क्यों मैं समझती हूँ कि मुझे अभिप्य नहीं जाना चाहिए।’

और फिर जाने लगती है।

इस नतास्या में जो उपन्यास के प्रारम्भ में सुन्दर और सरस स्वभाव की स्त्री थी अब कुछ नहीं रह जाता। नतास्या का अन्त कृष्टित बुद्धि, मूलता और निरर्थक बुढ़ापे में होता है। उसकी धाँसों में रिक्तता आ जाती है हाथ बेकार पड़ जाते हैं। बेहतर भास लाभ सूजा-सा हो जाता है जिस पर धाँसू डलकते रहते हैं जिन्हें देख एसा प्रतीत होता है कि वे धाँसों से नहीं बल्कि गासों की फली खाल के सब रोम कृपा से पू रहे हैं।

उसका पति प्योष वा पहले एक सहृदय मनुष्य था अब कारोबार के कोल्हू म पड़ कर कुष्ठित और निस्सार हो जाता है। उनका बपड़े के कारखाने की शक्तियाँ ज्यों-ज्यों तेजी से घूमती हैं, उसका भय और चिंताएँ भी बढ़ती जाती हैं। अपने को कारखाने का भासिक देख कर उसे प्रसन्नता होती है और कभी-कभी वह अभिमान की पराकाष्ठा तक विस्मित भी हाता है। परन्तु फिर भी कभी-कभी उसे अपने बचपन के दिन, पुराना गाँव रात नदी का शान्त स्वप्न और सुन्दर तट, विस्तृत खेत और किसानों के सरस जीवन की याद आती है। इन परिदृश्यों में वह अपनी मन्सरारमा में कहता है— ‘मिस का यह काम हमारे करने का नहीं हमें तो मैदानों में ही जमीन खरोद कर खती-खाई करनी चाहिए थी। वहाँ हाथ-ठापा कम हाथी और काम अच्छा।’

इन परिदृश्यों में वह अनुभव करता कि कोई घटाय हाथ उस

अखीरों में बकड़ रहे हैं। कारखाने के घोर-धरावे में उसका दिमाग सोपने-समझने के लिए बेकार हो जाता। कारखाने की चिमनी से निकसते, चक्कर खात हुए धुँए की भाँति उसे कारखाने के विनाश के भय का प्रथकार अपने चारों ओर दिखाता। प्रथम जीवन और सम्पत्ति की रक्षा की चिन्ताओं से घिरा धराव और व्यभिचार की घुम्भरधरिया में गाँठ खाने लगता है। वह जीवन की सार्थकता से शून्य हो जाता है।

उसके भाई धसकसई के जीवन का भी यही पथ है। इस सबसे, स्वस्थ सुन्दर आकर्षक फुर्तमि और हृदय व्यक्तिके जीवन के अन्त में कुछ शेष नहीं रह जाता। उसमें भी मानवीय गुण धीरे-धीरे लुप्त भए और नष्ट हो जाते हैं।

तीसरे कुवड़े भाई निकिता का जीवन भी पथ भ्रष्ट है। जीवन में विफलता के कारण लज्जा निराशा से साधुगृह में प्रविष्ट, धर्मद्वन्द्वर के गिकार इस पावरी को ईश्वर, धर्म और किसी चीज में धाम्ना नहीं रह जाती। उसके जीवन का विकास भी उसमें प्रकृष्टि, और अपूर्णता के कारण भ्रष्टना पैदा करता है।

इस प्रकार अर्थात्मानाव परिवार जो उपन्यास के प्रारम्भ में सबसे हृदय छद्म और परिश्रमी होता है अन्त में विरूप अन्त और लोहले पेड़ के समान रह जाता है—एक ऐसा पड़ जिसे सूर्य की धूप न मिसी है। वह निर्माणक अर्थ और जनता से दूर हो जाता है।

धन तीसरी पीढ़ी में अर्थात्मानाव परिवार को एक अनिर्धार्य भ्रष्टता और पतन का धेरता है। उसके पोते पोतियाँ वचन से ही उपहास्यास्पद बेकार, मूर्ख और निस्तेज हो जाते हैं। पर्माना तरयाना याकोव और मिरोन सब बेकार निठस्ती मनुष्यता के समूह हैं। इस प्रकार इस परिवार का ह्रास बढ़ता जाता है।

वही पूर्वापति-समाज के विकास और ह्रास चक्र भी सब दशों

के पूँजीपति-समाज के विकास और ह्रास चक्र के समान ही हैं।
गोर्की लिखते हैं—

सब कस-कारदानेदार जहाज बनाने वाले व्यवसायी और व्यापारीवग जो कम सामन्तवादी काल में अधिकार रहित थे अब बड़े साहस और उद्योग के साथ सरदारों दरबारियों और सरकारी अधिकारियों के साथ अपना स्थान पदा करने लगे। किसानों से ही ये लोग पैदा हुए थे। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि किसानों में कौसी प्रतिभा, बुद्धि और शक्ति छिपी हुई है।'

यही शक्ति और प्रतिभा अर्त्तामानोव वग के प्रवक्तक इत्या में छिपी हुई थी जिन्हें उनके पूँजीवादी कारखाने या 'घरे न तीन पीढ़ियों में निचोड़ लिया।

यही इस उपन्यास का मौलिक भाव है और इसी में उसकी मानवीय-गम्भीरता गभित है।

पूँजीवादी समाज का पतन अनिवार्य है क्योंकि वह मानव को मानवता से रहित बना देता है। मार्क्स के दृष्टियों में, 'पूँजीवाद अपनी ऊर्ध्व प्रपन प्राय छोड़ता है। प्योत्र नतास्या और उनक बच्चा और प्योत्र के माइयों के अस्त का विचरण गार्शी न बड़े बसात्मक तरीके से किया है और उपरोक्त सत्य का सिद्ध किया है।

इत्या अर्त्तामानाव (बनिष्ठ)

परन्तु यह समझना भी अमार्त्मक होगा कि पूँजीवादी-जीवन और उसकी परिस्थितियों में मनुष्य का पतन अनिवार्य है। विवेक-बुद्धि और प्रथम इच्छा से मनुष्य इस 'घरे' पर विजय प्राप्त कर सकता है। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि वह 'घरे के बघनों से दूर हा जाय। निर्बल मनुष्य प्रपन विकास की अनुभूत अवस्थाओं में प्रपन आत्मिक-गुणों की रक्षा कर सकता है। परन्तु इन्हें गोबर वह जीवन की कठिनाइयों से पार नहीं पा सकता। प्यात्र और नता

त्या भी यदि वे अपने धन्ये और सम्पत्ति क धारण का मुकाबिसा कर सकते तो शायद इस पतन से बचे रहत । परन्तु वे निवस वे और जीवन-धारा में वह गए ।

परन्तु प्योत्र का पुत्र इत्या अर्तमानोव इस पतन से बच गया । इत्या अर्तमानाव के रूप में गार्की ने एक ऐसा पात्र उपस्थित किया है जो अपने परिवार की पूँजीवादी परिस्थितियों में पसा हाते हुए भी उससे फटकर परिस्थितिया के भातक प्रभाव पर विजय प्राप्त कर सता है और सावजनिक स्वातन्त्र्य प्रगति के सिपाही के रूप में जनता की धार बसा जाता है ।

गार्की ने 'कम्युनिस्ट-घापणा' में कहा है—

इस विनाशो-मुख पूँजीवादी-समाज क धनक दूरदर्शी प्रतिनिधि जो पूँजीवाद क धनिवाय एतिहासिक ह्रास और धन को समझ भये प्रगतिशील-अगियों क पक्ष में धा जाएंगे ।

गार्की न अनिन मवधी सस्मरणों में बठाया है— 'रेल्लि, ने भी पूँजीवाद और धासक-समाज के प्रतिनिधियों का समाजवादी क्रान्ति में धान को धार सकत किया है । गार्की इन्हें 'सफ्र कौवों' के नाम से पुकारत हैं । वे कहत हैं— 'कभी-कभी पूँजीवादी-समाज में भी सफ्र-कौव पैदा हा जात हैं जो अपने धन और समाज की धुगित भ्रष्ट व्यापार और व्यवसाय की वारीकिया की देखत और समझत हुए, पूँजीवादियों के समाज के धनिवाय-पतन को मूहमता और मामिकता म समझत हुए उसे छोड जाते हैं ।

यह कोई नवीन बात नहीं । धाज हम अपने पूँजीपतियों के समाज का देखते हैं जिसमें छोटे बड़े सब पूँजीपति समाज और धासक क साथ धोखा करत हैं, जीवन की धावश्यक निम्नों का मण्डियों में धेरते और छिपाते हैं और समाज में वनाबटी सकटों से पसा पदा करत हैं । और कानून के धिककों से धचन के लिए—(जो पूँजीपतियों पर कभी म कभी लयमा ही है) नाना प्रकार की भ्रष्टा

तट पर प्रभात के अर्धाधकार में अर्धमानोव को साता देखता है उसके हृदय में अपने भाई के घातक से वदना लेने की प्रतिहिंसा आ टठती है। वह अर्धमानोव परिवार के सब कुकर्मों और सकटास्प घटनाओं के समय—जब कुबड़ा भाई निजिता फाँसी लगाकर घात घात करम सगता है या प्योत्र अपने पुत्र इल्या को विगाड़ने से सम्बन्ध में सड़के निकोमाव को मार देता है सदा 'अर्धमानव' के घुराइयों के निरीक्षक के रूप में उपस्थित रहता है। धिक् कर प्योत्र कह उठता है— कहां है तिसान ? उससे कोई घुम बात सुनने की प्राधा नहीं ।

घत तिसाने अ्यासोव की प्रतिरजनात्मक पात्रता से उपन्यास की घटनाओं का मूल्यांकन सब जाता है। तिसाने अर्धमानोव के घन्धे का कोई से उपमा देता है। उपन्यास का उपसहार भी तिसाने अ्यासोव के शय्यों से ही हाता है, आ उसने प्योत्र को उसकी पू जीवाव क अवसान के दिनों में रहे हैं—

' यह तुम्हारे ही खिलाफ लड़ाई है प्यात्र इत्यथ । '

"मैं बेवकूफ जकर हूँ परम्मु सचाई को सबसे पहल ममक गया था। वक्षो ! जिन्दगी न क्या पसना याया है। मैं पहल ही कहता था—तुम सब का कठार कारावास मिलेगा। और ऐसा ही हा गया। तुम्हें घुराणे की तरह रगड़ा जा रहा है जैसे कि रद से सकधी छीली जाती है। प्यात्र इत्यथ ! क्यों ठीक नहीं ? हाँ हाँ ऐतान सेमी से रंदा बसनाता रहा—और तुमने उसे मदद की। और यह सब किसलिए ? तुम पाप करते गए—पाप करते गए और इन पापा का चाई हिराव भी है ? मैं यह सब दगता था—अधम्भा करता था। इस सब का कब अस्त होगा ? घागिरकार तुम्हारा ऐसा अस्त घा गया और अब तुम उसी तरह बसना सिया जा रहा है। गाडी का पत्रिया घुम हुआ ।

अर्धमानव का घपा बसा ही हाता है असा प्रायः पाप अया

चार घोर घोषण से कमाए धन का होता है। धर्ममानव का परिवार भ्रष्ट हो जाता है और कान्तिकारी जनता अपने पुराने उत्पीड़क के सब धर्मों पर सांख्यिक अधिकार कर लेती है।

धर्ममानव' पूँजीपति-समाज की एक विदाय घासोचना के रूप में एक उत्कृष्ट उपन्यास है जिसका ससार के साहित्य में बड़ा भावर है। यह रूसी कान्ति से पूर्ववर्ती कास के रूसी पूँजीवादियों का एक सुन्दर चित्रण है।

हिन्दा में यथार्थवाद की रीति की भावश्यकता

प्रस्तुत उपन्यास के सब पात्र ऐसे हैं जो ससार के किसी भी देश में पाए जा सकते हैं। धर्मागामियों के रूप में अपने देश में ही धनक 'धर्ममानवों' को देख सकते हैं जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य धन-धन प्रकारण धन-संचय करना है, चाहे वह धमजी वियों और किसानों के घोषण से हो या सुदल्होरी ठेकेवारी सरकारी नौकरी में—वे सर्वत्र देश की सामाजिक सम्पत्ति की चोरी घोखा दही रिश्कत भ्रष्टाचार पुराचार और धन्यान्व सब असामाजिक और धर्मभ्रष्ट तरीकों से पसा बटोरने में ही लग रहत हैं। यह पूँजीवादी समाज का एक शृणित रूप है। यह निस्सीम स्वार्थपूर्ण धनसिप्सा मनुष्य को समाज के शत्रु, भोर और टग के रूप में बबस देसी है जिसके भारतीय पूँजीवादियों में धनक जीवित और स्वसंत उदाहरण मिल सकते हैं। ये सब एक रूपित पतनो-मुख और भुमुध समाज के लक्षण हैं। समष्टि के मुकाबिले में धर्म्यक्ति-स्वार्थ सिद्धि के लिए राज्यशक्ति पर अधिकार करना इनका ध्यय है जिसके लिए पुनावों के धवसर पर असीमित धनराशि का निर्गर्भक व्यय एक व्यापार के रूप में ही किया जाता है। भारत के प्रगतिशील सेलकों का कर्तव्य है कि वे अपने समाज के ऐसे पूँजीपतियों का वर्णन करें जो मजदूरों की तनस्वाहें काट 'सर्फी' के मन्दिर और धमशास्राएँ बनवाते हैं जो अपने महसों की दीवारों पर

पराम्य और त्याग के दसोक प्रकृत करवाते हैं। ब्रह्मसौं द्वारा स्टाक एक्सचेंज ग घनसृष्ट्या और 'स्वण-वपटी' के वस पर कामवासना वृप्त करते हैं। जा गीता, धर्म, पुराण स्मृतियों और संस्कृति का नाम ल सकर समाज की प्रबंधना करते हैं। जो मर घमों और दसां को बन्दा देते हैं। परन्तु स्वार्थ सिद्धि और घन-सचय के प्रतिरिक्त जिनकी किसी म आस्था नहीं। जो घम पासन साहित्य और सन्धृति को स्वार्थ सिद्धि के लिए ही समझते हैं। जिनके लिए हत्या देशद्रोह और मित्रघात में कोई पाप नहीं। इस सब तथा उनक उपजीवी सामाजिक स्वरो के बीच अन्तर-सम्बन्ध इत्यादि सब का साहित्यिक कलात्मक बणन कर।

अभी तक भारती साहित्य पौराणिक गाथा-साहित्य अथवा बहुत-बहुत कम्पना से अनुप्राणित हाता रहा है। परन्तु अब प्राब द्यकसा है कि हम अपन देग और दूसरे देशों म बिद्वमव कुटुम्बकम्' की ब्यापी काश्तिकारी कबि दृष्टि से वर्तमान अर्चरित समाज का लक्षण और नव समाज निर्माण के लिए नवीन कान्ति कारी-मानव उसकी नवाम माजनाओ और प्रयत्नों का सजग चित्र उपस्थित करें और भारत को विद्व ब्यापी प्रगति की धारा म उन्नति के पथ पर ल जाए।

माज हमारा दग सदिया के संघर्षों और वैदिक शासन की दामता का फरु सनाजवादी निमाण की धार अगसर हो रहा है। अत यह और भी आवश्यक है कि सब प्रगतिगत सेवक कमर बस कर धागे धाएँ और बस्तुवादिता के धापार पर नवान बस्तुवादी प्रगतिशील साहित्य का निर्माण करें। अपन दग और समाज को नवीन माग की ओर पर्यालोचन करन हुए जनता का नवीन माग का धार प्रेरित करें। इन दिना म हमें नसा साहित्य से बहुत-बहुत सना है।

अनुवाद-साहित्य का महत्व

अब तक हमारे निर्मित वग और साहित्य पर अंग्रेजी भाषा

साहित्य और विचारों का प्राधिपत्य छाया हुआ है। अंगरेज भारत से गया परन्तु अंगरेजियत नए सिरे से अपने अधिकार के लिए सधप कर रही है। हमें इसे परास्त करना है। हमारा कर्तव्य है कि हम अंगरेजी की सिड़की से ही विश्वज्ञान न करें परन्तु अन्य प्रगतिशील सभ्यता भाषाओं की सिड़की से भी जिनमें बर्तमान रूसी साहित्य सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इंग्लैंड और अमेरिका में रूसी भाषा से अनुवाद को निरन्तर अधिकाधिक महत्व दिया जा रहा है। हमें भी हिन्दी में रूसी तथा अन्य भाषाओं के अनुवाद को महत्व देना चाहिए।

हम आशा है कि हिन्दी साहित्य के नाना भाषाविद् साहित्यकार इस दिशा में अग्रसर होंगे और विश्व की महान् कृतियाँ के अनुवाद से हिन्दी साहित्य को सम्पन्न बनाएँगे। मौलिक साहित्यकारों का भी कर्तव्य है कि वे हिन्दी साहित्य में विदग्धी भाषाओं के अनुवाद का गम्भीर अध्ययन और आलोचना करें और भारत के भावी उत्कर्ष और गौरव के लिए अपनी प्रतिभा के समस्तार बिलाएँ।

अन्त में हम 'प्रभात प्रकाशन' के सञ्चालकों को बधाई देना चाहते हैं जिन्होंने मूस भाषाभाषा से हिन्दी में अविकस-अनुवाद का सराहनीय प्रयत्न शुरू किया है। हम आशा है इस दिशा में अन्य साहित्यसेवी भी आगे आएँगे। अनेक त्रुटियों के होते हुए भी हमें आशा है इस उपन्यास का हिन्दी प्रेमियों द्वारा स्वागत होगा।

—महाप्रत विद्यालकार

अनुवादक—

श्री महाप्रसन्न विद्यालङ्कार—गुरुकुल विश्वविद्यालय
फाँगडी के मोम्य स्नातक, योरोप एवं एशिया के
चिरकालिक यात्री, सोवियत संघ में इतिहास,
राजनीति एवं अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त वैदिक
'समाचार' के प्रवर्तक एवं 'नेताजी' के भूतपूर्व
सम्पादक, संस्कृत, हिन्दी अंग्रेजी तथा रूसी के अष्ट
भासा एवं स्वान्ध्व संग्राम के कर्मठ कार्यकर्ता
हैं। अस्तक अष्टारह ग्रन्थों का मूल रूसी से
हिन्दी में अनुवाद कर चुके हैं।



मुक्ति के दो वष पश्चात् मुक्ति-दिवस की प्रार्थना के दिन सत निकोला के गिरजे के इलाके में एक परदेसी आया। वह सम्पन्न लोगों की भीड़ का उपसापूर्वक भक्ता देते हुए आगे बढ़ा और द्रयमाव की इकान^१ के सम्मुख उसने एक बड़ी मोम यत्ती रक्खी। द्रयमोव शहर में इस इकान की बड़ी प्रतिष्ठा थी। यह विद्यालयकाम व्यक्ति बहुत ही बलिष्ठ था। उसके सिर पर खानाबदोषों जैसे दासे और सफेद बाभों के घुंघरासे गगा-जमुनी युद्धे थे और भी लुरवरी और शुभती हुई दाड़ी। उसकी नाक बड़ी और मम्बी तथा भारी घनी भौंहों के नीचे उसकी नीली-सूरी-सी आँखें थीं, जिनसे वह निर्भयतापूर्वक निहार रहा था। लोगों ने यह भी देखा कि जब इस व्यक्ति की बाँहें स्वच्छन्दतापूर्वक सटकी हाँठी थीं तो उसकी चौड़ी हथेली घुटनों तक जा पहुँचती थी। नगर के नामी-ग्रामी आबमियों

^१ इकान—दशमूर्ति ।

का धकसता हुआ वह सबसे पहिले कास पर पहुँचा ताँ सब उसके इस व्यवहार से कूट हो गए । और प्रार्थना के बाद द्रयमोद-वासी इस अजनबी व्यक्ति के बारे में विचार करने के लिए गिरज के बरामदे में रुक गए । कुछ का विचार था कि वह बोरों का व्यापारी है । बसिफ और एक अन्य शांतिप्रिय दुबल किंतु साफ हृदय के व्यक्ति मयर मल्केर्द वाइमाकोब ने खीसते हुए कहा—

‘ऐसी बात नहीं ! यह पहले सामन्ती आगीर में अर्ध गुलाम था । कहा जाता है कि यह अश्या सिफारी और भद्र परिवारों के आमोद प्रमाद का कान करन वासा आदमी रहा है ।

तुनुक-मिजाज दुराचारी और ईर्ष्यालु शय्दों के प्रेमी वजाय पम्यालोव ने, जो अशक के दागों के कारण कुरूप हो चुका था तथा जिसका उपनाम ‘रंहुवा भोगर’ था विद्व प से कहा—

‘तुमन उसकी दाँहे दन्वी—बितनी सम्बी है ? और जरा दखो ता—बनता कस है ! माना गिरजे के घटे उसके लिए ही बजते हों ।’

चौड़े बर्षों और सम्बी नाक वासा यह मनुष्य नगर-पय पर ऐम बिस्वास और हड़या से बला जा रहा था जैसे वह अपनी जमींदारी में स गुजर रहा हो । उसने बकिया कपड़े का नीसा कोट और खी चमड़े क बकिया जूत पहन रह थे । उसक हाथ जेबों में थे और उसकी बाहनी धारीर से सटी हुई थी । उन्होंने सुसारिस्ट की विस्तृत पढाने कासा यादेंन्काया का बुलाकर इम मनुष्य की जानकारी करन क लिए कहा । तत्पश्चात् गिरज की पण्डियो ने दखत हो से पाम्यालोव के बगीच म सौम को साथ क निमन्त्रण क साथ खीहार का भोजन करने क लिए अपन अपने घर का बन पड़े ।

वापहर प भोजन क बाद अग्य मगरवासिया न भी इम परदही का मदा क पार राखी के राजकुमारों की जमींदारी म

गोजिष्ठा' द्विन्दु पर देखा। तब वह झाड़ियों के बीच अपने चौड़े-यकसार बंदों से रेतीली भूमि को नापता हुआ घस रहा था। अपने हाथों से धाँसों पर सँह करके उसने शहर छोका नदी और उसकी चक्कर साती हुई दलदली सहायक नदी बत्राजा की ओर भी मुड़ कर देखा। द्रयमोव नगरवासी बहुत चौकन्ने और डरपोक थे। उनमें से किसी को साहस नहीं हुआ कि कोई उससे जा कर पूछे कि वह कौन है और किसलिए इधर आया है? अन्त में उन्होंने पुसिसमैन मास्का स्तूपा को जो शहर का विदूषक और शराबी था सही जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना प्रतिनिधि बनाया। स्तूपा ने सब लोगों के सामने स्त्रियों की उपस्थिति से भी न नेंपते हुए अपनी पसलून उतार फेंकी और सिर पर तुड़ी-मुड़ी टोपी रखली।

दलदली बत्राजा में घुटने भर पानी को पार करते हुए और शराब से भरे पेट को फुसा कर वह भजनबी की तरफ बढ़े उप हान्यास्पद कदमों से आगे बढ़ा तथा अपना साहस समेट उसने ऊँची धावाब में पूछा—

'तुम कौन हो ?'

परवेदी का उत्तर किसी ने नहीं सुना किन्तु स्तूपा तुरन्त ही अपने लोगों के पास झूट पड़ा और सारा किस्सा कह सुनाया—

'वह जानना चाहता था कि मैं अपनी सज्जा कहाँ लो आया हूँ। उसकी धाँसों डाकुओं की तरह दबी भयकर है।'

विस्फुट बनान वाली यार्सेन्काया ने, जो गसगड से पीड़ित थी तथा मगर में माम्ब-परीसक एक समन्तदार होने के माते प्रसिद्ध थी उसी सौम्य पम्पासोव की बगीची में भद्र नागरिकों को भय से नत्र विस्फारित करते हुए सूचना दी—

'उसका नाम इत्या और गोत्र का नाम अर्तामानोव है।'

कहता है कि वह कारोबार के लिए यहाँ बसने आया है। मैं सिर्फ उसके कारोबार का पता नहीं लगा सकी। वह बगैरोगव के मार्ग से आया था और आज बुधर तीन बजे याव वापिस भी आया है।

वस, इतना ही। उन्हें इस नवामन्तुक के बारे में कुछ और मनासंजक बातें न पता लग सकीं। यह ऐसा ही अग्रिम था जैसा कि कोई रात में खिड़की को खटखटा कर ध्यान वाली आपत्ति के विषय में निश्चय भाव से चुनींती इकर अन्तर्धान हो जाय।

तीन सप्ताह गुजर गए और नगरवासियों की स्मृति से उसका प्रभाव मिट-सा गया कि अज्ञानक यही अर्थात्माव अपने तीन सड़कों के साथ फिर आ धमका और सीधा बाइमाकाक के पर जाकर कुल्हाड़े से बाटती-सी ध्वनि में बोला—

यसोई मित्रिष यह लो। कुछ नए सोच आपक बुद्धिमत्ता पूर्ण राज्य में वरान आए है। इपया उन्हें अपने नव-जीवन के निर्माण में सहायता कीजिए।

उसने बहुत संक्षेप में सारी बात बह सुनाई। बताया कि वह पहले राजकुमार रास्की के अर्ध-मुसामा में था और राती नदी पर उनकी कुर्सी की जमींदारी में रहता था। उन दिनों वह राजकुमार गियार्गी के विदाप परिवारकों में से था। मुक्ति के बाद उसे एक अशुची घन राति मिस गई है और उसने कपड़े की एक मिस लगाने का निश्चय किया है। वह विधुर है। उगक सड़कों के माम हैं—सयस बडा-प्योब, नृवका मित्रिषा और तीसरा आस्यो द्वा भतीजा है, परन्तु उमन उत गाद न लिया है।

'हमारी धार के किसान कपास कम बात है— बाइया काव न सोच कर कहा।

‘हम उनसे इसकी अधिक खेती कराएंगे ।’

प्रतीमानोव की आवाज भारी और कठोर थी । उसका स्वर एक बड़े बोल की आवाज-जैसा था । बाइमाकोव जीवन में हर कदम फूँक-फूँक कर चला था । वह बहुत ही धीरे बोलता था जैसे कि किसी भयंकर जीव को जगान से डरता हो । अपनी शोकांत गुनाही आँसुओं की झपकाते हुए उसने प्रतीमानोव के सड़कों की ओर निहारा जो दरवाजे के पास पत्थर की तरह खड़े थे । वे तीनों ही अलग अलग नमूने के थे बड़ा—बाप जैसा विद्याभक्त सचन भौंहें और रीछ जैसी छोटी आँसुओं वाला मन्ने निश्चिन्ता की उसकी कमीज के रंग के समान ही लड़कियों जैसी नौसी बड़ी-बड़ी आँसुओं थी अलक्सई—धुँधराले बाल और परमश्वेत-गुलाबी गालों वाला मुन्दर युवक था जिसकी दृष्टि में आनन्द और स्पष्टता भ्रमकृती थी ।

एक सिपाही बनने के लिए ? बाइमाकोव न पूछा ।

‘नहीं मुझे ये बच्चे अपने लिए ही चाहिए । मेरे पास मुक्ति-पत्र है ।’

प्रतीमानोव न सड़कों की ओर संकेत किया और आज्ञा दी—
‘बाहर चले जाओ ।’

जब वे तीनों चुपचाप एक के बाद दूसरा आयु के क्रम से कमरे के बाहर चले गए तब उसने बाइमाकोव के फुटन पर अपना भारी हाथ रखा और बोला—

‘यध्मेई मित्रिच । मैं अपने आप तुम्हारा समझी बनना चाहता हूँ अपनी लड़की मेरे ज्येष्ठ सड़के को दे दूँ ।’

बाइमाकोव वस्तुतः डर गया वह वेंच से हिंसा और हाथ हिलाता हुआ बोला—

‘तुम कसे हो ? परमात्मा तुम पर क्या करे । मेरी

तुम्हारी पहली मुसाफात है ? मुझे पता नहीं कि तुम बीन हा ?
 और, तुम एकदम एसी बात पर भागए हो ! मेरी एक ही सड़की है,
 अभी घादी के लिए भी बह बहुत छाटी है । और इसके असावा
 तुमने उसे अभी देखा भी नहीं है । वह बंसी है यह तुम जानत भी
 नहीं । तुम बंस घादमी हो ?

परतु, अर्थात्मानाम अपनी बुँघरासी दाढ़ी मे सिफ मुस्करा
 कर बोसा —

‘मेरे घारे में तुम इस्त्राबनिक^२ मे पता लगा सकते हो ।
 वह हमारे राजकुमार का बहुत श्रुणी है और उसने उस मुझे मेरे
 कारोवार में सब तरह की मदद देन के लिए भी लिखा है । मैं
 पवित्र इकोनों की शपथ खा कर कहता हूँ कि तुम मेरी कोई
 धिक्कायत नहीं मुनोगे । मैं तुम्हारी कर्ग्या का भी जानता हूँ ।
 तुम्हारे इस नगर के घारे में भी मुझे सब कुछ पता है । मैं यहाँ
 पहले बार बार आ चुका हूँ और सब पता लगा गया है । मरा
 घडा सडका भी यहाँ आ चुका है और उसने तुम्हारी कर्ग्या को
 भी देख लिया है । इस बात की चिन्ता न करो ।

अपन का ठीक एक रीछ के आसिगन म अनुभव करते हुए
 बाइमाकोव मे आगन्तुक से कहा—‘तुम थोडो प्रतीया करा ।

‘मैं प्रतीया कर सकता हूँ परन्तु दर तक नहीं दर तक
 नहीं—उस का कोई भरोसा नहीं आगन्तुक न बठोरता म
 कहा । तिड़की स बाहर अँकन हुए वह आँगन की घार
 बिल्लाया । आधो गृहस्वामी से ममस्वार करो ।

जब के बिदाई सकर अने गए, बाइमाकोव उमी समय
 इकोनों की और मुडा और तीन घार छाती पर काम का निगाह
 बनाकर धीरे से गुनगुनाया —

२ इस्त्राबनिक—जिसा पुनिम या अम्पदा ।

‘प्रभु हमारी रक्षा करो । पता नहीं कैसे लोग हैं ये ? इस सङ्कट से हमारी रक्षा करो ।’

सकड़ी के सहारे वह वगीचे की ओर गया जहाँ उसकी पत्नी और लडकी पीस वासुधाय^३ के नीचे मुरब्बा पका रही थीं । उसको पीवरकाय रूपवती स्त्री ने पूछा—

‘पीछे के भाँगन में ये कौन लोग थे मित्रिब ?’

‘पता नहीं । नतास्या कहाँ है ?’

‘शोणम से चीनी लेने गई है ।’

‘चीनी लेने गई है !’ बाइमाकोव निराशापूर्वक बास के टीसे पर बैठते हुए बोला— ‘चीनी ! हाँ लोग ठीक ही कहते हैं वासों की मुक्ति से लोगों पर आपत्तियाँ ही आएँगी ।’

उसकी ओर तीदणु दृष्टि-क्षेप करते हुए पत्नी ने भयपूर्वक पूछा—

‘क्या बात है ? लवियत फिर खराम है ?’

हृदय को बहुत बेचैनी है । मुझे ऐसा दिक्कत रहा है कि यह मनुष्य सत्कार में मेरा स्थान लेने आया है ।

उसकी पत्नी ने उसे सात्वना देने का प्रयत्न किया ।

‘क्या बात है ? भाजकल गाँवों से खहर में थोड़े लोग आ रहे हैं ?’

‘ठीक है आ रहे हैं । खैर, घमी में तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा । मुझे कुछ देर सोचने दो ।’

फिर पाँच दिन बाद उसने बिस्तर पकड़ लिया और बारह दिन बाद वह मर गया । उसकी मृत्यु से अर्जमानोव और उसके सड़कों पर एक काली छाया-सी गिर गई । बीमारी के दिनों में

३ वासुधाय—एक वृक्ष ।

अर्त्तमानोष मेयर के पास दा वार आया था और वे दर तक आपस में बातें करते रहे । दूसरी वार बाइमाकोव ने अपनी पत्नी का बुसाया और बडी पकान से छाती पर हाथो को बांधकर बोला—

“सा इसस बात कर सो । दिग्गता है कि मुझे सासा रिक्त मामला में धब नहीं पड़ना चाहिण । मैं तब तक थोड़ा धाराम कर सू ।

“उल्याना इवानोव्ना, इधर आधा । अर्त्तमानोष ने आता-सी दी और यह देख बिना कि गृहस्वामिनी उसके पीछे आ रही है कि नहीं, वह कमरे से बाहर आया गया ।

‘बापो उल्याना ! लगता है कि हमारे भाग्य में ही यह लिखा है ।’ मेयर ने आगन्तुक के पीछे जाने में किम्बकते देख पत्नी को दान्त भाव से ससाह दी । वह इधर आचार की बुद्धिमती स्त्री थी जो प्रत्येक काम को खूब साध-समझकर करती थी । और ऐसा हुआ कि एक घण्टे बाद वह पति के पास वापिस आई और अपनी सुन्दर लम्बी पसको से धामू टपकाती हुई बोली—

‘अच्छा मित्रिण ! दिग्गता है कि हमारे भाग्य में यही मदा है । अपनी कन्या को आशीर्वाद दो ।’

उसी सांझ वह अपनी कन्या का खूब सजा घना कर मुन्दर वस्त्र और धामूपण पहनाकर पति के विस्तर के पास ले गई । अर्त्तमानोष ने अपने मढ़के का धाग कर दिया और मढ़के-सड़की ने एक दूसरे से मज्जर बचाकर पाणिग्रहण किया और दोनों ही घुटनों के बस मुक गए । उन्होंने अपना मिर भुजा दिया और बाइमाकोव ने सांस सन का प्रयत्न करत हुए मोतियों से मण्डित प्राचीन पारिपारिक इनोव का उनक ऊपर धामा—

पिता और पुत्र के नाम पर प्रभु मरी दक्योनी कन्या

को कभी मत छाड़ना ।

धर्तमानाव में उसन कठोरता से कहा—

याद रखना । परमात्मा के सामने मरी कस्य के जुम्हेदार
तुम रहोगे ।

धर्तमानोव भूमि का हाया से छून हुए भुजा—

सममता है ।

धपनी भावी पुत्र-अधु से किसी प्रकार के क्यापूर्ण धब्द
कह विना उसन उसकी धीर धपन पुत्र की धीर निहारता, धीर
फिर वषदि की धार हगारा किया ।

‘वस जाया ।’

अब दोनों वाग्दत कमर में बाहर धस गए तो वह विस्तर
के किनारे पर बैठ गया धीर दृढतापूर्वक वाला—

‘धान्त रहो । सब ठीक होगा, वैसा ही होगा जमा होना
बाहिए । मैंने धपने राजकुमार की सैंतीस वर्ष सेवा की है—धीर
कभी वाधा नहीं धाई । मनुष्य परमात्मा नहीं मनुष्य क्याकु भी
नहीं उस प्रसन्न रखना बड़ा कठिन है । धीर समधिन उत्पाना
धापको इस धार में कभी धपन्नोस न हागा । तुम मर सकका
की माँ हाकर रहागी धीर उन्हेँ इस धात की धाजा होगी कि
व सदा तुम्हारा धादर करे ।’

वाइमाकीव यह सब कृध सुमता रहा धीर कुपबाप कान
में इकाना की धीर निहारता हुआ धानू इसकाता रहा । उत्पाना
भी सिसकती रही धीर यह पुष्य धपनी दु खन धानेँ करता
रहा—

‘एह ! यम्हेँ मित्रिध ! धाप बहुत जल्दी जा रहे हैं ।
धीर, यह सब, अब मुन्के धापकी बहुत जहगठ है । यह तो मरे
गन पर छुगी जमान के ममान है ।’

उसने अपनी दाढ़ी पर छाँटत हुए हाथ मारा घोर वड़े जोर से घाह भरी—

“मुझे तुम्हारे बारे में बहुत पता है तुम ईमानदार हो, अच्छा दिमाग रखते हो । तुम घोर में मिसकर घाने वाले पाँच सालों में क्या कुछ नहीं कर सकते थे ? परन्तु, हमारे बस की बात नहीं । परमात्मा की इच्छा ।

उत्पाना शोकार्त रुदन करती हुई बोसी—

‘तुम कौबे की तरह कौब कौब करके हूँ भयों डरा रहे हो ? हा सकता है अभी ’

परन्तु, अर्तमानोव एकदम सड़ा हो गया अमर मुझ कर बाइमाकोव का अभिवादन किया—जैसे कि दिबंगतों का जिन्या करत हैं ।

“इस अमानत के लिए धन्यवाद । अच्छा ममस्कार ! मुझे अभी नदी पर जाना है वहाँ नाब से मरा सामान घा रहा है ।

जब वह असा गया तो उत्पाना बाइमाकोवा रोपपूर्ण रुदन करती रही ।

दिहाती गँवार । एक भी मधुर शब्द अपने पुत्र की बागता को न कह सका !

परन्तु उसके पति ने उसे टोका ।

माराम न हो मुझे ब्याकुल मन करा ।

कुछ मापकर वह बोसा ।

‘तुम इमम सम्बन्ध रखा । मुझ सगता है कि यह मनुष्य हमारे यहाँ न लोगों से बहुत अच्छा है ।’

मारे शहर न घोर पाँचों गिरजों क पादरियों ने बाइमा

कोव का धन्येष्टि-सस्कार प्रतिष्ठापूर्वक किया। अर्धमानोव और उसके बेटे—दिवगत की पत्नी और कया के पीछे-पीछे वन जिससे नगरवासी नाराज हो गए। कुबड़े निकिता म जो अपने पिता और भाइयों के पीछे चल रहा था भीड़ में लोगों की नाना प्रकार की धामोषनाओं और जानाफसियों को सुना।

‘पता नहीं यह कौन है और एकदम सबसे आगे क्या रहा है?’
 अपनी भूरी-साम रङ्ग की गोम-नाय धाँसों को धुमाकर पम्पामोव बोला—

‘दिवगत यम्सई और उल्याना जानों वड़े समझ-बूझ कर काम करन वाले थे। व कभी कोई काम बिना कारण नहीं करते थे। उनके इस काम में कोई न कोई भेद जरूर है। इस बात ने उन्हें किसी-न किसी तरह फुसना मिया हागा धयथा वे इन अपना सम्बन्धी बनाने वाले नहीं थे।

हां—या काम में क्या जबर है।
 मैं भी कहता हूँ दान में काला है।

विल्कुल जाली सिद्धा नीपता है। जय माया ता—बाइमाकोब कैसा सत था ?

निकिता न ये सब बातें सुनीं वह अपनी कुत्र को उमार सिर नीचा किए चलता रहा जैस कि वह चार की प्रतीला कर रहा हा। उस दिन धाँसी चल रही थी और सैकड़ों फीट क गर्द क धूँधम वादय भीड़ के पीछे दौड़ रहे थे तथा लोगों के विचन घुपड़े मङ्ग सिरों पर पूल बुरक रहे थे।

मरा देखो तो अर्धमानोव गर्द से क्या डका टूपा है।
 वह त्सिगान* अब भूरा पड़ गया है।

* त्सिगान—जानाघदाय जाति जो रङ्ग में किसी कदर साबसी होती है। य साग अपना सम्बन्ध भारतवासियों से जोड़ते हैं। इस और पूर्वीय मध्य योरोप में य गाड़ियों द्वारा एक स्थान म दूसरे स्थान पर एक २ कर चलत रहते हैं।

पानी बड़ा हुआ था ता कुबड़े का पाँव वहाँ फँस गया या गड्ढे में फिसल गया—घोर वह पानी में लुप्त हो गया । शहर के शराबी पड़ीसाज की तरह वर्षीय लड़की भोला घसींवा बड़े जोर से चिल्लाई—

‘घाह ! घाह ! घर ! वह डूब गया !

सोगों ने उसका हाव मजबूती से पकड़ा घोर बोस—

क्यों फिक्स चिल्ला रही है ?

घसबसेई ने जा समस पीछे था डुबकी भयाई घोर घपने भाई को पकड़ कर खींचा घोर उसे पाँवों पर खड़ा कर दिया । भीगे घोर कीपड़ से कासे वे दोनों किनारे पर पहुँच सा घसबसेई सीधा दाहरी सागों की घोर गया । वे उसके लिए रास्ता छोड़ एक सरक हो गए । उनमें से किसी न डरते हुए बहा—

कसा जानवर का बच्चा है ।

‘य सोग हमें चाहते नहीं, प्यात्र न कहा । सब उसक घाप ने बिना रुके पीछे देखकर बहा—

‘बरा मीका दो ये हम चाहने सगेगे ।

उसने निजिस्ता का भिड़क दिया ।

मिट्टी के पुसल घपनी घाँलों का गुसा रमा कर घपन का हँसी का पात्र मत बना, हम भाँड़ नहीं ! मूग कहीं क ।

घर्नामानाब-परिवार घपन में ही सामिल रहा उग्होन किमी से मेल-मुलाकात नहीं की । उसकी घर-गुफ्तो का काम एक बानी पागाब बानी माटा घोरत करती थी जा मिर पर बाना रमास एम बापती थी कि उसक दा एदर मिर पर मीका की तरह गटे रहम । वह बहुत कम बापती घोर दग्रो को लेने

पवाती कि जिससे कोई समझ न सकता,—जैसे कि वह इसी ही न हो। उसके द्वारा अर्त्तमानोव-परिवार के बारे में पता लगाना कठिन था।

‘ये डाकू, साधु बनना चाहते हैं। सोग कहते हैं।

यह पता चला कि याप और बड़ा वेटा प्रायः घास-पास के वेवुतों में जाकर किसानों को कपास बोनो के लिए प्रेरित करते हैं। एक ऐसे ही दौरे पर मगोडे सिपाहियों के एक गिरोह ने अर्त्तमानोव पर हमला किया। उसने अपने एकमात्र हथियार—सेर भर वजन के मोहे के डण्डे से जिसे कि वह एक चमड़े की पेटी से बाँधे रहता था एक को मार दिया दूसरे का सिर फोड़ दिया और तीसरा भाग लूटा हुआ। इस्त्रावनिक ने अर्त्तमानोव की प्रससा की और मुसमरी के इलिनस्क इलाके के गिरजे के नीजबाभ पादरी ने नर-हत्या के लिए चालीस रात गिरजे में प्रार्थना करने का प्रायश्चित्त निश्चित किया।

पठम्भ की रातों में निश्चिन्ता अपने पिता और भाइयों के सामने सन्तों की भीवनियाँ और गिरजे के पितरों की धार्मिक प्रार्थनाएँ पढ़ता, परन्तु पिता प्रायः उसे टोकता हुआ कहता—

ऊँचे ज्ञान की ये बातें हम लोगों की बुद्धि से परे हैं। हम तो सीधे-सादे भ्रमभीषी सोग हैं। हमें इन मामलों से क्या वास्ता! हम सीधी-सादी बातों के लिए ही पैदा हुए हैं। दिवगत राजकुमार गुरी ने साठ हजार पुस्तकें पढ़ीं और उनमें इतना उलझ गया कि परमात्मा में विश्वास ही खो बैठा। उसने सारे ससार की यात्रा की सब राजाओं ने उसे दरबारों में सम्मानित किया। बड़ा प्रसिद्ध पुरुष था वह! परन्तु, जब एक कपड़े की मिस सगार्दी से वह उससे ज्ञान में कमा सका। हाँ जिस किसी भी काम में वह हाथ डालता—वही घाटे का काम ही जाता। इसलिए जीवन भर उसने किसानों पर ही अपनी गुजर की।

उष्णवर्ण के लोग इससे भी बुरी बात करते हैं, और परमात्मा सब सहन करता है। यह मेरी जरूरतों में से है। और व्योम को गृहणी की जरूरत है।

फिर उसने पूछा कि उसके पास कितना पसा है।

उत्पाना वाहमाबोवा ने उत्तर दिया—'सड़की को देहज में पाँचसौ से अधिक नहीं दूगी।

"तुम दोगी—और अधिक दोगी —सूभिक ने घातमविद्वांस और उपेक्षापूर्वक सीधे उसकी छाँटों में घूरसे हुए कहा। वे मेज पर एक दूसरे के सामने-सामने बैठे रहे। घतमानोव दोनों बाह-निर्या भुजाए और दोनों हाथ घपनी दाढ़ी की उसम्भी ऊन में फँसाए बठा था। और उसके सामने स्त्री भौंड़ि चढ़ाए उससे बचती हुई डरी-सी बैठी थी। वह तीस बरस के बचीब थी, परन्तु दिखती बहुत कम उमर की थी। गुलाबी चहरे में उसकी भूरी छाँटों से एक हड़ बुद्धिमत्ता भसक रही थी। घतमानोव घपने कापों को पीछे फँक कर उठ खडा हुआ।

उत्पाना इवानोव्ना तुम एक मुन्वरी हो।

और भी कुछ कहना है? काब और व्यसपूर्वक उसन पूछा।

'नहीं और कुछ नहीं कहना।'

वह घनिच्छापूर्वक भारी डम भरता हुआ पसा गया। वादमाकाबा ने उस जाते हुए पीछे से देखा और फिर उसकी नजर स्पणन के ठंडे बीरा पर टिक गई। यह बिपाद पूर्वक यामी—

दक्षिणत ईताम ! तू चाहता क्या है ?'

इस पुरप के प्रति घातमिन भाव लिए यह घपनी सड़की के घयवागार की ओर ऊपर गई। परन्तु, मत्तान्या वहाँ नहीं थी। गिरकी से माँक कर उसने देखा कि सड़की

बाहर धागन में फाटक के पास है, और उसके बगवर में प्योत्र लडा है। वाइमाकोवा सपक कर जीने में नीचे भाई और वहीं सडे होकर बिल्साई—

नतास्या घर घाघो !

प्योत्र ने उसका अभिवादन किया।

‘ नौजवान ! यह कोई तरीका नहीं कि माँ की धनु पस्थिति में लडकी से धाउचीत की जाय। भागे कभी ऐसा न हो !

यह तो मेरी बाग्दस्ता है ! प्योत्र ने स्मरण कराया।

कोई बात नहीं। यह हम भोगों का धपना रिवाज है।

वाइमाकोवा ने जवाब में कहा। परन्तु, उसने विस्मय से धपन से ही प्रदन किया—

मे ध्यर्व में क्यों धापे से बाहर हो रही है ? युवक युवतियों को धापस में प्रेम करना ही चाहिए। यह ठीक नहीं। सगता है कि मैं धपनी सडकी से ईर्ष्या करने लगी हूँ।

फिर भी कमरे में पहुँचने पर उसने सडकी की छोटी पकड़ कर उसे झूब झटकाया और उसे धपने भावी पति से धार्ते न करने की कठोर बेठावनी दी।

‘ठीक है वह बाग्दस्ता है परन्तु कौन जानता है—बरसात हो या बरफ पड़े सादी हो या इकारी। उसने कठोरता पूर्वक कहा।

कामी बुद्धिन्ताओं ने उसके विचारों में गड़बड़ पैदा करदी थी। कुछ दिनों के बाद भविष्य के धारे में आमने के लिए वह गल सण्ड की शिकार, धडियास जैसी गोल-मटोल भोभन—यार्वेस्काया के पास गई जिसके पास धहर की सब स्रिया धपने पापों, धड्याओं और दु सडकों को लेकर जाती थीं।

“इस बारे में ताया के पत्तों को देखने की क्या जरूरत है” यादोस्काया ने कहा—“प्यारी मैं तुमसे साफ-साफ कहती हूँ कि तुम इस पुरुष से सम्बन्ध बनाए रखो। मेरी प्रायें बेकार नहीं— मैं ताया के पत्तों की तरह उनसे धार-धार देखती हूँ। तुम्हीं देखा वह कितना मायबान है। जिस काम में हाथ डालता है, उसी में सफल होता है। हमारे लोग तो ईर्ष्या से जलते हैं, तुम उनकी परवाह मत करो। यह पुरुष सोमड़ी नहीं—रीछ है।”

‘हाँ यह ठीक है वह रीछ जसा ही है।’ विषवा ने साँस भर कर सहमति प्रगट की और उसने प्रोमन को बताया—

“मैं उमी दिन से—जिम दिन से वह मेरी सबकी की मगनी के लिए आया था उससे डर गई हूँ। पता नहीं क्या आसमान से यह प्रजनबी प्रचामक था टपका और हमारा सम्बन्धी बम बठा। कभी ऐसा भी होता है क्या? मुझे याद है वह प्रपनी ही कहता रहा था और मैं उसकी निडर प्रालों की प्रौर निहारती रही उसकी सब बातों पर ऐसे हाँ-हाँ करती गई, जैसे कि उसने मरा गया दबा रखा हो।”

इसका अभिप्राय है कि उसे प्रपनी शक्ति पर भरोसा है। दूरदमिनी प्रोमन बोली।

परन्तु इस बात से बाइमाबोवा को तसल्ली नहीं हुई। यद्यपि गुरुती हुई खड़ी-बूटियों की गन्ध से मरे प्रपेरे कमरे में बाहर पहुँचाते हुए प्रोमन ने उसे विवा करते समय कहा था— याद रखना मृग परियों की बहानियों में ही काम याकी समझत है।

उमने प्रार्थामानोव की सन्नेहपूर्ण प्रार्थना के पुन बाँध थे—जगो कि उमे निद्रित मिन गई हो। परन्तु विगासराय, कावी प्रौर प्रूना मद्रवी के समान बगोर प्रौर मिष्टुर मानयोब्ना यास्वाया ने प्रौर हा बात कह—

“उत्सुना ! सारा शहर तेरे लिए घाहें मन रहा है तुझे इन परदेशिया से डर नहीं लग रहा ? जरा सोच तो एक बटा कुबड़ा है । यह फिजूल नहीं यह माँ-बाप के बडे पापों का फल है ।”

विषवा ब्राह्ममाक्रोवा के लिए यह सब बडा कठिन हा गया और वह प्राय अपनी सङ्की को इस कारण मारने-पीटने भी लगी, परन्तु साथ ही वह यह भी अनुभव करती थी कि वह उस पर ध्यर्ष म गुस्सा करती है । वह अपने किराएदारों से बहुत कम मिमती-बुलती और ये भोग प्राय उससे आ टकराते—और उसक जीवन में एक काशी छाया डाल देने ।

सर्वा शहर पर बिना भूखना दिए मयङ्कर सुमुल तूफानों और सीकण सुपार लिए उठर आई । गसियों घरों को उसने शुध चीनी जैसे बरफानी टीनों से ढक दिया पक्षियों के घासले गिरनों के गुम्बदों को फली-फली रई की टोपिया उढानी नदियों को जेसखाने में और मसिन दलबसों का सफेद चमकीले सोह की बेड़ियों में षकड़ दिया । छुट्टी के दिन नगरबासी बरफ से जमी घोका नदी पर आस-पास के गाँवों के किसानों से भुट्टि-भुट्ट के लिए एकमित होते और भसकसेई प्रत्येक भुट्ट में भाग सेमा तथा प्रत्येक धार गुस्से में भरा हुआ घायल घर वापिस आता ।

‘प्रत्योशा ! क्या बात है ? भवमानाव पूछता—‘क्या यहाँ क भोग हमारे यहाँ से अछ्छा सबते हैं ?’

भसकसेई अपनी घोटों को पीतम के सिबके या बरफ के टुकड़े मे रगड़ अपनी वाज जसी घाँवों को चमकाता हुआ निराग हो चुप ही रहता ।

एक दिन प्योत्र ने कहा —

“भसकसेई सबता बहुत अछ्छा है । परन्तु अपनी और क ही भोग इसे घायल कर देत हैं ।”

मेज पर मुट्ठी मारत हुए इत्या अर्त्तामानाव ने पूछा—
'क्या ?

'धृणा के कारण ।'

'वे इसमें धृणा करते हैं ?'

'नहीं हम सबसे हो—सम्मिलितरूप में ।'

वाप ने फिर मेज पर मुट्ठी मारा ता मेज पर खड़ी मोम बत्ती लुढ़क गई । अन्धेरे में से एक मित्रकती गुरगुराहट सी आई—

धृणा और प्यार ! तुम सड़किया की तरह बातें करते हो । प्राग में मेरे सामने कभी ऐसी बातें न करना !

मोमबत्ती जलाते हुए मित्रिता ने भीर से कहा—

अल्पोक्षा को इन मुक्केबाजियों में जाना ही नहीं चाहिए ।'

अध्या ! ताकि लाग हमारी हँसी करें और कहें कि अर्त्तामानाव-परिवार डरता है । चुग रह रीटल, भींगर, कहीं के !'

इस प्रकार मित्रकन और गाली गुफ्तार करने के कुछ दिन बाद माध्य भोजन के समय अर्त्तामानाव न भागी आवाज न प्यार से कहा—

नड़को ! तुम्हें रोछ के निवार क लिए जाना चाहिए । यह एक अर्द्ध मनोरञ्जन है । मैं राजकुमार गियार्गी क साथ यात्रा के जङ्गलों में जाता था हम लाग यरछा का प्रयोग करते थे । बहुत आनन्द आता था !

उत्साहबन उमने अपने कतिपय आगेदों क यात्र न बताया । एक सप्ताह बाद वह प्योत्र और अतबसेई क गाथ निवार के लिए गया और एक पुराने रीछ की मारा । उमक बाद दोना

भाई अकेले गए और एक रीछनी को जगाया। रीछनी ने गुस्से में अलबसेई की भेड़ की खास की ज़ाकेट फाड़ दी और उसकी जाँघ में पञ्चे की सखी मारी। परन्तु अन्त में दोनों भाइयों ने उसे मार गिराया। मरे खानखर की लाश जङ्गल में भेड़ियों के लिए छोड़कर वे रीछ के दो बच्चे साथ ले आए।

“क्यों ? तुम्हारे अर्त्तमानोव-परिवार का क्या हास है ?”
नगरबासी बाइमाकोवा से पूछते।

क्यों ? क्या बात है ? वे सब ठीक हैं।’

अब तक सबी है सुअर घान्त है।’ पन्यासोव ने कहा।

बिभवा को विश्वास न होता था परन्तु उसे अनुभव होता कि कुछ समय से अर्त्तमानोव के विरुद्ध लोगों के विरोध भाव से वह स्वयं भी नाराज होने लगी थी। उसके प्रति सर्वसाधारण की अक्षय से वह उनकी उपेक्षा और नाराजगी की ठण्डी हवाएँ अपनी तरफ भी आती अनुभव करती। उसने देखा कि अर्त्तमानोव-परिवार गम्भीरता सम और मित्रतापूर्वक रहता है तत्परतासे अपने काम में लगा रहता है और बुराई का कोई काम नहीं करता। अपनी सड़को और व्योत्र का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के बाद वह इस परिणाम पर पहुँची, और उसे विश्वास हो गया कि यह स्पूस और शान्त नवयुवक अपनी आयु की दृष्टि से कहीं अधिक गम्भीर और शान्त है। उसने कभी भी नतास्या को दखाने उससे छेड़खानी करन अथवा अस्तीस कानाफ्सी करन की कोशिश नहीं की, जैसा कि सहरा कर प्राय किया करते हैं। नतास्या के प्रति व्योत्र के अजनबी, सखे और सखक व्यवहार से बाइमाकोवा डर गई, यद्यपि उसके इस मय में एक प्रकार की ईर्ष्या थी।

“यह अपनी पत्नी के प्रति भावुक नहीं रहेगा।

एक दिन जीन से नीचे आते हुए उसने दरवाजे पर अपनी सड़की की आवाज सुनी

फिर रीछ का धिंकार बरने जा रह हो क्या ?”

“हाँ, तयारियाँ तो कुछ ऐसी ही हैं क्यों ?

‘खतरनाक’ है। पिछली बार जानवर न प्रत्यागा को पास कर दिया था।’

‘यह उसका अपना दोष था। उसने बहुत जल्दी की थी प्रच्छा। तुम मेरे लिए चिंतित हो ?

‘मैंने तुम्हारे बारे में तो कुछ भी नहीं कहा।

तू—छोटी-सी सोमड़ी। मुम्बराबर गहरी सोम म हुए माँ ने सोचा ‘घोर वह बिना भाना है।’

इत्या प्रतामानाब ने कई बार उसे टोका—

“घब गावी जल्दी बरदा नहीं तो ब अपना घाप जल्दी करभेगे।

बह भी देख रही थी कि घब जल्दी करनी ही चाहिए। सड़की ठीक माँ नहीं पाती थी और अपना प्रज्ञा की वर्षनी को छिपाने में प्रसमय रखती थी। ईन्टर के दिनों में वह अपनी सड़की को पुन साधु-गृह में ले गई और एक महीन बाद उमने मोटकर देखा कि उसके घर का अगीचा बहुत यदिया तरीके से बटा-घँटा हुआ है और भ्रष्ट इत्यादि बिनी कुशल हाथ द्वारा काटे और बांध हुए हैं। नदी की घोर पगडंडी पर मुड़कर उमने निकिना को देखा। वह यात्रे की मरम्मत कर रहा था—जिम बमन्त की बाड़ ने गगन कर दिया था। दयनीयरूप म ऊपर को उमगी हुई उमनी प्रम्पित गुर्र सन्धी-भूगी बमीज में म राफ बमब रही थी जिमने पारण वह उतर बडे सिर घोर उमने मडे भावों

ना भी छिपा रही थी। धपन चेहरे से धानों को हटाने के लिए निकिता न उन्हें सचीली धासा से बाँध रखा था। इस सरस हरित वनस्पति के बीच भूरे रङ्ग का वह एसा लगता जैसे धपनी साधना में लोया हुआ कोई प्राचीन तपस्वी हो। लूटे की नोक बगाले समय उसका बुन्दाबा सूर्य के प्रकाश में चाँदी की तरह चमकता रहा था। सबकियों की सी पतली धावाज में वह धीरे-धीरे एक धार्मिक भजन गा रहा था। बाड से परे नदी का जल हरित-क्रीपेय के समान झिलमिल कर रहा था और मूय की किरणों का प्रतिक्षेप दौडनी हुई मुनहरी मछलियों के समान झिलवाड कर रहा था।

“परमात्मा तुम्हारा सहायक हो ली न धनासक्त प्रमभाव स कहा। भीभी धावा के हल्के प्रकाश की मजनक उस पर डालत हुए निकिता न धीमे में कहा—

परमात्मा तुम्हारी रखा करे!

क्या तुमन ही यह साग वगीचा सवारा है ?

‘जी हाँ।

‘तुमन बहुत वडिया तरीक स यह जिमा है। क्या तुम वगीचे के धीकीन हो ?

धपने काम पर भ्रुक हुए उसन सक्षेप में बताया कि नौ साल की धायु स धपने स्वामी राजकुमार के मामी से वह यह काम सीसता रहा है और धब उसकी धायु उन्नीस वर्ष की है।

“कुवडा है परन्तु स्वभाव का तेज नहीं। ली न मनमें सोधा।

सध्या समय जब वह धपना कन्या के साथ ऊपर के कमरे में जाय पी रही थी निकिता हाथ में फलों का गुसदस्ता लिए दरवाजे में प्रकट हुआ। उसके पीछे चेहरे पर धमुन्दर और

प्रसन्नता रहित एक हल्की-सी मुस्कान थी ।

क्या मैं यह गुप्तदस्ता भेंट कर सकता हूँ ?”

किमुलिया ? दाइमाकोबा ने सुन्दर फसो घोर पत्तियों के गुच्छे को वेस्त सदेह से पूछा । निकिता ने बताया कि जब वह भद्र सोर्गों के यहाँ काम करता था तो उसका कस्तब्य था कि प्रति दिन प्रातःकाल वह राजकुमारी को एक गुप्तदस्ता भेंट कर ।

अच्छा यह बात है’ — दाइमाकोबा ने कहा । घोर फिर किसी इतर भेंपते हुए परन्तु अभिमानपूर्वक सिर उठा कर पूछा ‘क्या मैं राजकुमारी जैसी हूँ ? वह तो बहुत ही सुन्दर होनी चाहिए ?

घाप भी वसी ही हो ।

घोर अधिक भेंपते हुए दाइमाकोबा ने सोचा— ‘वहीं घाप न तो मित्रा कर इमे नहीं भेजा ?

इस सम्मान के लिए क्षम्यवाद ।” उसने उत्तर दिया । परन्तु निकिता को चाय के लिए आमन्त्रित नहीं किया । उसके जाने के बाद वह कहती हुई सोचन लगी—

‘उसकी धार्मिक सुन्दर है किन्तु घाप जैसी नहीं । हो सकता है माँ पर गई हों ।

उसने एक गहरी साँस ली ।

दीप्तता है हमारे भाग्य में इन भोगों के साथ ही रहना निग्या है ।

उमने अर्तामामोब पर अमनी बसुत तक विवाह स्थगित करने के लिए बहुत घोर नहीं दिया । तब उमने पति का स्वयं वाम हुए एक वर्ष हो रहा था । परन्तु, उमने दृढ़तापूर्वक उससे कहा—

‘इत्या वसिलिविष । अस प्राप इमं हस्तक्षेप न करे ।
 प्राप हमार यही के प्रच्छे और पुराने गिवाजो क अनुसार मुझे
 ब्याह रवाना न । इससे प्रापको ही लाभ हागा । प्राप एकदम
 हमारे प्रच्छे सागों के बीच प्रच्छा स्थान प्राप्त कर सेंगे और
 सब सागों की नजर में आ जायेंगे ।

‘लेर’ घर्तामानाब ने अनिमान से कहा— इसके बिना ही
 मैं दूर में नजर में आ जाता हूँ ।

“यही क भाग मुझे पमन्द नहीं बन ।
 ‘पमन्द नहीं करते ता इन्गे ।

बह कचे हिलाकर खिलबिलाया ।
 और बह प्यात्र भी मदा चाहन न चाहन के बार में
 ही गाता है । तुम सब पागल हो ।

“ठीक है परन्तु इस अप्रियता का कुछ भाग तो मुझे भी
 सहन करना पड़ता है ।

“समयिन । प्राप इस बात की जग भा परवाह न करे ।
 घर्तामानाब ने अपनी सम्बा चौह उठाई और मुटठी का
 इस प्रकार आर में भीषा कि वह साम पड़ गई । बह
 बोला—

मैं सागों का तोड़ना भी जानता हूँ । मरे पास-पास कोई
 दर तक उखन-बूद नहीं सकता । मैं सागा की चाह क बिना
 भी गुजारा कर सकता हूँ ।
 ओ न कुछ नहीं कहा । भयपूर्वक कौपत हुए बह साधन

समी
 ‘कैसा जहली जानवर है ।
 और इस प्रकार वह जिन भी आ गया जब उसका मुकद गृह

सड़की की कुलीन सहेलियों सं मर गया । उन्हीं प्राचीन तर्ज के
 मपेच सूती बपटे की कसी-कसी बाहों वाले बोगे धारण किए
 हुए थे जिनके कफों पर रङ्गीन रेसमी तागे की मदोंबाश् बद्दाई
 की हुई थी—और पाँवों में ममने की लाल के सलीपर पहिने हुए
 थे तथा जिनको लम्बी-सम्बी वेणिया में रङ्ग-बिरङ्गे फीते सब
 रहे थे । भाबी वधू सुनहरी जरी की जाकेट को कंधों पर पहने थी,
 तथा चाँदी की जरी के चापे में कासर से जमीन तक चाँदी के
 बटन लग रहे थे । वह एक बाने में बरफानी मूर्ति की तरह बठी
 थी । उसके घामों में नीम फीत लपे थे और वह जालीदार
 रुमाळ से अपने चेहरे का पसीना पोंछती हुई गीत गा रही थी ।

हरियावन भग्न पानियामों पर
 धममानी-नोस कपों पर
 घाता है बमल की बाँदें—
 जिनमें बहना है पीतम जल ।

कन्या अन्दन की इस दूबती सितवन का सहेमिया ने उगा
 सता और मिमतापूर्वक पकड़ लिया -

सुभ कन्या का भेज दिया है,
 बाहर से जम माने को,
 मध-पाव हिमजम प्रवाह में,
 मम और निरुसता को ।

कन्याघाँ की भीड़ में छिपा हुआ धमबसेई जोर में ठहाका
 मारता हुआ विन्नाया -

'यह ता यड़ा हो हाम्याम्पद गात है । धापने सड़की को तो

५ मदोंबो बद्दाई = मदोंबिया इलाक की विदाय बद्दाई ।

बरी के कपड़ों में गुड़िया की तरह टीन के रङ्ग-विरंगे महोल से सजा रखा है और चिल्लाती है कि वह नग्न है निर्वसना है।'

निकिता नील कपड़े की जाकेट पहन दुलहिन के पास बैठा था। उसकी जाकेट कुब पर बड़े घनोस और हास्यास्पद बङ्ग से ऊपर उभर रही थी। उसकी नीली घाँसे विचित्र भाव-भंगिमा के साथ नताल्या पर गड़ी हुई थीं। जैसे कि उसे भय हो कि कहीं यह कन्या घन्तघ्यान न हो जाय। पास ही माश्वोव्ना वास्काया सारे दरवाजे को धरे हुए खड़ी थी और घाँसों को मटका कर भारी स्वर से कह रही थी —

‘छोकरियो ! तुम्हारे इस गीत में कल्याण और शोक की अभिव्यक्ति नहीं है।

घाब की तरह सन्धे डग भरती हुई वह कमरे में पहुँच कर सड़कियों का बटाने लगी कि गीत गाने का पुराना तरीका क्या है और विवाह से पूर्व कन्या के हृदय का भय और कपन से कैसे बरा जा सकता है।

कहा जाता है— विवाह परत्पर की वीवार के समान है यही तुम्हें भी समझना चाहिए। यह ‘दीवाल’ बड़ी दृढ़ है—जिस तोड़ा नहीं जा सकता। यह ऊँची इतनी है जिस उछल कर फाँदा नहीं जा सकता।

परन्तु लड़कियों ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। कमरे में नील और गरमी थी। बुढ़िया को बुरी तरह बकलती हुई सड़कियाँ बाहर बगीचे की ओर दौड़ पड़ीं। अलकसेई उनक वीच पीली रेगमी जाकेट और बीसा पाजामा पहने उमत्त औरे की कन्या-मुर्षों पर बड़े धानन्व से मँडराने लगा।

वास्काया के ओठ क्रोध से सूँठ रहे थे—घाँसे बाहर की निकली

पड़ रही थी—उसने सामने से अपना पापरे को उठा कर पूरे के भारी वादस की तरह उत्पाना के पास जाकर भविष्यवाणी की—

“तेरी सड़नी ता बहुत मुछ है ! यह ठीक नहीं है । यह हमारे रीति रिवाजा ने बिरुद्ध है । प्रादि का आनन्द घन्त का दुप हासा है ।

घुटना के बस भुकी घाइमाकोवा सोहे की पत्तिया से बंधे हुए सन्दूक म कुछ टटान रही थी । पसङ्ग सभा फल पर चारों ओर मेले की दूकान की तरह दमस्क टिफेटा बड़े रुमास, कादमीरी दासि और फीते विसरे पड़े थे । इन रग-बिरये कपड़ा पर सूर्य की एक बिस्तृत किरण पड़ रही थी और उसस सूर्यास्त के समय क बादसों की-सी रगीन आभा फूट रही थी ।

‘शादी से पहले दूह्ता दुलहिम क घर में रहे यह कोई तरीका नहीं । अचछा ता यह या कि अर्त्तमानाव-परिवार कही और रहता ।

“तुमने पहले क्या नहीं बताया ? अब यह कहना व्यर्थ है । उत्पाना ने विक्रामत से चितित चेहरे का सन्दूक म भुक कर छिपात हुए कहा ।

धान्काया म धीमे स्वर म उत्तर दिया—

सोग तुम्हें सदा से बुद्धिमती मानत आण हैं इमीलिए मैं भी चुप रही । साजनी थी कि तुम इतनी ता समझार हा ही मुझे क्या ? मुझे ता तुम्हें मरुधई से वाकिफ कराना था मा करा लिया । यदि साग मरी इस यात पर ध्यान नहीं दते तो परमात्मा दमक सिण सादी रहगा ।

बास्काया प्रन्तर-मूर्ति क समान गड़ी थी और उमन अपन दावा हायों से सिर का एस घाम रग्या था जब कि वह बुद्धि मे सबावध भरा एण प्यासा हा ! जब उन काई उत्तर म मिया ता

वह दरवाजे से बाहर निकल गई। उन धमकीले रंगों के कपड़ों के बीच घुटनों के बल झुकी उस्थाना बुल्ल भौर चिन्ता से व्यथित होकर फुसफुसाने लगी—

‘हे परमात्मा, रक्षा करो ! मुझे सर्वसुखि दो ।

दरवाजे में फिर सरसराहट-सी हुई तो उठने धपम धाँसुधा का छिपाने के लिए धपने सिर को जस्वी से सन्दूक क धन्दर कर दिया । यह निकला था ।

‘मुझे नतान्या ने धापस यह पूछन भेजा है कि धापका किसी छरू की सहायता की धापकमकता तो नहीं ।

‘अन्यवाद, प्यारे अन्धे ।

‘रसोई म छोटी धोला धोलोवा ने धपने ऊमर धावनी गिरा भी है ।

‘एस न कहो ! यह ता एक बहुत अन्धसी मडकी है तुम्हारी दुसहिन बमने के योग्य ।’

‘मुझ से कौन धावी करेगी ?’

बगीचे मे बाहर धर तयार की हुई जी की धाराव (बीयर) पी जा रही थी । एक गोस मेज क इन्-गिद सि-डाऊ वृक्ष की छाया में इन्धा धर्तमानाब, गावरीभा बार्न्की, वधू का धर्मपिता पम्पालोव सोई-सोई धाँसों वाला धर्मकार भितेई किन, रथ-मिर्माता बोरोपोनाव बटे हुए थे । पास ही लि-डाऊ वृक्ष के तने क पीछे से प्योत्र लड़ा म्क रहा था । यह धपन कामे धासों में खूब तस सगाए था जिससे उसका सिर सोहे की छरू धमक रहा था । यह बड़े धादर भाव से धपने युजुगों क धार्तालाप को सुन रहा था ।

‘धाप सोगों के रीति-रिवाज भिस हैं’, धर्तमानाब ने

सौषत हुए कहा ।

उत्तर में पम्प्यासाव ने झींग मारी—

‘इस महान रूप के घससी वासी ता हम हैं ।

‘घोर, हम भी बाई परदसी नहीं ।

“हमार रीति-रिवाज बहुत प्राचीन हैं ।”

‘उनमें खुवासा घोर मादोबियन की भलक है ।

इसी समय घघानक हंसती-खसखिलाती घोर एक दूसरे का घक्का देती हुई कन्याओं न बगीचे पर आक्रमण कर दिया । वे एक-द्विराज्ज घमघीले कपड़ों घोर कीतों में सभी हुई थीं । उहोंने गोम मेज का चारों तरफ से घेर कर घर के पिता के स्वागत में स्तोत्र-गान शुरू किया—

घजी, हमारे महा रामधी जी
हैं गुमा इत्या घी, वासित्यविष !
प्रथम चरण में दूटे इक टांग
घोर इतोप में दूमरि टांग
फिर गहन दूटे तृतीय चरण में ।

यह ली तुम्हारा घभिनन्दन किया जा रहा है ।’ घघने घेते की घार मुड़कर घतमानाक विस्मित हावर बिस्माया ।

लेपिन प्यात्र कनकिया स सडकियों की घोर नेगता हुमा ससज्ज हेंसी हेंसता रहा ।

‘सो, यह घोर गुमा ।’ कह कर बास्वी टहाका मारकर हेंस पड़ा ।

टमारो महसो का झूटकर स जाने बाघे, गमघाजी ।
तुम्हारे प्रति दम फिर भी बडुम गुपामु हैं ।

‘हाँ बहुत कृपायु हैं । कुछ कसर भी छाड़ी है ।’ धर्तमानाव उसजित हाकर कह उठा और अपसन्न हा कर मेज पर रँगसियाँ मारने लगा ।

सङ्किर्पाँ जोर-जोर से गाती रही—

हल के पत्तों के नीच गिग तुम
 पदत-शिकर स बट्टानों पर—
 धाआ हमका न्न घाए
 सम्मान-बिजय की प्राप्ति हलु तुव
 धनजाने दूरम्प दग में
 दूरवनी वारान गवि में —
 घाय हो दुख-व्यथा उगाए—
 सीच-सीच कर भयुधार से ।

‘तो यह बात है । धर्तमानोव श्लोष में पिस्ताया छोकरियो मैं तुमको अपसन्न नहीं करना चाहता लकिन साय ही अपन देश की प्रससा करन स भी न सक्ंगा । हमारे यहाँ क रीत-रिवाज मुम्हारे यहाँ स अधिक सहृदयता लिए हुए हैं, और हमारे यहाँ के धार्मी यहाँ स अधिक मय्य है । हमार यहा इस पर एक लोकोक्ति भी है - स्वापा और उसाम्म सिम में जा मिलती है । परमात्मा की कृपा है कि भाका उसस नहीं मिलती ।’

“जरा रुका ! तुम्हें हमारे वारे में अभी कुछ नहीं माखुम ।” बास्की न कहा । यह बहना कठिन है कि उसन धमकी दी थी अपवा सेम्बी बधारी थी— ‘अप्यथा साकरियों का इनाम तो दो !’

“मुझे क्या देना चाहिए ?

“जितना तुम खुशी से द सका ।”

लेकिन, जब अर्तमानोव ने लड़किया को चांदी के दो
रुबस निकाल कर दिए तो पम्पासोव नाराजगी प्रकट करता
हुआ बोला—

“तुम अधिक दे रहे हो ! क्या दिखावा करते हो !”

“तुम्हें समझना टेढ़ी ज़ोर है ।” इस्या न भी तेज हो कर
नाराजगी के साथ कहा । बास्की ने जोर का ठहाका लगाया और
मिस्तेईकिम की तेज खिलखिलाहट गूँज उठी ।

बचपन की हमजोशिया न बच्चे से ब्रह्म मुहूर्त में बिना
थी । येहमानों के चले जाने के बाद प्रायः सारे का सारा परि-
वार निद्रा में ऐसा निमग्न हुआ कि मानो घोड़े बेच कर साया
हो । अर्तमानोव, प्योत्र और निबिता के साथ बगोषे में बैठा
हुआ था । उसने पेड़-पत्तों और आकाश में उड़ते हुए गुमाबी रंग
के बादलों की धार एक वार देखने के बाद अपनी दाढ़ी में
उँगलियाँ खटाह और तब धीमे स्वर में कहा—

“ये साम मुहफट है प्रेमी और सख्त नही । बेटा
प्योत्र ! जैसा तुम्हारी सास कहे जैसा ही करो । यद्यपि यह
सब घोरतों की बचवास है लेकिन फिर भी आनंदयक है ।
असेकसेई कहाँ है ? क्या लड़कियो को घर पहुँचाया गया है ?
लड़कियाँ उस पसन्द करती हैं लेकिन उसके साथ वे लड़के नहीं ।
बास्की का लड़का उसे नाराजगी के साथ जैसा देगता था
है निबिता । तुम उनक बीच सम्य और मधुर भाषो बने
रहना । तुममें व गुण मौजूद भी है । जहाँ-जहाँ मुझम दरार
पड जाय तम उसे भर देना । इस प्रकार बिमग्न होकर तुम अपने
पिता की सेवा करो ।

फिर उमने लफड़ी क पीपे में भाँज कर देगा और रोय
व साथ साथ—

'सब गटक गए ! घोड़ों की तरह पीत है !' धेता
प्योत्र तुम क्या साध रहे हो ?

धपनी बावस्ता से भट में मिमी पेटी म उंगली फिरात
हूए बट न धीमे स्वर में कहा—

'दहाठ का जीवन शान्त और सरस होता है ।

'तुं इस से बढ़कर सरसता क्या ? दिन भर सोते रहते
हैं ।

ये लोग विवाह के कार्यक्रम को टास जा रहे हैं ।'

जरा धैर्य रखो ।

और धाखिरकार वह दिन भी आ गया जो प्योत्र के
लिए एक अनिश्चित और दुरूह दिन था । इकोन क बारणो में
बड़े प्यात्र ने धनुभव किया कि उसकी शृङ्खुटियाँ निराशा और
क्रोध के उद्वेग से लिखी-लिखी सी हैं । वह जानता था कि यह
बाई घण्टी बात नहीं और उसकी यधू इसे पसन्द नहीं करेगी ।
मकिन इसके लिए वह साधारण था । उसे धनुभव हो रहा था
कि उसकी माँहें किमी मजबूत ताने से बाँधकर लीची जा रही
हैं । उन माँहों के नीचे की धाँसों से उसने प्रतिधियों की धोर
निहाग । उसने बाया का पीछे की धोर फेंका तो हाँप ' क घूस
उससे भड़कर मेज और मतात्या के घूभट पर धा गिरे । वह
भी धपने सिर को मुकाए देती थी । उसकी पलकें यकान के
बारण भुकी जा रही थीं । एक यक्य की तरह वह नय से
पीली पकी हुई थी और शम क मारे बाँप-बाँप उठती थी ।

दुख नहीं !" आमुनी वख धारण किय धड़े बासों बासे

६ हाँप—एक प्रकार की सता जिसका फन सुगन्धि के लिए वीयर
में डाला जाता है ।

पोंपने पादरी न बीसवी बार इन शब्दों का उच्चारण किया था ।

बिना गर्वन झुकाए हो व्योम मे भेड़िए की तरह मुड़कर मठास्या के धूँधट को उठाया और नर कृष्ण स उसके गाता पर अपने मुष्क धर रत्न दिए । उम समय उमन उसको रेणम जैसी भिकनी और कामल स्वभा की शीतलता को भी अनुभव किया । वह मठास्या के लिए दुःखी था और माव ही उम शर्म भी अनुभव हो रही थी । इमी समय मुरा-मण प्रतिधियों को धार स एक आवाज उठी—

मड़के को इतना भी पता नहीं ।

जि ओटों पर निगान कैम हाता है !

‘यदि मैं उसकी जगह पर हाता ता उस ठीक-ठीक नूम लेता ।’

‘मैं भी तुम्हें नूम मनी । वराव क नग में पूर एव स्त्री मराए हुए स्वर स चिन्ताई ।’

बिकनी मुरी व न है । शान्ती थीया ।

अपन दाँठा वा भीच कर व्याम मे मड़दी क धार-कम्पित धरग का गग किया तो प्यार क आवेग स वह मूप के प्रकार स शान्त की तरह विलुप्त होन को तयार हा गई । हा उठी । दून्हा और दुमहिन शमा ही पूर निन किमी प्रकार का धाहार स मिसन क कारण भूग थ । उफनती गनवन दार वराव क वा मिसम शान्त क शान्त व्याम न एक धातरिग उमजता का अनुभव किया । उत भय हुआ कि मदिग की तीव्र गय और उगरी मन्मल धवत्वा उगना मय वगू का प्रवगत न हा आय । उम लग रहा था जैसे कि उमक

बागों घोर की ममी बन्दुओं बन-फिर कर एक रग-बिरगी बन्दु म ममाती जा रही है। फिर कभी उम मास-मास फल फल रूप पहरे की कतारें दिखाई देने लगती। बेटे म पिता की धार ममता प्राप्त हो और राय क माया के साथ दया। मदिन इन्हा घर्तमानाब बिन्दर हुए बामों का पहरे लिए धावग में बाइमाकोवा क गुन्वावी बहर की धार दस्तता हुआ उसके पास जा पहुँचा और बोला—

‘आधा ममघिन ! मैं तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए तुम्हारे मधु का पान करता हूँ। यह मधु अपनी निर्माणकर्त्री क समान मधुरता लिए हुए है।

बाइमाकोवा म अपनी एक धूम-मुझे बाँह लपट उठाई। धनमोल रत्ना और रग-बिरगी होरे जबाहिगता म अदिन बस पर मटकने हुए मुक्ताकार पर मूय की किरणों पड़ी ता वह निममिला उग। और बागों की तरह ठसने भी मदिरा-पान किया था। उमकी सूरी सूरी आँखों में एक हल्की मुस्मान मिन उठी और उमक लुम होठों की फडकन किमी को मडकान क लिए काफी थी।

उन दोना ने अपने-अपने गिमाओं का टकराया और बाइ माकोवा म अपने गिमाय का तुम्हें माली कर दन के बाद अपने ममघी का मुक कर धमिवादन दिया। उमक ममघी इन्हा घर्तमानाब न अपने बड़-बड़े वालों वाले मर का पीछे मडकार कर बटे उमाए और धामन्द म कहा—

घापके गिष्टाचार के क्या कहूँ ममघिन ! य गनियों जमे गिष्टाचार ! परमात्मा मरी मदर करा।

प्योत्र न घनिपयता के साथ धनुमब किया कि उसके

पिता का व्यवहार ठीक नहीं है। मदिरापान में मस्त प्रतिधियों के मध्य बड़े हुए उसन पम्पासोव का ह्व्यापूर्ण विस्मय बास्काया की मन्द स्वर में भस्सना घोर भित्तिबिनि की हल्की सिसलिसाहाट स्पन् रूप से सुनी।

“यह विवाह नहीं एक भवासत है। उसन बिषार किया। उसन फिर सुना—

तनिक देखो। वह पतान उत्थाना की घोर बने पूर रहा है? प्रोह मरे।

‘पादरी क बिना ही यहाँ एक घादी घोर होने को है।’

कुछ क्षणों तक तो य घाट उसक बानों में प्रवेग कर उम पीडित करत रहे लेकिन जैसे ही उसने नतास्या की जीय या कुहनी का स्पण अनुभव किया तुरन्त ही वह पीड़ा न जाने कहाँ मुज्य हा गई। उसके स्थान पर घारीर के झङ्क प्रस्यद्धों में एक गहरी मन्हामी? एक भारी परगानी के रूप में फैल गई। वह अपन मे जिद्द करके अपन सिर को दूसरी घार घुमाए रहा। संपिन वह अपनी धीयों को का म रख सका। य बरबस ही नतास्या की घार घार-घार मुड मुड जाती।

‘यह कार्यक्रम कय तक चलता रहगा? उमन पुसपुमा कर पूछा।

‘पता मही। उत्तर में नतास्या पुसपुमाई।

मुझे तो बड़ी मज्जा अनुभव हा रही है।

‘यही हास मरा भी है। उत्तर मिसा ता उमे बट्ट प्रमसता हूँ कि उम जमी हासत उसकी भी है।

असकमई अगीच में लड़कियों क माप दाबत गा रहा या घोर निबिता भीगा हूँ दाड़ी यान एक पादरी क गाय बैठा या।

उस पादरी की तबिये जैसे रङ्ग की धाँसों बेषक के बन्धों वाले एक बेहरे में झकी हुई थी। मैदान और गभी की ओर खुलने वाली खिड़कियों से बस्ती के लोग झाँक रहे थे। आकाश की नीलिमा में दर्जनों सिर दिखाई देते और फिर बिसीन हो जाते और इस तरह यह सिमसिमा बराबर जारी रहा। वे गप्पे फाड़ फाड़ कर गप-शप करते थे और एक दूसरे पर खिल्ला-खिल्ला कर धावाओं करते। सगता था कि खिड़कियाँ खुले मुँह की बोरियों के समान हैं और उनमें से निकल निकल कर वे शोर करते हुए सिर कमरे में सरबुजों की तरह बिसर कर सुझकने लगेंगे। विषय रूप से निकिता की नजर आई खोदने वाले तिस्रोण व्यासोव के सिर की ओर भगी रही। उसका सिर भास-भास धब्बों से युक्त था और गामों की हड्डियाँ ऊपर की उमरी हुई थीं सगता था जैसे कि वे लाम ऊन में जड़ दी गई हों। उसकी धाँसों, जिनकी नजर बेरङ्ग थी सहसा ही अनोख रूप में हिलीं जैसे कि झमक रही हों। लेकिन यह झपकन धाँस की पृतलियों की नहीं—स्विर बरौनियों की थी। पतले मजबूती के साथ बन्द भयरोँ पर घुंघरासी स्विर मूँछों की छाया थी। उसके कान मह डङ्ग से कपास से सटे हुए थे। वह खिड़की की दहली से अपनी छाती घड़ाए झड़ा था। दूमरे सोमों की धक्का-मुक्की के वाकबूद भी वह किसी को फोस नहीं रहा था। वह सिर्फ अपनी कोहनी धमका कन्ये से धीमे से उन सोमों को हटा देता। उसके ने चौड़े कन्ये डामू और गोम से और उसकी गर्दन उनमें धँसी हुई थी। सगता था कि उसका सिर सीधे-सीधे सीने में से निकला है। यही कारण था कि वह भी बुवड़ा-सा दिखाई पड़ता था। निकिता ने उसके बेहरे पर एक प्रकार की आत्मीयता और दया का भाव अनुभव किया था।

इसी समय एक काने नबयुवक ने अधानक 'तम्बोरिन' पर हाथ दे मारा और उसक बमड़े पर उज्जलियाँ पलाना शुरू कर

दिया । तम्बोरिन^७ न डप-डप की । किसी न तेज सीटी बजाई
घोर बूसरे न झकादियन^८ पर राग छेड़ दिया । माटा, बुंघरास
वालों बासा बधु-सन्ना स्मोडा कमरे के बीच नृत्य के लिए पाँच
बसासा हुआ बबकर बाटन लगा घोर बजत हुए साजा के साथ
उसने गाना शुरू कर दिया—

हे, तछणिया ! हे प्यारे बिराधियो
नाचते गाते प्रमुदित माधिया !
किसकी जेधें मरा स्वणु से—
धस-धस करती ? केवल मरो !
झाधो, झाधो रगमंथ पर
स्पर्धा कर-स्वणु छीन मो ।

धसाधारण प्राकृति बासा उसका पिता यन्त्र उठा—
'म्यापका ! धपने पहर की नीधी न होम देना इन
कुस्की मुर्गों को बुद्ध बीसल ता दिखामो !

इस पर इत्या अतमानोब एकदम उद्यम पडा । उसका
पहरा तमतमा उठा या नाक धंगारे के समान साम-आमुनी
रङ्ग की हो गई था । उसने धपने इमे-मूम मिर का पीछे मर
काग घोर तभी धाम्की बीच उठा—

कुस्की मुर्गें कौन कहता है ? हम भी दग्ने हैं कि भाषमा
किसको धाता है । धस्याना !

अधमात हुआ बहर पर मुम्कराहट निग धमकेई द्वयमात्र
मगर के नर्तक का एक राग दग्ता रहा घोर मिर धधानक ही
बह धप्रत्यागित गति मे धरे मे सद्विधिया की-नी धाबाज म
धीगता हुआ बबकर बाटन लगा ।

^७ तम्बोरिन—एक पाछ यत्र डफ ।

^८ झकादियन - एक बाध यत्र जो हारमानियम की तरह हाता है ।

“वह गाने का एक शब्द भी नहीं जानता । द्रयमास के बासिन्दे चिन्ताएँ । इस पर अर्तमानोव राप के साथ गरज उठा—

“अल्योशा ! मैं तुम्हें मार डालूँगा ।

अपन पाँवों का ठुमक-ठुमक कर रखते हुए अल्योशा ने हाठों पर अपनी दो उंगलियाँ रखी और जानो को फाड़ देने वाली सीटी बजाकर स्पष्ट स्वरों में गाना शुरू कर दिया—

या मुझे जब सरदार,
 खूब निकासे सबक मार ।
 धाज उमाना तेमा बन्धा
 बही मुझे धाज परोम—
 अपने लिए वाबन-गल ।

“अब मुनो ! अर्तमानोव बिजय पाने की लुगी में मूअर की तरह चिन्ताया ।

अहा ! पादरी ने सामिप्राय चीख कर कहा और सिर को एक भटका देकर एक उझसी उठाई ।

‘अल्योशा तुम्हारे नर्तक से बाजी मार ल जाणगा ।
 प्योत्र ने मत्तार्या से कहा तो वह उत्तर में धीमे स्वर में बोली—
 हाँ उसका पाँव बड़ा हल्का है ।

दोनों लडकों के पितामहों ने अपन अपने पुत्रों को सड़त हुए मुर्गों की तरह उल्टाहित किया । दोनों ही नव में भुल कंधे से कच्चा मिड़गा एक स्थान पर लड़े थे । उनमें से एक जई के बोर की तरह विदाम और मही आकृति का था उसकी जान-भास आँसों में उमल प्रमदता के आसू भर रहे थे ।

दूसरा व्यक्ति गठीसे घौर बसे हुए दारोरे का था जैसे कि वह अपने पूर्ण जीवन में हो। उसकी सम्बन्धी बुजाएँ फड़क रही थीं घौर हृषणियों से वह अपने जयाघों को पपयपा रहा था। उसकी धाँसे एक उग्माह से मरी हुई थीं। अपने विता के जबड़ा की हरकत घौर हिमती हुई बाड़ी को देख कर प्याप ने गम्भीर रूप में विचार किया—

‘वह दाँतों को पीस रहा है। हो सकता है वह किमी पर मोट कर बैठे।’

‘नाथ तो बड़ा बेडगा है घर्तामानोब।’ माथ्यान्ना बास्कारिया ने किमी धानु के मिरने जैसी धायाज में कहा ‘पाँचों की पिरकन नहीं सामन्वर न मिलान मही। कुछ मही बहुत मड़ा है।’

तब जैसे गाप घौर पक्क रग न चहरे बासा इत्या धर्ता मानोब गूब जोर न हँसा। माथ्यान्ना बास्कारिया की मोटी भौंड़ी नाक पर उसे हँसी धाई थी। वास्की का लड़का महारदा कर दरवाजे के निकट जा गिरा घौर धामकसई सबमुष बाजी मार में गया। इत्या घर्तामानोब न बाइमाकोवा की भुजा को बड़ बहूद मरीक में पकड़ कर धादगात्यक स्वर में कहा—

धाघा ममधिन। धब आपकी धारी है।

बाइमाकोबा पीसी पड़ गई उगने दूम्ने हाव से उस पन्ना देने का प्रयत्न करत हुए गाप घौर विम्मय के साथ कहा—

बर्त पायस ता नहीं हो गए? तम्हें पता मही कि यह उचित नहीं है?

एकत्रित महमाग एकदम धुग पड़ गए घौर फिर धूर्मता पूवक गिरसिमाने लग। पय्यान्तोब न बास्कारिया की धौर दगा।

उसके सब्द लेल की धार की तरह सिस-सिस करत हुए निकले—
 'कोई बात नहीं उल्याना ! हमारी खुशी के लिए ही तुम
 नाचो ! ईश्वर तुम्हें क्षमा कर वेगा ।

"इस पाप का जिम्मेवार तो मैं रहूँगा । अर्तमानोब
 बोसा !

सगता था कि उसका नशा बढ़ गया है । वह त्यौरियाँ
 बढ़ाए भागे बढ़ा जैसे कि वह मुझ करने आ रहा हा, जैसे कि
 वह अनिच्छा स भागे बढ़ रहा हो । तभी किसी ने बाइमाकावा
 को भागे की ओर बकेल दिया । मन्मत्त महिला किमकती हुई
 सड़सड़ाते कदमों स भागे बढ़ गई । उसने अपने कर्षों को भटका
 देकर पीछे फका और फिर अपन सिर को हिलाते हुए बह घेरे
 में नृत्य करने सगी । प्योत्र ने कौपती और भयभीत आवाज स
 सोगों की जानाफसी सुनी—

'परमात्मा तू ही रक्षा कर । अभी पति को मर एक साल
 भी नहीं हुआ कि इमने अपनी पुत्री का बिवाह रजा दिया और
 फिर शादी की खुशी में खुद नाच भी रही है ।

प्यात्र न अपनी पत्नी की ओर नहीं देखा था मेकिन फिर
 भी उसे अनुभव हुआ कि वह अपनी माँ के आचरण के कारण
 सञ्जित है । वह धीमे से बुदबुनाया—

पिताजी को नाचना नहीं चाहिए था ।

म माँ को भी उसन शोक के साथ भीभी आवाज में
 कहा । वह बेंच पर सड़ी सोगों के सिरों के ऊपर से दृष्टि आसतो
 हुई उस रगस्थनी की ओर देख रही थी । सहसा ही उसन
 चकरा कर प्योत्र के कर्षों को पकड़ लिया ।

"सावधान रहो ! उसन अपना दुकार बिलेरत हुए और
 अपन हाथ स उसकी बोहनी को सहारा देकर कहा ।

सूर्यास्त की रक्तिम प्रकाश धृती हुई लिङ्को से निकल कर लक्ष्मी के निर्गो पर विखर रहा था। और इसी प्रकार से चम्पुविहीन प्राणिमों की तरह एक पुरुष और एक महिला नृत्य करते हुए घर में खककर काट रहे थे। दरवाजो के बाहर खोले प्रांगण और गली में साग ठहाके लगा कर हँस रहे थे। मकिन उस कमरे में हम घातने वाली शान्ति छाई थी। तम्बोरिन पर मण्डित नर्म मन्द स्वर में त्रप-त्रप ध्वनि निकल रहा था और अकार्णिक की कर्कश ध्वनि तीव्रता में उठ रही थी और तन्मय तरंगियों से घिर के बोना उमस होकर नृत्य करते खककर काट रहे थे। कई उम्र के साग खरी तमयता में बैठे उस नृत्य का दाय रह के जमेनि वह एक अमाधारण महत्त्व रखता था। अधिकांश बुजुर्ग साग बाहर प्रांगण में चल गा थ और वहाँ सिफ नग में घुस पड़े ब्यक्ति ही रह गए थे।

अपानय ही अर्थात्मानाय धरती पर पाँव पटक कर लडा होगया— उस उम्याना न्यानायना तुमने मुझसे वाजी मार ली।

श्री शोक उठी। वह भी भाषककी हावर गयी हा गई जमेनि उमर सामन कोई पत्थर की दीवान घा गई था। शर्कों के घरे की धार अविवादम के लिए भुवती हुई बह योनी—

घाव साग मुझे दाय न हीजिएगा। और इतना कह कर यह तुम्हें ही अवन नमाम ग हवा करती हुई कमरे में बाहर निकल गई।

धव वास्कीया के मैदान में उत्तरन का भारी थी। उसन घापणा की—

दून्हा और दुमहन अलग अलग किए जाय। प्यात्र तुम मर माय बना। दूह के रखाका तुम साग दग बहिा मे पकटना।

सभी दूल्ह क रखवा का एक घोर हटा कर उमक पिता न धपन मारा हाथों का बट क बाधा पर रखत हुए प्राणावाद दिया—

‘बाधा ! परमात्मा मुम्हें मुक्ती रख । घोर इतमा कह कर उसन उस धपन धाविङ्गन म कस कर धसग कर दिया ।

दूल्ह के रखवा ने प्योत्र की भुजाओं को धाम लिया । धास्कीया दीए—दीए एकनी हुई मुनमुनान सगा—

इ पू ! न धीमारी न दु ल न ईर्ष्या घोर न धप्रतिष्ठा । पू ! प्राग घोर पानी—ममय धार स्वान दक्षक ही दुर्भाग्य घोर मुख का मृजन करने है ।

उसक पीछे धसकर जब प्योत्र मतान्या के कमर म परुषा ता उमन वहाँ कामल गह दार पलङ्ग बिछा टुषा देता । यह बुद्धिया कमरे के बीच पड़ी एक कुर्सी पर सारा वजन डाल कर बैठ गई ।

मुनो घोर याद रखता । उसने गम्भीर धार्मिक भाव से कहना शुरू किया— धाधे जबल क य हा सिक्क धपने जूता की एड़ी म रख सा । जब ननाम्था धाए घोर तुम्हारे जूता का उतारने को झुके ता तुम उस उतारन न दना ।

यह सब किसलिए ? प्यात्र न म्लानमुख स पूछा ।

यह तुम्हारे समझने की बात नहीं । तीन बार उम उतारने स रोचना घोर चौथी बार उस उन्हें उतार मने देना घोर तब यह तुम्हें तीन बार बूमगी घोर तभी तुम उस धाधे जबल के ये सिक्के दे देना । घोर कहना मरी बासी मरे नायब यह मैं तुम्हे देता हूँ । इसे सुनोग ता नहीं ! अथवा फिर तुम धपने कपड़ उतार डालना घोर उसकी धार पीठ करके सट जाना । तुमसे बह रात भर पास सात की प्राधता करेगी ।

लेकिन तुम चुप पड़े रहना और जब वह तीसरी बार निवेदन कर ता अपना हाथ बढ़ाकर उसक हाथ का घाम लेना—समझ गए ? अच्छा और फिर ।

प्यात्र बिस्मित हाकर काले गङ्ग के पीड़े चहर वाली उपदणिका की घोर घूरता रहा । वह अपने हाथ को घाटती नयुनों को फुसाता और स्मास से घिबनी गान और गाना के पमीन का पाछसी हुई वहाँ बैठी रही वह दहाती भाया म निर्सञ हाकर बड़ी चतुराई और धारीकी के साथ उस उपदेन देती रही थी । अन्त समय उसन फिर बुहराया—

उसके भीमन-बिस्लान और धाँसूधा का ध्यास न करता । और यह कर वह अपने पीछे धाराय की मादक गंध छोड़ती हुई मङ्गलदात हुए अन्दरों में अपने से बाहर निकल गई । प्योत्र एक उमादपूर्ण क्रोध से भर गया । उसने अपने अंतों को उतार कर फक दिया और अल्दी से कपड़े उतार कर वह उखलत हुए विस्तर पर चढ़ गया जस कि वह घाड़ पर सवार हो रहा था । अपने हृदय में अपनेमान के कारण उठन हुए स्दन को दबाने के लिए उसने अपने पीता को ओर से भीच लिया था ।

‘दमदसा दातान ।’

जब रोएँदार कामस विस्तर उम गरम अनुभव हुआ ता वह उम छाड़कर मिडकी के निकट जा पहुँचा । उसन मिडकी का ग्यावा ता बगीच की धार में जाना का चहरा कर दन बासा धराबिया का धार हूगी के तेज टहाक और मङ्कियों की-मी मिलगिलाह— उम मुनाई दी । नील-कम्क धन्धवार में पड़ा के भीच वाली छायाएँ घूम-फिर रही थीं । गन्त मिहामा की पतमी मीनार ताँव की एक उद्गमी की तरह धाममान को घष रही थी । उम समय उसका पवित्र ‘वास दिग्दाई नही द रहा था क्योंकि उम गुनदगी गाना अज्ञान के लिए उतार लिया

गया था। घन की धनों क ऊपर न जाती हुई उसकी दृष्टि उमरत हुए अन्द्रभा क पीले प्रकाश में निर्मलिसाती हुई आका नदी और उसके पार दूर तक फल जङ्गलों के बाले रत्ना-भिमा का घार गई। और तब उम एक दूमर वद्य की याद घा गई—एक विद्याल देस की जो मुनहरी फसला स भरे मैदाना क कारण मुदाहाल था। वह एक आह भर कर रहु गया। बहुदगी लिए हुए हँसी की तिसखिसाहट और पाँवों की ध्वनि भान न सुनाई दी। वह फिर अपने विस्तर पर आकर लेट गया। दरवाजा खुला और रगमी फीसों की सरसराहट और जूता की चरमर हुई। किमी न एक आर्द्र दीप स्वास लिया दरवाज की साँस खटखटाई क्याकि वह बन्द किमा हुआ था। प्योत्र न सावधानी क साथ अपने घिर को ऊपर उठाया। दरवाजे के ठीक भीतर की तरफ कमर क बाधे तमाकृत भाग में एक शुभ्र-मूर्ति खड़ी थी जिसन सगमग अभीन तक भुक्कर आस का चिह्न बनाया।

‘वह प्रार्थना कर रही है। मैं तो की नहीं। यद्यपि प्रार्थना करने की उसकी इच्छा भी नहीं थी।

नतास्या यश्चेना उसने बड़े कोमल स्वर में कहा
‘इरो नहा मैं स्वय भयभीत और पना हुआ है।

उसने धानों हाथों से अपने आसों का यथास्थान क्रिया और उन्हें कानों पर घुमाते हुए वह धीरे से बड़बड़ाया—

जूतों को उतारने और ऐस ही अन्य काम करने की आवश्यकता नहीं। यह सब कारी भूतता है। मेरे हृदय में पीड़ा हाती है और वह धीरेत भूर्त्तापूर्ण बकवास कर गई है। दसो चीखना नहीं।

एक और हटत हुए वह सावधानी से कमरे को पार करती हुई खिड़की क निटक जा पहुँची और बाहर दखती हुई वह कोमल स्वर में बोली—

'साग अभी भा घानलासब मना रह है ।

'हाँ ।

बहुत दूर तक व इसी तरह निरपेक्ष बातचीत करते रह ।
दाना थक हुए और किसी कारणवश कित्त म थं और एक-दूसरे के
निकट पहुँचने का मिश्रण दानों में स काई न कर पा रहा था ।
भार के समय मीठियों पर पदथाप मुनाई दिया और दीवाल को
किसी न धपधपाया । नतास्या द्वार के निकट जा पहुँची ।

'यदि वास्कीया हा तो उस अन्दर न घान दना । व्योत्र
न फुसफुमाते हुए कहा ।

यह ता माँ है । नतास्या न साँसल आसते हुए कहा ।
व्योत्र पसंग पर पाँद को मटका कर बठ गया । वह स्वयं अपने
स अस्तुष्ट था और उदासीन हाकर बिचारा में लोया हुआ था—

मैं भसा नहीं हूँ । मुझमें साहस नहीं है । वह मुझ पर
हँसगी । अभी तक मैं प्रतीक्षा ही कर रहा हूँ ।

तभी दरवाजा खुला और नतास्या धीरे स बानी—

माँ तुम्हें घुमाती है ।

नतास्या ने अंगीठी प ऊपर न भाँका । मफे टाँग न
बनी उस दोबाल न महार लड़ हाने मे बह मगभग अहंय-सी हो
गई थी । प्यात्र बाहर खला गया । दरवाजा न बाहर न घुबसक
म जोधिन और भयभीत बाइमाटावा तर्ती न साथ फुसफुमा
रही थी—

'प्यात्र इमिच तुम क्या कर रह है ? मुझे धीर मरा
बटा को घरबा सगाना चाहत हा क्या ? अब मुझ हाम का है
धीर धीघ्र हा व साग तुम्हें जगान का यहाँ घान बाउ है । मैं
अपनी लडकी की रात की कमीज दिखाना चाहती हूँ तिसम रि
के लोय जान में कि मरो लडका गवधी है ।

यह कह कर उसने एक हाथ से प्योत्र क कंधे को पकड़ा और दूसरे से उस दूर धकेल कर विषादपूर्वक कहा—

“यह क्या है ? तुम दुर्बल हो क्या ? अथवा तुममें उत्साह नहीं है ? जवाब दो ! मुझसे डरो नहीं !

प्योत्र मूर्खतापूर्वक कह उठा—

“मुझे उस पर दया आती है और मैं डरता भी हूँ ।”

अथपि उसने अपनी सास के चेहरे की घोर दृष्टि भी नहीं उठाई थी फिर भी उसे प्रतीत हुआ कि वह धीमे से हस दी थी ।

‘तुम जाओ और मर्द की तरह अपना काम करो । संस्र काइस्ताफर की प्रार्थना करना । जाओ ! धरे जरा ठहरना तो, घूम तो खूँ ।

अपनी बाँहों में उसे कसकर आसिगन करत हुए उसने मधुर बिपबिपे अक्षरों से उसे घूमा । उन अक्षरों से मविरा की उत्सवक गन्ध निकस रही थी ।

प्रत्युत्तर में अभी वह पुम्बन सेना ही चाहता था कि वह खसी गई । उसके सर्दाइ बुम्बन की ध्वनि वायु में विनीत हो गई । प्योत्र कमरे में वापिस आया और कमरे का दरवाजा बन्द कर देने के बाद उसने अपनी बाँहों को पूव निम्नयानुसार फला दिया । मड़की धामे बड़ कर उसके आसिगन में बँध गई और काँपत हुए स्वर में बोनी—

“माँ अत्यधिक मविरा-वान किए हुए थी ।”

ये एस शब्द नहीं थे बिनके मुसरित होने की आशा प्यात्र ने की थी । पसग की घोर पीठ करता हुआ वह धीमे स्वर में बोला—

“डरो नहीं । हो सकता है कि मैं सुन्दर न लगूँ लेकिन मैं दयालु तो हूँ ही ।”

वह उससे धीरे अधिक सटत हुए फुसफुसाई—

“धन मेरी टांगों में दम नहीं रहा, मैं फिर खड़ी हूँ।”

इधमोब बासी धानम्बोत्सव धीरे दावतों के बड़े धौकीन थे। विवाह का वह उत्सव पाँच दिन तक चला। नगरबासी सुबह स सेकर धापी रात तक भूमती-भामती भीड़ के रूप में गलियों में यहाँ-वहाँ घूमते रहे। सबसे धानदार विवाह-भोज वास्की-परिवार ने दिया था। लेकिन धोलगा धोसोबा का धपमान करन के कारण धलकसेई ने उनके लड़के की मरम्मत कर डाली। उसके माँ-बाप ने जब शिवायत की तो धर्तमानोव धत्य धिक धधम्मित होकर बोला—

“किसने सुना है कि लड़के धापस में नहीं लड़ते भगइत ?”

उसने लड़कियों को रंग-धिरगे धीले धीरे धरपूर मिठाई दो धीरे लड़कों को पैसे दे कर धुध किया। माता पिताधों को धरपूर मधिरा-धान कर के बस में कर लिया धीरे जो भी सामन धाया उसका धामिगन करत हुए कहा—

धयों बाधसाहा यह जीवन जो कुछ है न ?”

इन दिनों धर्तमानोव का धाधरण बहुत उधम धीरे बोला हस पूर्ण था। वह धेधधक हो कर धपरिमित मधिरा-धान किया करता जने कि वह धपनी धान्तरिक धग्नि को बुधा रहा हो। वह पीता था परन्तु मधमल नहीं हो पाता था। स्पष्टत वह पिधम दिनों की धपेधा किसी कधर दुबल हो गया था। यधपि यह उध्याना बाधमाधोवा ने दूर ही दूर रहा करता था, परन्तु उगके पुत्रों न भीप लिया कि वह उसकी धार धृध्य धीरे गंत्य दृष्टि न देना करता है। धपनी धक्ति की डींग मारत हुए उगने मगर की रसाधं तनात मैनिधों न धिराध में उंठा उग

सिमा । दूसरी बार फिर एक फायर-मैन और तीन राबो को भी परास्त कर दिया । इस पर साई सादने बासा तिस्रों ब्यासोव एक प्रस्ताव न मकर अपितु चुनौती क साथ सामने प्राया—

मम भाओ मेरे साथ ।

उसके कहने के डङ्क से अचम्भित होकर अर्तमानोव ने मारी बलिष्ठ संदक खोदने बासे की ओर सिर से पाँच तक विस्मय से देखा और बोला—

‘तू बलवान भी है या सिर्फ अभिमानी हो !’

‘मैं यह नहीं जानता ! उसने उत्तर दिया ।

एक दूसरे को कमर से पकड़े हुए वे दोनों कुछ समय तक बिना किसी परिणाम के लीचा-तानी करके जोर धाजमाते रहे । ब्यासोव के कंधों के ऊपर से देखता हुआ इत्या निर्लज्जता से जियो की ओर झेंसे मारता रहा । वह संदक खोदने बासे से सम्बा किन्तु पतसा-दुबला और शारीरिक गठन में कुछ अच्छा था । ब्यासोव ने उसकी छाती से अपना कंधा भिड़ाया और अपने प्रतिद्वन्दी को अपने पीछे उलटना चाहा । लेकिन पुस्त और साबधाम इत्या मुरन्त समझ गया और बोला

‘यह कोई नाम नहीं, भाई ! यह बहुत ही मामूली है ।’

अचानक दाँत भीघते हुए उसने ब्यासोव का अपने सिर से ऊपर उठाकर ऐसे जोर से फेंका कि गिरते ही अदक खोदने बासे की टाँगें मुझ पड़ गई । घास पर बैठ कर अपने गालों से पसीना पोछत हुए ब्यासोव ने अग्निज्ज होकर कहा—

‘बलवान् तो है ।’

‘यह तो हम भी देख रहे हैं’ पसकों ने मसोस करते हुए कहा ।

‘यह बहुत बलवान् है’ ब्यासोव ने दुहराया ।

इत्या न उसकी धोर एक हाथ बड़ाते हुए कहा —

‘तड़ा हो था !’

सदक खोदने वाले ने बड़े हुए उस हाथ को घस्तीमार करते हुए स्वयं तड़ा होने का प्रयत्न किया—परन्तु विफल रहा। वह फिर टाँगें फलाकर कस्तुर्यामरी घाँसों से मीठ की धोर दखने लगा। निकिता उसके पास आया और सहानुभूतिपूर्वक बोला—

“दख है क्या ? मैं सहायता करूँ ?”

सदक खोदने वाला मीरस हँसी हँसा—

“मेरी हड्डियाँ में दर्द है। यद्यपि तेरे बाप में मैं अधिक बलवान् हूँ परन्तु वह किसी हथोर पुर्तुला भी है। घाघो, सरस हृदय, निकिता ! चलो, इनके पीछे-पीछे चलें।

और, वह मित्रतापूर्वक बुबड़े निकिता की बांह पकड़कर मीठ के पीछे-पीछ चल दिया। बीच-बीच में वह जार से पाँव पटकता जाता—‘घायन’ टाँगों का दर्द का वह इस प्रकार ही शान्त करना चाहता था।

मवयुवक दम्पति कई रातों की अनिद्रा और थकान से थूर हान पर भी प्रदर्शन और मुसाकाठ के लिए सोपों का घर जाते रहे। वे, गलियों में बोलाहल्य करती मधमस्त रंग-बिरंगी भीड़ के पीछे अनिच्छापूर्वक चलते और जगह-जगह आते-पीते, बेहोशी में माना प्रकार के निसंज्यतापूर्ण घस्तील परिहासों को सुनते। उन्हें बोधित करनी होती थी कि वे एक-दूसरे की धोर न दें, और न बात धीत ही करें। बांह में बांह डाले और मदा एक-दूसरे के बराबर बड़े व घस्तील की तरह अपने आप में ऊबे हुए रहते। माग्गोभा बाग्गिया उनके दम आचरण का प्रसन्न थी। वह इत्या और उष्माना का माग्गोभा पूरने लगती—

‘तेरे बेटे को मैंने प्रच्छी तरह सिनाया-पढ़ाया है न ? मैं तो ऐसा ही सोचती हूँ ! उल्याना, देखो तो ! तेरी बेटी को मैंने कौसी शिक्षा दी है ! और, तुम जमाई के बारे में क्या कहती हो ? मोर की तरह कैसा चमता है ! कहता है मैं—मैं नहीं हूँ और यह—मेरी पत्नी भी नहीं !’

परन्तु अपने धयन-कक्ष में पहुँचकर प्योत्र और नतास्या दोनों ही अपने अपने कपड़ों के साथ उन पावनियों को भी उतार फेंकते जिन्हें कि वे जनसाधारण क वीच कर्तव्य-रूप में स्वीकार कर सते थे । परम्पर बैठकर वे दोनों फिर दिन भर के अपने-अपने अनुभवों को सुनने-सुनाने में व्यस्त हो जाया करते ।

‘तुम्हारी और के सोग तो पीते भी मूख हैं ?’ प्योत्र आश्चर्य के साथ कहता ।

‘और तुम्हारी और के क्या कम पीते हैं ? उसकी पत्नी पूछने लगती ।

‘किसानों को क्या इस प्रकार पीना चाहिए ?

‘तुम ता किसान प्रतीत नहीं होते ।

‘हम भू-स्वामियों में न हैं अर्थात् हम एक प्रकार के कुसीन भाग हैं ।

कभी वे परस्परसिङ्गन में बंधे लिङ्गकी के पास बैठे दगीष स घामे बागी मुगधित वायु का चुपचाप सेवन करते रहते ।

‘तुम चुप क्यों हो ? पत्नी धीरे से पूछती । पति भी उसी प्रकार धीमे से ही उत्तर देता—

‘साधारण बातचीत की इच्छा नहीं ।

‘कोई खास बात या न को है नहीं ।’

बह घसाधारण बातें सुनना चाहता था । परन्तु नतास्या

यह जानती नहीं थी। जब वह स्वयं ही उसके सामने सुनहरी मरुभूमि की नि सीम विद्यासत्ता का वर्णन करता तो वह पूछती—

“तो वहाँ जङ्गल वगैरह कुछ नहीं थे ? घोह, वह कितना भयानक होगा !

“मम तो जङ्गलों में है प्यात्र न ऊबते हुए कहा ‘मरुभूमि म किसका भय हो सकता है ? वहाँ इसी तरह की भूमि है, आकाश है घोर में ।

एक धार जब वे दोनों गिड़की के पास सारोंभरी रात में भूक-भ्रानन्द के साथ निहार रहे थे उन्होंने स्नामागार के समीप धगोच में किसी की आहट सुनी। कोई दौड़ रहा था रसभरी की भाड़ियों में भटक रहा था। इसका बाद एक कोप पूरा हसकी आवाज भी सुनाई दी—

“क्षैतान कहीं का यहाँ क्या कर रहा है ?’

भयभीत मत्तास्या एकदम उछल पड़ी।

‘मह तो माँ हैं।

प्यात्र न गिड़की म अपनी चीड़ी छाती को भिड़ाव हुए उषर कर बाहर का भौंका। स्नामागार के पास उमका पिता पड़ा था घोर उसकी माम का दीवार की घोर भीषकर उम भूमि पर गिरान की कागिग कर रहा था। श्री गपप करती हुई उससे गिर पर बात कर रही थी घोर हाँकना हुई फुसपुसा रही थी—

‘मुझे झाड़ा महीं ता मैं चिम्माऊँगी।’

फिर यड़े आषग म वह बानी—

“प्यारे मुझे मत्त टूपा ! मुझ पर दया करो।”

प्योत्र ने लिहकी का धीरे से बंद कर दिया और अपनी पन्नी को बांहों में जकड़कर उसे अपनी जाँघों पर बैठा लिया ।

“तुम बाहर मत भ्रँको ।

वह उसके प्रासिङ्गन में बँधी बग खाती हुए विस्मयी रही—

“क्या बात है ? वह कौन है ?

“पिताजी हैं । उसे बसकर पकड़े हुए प्योत्र ने उतार

दिया, क्या इतना भी नहीं समझती ?

“भोह ! वे कैसे ?” वह भय और लज्जा से बोली ।

पति उसे विन्तन पर ले आया और भीमे से बोला—

‘यह हमारा काम नहीं कि हम माँ-बाप की मूर्तियों को दखें।’

अपने सिर को दोनों हाथों में धामे हुए जतात्या और से हिलती हुई आकार्त भाव से बोली—

यह पाप है एक भीषण पाप ।

‘परन्तु हमारा नहीं ? प्योत्र बोला । फिर अपने पिता के शब्दों को स्मरण करता हुआ कहन लगा ‘सम्य समाज हम में भी अधिक बुरे-बुरे कृत्य करता है । इसके असावा अण्डा तो यही रहा कि वे तुम्हें परेपान न करेंगे । वे अत्रुर्म हैं मीचे-साधे हैं । लेकिन पुत्र-वधु से छेड़लानी करना उनकी निगाह में पाप नहीं । दली सब भीलो-बिस्सायो नहीं ।’

घाँघों से अघु छनकाती हुई पत्नी बोली—

“मे ता तभी समझ गई थी जब वे साध-साध नाचने लग थे यदि वे उससे जबर्दस्ती करते हैं तो हम क्या कर सकते हैं ?’

अपम मानसिक आशेय से यक कर वह कपड़े उतारे बिना

ही यार्दी नौद में सोचई । प्योत्र म बगोज की घोर वासी
 लिङ्की गाली, वहाँ कोई नहीं था, सिफ प्रभातकासीन वायु
 बह रही थी घोर महकत हुए पुष्पसने में बुरों की हासियाँ
 पम्पर हिम रही थीं । लिङ्की का गुना छोट वह घास सोने
 पत्नी के निकट ही सेट गया घोर पिछली पत्ना पर सोच-विचार
 करने लगा । कितना अच्छा हो यदि नतात्या घोर में—दानों
 विमो द्यान्-म फार्म पर जीवन-यापन करें ।

नतात्या जल्दी ही जग गई । उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि
 वह अपनी माँ के प्रति दया घोर उसके अपमान व प्रति सहानु
 भूति से जाग उठी है । नये पाँच सिर्फ रात की बमीज में
 ही वह शीड़ियों से नीचे पहुँच गई । माँ के कमरे का दरवाजा
 जो रात के समय सदा बन्द रहता था आज खिस्तुस
 गला पदा था । इसमें वह घोर भी डर गई । परन्तु किसी
 तरह धीरे धीरे कोने में पड़े माँ के पसल की घोर उमन दमा
 ने धार के नीचे एक सुपे उमार-सा था घोर ठकिए पर
 लाल-लाले काम सिगरे था थे ।

फिराया और इस प्रकार अपने बेहरे को ठाका कर उसमें सास पाक-बदरी^१ इकट्ठी करने के लिए भुकी और बिना किसी माराजगी के अपने समुर के बारे में सोचने लगी। भारी हाथ से उसकी पीठ थपथपाते और हँसते हुए पूछने का उसका एक तरीका था।
 'क्यों जीवित है ? सांस ले रही है ? अच्छा-बी !'

स्पष्ट था कि उसके पास उसके लिए दूसरे शब्द नहीं थे। वह उसकी प्रेमपूर्ण थपथपानियों से जो थोड़े को ही शोभा देती थोड़ी-सी माराज थी।

'कैसा डाकू-सा है' वह सोचती और समुर के प्रति वैमनस्पतापूर्ण भावों के लिए अपने को रोक न पाती।

बिड़िया पारों और बहबहा रही थी और पेड़ों के पत्तों से रेघमी सगराहट हो रही थी। शहर के सुदूर छोर पर एक गड़रिए ने बाँसुरी बजानी शुरू की और बसावा के स्पष्ट प्रकाशमान नीरव तट से जहाँ मिस सगाई जा रही थी मानवीय ध्वनियाँ धससता लिए वायु में तरने लगीं। अचानक एक आहट हुई तो नतान्या न भौंक कर अपना सिर उठाया। ठीक उसके ऊपर से वे पेड़ पर एक बिड़िया फँदे में फँसी छुटकारे के लिए बुरी तरह फड़फड़ा रही थी।

यह किसने जान बिछाया ? निकिता न ?
 तभी बगीचे में कहीं मूखी डाल के टूटने की आवाज आई। जब वह घर की ओर सीटी और उसने अपनी माँ के कमर में झँका ता विषवा धाँप छोले कमर के बल पड़ी हुई थी। उसकी एक बाँह सिर के नीचे थी और बाँहें आश्चर्यभाव से तमी हुई थीं।

^१ पाक बदरी—मंगूर जसा एक फल।

ही गाड़ी नींद में सो गई । प्योत्र ने बगीचे की घोर वासी सिड़की खोली, वहाँ कोई नहीं था, सिर्फ प्रभातकामीन वायु वह रही थी घोर महकते हुए घुँघसके में वृक्षों की शक्तियाँ परस्पर हिस रही थीं । सिड़की को खुसा छोड़ वह धाँध खोले पत्नी के निकट ही सेट गया और पिछली घटना पर साध-विचार करने लगा । कितना प्रच्छा हो यदि मतास्या और मैं—दोनों किसी छोटे-से फार्म पर जीवन-यापन करें ।

मतास्या बल्दी ही जग गई । उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी माँ के प्रति दया और उसके अपमान के प्रति सहायु भूति से जाग उठी है । मने पाँच सिर्फ रात की कमीज में ही वह सीढ़ियों से नीचे पहुँच गई । माँ के कमरे का दरवाजा जो रात के समय सदा अन्दर से बन्द रहता था आज बिस्कुम खुला पड़ा था । इससे वह घोर भी डर गई । परन्तु किसी तरह भाँक कर कोने में पड़े माँ के पसग की घोर उमन देखा कि बादर के नीचे एक सफेद उभार-सा था और तर्किए पर पर कास-कासे आस बिलारे हुए थे ।

'वह मो रही है । वह कैसी रोई हागी और कितना दुःख हुआ होगा !'

माँ की अपमानित आत्मा को शांत करने के लिए उसे ब्रुद्ध-न-ब्रुद्ध करना चाहिए था । वह बगीचे में गई । घोर में गीली घास में उसका पाँवों में अपनी शीतलता से मुदगुदी की, मूर्ध भी अभी वृद्ध-पत्ति के निगर पर छाया ही था लेकिन उसकी तिरग्यी निरगों में उसकी धार्यों का चकाचौध कर दिया । वे निरगों तत्रिक उष्ण भी थीं । उसने घास मने कष्ट-मीनाश' के पत्र को ताड कर पहल अपने एक गाल पर और फिर दूसरे पर

* कण्ठीमाश- एक प्रकार का पोषा जो ऊपर जमीन में होता है ।

फिराया और इस प्रकार अपने चेहरे को ताजा कर उसमें लाल पाक-बदरी^१ इकट्ठी करने के लिए भुकी और बिना किसी नाराजगी के अपने ससुर के बारे में सोचने लगी। भारी हाथ से उसकी पीठ थपथपाते और हँसते हुए पूछने का उसका एक तरीका था।

‘क्यों बीबित है ? सास ले रही है ? अच्छा-जी !’

स्पष्ट था कि उसके पास उसके लिए दूसरे शब्द नहीं थे। वह उसकी प्रमूर्ण थपथपानों से जो बोझ को ही शोभा देती थोड़ी-सी माराज थी।

‘जैसा डाकू-सा है’ यह सोचती और ससुर के प्रति बमन स्थतापूर्ण भावों के लिए अपने को रोक न पाती।

चिड़ियाँ चारों ओर चहलपहा रही थी और पेड़ों के पत्तों से रेशमी सरसराहट हो रही थी। शहर के सुदूर छोर पर एक गड़रिए ने वासुरी बजानी शुरू की और बत्राखा के स्पष्ट प्रकाशमान नीरव तट से जहाँ मिल लगाई जा रही थी मानवीय ध्वनियाँ प्रससता लिए वायु में उठने लगीं। अचानक एक घाहट हुई तो मताल्पा न भौंचक होकर अपना सिर उठाया। ठीक उसक ऊपर सेव के पेड़ पर एक चिड़िया फटे में फँसी छुटकारे के लिए बुरी तरह फड़फड़ा रही थी।

“यह किसने आज बिछाया ? निकिता ने ?

तभी बगीच में बही मूसी डास के टूटने की आवाज आई।

जब वह घर की छोर लौटी और उसने अपनी माँ के कमर में झाँका तो बिभवा धाल लीस कमर के बल पड़ी हुई थी। उसकी एक बाँह सिर के नीचे थी और भौंहें आश्रयमात्र से तनी हुई थी।

^१ पाक बदरी—अंगूर जसा एक फल।

कौन है ? वह विस्मित हो भय से चित्लाई । “क्या बात है ?”

“बुद्ध नहीं । मैं तुम्हारे चाय के लिए कुछ पात्र बदरियां चुन कर लाइ हूँ ।

विस्तर के निकट रस्ती मञ्च पर घीसे का एक सगमग ल्वासी बरतन रखा था जो कास^{११} के भरने के काम में लाया गया था । उसका ठक्कम फर्ज पर गिर पड़ा था । मञ्चपोश पर कास के घम्ब ससे हुए थे । माँ की हल्की घोर बठोर घाँवों के भारो घोर नीसी-नीली छाया-सी थी परन्तु जसी कि नतास्या को घाया थी वे घाँवों से मूजी हुई नहीं थीं । वे घब किसी बदर काभी घोर गहरी दिख रही थीं । उसकी नजर जो सदा एक रोब लिए होती थी इस समय धजीब तरीके से भटकी हुई घोर खोई-खोई सी लग रही थी ।

सारी रात मच्छरों ने साने नहीं दिया । मुझे घब भोंपड़ी में सोना पड़ेगा । माँ ने पहर को गर्दम तक सीपने हुए कहा— मारा घरीर मच्छरा ने काटा हुआ है । तू इतनी जल्दी कैम उठ घाई ? तू मगे पाँच घास पर क्यों गई ? तरो कभीज भी भीगी हुई है ? तुझे टंड लग जायगी ?’

माँ उदासीनता घोर बठोरता से कहती गई जम कि वह घपने किन्हीं बिचारा में निमग्न हो । धीरे-धीरे बेटी की चिता घब एक ली की घूमरी स्त्री के प्रति की रोपपूर्ण उम्सु कता में पसर गई ।

मैं जम्बी ही जाग उठी थी तो मुझे तुम्हारा ग्याम घाया घोर फिर मुझे तुम्हारे घारे में सपन भी घाए थ ।”

“तुम्हें मर घार में कमे-कैम ग्याम घाए ? माँ में छत की घार देगने हुए प्रुछा ।

११ पयम—गहूँ में घनी हन्ती घराब ।

“यही कि तुम मरे बिना मरने सी सा रही होगी ।”

मतास्या का एसा सगा कि उसकी माँ के कपोलों पर सुखी
भा गई है और मुझे किसी घात का डर नहीं । कहत हुए
उसके बेहरे पर जो मुस्कराहट भाई थी उसम इत्थिमता थी ।

आधा भव तुम जाओ । तुम्हारा प्यारा आग गया है ।
तू उसके पाँवों की आहट नहीं सुन रही क्या ? माँ ने भाँके
बन्द कर कहा ।

सीकियो पर धीरे धीरे बढ़ते समय मतास्या न शोषित होते
हुए उसके विरोध में बहुत-कुछ सोचा—

‘इसन रात उसके साथ बिताई है । कास उसी के लिए
थी । इसकी गर्दन में जा निदान हैं—वे मच्छरों क काटन के नहीं,
उसके चुम्बनों के हैं । पेट्या को मैं कुछ नहीं बताऊँगी । वह
धब धोपडी में सोन जा रही है और रात का चिन्ताती थी ।

“कहाँ गई थी ? ध्यानपूर्वक पत्नी की ओर दलते हुए
प्योत्र ने पूछा तो उसकी भाँके मीची हो गई । वह अपने को
अपराधी-सा अनुभव करने लगी—और समझ नहीं पा रही थी
एसा क्यों है ।

“मैंने कुछ पाक बदरियाँ चुनी थी और फिर माँ का दखने
पसी गई थी ।

‘अच्छा वे कौसी हैं ?

‘वे तो बंगी प्रभोत हाती थीं ।’

“ठीक । प्यात्र ने सिर का नीचे मुका कर दुहयाया—
‘ठीक ।

वह अपने बेहरे का टेढ़ा करके मुस्कराया और एक दीप
बसास लीबने हुए उसने एक आह मरी । फिर ठोड़ी पर उठे हुए

सास-सास वासों के ठूँठो को रगड़त हुए बोला—

‘सगता है कि भूर्ख स्त्री बास्वाया न ठीक ही कहा या कि खोसने घोर चिल्लान तथा घयु के प्रवाह की परवाह न करना ।

फिर उमने कर्वांश स्वर से पूछा—

‘तुमने मिबिता को देसा या क्या ?’

‘नहां ।

‘इस ‘नहीं’ मे तुम्हारा क्या मतलब ? वह तो यगीधे में हो चिडियों को जास न फसा रदा है ।

‘आह मरे परमात्मा ! नतास्या भयभीठ हाकर चिल्लाई, घोर में रात के इन वस्त्रा में ही बाहर जा पहुँची ।

‘तो तुम वहाँ थीं ?

‘सकिन यह सोता क्य होगा ?

घपन जूतों पर झुकत हुए व्यात्र मूमर की तरह मुन मुनाया । उतरी पत्नी के तिरछी निगाहा न उम देखते हुए घोर एक हलकी मुस्कराहट क माप कहा -

तुम तो जानन ही हा कि यह बुयल जरूर है मेबिन घमस्मर्ट क खगल हुए यह अधिध मुन्दर है ।

पनि एक बार फिर मुनमुनाया—परन्तु पहले की तरह जोर न महीं ।

प्रतिदिन मूर्पोश्य क समय जब चरवाहा द्वारा का टपट्टा करने को घपनी मम्बी धामुरी पर करण राग छे दता ता नदी के पार बुन्गादा क घपन की घावाज घाने समती घोर मगरबामी घपनी गाया को हासन हुए एक दूसर न मगोस करन—

“सुनो तो ! घनी सूरज निकला भी नहीं और इन्होंने अपना काम शुरू कर दिया ।

“सालब, शांति का घोर शत्रु है ।”

इस्या अर्तामानोव का जब बिल्लने सगा कि उसन नगर वासियों की भस्म शत्रुता पर विजय प्राप्त करसी है । क्योंकि द्रघमोवबासी उसके सामने स टोपी मुकाकर मुजरते और राजकुमार रासकी के बारे में उसकी कहानियों को बहुत ध्यान से सुनते । परन्तु प्राय कोई न-कोई हड़ता व साथ अभिमान करता हुआ भी कह उठता—

“यहाँ हमारी घोर के भद्र भोग सीधे-सादे और गरीब हैं, परन्तु वे तुम्हारे घोर वासों से अधिक कठोर हैं ।

किसी हुरी के दिन सध्या समय घोका मरी के तिनारे बास्की की सराय के सघन-सुन्दर वागीचे में बहु द्रघमोव के घनी और बलवान् भोगों से कहा—

‘मेरे कारोबार से तुम सबको लाभ होगा ।

‘परमात्मा ऐसा ही करे । पम्याभोव अपने होठों का चबाता हुआ भीष मुस्कान के साथ उत्तर देता । और यह कहना असम्भव होगा कि बहु किसी का कूता चाटना चाहता था या चाटना । उसका मुरीदार अस्पष्ट चेहरा उसकी फैनिल बाड़ी में बुरी तरह छिपा हुआ था और उसकी नीली-सी नाक हमेशा प्रत्यक भीष को बसकर सन्नेह के साथ सिकुड़ती रहती, और उसकी मुरी गेहूँघाँ घाँसों में इर्प्या की भस्म होती थी ।

‘परमात्मा ऐसा ही करे ।’ उसने पुहराते हुए कहा—
“तुम्हारे बिना पहले भी हम गुजारा कर ही लेते थे परन्तु हा सकता है कि अब तुम्हारे साथ मे दशा और अच्छी हो जाय ।’

सास-सास चासों क ठूँठो को रगड़त हुए बोसा—

“सगता है कि मूर्ख स्त्री यास्कीया न ठीक ही कहा या कि भीजन और बिल्लान तथा अम्बु के प्रवाह की परवाह न करना ।’

फिर उसन कर्कश स्वर से पूछा—

‘तुमन निश्चिन्ता को देखा या क्या ?’

नहीं ।

‘इस ‘नहीं’ से तुम्हारा क्या मतलब ? वह तो बगीचे में हो बिड़ियों को जास में फँसा रहा है ।’

‘धोह मरे परमात्मा ! मतास्मा भयभीत होकर बिल्लाई, ‘घोर में रात के इन बस्त्रों में ही बाहर जा पहुँची !’

“तो तुम वहाँ थी ?

मेकिन वह सोता क्या होगा ?

अपने जूता पर झुकते हुए प्यात्र मूँधर की तरह भुन भुनाया । उसकी पत्नी से तिरछी निगाहों से उस दगले हुए घोर एक हसकी मुस्कराहट क साय कहा —

‘तुम ना जानत हो हा कि वह बुबड़ा जरूर है मेकिन धसकाई क दलत हुए वह धषिब मुन्दर है ।’

पति एक बार फिर भुनभुनाया—परन्तु पहले की तरह बार न कहा ।

प्रतिदिन मूर्खोन्मत्त क समय जब बरयाहा कारों का इबट्टा बरन को अपनी मम्बी बामुगी पर बरगा राग छट्ट देता ता नदी के पार कृन्टाहों क बनन की घावाब घाने सगती घोर नगरवामी अपनी गायों को हाँकत हुए एक दूसरे क भगोस करते—

बस करा, बस करा ! गिरजे के स्टारास्त^{१९}, धर्मकार
 मित्रोइकिन ने उसे टोका— 'किधर बहक रहे हो ?

बरोपानाव चुप हा गया उसक भूरे भूरे काम हिलते रहे ।
 इत्या ने धर्मकार स पूछा—

'धन्धा तुम्हें मेरे काम के बारे में भी कुछ पता है ?

मुझे जकरत ही क्या है ?

मित्रोइकिन सच्चाई और इमानदारी से विस्मय में बोला—
 "धपना काम तुम खुद समझे । बडा धजीव है । तुम्हें तुम्हारा
 काम, मुझे मेरा काम ।

पेड़ों के बीच से घोका के गँदसे रंग के फीत की धोर जाती हुई
 घर्तामामोव की दृष्टि—दूर पर बेंतों के भुरमुट धीर दलदल के बीच
 सरकती हुई वत्राका के हरित-सर्पाकार मोड़ की धोर लगी हुई थी ।
 वह उधर बेसता हुआ गाड़ी बीयरपीतारहा । रवों की बिजरी छिलकने
 बासू को सुनहरी जरी के समान चिकनी घामा दे रही थी। ईटो के
 डेर से लाल रङ्गीन घामा निकल रही थी । कटी भुकी धीर पददलित
 भद्रियों क बीच से नई लम्बी इमारत जिसमें मिस बननी थी
 एक खुसे वाकूत के समान रक्तपूर्ण गोमांस वर्ण में फल रही
 थी, जिसकी बिना रङ्ग रागत हुई साहे की छल पर पडे सूर्यास्त
 के मन्द प्रकाश से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि किसी गानाम
 में धाग लग गई हो । सूर्य की तिरछी चिरणों से मजदूरों के निवास
 की दुर्मजिसा इमारत की दीवारें, छुटेबायुमण्डस पूर्ण छाकाण की
 धार ऊँची उभरी, लम्बी तनी सुनहरी शहरीरें पीसे पिपसे
 मोम स बनी वील रही थीं । बलकसेई न ठोक ही कहा था कि

१९ स्टारास्ता—प्रधान कायकर्ता ।

प्रसमानाव भौंहे चडाकर बोला—

‘तुम मिमा की तरह नहीं वरन् द्विप्रर्षी बातें करते हो।’

बास्की हुँसते हुए बिस्ताया—

‘यही तो इसकी विशेषता है।

जहाँ बास्की का बेहरा होना चाहिए था वहाँ प्रसावधामी से थपथपाए हुए कुछ गुलाबी मौस पिण्ड थे। उसका बिदास सिर—उसकी गदन गाल बाहु धीर उठाता सारा शरीर रीछ जैसे मोटे-मोटे दासों से ढका हुआ था। उसके कान दिखाई नहीं पड़ते थे धीर उसकी अनावश्यक धालें गद्दवार भाटे मौस में छिपी हुई थीं।

‘मुझे बर्षी की अघिकता में अक्षिहीन बना दिया है।’ वह बोला धीर अपने बड़े-बड़े लुंगे दाँता को पूरी पत्तियों को अमकाता हुआ मुँह फाड़कर लिसलिसा पड़ा।

रमनिर्माता वरोपोनोब ने अपनी सूनी धीर ह्रस्व-ध्वनि से भरसना करत हुए कहा—

‘बारोबार ता हात ही रहत हैं परन्तु परमात्मा के नाम को भी नहीं भ्रमना चाहिए। क्या एसा कहा नहीं गया ‘मार्फा! मार्फा! तुम्हें बहुत यातों की चिन्ता है परन्तु धरूरी उनमें से एक ही है।’

उसकी बरङ्ग धीर सगभग भावभूम्य धार्यों से प्रतीत हाता था कि वरोपानाब वास्तविक गुप्त आगम को समझ गया है धीर किनी भी समय वह कोई असाधारण घापणा करने आया है। अभी-कभी वह एम बोसता था जैसे वह ईश्वरीय ज्ञान का प्रकट करन आता ही था।

‘निस्संदेह ईसा मसीह ने भी राटी गाई जिससे कि मार्फा।’

बस करा बस करो ! गिरने के स्ताराम्त^{१२}, चर्मकार
 मित्रेइकिन ने उस टोका— किपर वहक रहे हो ?

बरापानाव चुप हा गया उसके भूरे भूरे कान हिलते रहे ।
 इत्या न चर्मकार स पूछा—

“अच्छा तुम्हें मेरे काम के बारे में भी कुछ पता है ?

‘मुझे जरूरत ही क्या है ?’

मित्रेइकिन सच्चाई और इमानदारी से विस्मय म घोला—
 ‘अपना काम तुम खुद समझे । बड़ा अजीब है ! तुम्हें तुम्हारा
 काम मुझे मेरा काम ।

पेड़ों के बीच से घोका क गर्दभे रग के फीते की घोर जाती हुई
 अर्धमानोव की दृष्टि—दूर पर बेंतों क झुरमुट और दलदल के बीच
 सरकती हुई बत्राला क हरिठ-सर्पाकार मोठ की घोर सगी हुई थी ।
 वह सपर देखता हुआ गाड़ी बीचरपीता रहा । रवों की बिल्ली छिसबने
 बामू को सुनहरी जरी के समान चिकनी घामा दे रही थी। ईंटों क
 ढेर से साल रङ्गीन घामा निकल रही थी । कटी भुकी और पददक्षिण
 मगदियों के बीच स नई लम्बी इमारत जिसमें मिश बनती थी
 एक खुले ताबूत के समान रक्तपूर्ण गोमांस वर्ण में फय रही
 थी, जिसकी बिना रङ्ग रागन हुई साहे की छत पर पड़े सूर्यास्त
 के मन्द प्रकाश से ऐसा प्रसीत होता था जस कि किसी गोदाम
 में धाग सग गई हो । सूर्य की तिरछी किरणों से मजदूरों के निवास
 की दुर्गन्धिमा इमारत की दीवारें चुटेबायुमण्डस पूर्ण आकाश की
 धार ऊंची उमरो, सम्बी तनी सुनहरी गहतीरें पीसे पिषल
 मोम से बनी दील रही थी । असक्सेई ने ठोक ही कहा था कि

१२ स्तारोस्ता—प्रधान कायकर्ता ।

उठा - "बितनी शक्ति है ! तुम्हारे और बच्चे क्यों नहीं हुए ?"

"नताल्या के घसावा-दा और भी बच्चे हुए थे, लेकिन वे कमजोर और बीमार से थे इसीसे मर गए ।"

'इसका मतलब यह है कि तुम्हारा मर्द कुछ नहीं था ।'

'तुम मानोगे नहीं,' वह फुसफुसाकर बोली "सब मानो, तुम्हारे जाने से पहले मुझे यह भी नहीं पता था कि प्यार कितने कहते हैं । कभी-कभी औरतें, सहस्रों इसकी बर्बा भी करती थीं, परन्तु मैं उनकी बातों पर विश्वास नहीं कर पाती थी । सोचती थी कि वे पारमात्माकी भूँठी बातें बनाती हैं । मैं कुछ नहीं जानती थी । हाँ, धन मर्द स मुझे बड़ी सज्जा पाती थी । उसके साथ सोने के लिए जान पर मुझे ऐसा अनुभव हुआ था जैसे मैं फाँसी के तख्ते पर जा रही हूँ । मैं परमात्मा से यही मनाती थी कि वह सा जाम और मुझे छोड़े नहीं तो अच्छा है । जैसे वह एक अच्छा धार्मिक था । वह सौत प्रकृति का और बुद्धिमान पुरुष था । परमात्मा ने कवन प्यार करने की कला उस नहीं दी थी ।

उसकी कहानी में अतमानाब की उत्तजित और माय ही धार्मिकान्वित भी किया । उनका प्रयास उत्तम वधायन को अपने मुहक धार्मिकन में करते हुए वह बुद्धिवादी—

ता यह बात हुई ! मैं कभी एसा विचार भी नहीं कर सकता । मैं तो सोचता था कि छिपों को सभी पुरुष समुह सगते हैं ।

वह जानता था कि दिन में यह श्री महा स्थिर-व्यवहार प्राप्त और बुद्धिमान् रहती है और नगरबागी अच्छी मूर्त-भूत और निश्चित होने के कारण धारण करत है । किन्तु जब वह इमा पगबर में होता ता ध्यान को बसवान् और अधिब बुद्धिमान् समझता । एक बार उसकी तरफगाई के सहज दुमार में प्रभावित हारर वह वामा—

‘मैं जानता हूँ कि तुम क्या चाहती हो ? हमने नाहक बच्चों की शादी कर दी। सबसे पहले मुझे तुमसे विवाह करना चाहिए था।

तुम्हारे लड़के बहुत भले हैं। यदि उन्हें यह सब पता भी सग जायमा तो कोई हानि नहीं। परन्तु, यदि सहर जान गया तो। यह कह कर बाइमाकोवा का सारा शरीर काँप उठा।

तुम इसकी परवाह न करो। इत्या ने धीरे से कहा। फिर एक दूसरे दिन वह उत्सुकता से पूछ उठी—

‘यह तो बताओ कि जिस मनुष्य को तुमने मारा था क्या तुम्हें उसके सपने आते हैं ?

अपनी दाढ़ी पर खान्ठ भाव से हाथ फेरते हुए इत्या ने उत्तर दिया—

विस्कुम नहीं। मैं तो खूब गाड़ी नीद में सोता हूँ। कभी किसी प्रकार का सपना नहीं देखता और मुझे उसके सपने भी क्यों आने सगे ? मैंने तो उसे देखा तक भी नहीं। किसी ने मुझ पर चोट की तो मैं एकदम उछल कर दूर हो गया। फिर कमर में बँधे बटखरे को जोर से घुमाकर एक-एक कर दो घाद मियों के सिरों पर चोटों की भी और तीसरा भाग खड़ा हुआ।’

उसने घ्राह-सी भरी और नाराजगी से बोली—
‘न जाने कहाँ-कहाँ के मूर्ख तुमसे घा टकराते हैं और परमात्मा के सामने जवाबदेही तुम्हें करनी पड़ती है।’

जब एक क्षण वह कुछ बोसा नहीं तो उसने पूछा—
‘सोते हो क्या ?’

‘नहीं तो।’

‘प्रब तुम्हें यहाँ से जाना चाहिए । प्रब भार हाने वाली है । कहीं जाओगे मिस में ? भाह ! मेरे कारण ही तुम्हें पदें गान हमारा पड़ेगा ।’

‘इसकी चिन्ता न करो । जब बुरे दिन बिता दिए तो त्यौहारों की क्या बात है ?’ उसने कपड़े पहनते हुए गर्व के साथ कहा ।

प्रभात की प्रथम भोतियाई छाया की शोषसता में अपने स्थान पर पहुँचकर कोट में पीछे की छोर हाथ बासे घोर उस मुर्गे की पूँछ की तरह फसाए, रंग को छीसन घोर लकड़ी के टुकड़ों का रादता हुआ वह बिचार करने लगता—

‘मैं अत्योषा को जगती भी बान की पाई आजादी दिए दता हूँ—अच्छा है उसका बुद्ध जास निकस जाय । सदाका बरा उदस बनर है परन्तु है अच्छा ।’

रत्न या छीसन के ढेर पर सेट कर वह जबतक गाड़ी भीड़ में सा भी न पाता कि हरे आममान में अक्षुण्ण की फिरणें फैल जातीं । गर्बसि मयूर की तरह अंगुमासी अपने रंग-बिरंगे फिरण जास को पगा की तरह पैसात हुए अपने पीछे लाना बिबरत जाते । मजदूर साग जाग उठते घोर एक विशामकाय व्यक्ति के जमीन पर पाँव फसाए बलकर एक दूसरे को सावधान करत हुए कहत—

‘वह यहाँ पर है !’

कोड़ी, डोबी गण्डास्थि बासा तिसान ब्यासाव हाथ में साह का बुन्हाड़ा मिग अर्तामानोक की छार ऊपर में नीच अपनी तिमटिमाती घोंगों में निहारता जैसे कि वह उस साथकर निष्पत्ता चाहता है । परन्तु उस साहस ही न होता था ।

मजदूरों की सहम-गहस पीग-मुहारों या हथोड़ों की रा

सब प्रादि किसी से भी इस विशाल मनुष्य की नींद नहीं टूट पाती थी। वह आस्मान की धार ऊपर मुँह किए जोर-जोर से सरटि मरता रहता। उसके सरटों की धाबाज किसी मोघरे घारे की धाबाज से मिलती थी। खंदक खोदने वाला बार-बार पीछे को देसठा हुआ दूर बसा जाता और अपनी घाँसों को ऐसे ढपकाता जैसे कि उसके सिर पर चोट हुई हो। घनकसेई सफेद सूती कमीज और नीसी पतखून पहन धर से निकसता। धीम-धीमे वह नदी की घोर स्नान करने जाता। मामा के निकट पहुँचने पर सीसन पर इस तरह पाँव रसता कि कहीं हल्की धाबाज से भी उनकी नींद न उभट जाय। निकिता धोर से पहले ही धर से निकस जाता था। मगजग प्रतिदिन वह जगन सं एक-दो माड़ी साद भर कर साता और घपने वगीचे क लिए साफ की हुई जमीन में उस फसाता रहता। घभी तब उसने वष मेव्स रावन और बई बरी क पीचे ही मगाए थे और प्रब वह फमों के पेड़ों के लिए जमीन तम्मार कर रेत में मनु खोव उन्हें साद नदी की मिट्टी और कीचड़ स भर रहा था। छुट्टी के दिन तिस्राम ब्यालाब भी उनकी महायता कर देता था।

‘छुट्टियों क दिन पीचे लगाना कोई गुनाह नहीं। वह बहा करता।

प्याज घर्तामानोव घपने कामों को सावधान रख कर काम को देसठा हुआ बनती हुई इमारत की घोर जाता जहाँ मारा बड़े घास्हाद के साथ लकड़ी काट रहा होता गन्दे घागे-पीछे सरं-सरं कर रहे होते कुस्हाड़े स्पष्टता से खट-खट की धाबाज करस होते तो कहीं राजमीरी पर तरस मारा भी थोपा था रहा होता और खूब कुस्हाड़े की धार से सान का पत्पर सिसकता होता। बड़ई लोग किसी सहतीर को उठाते हुए ‘दुविनुका का राय

छेड़ते ता वहीं स किसी मवपुवक क भावपूर्ण गान की ध्वनि पूँज उठनी—

मरी क घर गए जवारी ।

छू बपोस करनी मग प्यारी ॥

‘कितना भड़ा गीत है’ प्यात्र न ब्यासाव से कहा ।
पुटनों तक रेत म धँस ब्यासोव मे जवाब में कहा—

‘तुम्हार गीत भी ता इसी तरह के हाठ है ।

‘क्या मठसब तुम्हारा ?

‘‘सखी में कोई जान तो होती महीं ।’

‘इस मनुष्य का समझना भी कठिन है ।’ प्यात्र ने मुहम हुए साधा । उसे स्मरण आया कि उसके पिता ने ब्यासाव को मजदूरों के निरीक्षण का काम देना चाहा था परन्तु इस मनुष्य ने अपनी नजर जमीन पर गड़ाए जवाब दिया था—

‘‘नहीं मैं इस काम के लिए योग्य महीं । मैं लोगों पर हुटुम नहीं समा सकता । तुम मुझे चौकीदार ही रहन दा ।’

इस पर बाप न उन बहुत गालियाँ सुलाई थी ।

ठण्डी घोर भीगी सखी-श्रुतु आई । बगीचों म रस्त १३
मग गया, घोर उमने जहाना को द्यामनता पर घब्र डाम दिए ।
सीसी हवा मनी के किनारे सी-सी कर चलती तो सबड़ी की पानो
घोसन मनी में जा गिरती । श्रम्यक मुबह का पछर पाड़ा द्वारा
गोषी जाने वाली मज म मदी गाड़ियाँ गाँवम क मामन आकर
रखती थीं । प्योत्र मार माम का माबपानो मे निरोक्षण करता ताकि
कहीं य दक्षिण किमान उत्तम बोम पड़ाने क लिए समोनेशर
मीमी मन मिनारर अपवा मम्बो रगदार की जगह पहिया

१३ रस्त—पेठ-सीपा का एक राग ।

किस्म की सुन देकर ठग न भे जाय । किसानों क साथ व्यवहार करना बड़ा कठिन काम था । अक्सरसेई उतम प्राय बहुत सड़ता-मध्यदता रहता था । उसका पिता मास्को चला गया था और उसकी सास जैसा वह कहा करती थी साधुनी-गृह में प्रार्थना क लिए गई हुई थी । कभी-कभी सौम्य को चाय क समय अक्सरसेई खींचकर निकामत कर उठता—

‘यह जीवन भी बड़ा नीरस है । मैं यहाँ क नायों को पसन्द नहीं करता ।

इससे प्योत्र प्राय सुख होकर कहता—

तुम क्या उन लोगों से अधिक भले हो ? सबसे सड़ते मग डते रहते हा । तुम घमण्डी भी बहुत हो ।

“मेरे पास कुछ है सभी तो घमण्ड करता हैं ।

घपने घुंघरामे बासों और कन्बों को पीछे को फेंकता हुआ छाती फुमाकर वह घुपता से घपन भाई और भाबज की घोर स्थिर भाँसों से घूरत लगता । मसान्या उसमे बहुत धचली थी और सदा उसस लम्बा-सा व्यवहार ही रखती थी । लगता था कि वह उससे किसी कारण भयभीत रहती है ।

रापहूर क भोजन क बाद जब उसका पति और अक्सरसेई फिर काम पर चले जात तो वह निक्किता के छाटे-से साधारण कमरे में घपने सीने-पिरोने के सामान क साथ शिड़की के पास धाराम कुर्सी पर भा बैठती । कुबड़े मे स्वय इस कुर्सी को कुससता के साथ बर्ष की सफाई से रमाया था । कुबड़ा यहाँ बैठा-बैठा सुबह से सौम्य तक सिखाई और हिसाब के आत घादि और दपतर क दूसरे कामों को किया करता था लेकिन जब वह भा जाती ता घोड़ी देर के लिए घपमा काम छोड़कर वह उसे घपन राजकुमारों के बारे मे सुनाता कि क कैसे रहते थे, उनके

दिड़ते तो कहा स किसी नवपुत्रक क भावपूर्ण माने की ध्वनि
 पूँज उठनी—

मेरी के घर गए जवारी ।

छू कपोल करदी लुप्त प्यारी ॥

“कितना भदा गीत है” प्योत्र न ब्यासोव से कहा ।
 घुटनों तक रेत में घँस ब्यासोव न जवान म कहा—

“तुम्हार गीत भी ता इसी तरह क हात है ।

‘क्या मतलब तुम्हार ?

‘छाँदों में कोई आन ता हाती नहीं ।’

‘इम मनुष्य का समझना भी बठिन है ।’ प्यात्र से मुड़न
 हुए सोचा । उस स्मरण धाया कि उससे पिता ने ब्यासोव को
 मजदूरों के निरीक्षण का काम देना चाहा था परन्तु इम मनुष्य न
 धपनी मजदूर जमीन पर गढ़ाए जबाब दिया था—

मही मैं इधु काम के लिए योग्य नहीं । मैं नार्ता पर हुकुम
 नहीं करता सकता । तुम मुझे धोकीदार ही रहन दा ।

इस पर बाप ने उस बहुत गानियाँ सुनाई थी ।

उन्ही धोर भोगी धारद-शुनु घाई । बगीचों में रस्त १३
 लग गया, धीर उसन जङ्गलों की द्यामलता पर धरब शान्त दिग ।
 सोसी हवा मनी के किनारे मो-मी कर जमनी ता लकड़ी की पीसी
 छीमन मही में जा गिरता । प्रत्येक मुबह का लहर पोड़ा शरा
 गोंधी जान बानी मन न मही गाड़ियो गाशम क शामन धाकर
 रहनी थी । प्योत्र मारे माम का मावधानी म निराशाग करता ताकि
 बरी य दक्षियन किमान उसमें धोम वज्ञान क लिए ‘पसोनदार
 मीमी मन विमाकर धपबा सम्बो रजानर का जगत घटिया

१३ रस्त—पेड़-पौर्या का एक राग ।

किस्म की सन देकर टग न से जाय । किसानों क साथ व्यवहार करना बड़ा कठिन काम था । प्रसवसेई उनम प्राय बहुत लडता-भगडता रहता था । उसका पिता माम्को बला गया था और उसकी साथ जसा वह कहा करती थी साधुनी-गृह में प्रार्थना क लिए गई हुई थी । कमी-कमी सौम्क का साथ क समय प्रसवसेई खीम्कर गिरायत कर उठता—

‘यह जीवन भी बड़ा नीरस है । मैं यहाँ क लोगों को पसन्द नहीं करता ।

इसम प्योत्र प्राय सुम्भ हाकर कहता—

‘तुम क्या उन लोगों स अधिक मसे हा ? सबन सबत भग इत रहत हा । तुम धमण्डी भी बहुत हा ।

‘मेर पास कृष्ण है तभी तो धमण्ड करता है ।

धपन धुंधरासे बाना और कन्धां का पीछे का फेंकता हुआ छाती फुत्ताकर वह घुष्टना म धपने भाई और भाबब की और स्थिर धाँधों मे धूरन लगता । ननास्या उसमे बहुत बचती थी और सदा उमम लला-सा व्यवहार ही रक्ती थी । लगता था कि वह उमसे किमी कारण भयभीत रहनी है ।

दापहर क भाजन क बार जब उसका पति और प्रसवसेई फिर काम पर बसे जात था वह निश्चिन्ता क छाटे-म साधारण कमरे में धपन सीन पिरान क सामान क साथ जिड़की के पास धारात कृसी पर धा बैठती । कुबडे न स्वय इस कुसी को कुम्सतता क साथ बर्च की लकड़ी से बनाया था । कुबड़ा यहाँ बठा-बैठा मुबह से सौम्क ठक सिल्लाई और हिसाब क लाने धादि और दपतर के दूसरे कामों का किया करता था सेकिन जब वह धा जाती था थोड़ी दर के लिए धपना काम धाडकर वह उसे धपन राजकुमारों क बारे में मुनाता कि ब कैसे रहत थे, उनके

महलों में कैंसे-कैंसे फल पीये होते थे इत्यादि । लड़कियों जैसी उसकी ऊँची भावाज में मारीपन और एक प्रकार की मधुरता रहती थी और उसकी सीमो घालें उस स्त्री के चेहरे को बचाती हुई शिडकी से बाहर भाँकती थी । अपने सीने-पिरोने पर मुकी विचारों में डूबी मतास्या एकदम मनुष्य के समान स्वयं मूक बनी रहती । इस प्रकार घण्टे दो घण्टे के दानों पास-पास बैठे रहते और बड़ी कठिनाई में एक या दो बार ही एक दूसरे की ओर अनिच्छा और भीड़तापूर्वक दस पाते । निकिता अपनी भावज की ओर अपनी नीली घाँसों से बड़ी कोमलता और दुमारा के साथ देवता तो उसका कृते जैसे बड़े काम स्पष्टता साम वह जाते । कभी प्रभावित होकर उसकी दार्ष्टिक दृष्टि से मतास्या भी उसकी ओर देखनी और इतना मूर्ख मुस्कराती । उसकी वह मुस्मान मनोवा हुमा करती थी । उस समय निकिता अनुभव करता कि उस मुस्मान से उसकी सम्पष्ट भावनाएँ छिपी हैं । और जब उसे प्रतीत होता कि यह उसका प्रति एक तिरस्कारमात्र है तो वह एक अपराधी की तरह अपनी नजर नीची कर लेता ।

निकिता के बाहर रिमझिम-रिमझिम पानी परसता और प्रीत्य की उष्णता भुवचार प्राप्त होती रहती । कमरे में बैठे के दानों अक्षरसेई के कहीं पर विस्वा उठने की भावाज मुनस । फिलहाल में पासगू किया हुमा गीद का बच्चा और स गुरति सगता । मिला की तरफ से एक हल्का और धान सगता जहाँ कि धोरतें सन का गीँस-गीँसरन साध कर रही हानी । पाना में तर-बतर और कीपड़ में सदाय सतासेई और सचाता हुमा घन्ना भा पहुँचता । पादों की ओर भुवा हुमा समता टोप घाज भी सगन्त के एक-एक दिन की स्मृति दिमागा रहता था । अन्दर घाने पर वह हँसते हुए सन्नेग मुनाता कि ठिगोन सगलाव की एक उल्लसो बट गई है ।

“वह इस एक दुपटनामात्र बताता है लेकिन यह स्पष्ट है कि उसने उसे जान-बूझकर फ्रीज की मर्जी से बचाने के लिए ही बाटी है। और मैं—घपनी मर्जी से फ्रीज में दाखिल हो जाऊँगा। चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं दूर बसा जाऊँ।

वह रीछ की तरह गुर्रा कर शिकायत करने लगा—

यहाँ से मीनों दूर चाहें वताम के पास ही क्यों न आना पड़े।

फिर वह घपन हाथ को पसारेते हुए कहने लगा—

मुझे थोड़े-से पैसों का वेना में भरना पड़ा है।

‘क्यों?’

‘मुझे इससे क्या मतलब?’

और जब वह बाहर जाने लगा तो गा उठा—

प्रियतम के हित सभी नदेसी किया पार ममान।

कर मे व्यसन लिए समान घपनों पर मुस्कान ॥

घोड़ ! किसी-न किसी दिन यह मुसीबत में फँसेगा ।’
नताल्या ने कहा - ‘मेरी सहेलियाँ इस प्रायः आल्गा घसोवा के साथ देखती हैं। उसकी उमर अभी चौदह साल की है माँ है नहीं और बाप धराबी है।

निकिता को उसका ये शब्द उचित नहीं लग। उसे उन शब्दों में अफसोस भय और ईर्ष्या का हल्का-पुट प्रतीत हुआ।

कुबड़ा त्रिदकी ने बाहर मौन धारण किए भ्रमण किया। वहाँ नमा सिंग हवा पीड़ के पड़ा की धामाघों को झुका रही थी। उनकी हरी मुकीमी पतियों से पाना की शुद्ध बूँदें बिरंग उठती थीं। पीड़ के इन पदों का भासन-पासन उसने ही किया

महसों में कैसे-कैसे पल पीपे होते थे इत्यादि । सड़कियों जैसी उसकी ऊँची भाषा में भारीपन और एक प्रकार की मधुरता रहती थी और उसकी नीली आँखें उस छोटे-से चेहरे का बधाती हुई सिद्धकी से बाहर झाँकती थी । अपने सीने-पिरोन पर झुकी बिसारों में हूबो नताल्या एकाको मनुष्य के समान स्वयं मुँह बनी रहती । इस प्रकार घण्टे दो घण्टे के दोनों पास-याम बैठे रहते और बड़ी बठिनाई में एक या दो घार ही एक दूसरे की ओर अनिच्छा और भीक्षतापूर्वक दस्र पाते । निकिता अपनी भावना की भार अपनी नीली आँखों से बड़ी कोमलता और दुखार के साथ दस्रता से उसका कृत जैसे बड़े कान स्पष्टतः मान पड़ जाते । कभी प्रभावित होकर उसकी शक्ति से नताल्या भी उसकी ओर देखती और हृत्पाखुनामूर्ग मुस्कुराती । उसकी वह मुस्कान अनोखी हुमा करती थी । उस समय निकिता अनुभव करता कि उस मुस्कान में उसकी अस्पष्ट भावनाएँ छिपी हैं । और जब उसे प्रतीत होता कि यह उसे प्रति एक तिरस्कारमात्र है तो वह एक अपराधी की तरह अपनी नजर नीची कर लेता ।

लिटकी के बाहर रिमकिम-रिमकिम पानी बरसता और धीप्प की उष्णता घुलकर पान्त हाती रहती । कमरे में बैठे व दोनों घसकसेई के वहाँ पर चिस्ता उठने की भाषा में मुनत । किमहाण में पालनू बिया हुमा गीछ का बच्चा जार से गुरनि सगता । मित की तरफ में एक हल्का और घान सपता जहाँ कि धीरते सन का गीब गीबकर साफ कर रही होती । पानी में तर-बतर और कीपड़ से सबसेव घसकसेई घार मषाता हुमा घण्टा घा पड़सता । पीछे की घार भुरा हुमा उमषा दोप घाज भी बसत के एक-एक दिन की स्मृति लिनाता रहता था । अन्दर घान पर वह हमसे हुए मन्त्रेण मुनाता कि तिगान बशपाव की एक उल्लती बट गई है ।

“वह इसे एक कुर्बानामात्र बताता है लेकिन यह स्पष्ट है कि उसने उसे जान-बूझकर क़ौब की भर्ती से बचने के लिए ही काटी है। और मैं—अपनी मर्जी से फौज में दाखिल हो जाऊँगा। चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं दूर भसा जाऊँ।

वह रीस की तरह गुरा कर शिकायत करने लगा—

यहाँ से मीनों दूर आते शतान के पास ही क्यों न जाना पड़े।

फिर वह अपने हाथ को पसारते हुए कहने लगा—

मुझे थोड़े-से पैसे तो देना मैं चाह रहा हूँ।

क्यों ?

तुम्हें इससे क्या मतलब ?

और जब वह बाहर जाने लगा तो गा उठा—

प्रियतम के हित ज़री नबेसी किया पार मैदान।

कर मैं ब्यखन लिए समोने अशरों पर मुस्कान ॥

‘ओह ! किसी-न किसी दिन यह मुसीबत में फँसिगा ! बताइया न कहा - ‘मेरी सहेलियाँ इस प्राय ओल्मा अर्धोवा के साथ देखती हैं। उसकी उमर अभी चौदह साल की है, माँ है नहीं और बाप सराबी है।

निकिता को उसके ये शब्द उचित नहीं लगे। उसे उन शब्दों में अफ़सोस भय और ईर्ष्या का हल्का-पुट प्रतीत हुआ।

कुचड़ा सिड़की से बाहर मौन धारण किए भ्रमने लगा। वहाँ नमी लिए हवा की बूँदों की सासाधों का मुला रहा थी। उनकी हरी नुकीली पत्तियाँ से पानी की शुभ्र बूँदें बिसर उठती थीं। पीड़ के इन पेड़ों का सामन-पालन उसने ही किया

था । पर क चारा भार के सब वेड़ उसने ही अपने हाथों से लगाए थे ।

सभी पका-मांश प्योत्र घर में आया ।

“बाम का समय हागया नशात्या !

‘तुम जल्दी आ गए हो ।’

‘मैं कहता हूँ समय होगया !’ वह बार से चिन्ताया—
घोर जब उसकी पत्नी बाहर चली गई तो उसकी जगह पर बठ
कर वह भी उलाहना देता हुआ कहने लगा—

इस कारोबार का सारा बोझ पिताजी ने मेरे ही कंधों पर
ढाल दिया है । मैं पहिए की तरह घूम रहा हूँ—घोर मुझे पता
महीं कि मैं बिचर सुदक रहा हूँ । अगर उनके मन-माफिक काम
नहीं होता तो खबर भी मेरी ही ली जाती है ।’

निकिता ने घसबसेई घोर अर्लीबा के बारे में दबी खबर
स सावधानी के साथ बर्षा छेड़ दी । परन्तु उत्तर में प्योत्र बात
का धनमुभी बरक सिर हिमाता हुआ बोला—

“मड़कियों की प्रम-बर्बाई मुनने को मेरे पाम समय महीं
है । मैं अपनी पत्नी को भी रात के असावा चमी देगता तक
महीं घोर वह भी सब—जबकि मैं अर्द्धनिद्रिन अबरपा में हाता
हूँ । दिन में ता मैं उत्सू की तरह अंधा बना रहता हूँ । तुम्हारा
ही विमल एसी मूर्खताओं से भरा पड़ा है ।’

बाना के पास से सिर को पकड़ कर उस हिमाते हुए वह
जरा दबी अखान म बोला—

मित्र का यह काम हमार करन का नहीं, हर्म ता मँदानों
में ही जमान गरीब कर गनी-बादी बरनी चाहिए थी । वहाँ
हाथ-नाबा काम हाती और काम अथ्या ।’

इस बार जब अर्धमानाब अपनी यात्रा पर स वापिस लौटा तो वह अपूर्व उत्साह से भरा हुआ एक नौजवान-सा दिखाई देता था । उसकी दाढ़ी कभी से तरापी हुई थी और उसके कंधे पहल में अधिक चौड़े तथा अलि अधिक कमकीनी प्रतीत होती थी । एक मत्र व्यक्ति की तरह धाराम स अपन सोके पर पाँव फैलाते हुए वह बोला—

‘हमारा यह काम फीज की तरह आगे ही-आगे बढ़ना चाहिए । तुम्हारे घेठों पोतों और पड़पातों क लिए काम और कमाई बहुत होगी । आने वाले तीन-सौ सालों में देन के बारे वार और आर्थिक जीवन में हम अर्धमानाबों का बड़ा हाथ रहेगा ।

पुत्रबधू की ओर ध्यानपूर्वक देखत हुए वह बोला—

‘क्यों नशाब्या अब ता गाम-मत्सेस होती जा रही है । यदि सड़ना हुआ तो मैं तुम्हे एक उत्तम उपहार दूँगा ।

रात को सोन में पहले नशाब्या पति से बोसी—

‘दवमुग्धी अब भी प्रमत्त होते हैं बहुत अश्लील तरह बात करते हैं ।

पति ने तिरछी आँखों से देखत हुए नाराजगी से कहा—

बेसक के अश्लेष हैं तुम्हसे तो उपहार का बायबा कर ही दिया है न ?

दो तीन सप्ताहों के बाद ही अर्धमानाब की वह जिन्दगिनी न जान कहीं गई और वह किसी कारण चिन्तित रहन लग्य । हम पर नशाब्या न निकिता न पूछा—

‘बापूजी किस बात पर नाराज हैं ?

‘मैं नहीं जानता । उन्हें समझ पाना बड़ा कठिन है ।

घोर उसी दिन साँझ को चाप पीठ समय अमानक घतकसई साफ-साफ ऊँची आवाज में बोला—

बापू आप मुझे फौज में भर्ती होने को भेज दें ।”

क्या क्या कहा ? गुस्से में काँपते हुए अर्तमानोव ने पूछा—

मैं यहाँ रहना नहीं चाहता ।”

‘बाहर निकल जाओ । अर्तमानोव ने उन सबको आदेश दिया । लेकिन उस ही घतकसई भी दरवाजे से बाहर निकलने लगा वह चिन्ताया—

अत्योशा ! तुम इधर ही रहो ।

अपने हाथों को कमर पर बाँध वह लड़क की धार देर तक दसने के याद बनाया—

घोर मैं तो तुम्हें बड़ी-बड़ी आगाएँ किए बैठा था । मैं समझता था कि तू मगर बहादुर ‘बाबू’ है ।

नहीं मैं अब यहाँ नहीं रह सकता ।

‘भूख मरी जगह यहीं है । तारी माँ ने अपनी दृष्टि से रमन के लिए तुम्हें दिया था । अर्थात् जाओ ।’

घतकसई ने अभी अभिमाने हुए कदम बढ़ाया ही था कि उसका मामा ने उमक बंधों पर भारी हाथ रखे हुए उम फिर रोऊ कर कहा—

“गर साप मैं कटोरता का व्यवहार नहीं करता यदि मेरा बाप होता तो तुम्हें मुझों से हाँ बाग करता । अर्थात्, अब जाओ ।

फिर भी उमने लड़क का एक धार छोड़ रखा । घोर भी अचानक बठार हाकर बोला—

“तुम्हें बड़ा घादमी बनना है, समझे ? प्राग में तुम्हम ऐसी मकबास न मुनूँ ।

जब वह झकला रह गया था दर तक झिडकी के पास वाकी को मुट्टी म घामे नौनी-गीसी बफ का जमोन पर गिरल हुए लड़ा दलता रहा । घौर जब रात का मधकार तहजान जैसा हा गया तो वह सहर की घौर पस पड़ा । बाईमाकोवा क दरवाज पहन ही बन्द हा चुके थे । उसने झिडकी लटलटाई ता उल्याना स्वय उसे घम्वर स जान क गिए घाई । उसने किसी कवर नाराजगी के साथ पूछा—

‘तुम इस समय कहाँ म टपक पड़े ?’

बिना काग उतारे घौर किसी प्रकार का जवाब दिए बिना ही वह कमरे में घम्वर जा पहुँचा । घपन हूट को कीने में फँडकर वह कुर्सी पर बीठ गया घौर मेज पर कोहनियों को टेककर घपनी उङ्गसिया को दाढ़ी में फँसाते हुए, वह घसकपेई के बारे में बतान सगा—

‘घाबिर वह पराया ही ता है मेरो बहिन राजकुमार से फस गई—घौर नतीजा यह हुआ । घाबिर, घून का घसर तो होना ही चाहिए ।

इस बीष खी न उठकर दरवाजे की साँकसों को देखा कि वे ठीक से बन्द हैं या नहीं घौर फिर मामबत्ती का घुभाकर वह बैठ गई । बाई के ‘स्टेड’ पर दबमूर्तियों क नीचे नीला प्रकास दती हुई एक लेख्य जल रही थी ।

‘उसका बिबाह कर उस मघन में जकड़ दो न !’ वह घासी ।

ठीक है, ऐसा ही करना होगा । परन्तु इतना ही काफी नहीं । प्याज में उस्ताह घौर स्फूर्ति नहीं है । यह भी बडे दु ल की बात

घोर उसी दिन सींक को चाप पीते समय अचानक घनकसेई साफ-साफ ऊँची आवाज में बोला—

बापू आप मुझे फौज में भर्ती होने को भेज दें !”

“क्या क्या कहा ? गुस्से में बोलते हुए अर्तमानोव ने पूछा—

‘मैं यहाँ रहना नहीं चाहता ।’

‘बाहर निकल जाओ । अर्तमानोव ने उन सबको आदेश दिया । लेकिन जैसे ही घनकसेई भी दरवाजे से बाहर निकलने लगा वह चिन्ताया—

‘अत्यागा ! तुम इधर ही रहो ।

अपन हाथा को कमर पर बांधे वह सड़के की ओर देर तक दसलन के बाद बोला—

घोर मैं ता तुमसे बड़ी-बड़ी आशाएँ किए बैठा था । मैं समझता था कि तू मरा बहादुर याज है ।

नहीं मैं अब यहाँ नहीं रह सकता ।

“कूठ तेरी जगह यहाँ है । तूगी माँ म अफतो इच्छा म रमन के लिए तुम्हें दिया था । अछड़ा जाओ !

घनकसेई ने अभी भिन्नकते हुए बन्म बढ़ाया ही था कि उसका मामा ने उसका कंधों पर भारी हाथ रखते हुए उस फिर रात बर कहा—

‘तरे साथ मैं बढोरता का व्यवहार नहीं करता यदि मरा चाप हाता ता तुमसे मुझसे ही बात करता । अछड़ा, अद जाओ ।

फिर भी उसने सड़के को एक बार धो- रोना । घोर भी अघिअ बढोर होकर बोला—

‘मास्को में कराबार बढ़ते ही जा रहे हैं!’ यह कह कर वह जबा हो गया और उसको प्रगाढ़ भासिगन में कस कर बोला—‘क्या ही प्रच्छा होता कि तुम भी पुख्य होती।

‘आप्रो, प्यारे आप्रो। नमस्कार।’
 अपने प्यार का एक चिह्न प्रकित कर वह बसा गया।

क्रिस्मस के दिनों से पूव यार्वेन्स्काया घुरी तरह घायस और बेहोश प्रसक्सेई को बरफ-गाड़ी में बाल कर घर मारई। उसके सब कपड़े फटे हुए थे। यार्वेन्स्काया और निकिता उसके बदन पर मूसी और बोदवा की मासिया करने लगे। बहुत देर के बाद वह कराहा परन्तु बोल न सका। प्रतीमानोव जगसी जानबर की तरह अपनी कमीज की बाँहों को ऊपर चढाता और फिर उन्हें नीची कर लेता। इस तरह वह दौत पीसता हुआ कमरे में अङ्कुर काटता रहा। जब प्रसक्सेई को कुछ होश प्राया तो मुक्का घुमाता हुआ वह उससे पूछन लगा—

‘तुम्हे किसने मारा है? यता तो सही? प्रसक्सेई ने सूजी और चोट से नीली पड़ी एक भाँस को खोल कर देखा। वह खोब से हाँफ रहा था। खून धूकते हुए वह सिर्फ इतना ही बोला—

बस, मुझे लतम कर दो।
 नताल्या डर से सिमकने लगी। इस पर प्रतीमानोव बड़े रोप में अहसकदमी करता हुआ चिल्लाया—

निकल जा यहाँ से।
 प्रसक्सेई ने अपना सिर पकड़ा—जैसे कि वह उसे थड़ से उखाडना चाहता हो और फिर कराहने लगा।
 इसके बाद अपनी बाँहें फेंक कर वह बरबट बदन कर पुपचाप

है। बिना सपर्य के न ता जीवन है घोर न मरण ही। वह ऐसे काम करता है जैसेकि घाम भी वह किसी मासिक के लिए कर रहा हो अपने लिए नहीं। असकि वह एक गुनाम हा। इच्छा, स्वतन्त्रता ता उसमें है ही नहीं, समर्पण ! निश्चिन्ता न बार न क्या कहें वह अपाहिम है उसक दिमाग में ता बस फल-फूलबारी ही घूमते रहते हैं। मैं साबता था कि कम-स-कम घसबसई इन काम में रुचि लेगा।'

बाइमाओवा न उसे सारवना देने का प्रयत्न किया—

'तुम व्यय में ही प्रतनी जल्दी विस्तित हुए जा रहे हो धम्य रना। जब मिस के पहिए सेजी स घूमने लगेंगे तो ये स्वयं उन्हें अपने घान इपर लीब सापणे।'

वे वानों घापी रात तक कये-से कंधा मिडाए कमरे की उद्यता में बैठे रहे। दबमूनि वाले कोने में हुला मीसे प्रकाश का एक वादल-सा मेण की सजीनी ली पर संहराता रहा। बघों में व्यबसायिक उत्साह की कमी के बारे में विचारपत करते हुए प्रतीमानोब न गगरबासिया का भी नहीं धारा—

'य सोग तो बडे घोछ रिम धाने हैं।'

ब तुम्हें पारुते महा क्योंकि माण्य का एक तुम्हारे लिए सोया घूम रहा है न। हम स्त्रियां ता पुरुषों की रग बात न लिए प्यार करती हैं परन्तु एक पुरुष की गफवता इमर की घागों में गटकने लगती है।

उम्माना बाइमाओवा उम घामन कर घावामन दना जाननी थी। इत्या प्रतीमानाय बीम में जब नाराजगी न चिह्नाय तो वह बोनी—

बस एक बात न मैं मोन की तरह ही बनती हूँ—यह है निमा पक्य का जगम ।

“मास्को में करावार बढ़ते ही जा रहे हैं। यह कह कर वह लड़ा हो गया और उसको प्रगाढ़ प्रालिगन में बस कर बोला—“ब्या ही प्रच्छा हाता कि तुम भी पुरुष होती।

“बाभो, प्यारे बाभो। नमस्कार।
अपने प्यार का एक बिह्व प्रकित कर वह बसा गया।

क्रिस्मस के दिनों में पूर्व यादेंन्काया बुरी तरह घायल और बहोश प्रसक्सेई का बरफ-गाड़ी में बस कर घर साईं। उसके सब कपड़े फटे हुए थे। यादेंन्काया और निकिता उसके बदन पर मूसी और बोदका की मामिस करने लग। बहुत देर के बाद वह कराहा परन्तु बोल न सका। प्रतीमानोव जगली बानबर की तरह अपनी कमीज की बाँहों को ऊपर बढ़ाता और फिर उन्हें नीची कर लेता। इस तरह वह दाँत पीसता हुआ बमरे में चकुर काटता रहा। जब प्रसक्सेई को कुछ होश आया तो मुक्का घुमाता हुआ वह उससे पूछन लगा—

“तुम्हें किसने मारा है? बता ता मही? प्रसक्सेई ने मूसी और चाट से नीली पड़ी एक प्रालि को बोल कर दसा। वह क्रोध से हाँक रहा था। नून पूकन हुए वह सिफ इतना ही बोला—

‘बस, मुझे खतम कर दो।
नताम्या बर से सिक्कने लगी। इस पर प्रतीमानोव बड़े राय में प्रहमकदमी करता हुआ बिन्वाया—
निकस जा यहाँ से।
प्रसक्सेई ने अपना सिर पकड़ा—जमे कि वह उस घब से उखाडना चाहता हो और फिर कराहन लगा।
इसके बाद अपनी बाँहें फेंक कर वह करबट बदन कर बुपथाप

है। बिना संपन्न के न तो जीवन है धीर न मरण ही। वह ऐसे काम करता है जैसेकि घाम भी वह किसी मातिक के लिए कर रहा हा, अपने लिए नहीं जैसेकि वह एक गुलाम हा। इच्छा, स्वतंत्रता ता उसमें है ही नहीं, समझो ! निजिता के बारे म क्या कहूँ वह अपाहिष्ठ है उसक दिमाग म ता बस फन-फुलबारी ही घूमन रहते हैं। मैं साबता या कि कम-से-कम घसबसेई इस काम में रुचि लेगा।

बाइमाकोबा न उस सान्त्वना दम का प्रयत्न किया—

'तुम व्यय म ही दूतनी जल्पी चिन्तित हुए जा रहे हो, धर्य्य रनो। जब मिस के पत्रिण लेजी स घूमने लगेंगे तो ये स्वयं उन्हें अपने घाव इपर खींच माएंगे।'

ये बोना घापी रात तक बंधे-स बंधा मिडाल कमरे की उज्ज्वला मे बठे रहे। देवमूर्ति वाय कोमे में हस्के मीमे प्रकाश का एक वादम-ना लेप्य की मजीवी भी पर मंडराता रहा। बच्चा म ब्यबमाधिक उम्पाहू की बमी क बारे म निकायत करते हुए अर्त्तमानोब ने नगरवासियों का भी नहीं छोडा—

'ये लोग ता बड़े घाछ दिम वाले हैं।

'व तुम्हें चाहते मही क्योंकि भाग्य का त्रक तुम्हारे लिए मीषा घूम रहा है म। हम स्त्रियों ता पुरुषों का इस बात क लिए प्यार करती हैं परन्तु जब पुरुष की सपनना दूगने की आँगों म गन्बने लगती है।'

उम्पाता बाइमारोपा उन वाग्य कर आशवागत दना जानती थी। इस्या अर्त्तमानाव बीच में जब मागजगी न पिछाया तो वह बानी—

'बस एक बात मे मैं मौन की तरह ही डरती हूँ—वह है तिमो यद्य का जन्म।

‘खूब खाओ ।’ अर्तमानोस ने ससाह दी और अपनी दाढ़ी में भुनसुनाया—‘इसके लिए उसकी सास ख़भी खानी चाहिए—उनके पत्रों को भूना जाना चाहिए ।

अब अलकसेई की धोर से वह सतर्क हो गया और कहना चाहिए कि वह अब ख़साई के साथ उसे प्यार भी करने लगा था । अपने सड़कों को काम करने के लिए प्ररित करने के उद्देश्य से वह अम के लिए अपनी प्रेम भावनाओं को व्यक्त कर प्रदर्शनीय कठोर परिश्रम करने लगा ।

‘जी चाहे जो करो, लेकिन किसी काम से नाक-भौंह मती सिकोडो । और वह बहुत-सी ऐसी बातें जिनकी कोई जरूरत नहीं थी, किया करता । किसी भी काम को जिसे वह हाथ में सेता था उसमें तत्परता फुर्ती और पटुप्रवृत्ति से लग जाता, जिससे उसे पता लग जाय कि कहीं से प्रतिरोध होगा और उस पर कसै विजय प्राप्त की जा सकेगी ।

उसकी पुत्रवधू की प्रसूति असाधारण रूप से लम्बी सटक गई थी । आक्षिपकार, महात्मा न अब दो दिन की पीडाएँ भेसने के बाद एक कन्या को जन्म दिया तो वह अप्रसन्नतापूर्वक बोला—

‘इससे क्या साम ?’

‘परमात्मा को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दो उल्माना ने दृढ़ होकर ससाह दी—‘आज ‘एमीना लिग्यानिष्ठा का दिन है ।

‘अच्छा !’

उसने गिरजे का पशुबाहु उठाया और बच्चों की तरह उन्मुकता से तारीस देखने लगा ।

‘मुझे बड़ी की धार से बलो ।’

पड़ गया । हाँफना हुआ उसका मुँह लून में सना गुला पड़ा था । एक मोमबत्ती मेक पर टिमटिमा रही थी और उसके पायल शरीर पर उसकी गेजनी पड़ कर उसके शरीर को और भी अधिक सूजा तथा बाला बना रही थी । उसके दोना भाई बुपचाण विस्तर न पायते की और गड़े घ, जब कि बाप कमर में पककर काटता हुआ किसी अदृष्ट ब्यक्ति से पूछ रहा था —

‘क्या सबमुष यह अब जीवेगा या नहीं ?

परन्तु सात-आठ दिना में घमकसई फिर उठकर गड़ा हो गया यद्यपि वह कमी-कमी रासता रहता था और उसके मुँह से लून भी जाता था । स्नानागार में वह अपने शरीर का भाप देता और मसानेदार वादना भी पीता । उसकी धारों में निरामा पूर्ण कानी घाग मुसग रही थी जिस में वह और भी अधिक सुन्दर प्रतीत होता था । वह यह बताना नहीं चाहता था कि उस किसन मारा है । परन्तु, यादेंस्वाया में सब कुछ पता भी सया निया । उस पर हमला करने वालों में स्तेपान घास्की दा घाय बुम्जन वाले और एक बरोपोनोव का मर्नोबियन दरबान था । जब घर्तमानोव न घमकसई में पूछा—

‘क्या यह ठीक है ? तो उसने उत्तर दिया— ‘मुझे कुछ पना नहीं ।

‘भूठ बातता है ।

मैन उन्हें दगा नहा । बयकि मेरे ऊपर बाट या कार्ड लमी दूसरी पीज ठाल बा गई थी ।

‘तू कुछ-न कुछ दिया रहा है । घर्तमानोव ने कहा ।

घमकसई न घस्वम्य घर्षनिमीसित धारों में बगत हुए कहा—

मैं ठीक न जाऊँगा ।

“खूब खाओ !” अर्तमानोव ने सलाह दी और अपनी दाढ़ी में भुनभुनाया—‘इसके लिए उनकी साल खरी जानी चाहिए—उनके पशों को भूना जाना चाहिए ।

अब अतसेई की धार से वह ससक हो गया और कहना चाहिए कि वह अब रूसी के साथ उसे प्यार भी करने लगा था । अपन सड़कों को काम करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वह धम के लिए अपनी प्रेम भावनाओं को व्यक्त कर प्रदत्तनीय कठोर परिश्रम करने लगा ।

जी जाहे जो करो लेकिन किसी काम से नाक-भींह मती सिकोड़ो ! और वह बहुत-सी ऐसी बातें जिनकी कोई जरूरत नहीं थी, किया करता । किसी भी काम को जिसे वह हाथ में लेता था उसमें तत्परता फुर्ती और पशुप्रवृत्ति से लगे जाता जिससे उसे पता लग जाय कि कहीं से प्रतिरोध होगा, और उस पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकेगी ।

उसकी पुत्रवधू की प्रभूति असाधारण रूप से लम्बी सटक गई थी । आखिरकार, नशात्या न अब दो दिन की पीड़ा में जीवन के बाद एक कन्या को जन्म दिया तो वह अप्रसन्नतापूर्वक बोला—

‘इससे क्या साम ?’

‘परमारमा को उसकी कृपा के लिए अत्यन्त दो उस्माना ने हड़ होकर सलाह दी—‘आज ‘एसीना लिम्पानिस्ता का दिन है ।

अच्छा !

उसने गिरजे का पञ्चाङ्ग उठाया और बच्चों की तरह उत्सुकता से घारीक देखने लगा ।

‘मुझे बड़ी की धार से बसो ।’

अपनी पुत्रबधू को छाती पर काना के नीसमजदित मुमक
घोर पाँच सुनहरी चोर्वाँनिस १५ रखते हुए उसने कहा—

‘सा ! यद्यपि सडका सों पैदा नहीं किया, फिर भी कोई
बात नहीं, सब ठीक है ।

घोर प्यात्र स पूछा—

‘क्या पुरानी मछली तू ता गृण है न ? जब तू पैदा हुआ
था तो मुझे भी बहुत गुसी हुई थी ।

अपनी पत्नी के रक्तहीन पीड़ित घोर मगमग अपरिचित
चेहरे की घोर प्योत्र पूर पूर कर देखता रहा । उसकी पत्नी गह्रों में
घेंसी घाँघें वही स ऐसे देग रही थी जैसेकि वे चिरविस्मृत
सोर्गो घोर बीजा को स्मरण करन की काशिस कर रही हा ।
उसकी पत्नी न अपने पत्रे होठों पर घीमे-घीम जीम को पिराया ।

यह बुद्ध वासतो क्यों नहीं ? प्यात्र ने अपनी साय
न पूछा ।

‘यह गहम हा बहुत बीस्वार कर चुकी है—’ उत्पाना
न उसे बयने न बाहर धकनते हुए कहा—

दा दिन घोर दा रात तक उसने पत्नी की बिहादटें मुनी
थी । पहमे ता उमे उस पर दया घाई घोर फिर डर मगा कि
कहीं वह मर न जाय । फिर उसकी बीग-मुहार घोर घर की
बहम-गहन ने उमे घुरी तरु घवा लिया, बह परेगाम हो उग ।
उसकी इच्छा होनी थी कि वह कहीं दूर बसा जाय, जहाँ उम
य मय बुद्ध गुमाई भी न पड़े । परन्तु उन बिहादटों न दुःकाग
मग या बशाकि स उमधी अनराता म भी हो रही थी । जहाँ
की वह जाता कापड घोर बुन्हाड़ी निग गान्म-नाटते घोर दण्ड दर

१५ चोर्वाँनिस—जमी मान का मिश्र ।

की तरह इसर-उधर नि चर्य भागत हुए निकिता स उसकी भेंट हो जाती ।

सगता है कि वह इस जापे स खड़ी नहीं होगी" व्योम ने प्रपन भाई स कहा था । प्रपना फावड़ा रत में गाड़ते हुए कुवड़े ने पूछा—

'दाई क्या कह रही है ?

वह कहती है कि फिर की कोई बात नहीं । ठीक हो जायगी । लेकिन तू क्यों इतना नाँव रहा है ?'

'मेरे दाँत में दर्द है ।

बच्ची क पैदा हान क बाद सोम क समय निकिता प्रौर तिक्षान क साथ छग्न पर बठ प्यात्र न बिभारपूर्ण मुस्तान स कहा—

"सास ने बच्ची को मेरे हाथों में डाल दिया । प्रौर मैं इतना खुश था कि मुझे उसका जरा भी शोक नहीं लगा । उस मीमे छत्र तक उछाम ही तो दिया । घात्रय है कि इतनी छोटी-सी बीज प्रौर उसके कारण इतना कष्ट ।

तिस्रोत ब्यासोव न प्रपन गासों का सुपभाप रगड़ते हुए सदा की भाँति प्रपन घाम्त स्वर में कहा—

मनुष्य का सब कष्ट छोटी-छाटी चीजों से ही हात है ।'

'वह क्या कहा ? निकिता न पूछा ।

दरवान ने जेभाई सेठे हुए उशसीमता स कहा—

'बात एसी ही है ।

तमी घर स साँक के भाजन का बुसाबा धा गया ।

बहु बच्ची बड़ी प्रौर स्वस्थ थी, परन्तु पाँच महीनो क

बाद ही कोयल की जहरीली गस से दम घुट जान स बह मर गई । माँ को भी उस जहरीली गस का घसर हुआ था लेकिन बड़ी मुश्किलों से वह बच सकी थी ।

घब क्या हो सकता है !” बाप न कश्मिस्तान में प्योत्र को साम्बागा देते हुए कहा था— यक़्त तो घोर भी पदा हूँ । घोर भव हमारी यहाँ पर एक बत्र भी हो गई । इससे हमारा म्यामित्व घोर भी गहरा हो गया है । जब बिनी मनुष्य व सगे सम्बन्धी उसके चारों घोर जमीन पर घोर जमीन में नीच भी हो जाते हैं तभी वह मुट्टू घोर घबस रूप से स्थापित हो पाता है ।

प्यात्र ने सिर हिसामा । वह घपनी परती मतास्या को देग रहा था । मुक कर सटे हान उसका बङ्ग धाबुम कर देन को काफ़ी था । वह घपन वीच व पास मिट्टी व एक छोटे-से डेर पर घपनी धाँवे गढ़ाण थी । निकिता सावधानी के साथ उस डेर का फाबडे रा निबना रहा था । बह घपने गाना से धाँमुयों को इस कदर घयगहट घोर जल्दबाजी व साथ पोंद्री थी कि सगता था जम बह घपना मूजी हुई साम नाक व उङ्गला को जसने मे बधाना चाहती हा । वह पुसपुमा कर कह उठी—

हे परमात्मा ! ह परमात्मा !’

घसकमेई कश्मिस्तान में कासों के बीच सँग पत्रता हुआ घुम रहा था । वह बहुत दुबला हो गया था घोर उसके किनार घटने पर घब बुझाप व निहू उमर उठे थ । उसके गालों घोर टोड़ी पर बाने रोंए धान मगे वे जिनमे उसका गुदर मुगडा मुनसा भुयमा घोर पूँए-स बासा सगता था । उसकी व पृष्ठ धाँगे धात्र घपनी कायो भूबुटिया में छिपा घरबि घोर घनिघटा म गार सगार को निहार रों था । बह धीमी धाबात्र में घपिनार घोर रीब जमाने हुए घबघटना व साथ घुम करता

घोर जब लाग उसकी बात को समझ न पाते तो वह उनको
गासी दकर कहता—

“नहीं समझे !”

घपने भाइयों के प्रति उसका व्यवहार कटुतापूर्ण रहने
लगा । नताल्या को वह ऐसे पुकारता जैसे कि वह कोई नौकर-
रानी है ।

एक बार निकिता ने उसे झिड़क लिया—

नताल्या पर ध्यप ही गुस्सा क्यों किया करता है रे !”

“मैं बीमार आदमी हूँ ।” उत्तर में उसने कहा था ।

“वह तो बड़ी घास्त प्रकृति की है ।”

“कोई बात नहीं वह सब सह लेगी ।

घपनी बीमारी के बारे में प्रायः असहर्ष घनिमान ने
ऐसी बातें किया करता जैसे वह बीमारी उसकी कोई बिनेयता
है और उसके कारण वह अन्य दूसरे साधारण नरुवर प्राणियों
में बिभिन्नता लिए है ।

कब्रिस्तान से घर की घोर सौटत समय उसने घपने
मामा से कहा था—

“हमें घपना कब्रिस्तान भी अलग बनाना चाहिए । ऐसे
सागों के साथ घपनी मृतात्माओं को सिटाना भी कितना घपमान
जनक है !”

घर्तमानोव ने हस्की हुईंसे में उत्तर दिया—

“जकर बनाएँगे । हमारे गिरजाघर कब्रिस्तान बिधासय
घोर अस्पतास सब घपने अलय है जाएँगे । लेकिन इसमें कुछ
समय भी तो लयगा ।

वनादा नदी का पुल पार करते हुए वे एक भिसमये
 जसी मनुष्यमूर्ति के सामने स गुजरे जो फटी-पुखनी सूरी पोशाक
 पहन रेनिंग पर झुकी हुई गड़ी थी। प्रतीत होता था कि
 मदिरा-पान के कारण वह कोई बिगड़ा हुआ छोटा सरकारी
 कर्मचारी है। उसके घस्त-घ्यस्त भद्र चेहर पर भूरे बुर मोटे बालों
 की टूटियाँ खमक रही थी और हिलते हुए घाँटा स कामे दाँतों
 के सूटे दिखाई दे रहे थे। उसकी गीली आँखों में क्षीण प्रकार
 की झलक थी। अर्थात्मानोक ने ऊपर से अपना मुँह फेरते हुए
 पूछा। लेकिन यह दस्तकर कि अक्षयभई ने इस बुद्ध मनुष्य की
 ओर विशेष ध्यान से तिर झुकाया है उसने पूछा—

‘यह कौन है ?’

‘यह पड़ोसाज अर्लोव है।’

यह तो मैं भी देख रहा है कि अर्लोव है।

‘यह एक बुद्धिमान और स्थिर मनुष्य है। अक्षयभई ने
 कहा— इसके साथ बड़ा अत्याचार हो रहा है।’

अर्थात्मानोक ने अपने भावों की धार सज निगाहा से देगा
 और चुप हो रहा।

गरनी का मौमम अपने साथ भवानन घर्मों और पूगा
 साया। घोका के पार जङ्गल में जब-तब घाग लग जाती। तिन
 में आसमान में दोड़ लगाते हुए खमकीले बालों की छायाएँ पृथ्वी
 पर पड़ती और रात में अन्द्रमा भद्र नाम रङ्ग का होकर क्षीण
 प्रकाशपात और ताँब के पनकाग के समान लगनेवाले गितारा के
 शीष पृथ्वी पर भङ्गने लगता। पुपने आकाश का यह रूप
 नदी में प्रतिबिम्बित होता तो एसा मामूम पड़ता कि भूगर्भस्थित
 पूँजा किमी बगहीन पारा के रूप में प्रवाहित हो उठा है।

एक उमगभरी शाम का भाजन के बाद अर्थात्मानोक

वार बगीचे में चाय पी रहा था। मपुल के वृत्तों में एक मुण्ड में वे सोप चारों ओर से घिर हुए थे। यद्यपि मेपुल के वे वृक्ष झच्छी तरह बढ़ गए थे लेकिन उनकी पत्तियों के छत्रों की मज पर कोई छाया नहीं पड़ रही थी। उस समय भीगुरों की झुंझार और भीरों की गुच्छन सुनाई दे रही थी। समोबार^{१२} धंगीठी पर थड़ा हुआ मन मन शब्द कर रहा था और नतात्या चाय डालने के काम में धान्तिपूर्वक सगी हुई थी। उसने ब्याउज के ऊपर बाम बटन खुले हुए थे और उसमें से उसका बावामी रंग का यन्मीर उमार झसक रहा था। कुबड़ा भिक्षिता सिर मुझाए पत्तियों के पिजड़ों के लिए तीलियाँ छील रहा था। सभी प्योब बहुत धीमे स्वर में बोला—

‘सोगों को माराज करन से कोई फायदा नहीं हो सकता है। लेकिन पिताजी सदा ऐसा ही करते रहते हैं।’

अलकसेई शहर की ओर मुँह किए बैठा सूखी लौसी लौस रहा था। सगता था कि वह किसी के घाने की प्रतीक्षा में बना है।

अधानक धीमी आवाज में एक चप्पी टनटना उठी।

‘भाग की चप्पी है?’ अलकसेई अपने हाथ को सिर तक उठाते हुए चीख उठा।

‘तुम्हें हो क्या गया है? यह गिरजे की चप्पी के बजने का समय है।’

अलकसेई वहाँ से उठ कर चला गया। कुछ समय बहाँ कामोधी रही, भिक्षिता ने बड़े कोमल स्वर में उस धान्ति को भङ्ग किया—

‘इसे सब जगह भाग ही भाग दिखती है।’

१२ समोबार—एक प्रकार का बर्तन जिसमें चाय का पानी उबाला जाता है।

"तो हमें मिल के मजदूरों को बुलाना चाहिए।"

परन्तु तिग्यान ने उन्हें पहल से ही बुला लिया था और वे सब घोर मजामे हुए नबी की घोर दौड़े जा रहे थे।

'सब कर मरे पास तो घाघो!' पाँवा का पमा कर छत की मुँह पर बैठे हुए घसबसेई ने उसे बुलाया।

कृमड़ा भी धागाकारी की तरह ऊपर जा पहुँचा और बुदबुनाया—

मुझे उम्मीद है कि मताम्या डरेगी नहीं।

मुझे यह डर नहीं कि प्योन तरी मरम्मत करके एक दूसरे कुछ भी निकास दगा।

क्यों? निबिता ने पीम में पूछा।

उमकी पत्नी की घोर निगाह उठाना छोड़ दे।' उत्तर मिला।

बड़ी देर तक ता कृमड़ा कोई जबाब न दे मया। उम मया मया कि वह छत में नीचे की घोर मुँह रहा है और दूसरे ही क्षण वह जमीन पर डेर हा जायगा।

तुम्हारे कहने का क्या मतलब है? कहने में पाम कुछ मात्र ता पना चाहिए। वह पाना।

'बहुत धर्या! बहुत धर्या! मैं धर्या नहीं हूँ। गर बाई बात मही। घसबसेई ने यह बात ऐम विमो म कही जग कि यह बहुत देर से कुछ बामा ही न हो। घपनी घाँगों पर हाया न घाया करके यह उम भपंकर घाग की सपनपाती हृद सपना का बड़ी देर तक दगता रहा जिन्होंने राग की निस्तम्पता को मद्द कर, चारों घार हा-हाकार-सा मया लिया था।

गहरी विलम्बस्पी लेकर वह फिर कहने लगा—

यह भाग तो बास्की के यहाँ लगी है । उसके प्रांगन में कई एक कोड़ी तारकोस के पीपे पड़े हैं । लेकिन भाग पड़ोसियों तक नहीं पहुँचेगी क्योंकि बीच में बगीचा है ।

‘मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए । निजिता ने भाग स खिन्न भिन्न व्यवहार की ओर देखते हुए विचार किया । शाम वायुमण्डल में पेड़ तप्त सोहे के डले हुए से लड़े से और धूमि पर लोग खिलौनों के समान दीड़ घूम करते प्रतीत हो रहे थे । यहाँ तक कि उन लोगों को पतले और लम्बे कुन्तारों का भाग में झोंकते हुए भी वह देख रहा था ।

भाग धानदार जल रही है’ असलसेई ने धानखित हाते हुए कहा ।

‘मैं छात्रगृह में जमा जाऊँगा ।’ कुयड़े ने सोचा ।

प्रांगन में सोते हुए प्योत्र की शिकामतभरी आवाज उन्होंने मुनी । सिञ्जान ध्यासोव ने उत्तर में अससमाज से कुछ कहा था । उस समय नतान्या सिञ्जकी में लड़ी ऐसी लग रही थी जैसे चौकटे में लड़ी वह कोई एक तम्बीर हो ।

कामी-कामी धिमनियों के चारों तरफ अगारे भिन्नमिसा रहे थे । भाग न वहाँ तक कुछ स्वाह बन दिया था और अब तक वहाँ भाग की स्वर्णिम दामा-सी न वम गई निजिता ठम तक छत पर ही बैठा रहा । फिर वह नीचे उतरा और द्वार से बाहर निकलन को मुद्रा तो पानी से सरबसर और धूँए से काले पड़े पिता स उसकी मुठभेड़ हा गई । उसका पिता वगैर टोपी के और बिमड़-बिघड़े हुए कोर को पहन हुए था ।

तू वहाँ जा रहा है ? अर्तमानोव ने गुस्से में पूछा और निजिता को फिर प्रांगन में ही अकेल दिया । छत पर

सही किसी सफेद घाहति का दस्त कर उसन मयबर गुस्स में घसकसई का घाबाज दी—

घोर दस्त पर तू क्या कर रहा है ? भीषे उत्तर कर घा ! मूय तुम्हे स्वय सावपात्री के साथ रहना चाहिये ।'

निश्चिता बगीचे म पहुँच पर पिता के कमरे की तिड़की के नीचे बच पर बैठ गया । मेकिम जस्टी ही उसने दरवाजा मिड़न का लटाका घोर पिता घर्तमानोष को ऊपर वाले कमर में धधिनारपूर्ण दाय्य म कहव हुए मुना—

'क्या तू घपन की बरपाद कर मरे सिर बुराई सादना पाहता है ? तुम्हे मैं निया दूँगा बि ।

घसकसई पतनी घाबाज में सीया—

'घापन ही ता मुम्हे यह मार्य बताया है ?

'शुप रह ! परमात्मा को घन्यवाद द बि घसकसई बरमादा मास भी महीं कर सकता ।'

बिना बिमी घाहत् के निश्चिता दीघना म घपन म्थान मे उठा घोर घीष्म-मुटीर म वापिस जा पहुँचा ।

घगन दिन मुबल घाय के गमय बाप मे यताया—

बह घग्निबाहद घा घोर उम शगशी घनीसाज मे उग बिज्या था । दग पर मागों मे उमे गृब मारा-नीना है । लगता है घप बह मर ही जामगा । बहा जाता है बि यामरी मे उम बरपाद कर निया है घोर म्पयोग मे भी उमका बाई पुराना भगदा है । लगता है इमके पीछे कोई रहस्य दिना हमा है ।

घसकसई शान्ति क गाय दूष पी रहा था । निश्चिता के हाप कोर रह द त्रिनता उगने पुत्रों क क्षीय रग कर पार मे

बना लिया था। उसकी इन हरकतों को देख कर वाप ने पूछा—

“क्यों रे, तुम्हें क्या हो गया है ?

“मैं कुछ अस्वस्थता अनुभव कर रहा हूँ।”

“तुम सभी बीमार हो। तन्दुरुस्त तो भकेसा मैं ही हूँ।”

घोर वाय को समाप्त किए बिना ही प्यासे को वहीं रखकर वह गुस्से में वहाँ से चला गया।

अर्तामानोव के मिस में लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी। मिस से दा वेर्स्ट^{१०} दूर तक छिदरे बिखरे सड़े चीड़ के पेड़ों के बीच घास से बनी पहाड़ियों के दोनों ओर छोटी-छोटी मोंपडियाँ सड़ी हो चुकी थीं जिनके चारों ओर न कोई बगीचा था और न कोई बहारबीचारी ही। दूर से देखने पर वे मक्खी के छत्तों के समान दिखाई देती थीं।

एक ठबेसे नामे में जो कभी किसी भजास नदी का तल था, अर्तामानोव ने बिना परिवारों के मजदूरों के लिए वरकें बनवा दी थीं। यह सभी इकमज्जिला इमारत जिसमें तीन चिमनियाँ और गरमी से राहत पाने के लिए छोटी-छोटी बिल्डिंग किर्पा लगी थीं एक ठबेसे के समान दिखाई देती थीं। इस इमारत को मजदूरों ने ‘भोड़ों का महल’ नाम दिया हुआ था।

इत्या अर्तामानोव अब बढ़ बढ़ कर दोखी मारता घोर-शरावा किया करता। परन्तु उसमें अभी वह अकब पैदा नहीं हुई थी जो प्राय घनिकों में पा जाती है। मजदूरों से वह घबरा मिल-जुलकर रहता। उनके ब्याह शादियों में सम्मिलित होता उनके बच्चों का धर्मपिता बनता और छुट्टी के दिन उनके बीच बैठकर गपशप लबाता। उन्होंने उसक सामने सुझाव रखा कि घाम के

१० वेर्स्ट—एक रूसी दूरी माप जो घामे मीस के बराबर होता है।

साफ हुए जड़सों और फालतू कमजोर जमीन में सन बाने के लिए किसानों से बड़ा त्राप । इसका परिणाम भी बहुत प्रच्यदा निबसा । मजदूर अपने दयालु मासिक की प्रदासा में गीठ गात और उछे घपन जैसा ही एक भाग्यवान किसान भाई सममते वे । वे घपन मौजवान सड़को के सामन इधवा उगाहरण रक्कवर रहा करते—

‘उसस सिधा सा बि बाराबार कंसे बिपा जाता है ।’

इपर इन्वा भी अपने लड़कों से बड़ा करता—

‘किसानों और मजदूरों में नगरवागियों की प्रपेधा प्रपिक समक होती है । नगरवासी हठियों वे कमजार तो प्रबन्ध हाते हैं सकिन उनके मस्तिक प्रपिक गतिप्रामी होने है । नगरवासी सासपी हात है और उनम साहम और हीमसा नहीं होता । उनका कारोबार मुटक प्रामारा पर लड़ा न होने के कारण बिग्न्यापी नहीं होता । नगरवागियों को किसी वस्तु क मापन का ज्ञान नहीं । बिमान और मजदूर घपन पर बापू रगते हैं मपाई की सीमा म समन है और मपाई उनक लिए मीपी-मारी पीत्र है उगाहरण के तोर पर घपन और राजा ही उनो ईरपर है । बिमान बहुत मरम स्वभाव का होता है और मुम्हें उमका हा महारा रगना है । प्यात्र नू मजदूरक के साथ कठोर है । नू काराबार के प्रमाबा उनम बोर बातपीत ही मगे करता । यह प्रपरी बात नहीं । मुम्हें कभी कभी ममारप्रन का हन्वी बातपान भी करनी बाहिण । उनक माय हंसी-मगीप भी करनी बाहिण । हंसी मकार क गाप बही गई बातें जप्पी मभक म पा जाती है ।

मुम्हें हंसा मगीप करना नहीं घाना प्यात्र नै बड़ा और स्वभावगत उमने घपन नाम उरर का गीप ।

“तो सीखा । मिनट भर की मसौल घण्टे भर के लिए शक्ति स भर देती है । असम्बर्ई भी उन लोगों के साथ उचित व्यवहार नहीं करता । यह उन पर बहुत चिलाता है और छोटी छोटी बातों पर उसमें झगडा कर बैठता है ।

‘व सब घोलवाज और घामसी हैं । —असम्बर्ई न साथ में कहा ।

अर्तमानाब न उन कड़ी आवाज स झिझक लिया—

‘तू उन लोगों के बारे में जानता ही क्या है ? और इतना कह लेना के बाद उसके दावी-मूँछ स छिपे घरों पर मुस्कराहट खेल गई । उस छिपाने के लिए उसने हाठों पर हाथ रख लिया और सभी उम स्मरण आया कि किस प्रकार साहस और समझ से असम्बर्ई ने कश्मिस्तान में द्रधमोब-वासिया के साथ विवाद किया था । वे अर्तमानोब के मजदूरों को अपने यहाँ रफ्ताने नहीं देना चाहत थे । हारकर उसने पम्ब्यालोब से भुर्जव-धु-बन का एक टुकड़ा खरीवा और उसे साफ करके अपने प्रयोगार्थ एक कश्मिस्तान बनाया ।

‘कश्मिस्तान उस समय सिक्खान ब्यालोब न निजिता के साथ पतमे-पससे कमखोर पेड़ों को काटते हुए सोचा था । ‘हम शब्दों का ठीक प्रयोग नहीं करता । यह कहलाता है—कश्मिस्तान परस्तु यह तो अतन्तकाल के लिए शाश्वत प्रतिविशाला है—हमारा शाश्वत-वास है । यही है हमारा शाश्वत-वर और है एक शाश्वत-नगर ।

निजिता देख चुका था कि सिक्खान ब्यालोब किस कुशलता और दृढ़ता के साथ काम में लगा रहता है । उस व्यर्थ के कहने-मुनने में विश्वास नहीं, वह अपने धम पर भरोसा करके ही काम करता है । उसके पिता अर्तमानोब की तरह वह भी

साफ हुए जङ्गलों और फालतू कमजोर जमीन में उन बीजों के लिए किसानों से कहा जाय। इसका परिणाम भी बहुत अच्छा निकला। मजदूर अपने दयालु भासिक की प्रशंसा में गीत गाते और उसे अपने जैसा ही एक भाग्यवान किसान भाई समझते थे। वे अपने नौजवान लड़कों के सामने इसका उदाहरण रखकर रहा करते—

उससे शिक्षा सा कि काराबार कस किया जाता है।

इसपर इत्या भी अपने सङ्घों से कहा करता—

'किसानों और मजदूरों में नगरवासियों की अपेक्षा अधिक समझ हाथी है। नगरवासी हठिमा के कमजोर तो बनस्य होते हैं लेकिन उनके मस्तिष्क अधिक शक्तिशाली होते हैं। नगरवासी सासपी होते हैं और उनमें साहस और हीसला नहीं होता। उनका कारोबार मुहड़ आभारों पर बड़ा न होने के कारण बिरस्वापी नहीं होता। नगरवासियों को किसी वस्तु का मापने का ज्ञान नहीं। किसान और मजदूर अपने पर काबू रखते हैं सचाई की सीमा में बसते हैं और सचाई उनके लिए सीधी-सादी चीज है, उदाहरण के तौर पर अन्न और राजा ही उनके ईश्वर हैं। किसान बहुत सरल स्वभाव का होता है और तुम्हें उसका ही सहारा रखना है। व्याज तू मजदूरों के सामने कठोर है। तू काराबार के अभाव में उनसे कोई बातचीत ही नहीं करता। यह अच्छी बात नहीं। तुम्हें कभी-कभी मनारखन का हल्की बातचीत भी करनी चाहिए। उनका साथ हँसी-मज़ाक भी करनी चाहिए। हँसी मज़ाक के साथ कही गई बातें अस्वी समझ में आ जाती है।

'तुम्हें हँसी-मज़ाक करना नहीं आता व्याज न कहा और स्वभावगत उसने अपने बातें उमर को लीने।

“तो सीसो । मिनट भर की मखौस घण्टे भर के लिए पत्ति स भर बेती है । घसकसेई भी उन लोगों के साथ उचित व्यवहार नहीं करता । वह उन पर बहुत विहाता है और छाटी छाटी बातों पर उनस मगडा कर बठना है ।

“ब सब घोसबाज और घाससी हैं । —घसकसेई न जाय म कहा ।

घर्तमानाब न उन कडी घावाज स भिडक दिया—

‘तू उन सागों क वार में जानता ही क्या है ? और इतना कह सन के बाद उसक दात्री-मूँछ स छिपे घसरोँ पर मुस्कराहट खस गई । उस छिपान के लिए उसन हाठों पर हाथ रख लिया और तभी उन स्मरण घाया कि किस प्रकार साहस और समझ से घसकसेई ने कत्रिस्तान में द्रघमाब-वासियो क साथ विवाद किया था । वे घर्तमानाब क मजदूरों का घपन यहाँ बफनान नहीं बना चाहत थे । हारकर उसन पम्यालोब स भूजव-भु-बन का एक टुकडा खरीदा और उसे साफ कराके अपने प्रयोगार्थ एक कत्रिस्तान घनाया ।

‘कत्रिस्तान, उस समय तिसोन ब्यामाब न निजिता क साथ पतसे-पतसे कमजोर पड़ों का काटते हुए साजा था । हम घाब्यों का ठीक प्रयोग नहीं करते । यह कहसाता है—कत्रिस्तान, परन्तु यह तो धनस्तकास के लिए घा-बत-प्रतिष्ठासा है—हमारा घास्वत-वास है । यही है हमारा घास्वत-बर और है एक घास्वत-नगर ।

निजिता देख चुका था कि तिसोन ब्यामाब किस बुझसता और हड़ता के साथ काम में लया रहता है । उन ब्यर्थ के कहने-सुनन में बिदवास नहीं वह घपन धम पर भरासा करके ही काम करता है । उसके पिता घर्तमानाब की तरह वह भी

मारे ताकि वह चुप हो जाय । परन्तु तिस्रोन अपनी तिरछी भाँसों से सुदूर में देखता हुआ, बिना पबराहट क सहज शान्त भाव से कहता रहा—

‘घौर, यदि वह क्यासु नहीं है तो क्यासु होने का महाना करती है । सभी बियाँ मनोरञ्जकप्रिय होती हैं । एक भी स्त्री ऐसी नहीं जो कि पर-पुरुष के लिए प्रयत्न न करती हो । व देखती हैं कि सक्कर से मधुर भी कोई और अस्तु है या नहीं ? भाई हम लोगों के लिए, इसकी कोई आवश्यकता नहीं—बस एक या दो में ही हमारा दिल भर जाता है । घौर तू इसी में सूखा जा रहा है । तू कोशिश तो कर—उससे बात कर ! हा सकता है कि वह सहमत हो जाय ।’

निष्किता का उसके शब्दों में मित्रतापूर्ण अनुकम्पा दिखाई दी, जैसी कि उसमें कभी देखी नहीं थी । उसे अपना गमा मित्रता-सा लगा और साथ ही उसने ऐसा अनुभव किया कि तिन्नान उस गंगा कर उसकी पोस खोल रहा है ।

‘तुम ध्यर्ष की बातें किए जा रहे हा ! उसने कहा ।

बाहर में गिरजे का घंटा बज रहा था जैसा संभ्या कासीन प्रायना के लिए लोगों को बुला रहा था । तिस्रोन ने अपने सिर पर के पौद के थोड़े को ठीक किया और अपने साहे के फाबड़े से जमीन को टटोल-टटोल कर पहले जैसे शान्त स्वर में कहता हुआ भागे बढ़ने लगा—

‘तू मुझ से डर मत । मुझे तुझ पर क्या भाँसी है । तू बहुत अच्छानीरवान है—घौर बड़ा कुतूहलप्रिय है । तेरी पीठ पर कुब होने के बावजूद तेरा दिल कुबड़ा नहीं ।’

निष्किता का भय नैराश्रय की तरङ्गों में घुस गया । उसकी भाँसों धुँधली पड़ गईं और वह शरारी की तरह सड़गड़गान

सगा । वह विश्राम के लिए भूमि पर गिरने-सा सगा । धीरे से उसने प्रार्थना के स्वर में कहा—

‘इसे आप अपने तक ही सीमित रखें रखेंगे न ?’

‘मैंने कहा न कि यह बात विस्तृत सुरक्षित है ।

इस बात को मैं जान जाँच और किसी से इस बारे में कुछ न कहूँ ।’

‘नहीं कुछ नहीं कहूँगा किसी से कहने की जरूरत भी क्या है ?’

इस प्रकार दोनों बाकी रास्ते चुपचाप चले रहे ।

कुबड़े की नीली-नीली आँखें और अधिक बड़ी, मोम और बिपादपूर्ण हो गईं । वह लोगों के कंधों से परे धूम्य में निहारता रहता और पहले से अधिक चुप और गूढ़ बन गया । परन्तु नतान्या भाँप गई कि कुछ-न-कुछ बात जरूर है ।

‘आपकिस तू उवास-सा क्यों रहने सगा है ?’ वह पूछ बैठी ।

‘काम बहुत है’ और इतना कह कर जस्ती ही दूर चला गया । स्त्री को इससे कुछ आघात पहुँचा । क्योंकि ऐसा पहली बार ही नहीं हुआ था—उसका देवर अब उसके साथ पहले जैसा प्रसन्न चित्त नहीं रहता था ।

नतान्या भी घर में धकेली ही रहती थी । पिछले चार साल में वह वा सड़कियाँ पैदा कर चुकी थी और अब फिर उसके पाँव भारी हो चले थे ।

‘क्या मामला है तू सड़कियाँ ही पैदा कर रही है—इसका क्या किया जाय ?’ ससुर न चिढ़ते हुए कहा था, और जब दूसरी सड़की हुई तो उसने कोई भेंट भी नहीं दी । और

फिर प्योत्र से भी शिकायत करते हुए कहा—

“मुझे पोटो की जरूरत है न कि जमाइयों की । क्या मैं परायों के लिए कमाई कर रहा हूँ ?”

उसके प्रत्येक शब्द से नतास्या अपने को अपराधिनी अनुभव किया करती । वह देखा करती कि उसका पति भी उससे अप्रसन्न रहने लगा है । रात को उसके धरावर में सेटी वह खिड़की से सुनूर धाकास में तारों को देखती और पेट पर हाथ फेरते हुए चुपचाप मनोती करती—

‘हे परमात्मा ! एक बेटा ।’

कमी-कमी उसका विम आहता कि वह अपने पति और समुद्र पर बिल्लाए—

मैं जान-बूझ कर तुमसे बदला लेने के लिए ही सक्रियता पदा कर रही हूँ ।

उसकी इच्छा हुआ करती कि वह कोई असाधारण काम करके उन्हें बिल्लाए—एक ऐसा काम जिससे सभी आश्चर्य में पड़ जाय—एक अनोखा काम जिससे वे उसके प्रति दया का बर्तन करने लगे प्रपचा कोई बुरा काम ही जिससे लोग मयभीत हो जाय । लेकिन वह अच्छी या बुरी कोई बात सोच नहीं पाती थी ।

भोर में ही उठ कर वह रसोई में जाती और नौकरानों के साथ चाय के साथ कुछ आने के लिए तय्यार करती । फिर वह बच्चियों को दूध पिलाने को ऊपर जाती । समुद्र पति और बच्चों के साथ चाय पीती । बच्चियों को फिर दूध पिलाती । गृहस्त्री के लिए बपड़े साफ करती सीती और मरम्मत करती । पुपहर के भाजन के बाद बच्चों के साथ वह बगीचे में जाती और वहाँ वह सींक की चाय तब रहती । वहाँ गोसा बनाने वाली जिन्दादिन और हँसमुख मद्रदूर लिखा, बगीचे में मंडक कर

सुप्तमय के सहजे में वञ्चियों की सुन्दरता की प्रशंसा करती । इस पर मतास्या मुस्करा देती । परन्तु, इन प्रशंसाओं में उसे कोई विश्वास न था क्योंकि वञ्चियाँ उसे सुन्दर नहीं मगती थीं ।

कमी-कमी उसे पेड़ों के बीच उसके साथ सहानुभूति रखने वाले देवर निकिता की आकृति की मसक दिखाई देती । लेकिन आजकल जब भी वह उससे कुछ क्षण अपने साथ घँटने का आग्रह करती तो वह अपराधी की तरह उत्तर देता—

‘क्षमा करना मेरे पास समय नहीं ।

धीरे-धीरे उसके मन में अस्पष्ट बटु विचार पैदा होते गए । कुयड़े की सहानुभूति उसे कृत्रिम अनुभव होने लगी । वह उसके पति का रखवासी करने वाला एक कुत्ता मात्र था, जो अलबत्सेई तथा उसकी जामूसी करने के लिए बैठाया गया था । अलबत्सेई से वह डरती थी क्योंकि वह उसे पसंद था । वह जानती थी कि यदि यह सुन्दर देवर उसे चाहे तो वह अपने को रोक न सकेगी । परन्तु, वह उसे चाहता ही न था । यहाँ तक कि वह उस पर मज़र तक न डालता था । इससे उसे चिढ़ हो गई थी और वह उस विमोदी, जिन्दादिल और साहसी नवयुवक के प्रति सश्रुता की भावना रखन लगी ।

वे सब लोग शाम को पाँच बजे चाय पीते और फिर सात बजे भोजन किया करते थे । मतास्या बच्चों को फिर नहलाती, दूध पिलाती और उन्हें सुसा देती । इसके पश्चात् छुटनों के बस मुक कर वह पति के निकट बठी देर तक प्रार्थना करते हुए पुत्र की कामना करती रहती । यदि पति की उसे अपने पास बैठाने की इच्छा होती तो वह उसकी ओर करबट बदल कर कह उठता—

‘‘बस, बहुत हो गया । अब इधर था ।

इस वर वह जल्दी ही अपने बस पर कास का बिम्ब बना कर प्रार्थना को झपटा छोड़ देती और उसके पास आशाकारिणी की तरह घाबर सेट जाती । शायद ही कभी प्यास न ठिठोसी करते हुए कहा होगा—

“इतनी सच्ची प्रार्थनाएँ किसलिए करती है ? यदि तुम्हें ही सब चीजें प्रार्थना से मिस जाय तो दुनियाँ में धीरों के लिए क्या रह जायगा ?

रात में जब कभी वर्षों के राने से वह जाग उठती तो उन्हें चुप कर के फिर सिटा देने के बाद वह खिबकी के पास जा खड़ी होती । वहाँ से वसीधे और घासमान की ओर देखते हुए निःशब्द भाव से वह स्वयं अपने अपनी माँ, समुद्र और पति के बारे में सोचने लगती । फिर वह सोचती उस कठोर परिश्रमपूर्ण दिन के बारे में जो इतनी जल्दी बीत कर उसकी आयु में एक दिन और बढ़ा देता था । उसे परिचित ध्वनियों को मजदूर कंधाओं के कभी आस्हाद से भरे और कभी बिपावपूर्ण गीतों और मिस की कट-कट घोर-घराबा को सुन कर बड़ा घनीब-घनीब-सा बाठावरण लगता । दिन में हमेशा खन्ड बाजी से भरा घोर अनवरत रूप से होता । उस घोर की प्रतिध्वनियाँ सभी कमरों में लौंती चूँती पेड़ों की सरसराहट से जा मिसतीं और खिबकी के पीछों से घा टकराता । धम की ये आवाजें उसके ध्यान का अपनी धार सीध लेतीं और उनका कुछ भी बिचार न करने को बाध्य करतीं ।

परन्तु, रात्रि की निस्तम्भता में जबकि सम्पूर्ण प्राणि-जगत शान्ति के साथ नींद में पड़ा होता तो वह निकिता द्वारा गुनाई हुई तातारा द्वारा पबडी स्त्रियों की डराबनी कहानियों, घनेक कठोर तपस्वियों और संतों की कष्टमय जीवनिमा तथा मधुर

सोभाग्यशील जीवन की कहानियों का स्मरण करती । परन्तु उसे सहृषा दुःख, डरावने विचार ही बार-बार घाबर बेर सिया करते ।

उसका ससुर उसकी धोर ऐसे देखता था जैसे कि वह वहाँ बिद्यमान ही न हो । यह बात तो सबसे श्रेष्ठ थी ही परन्तु जब भी वह बठक या कमरों में प्रकेसा मिस जाता तो वह ऐसी निर्म-प्यता से छाती से सेकर घुटनों तक देखता धोर ऐसी आवाज करता कि उसे बड़ी घृणा हो जाती ।

उसका पति रुखा धोर सापरवाह था । वह अनुभव करती थी कि जब कभी भी वह उसकी धोर देखता है जो ऐसे निहारता है, जैसे वह अपनी पीठ पीछे को किसी चीज को उसे देखने न दे रही हो । अक्सर कपड़े उतार कर वह तुरन्त भेटता नहीं था बल्कि देर तक बिस्तर के किनारे बैठ खड़ा । उसका एक हाथ रजाई में छिपा धोर दूसरा कान के पास रखा होता भयवा उससे वह गाड़ी में छिपे पासों को ऐसे रगड़ता रहता जैसे कि उसके दाँत में दर्द हो रहा हो । उसका वह कुरूप बेहरा या तो नाराजगी से झूठा हुषा-सा रहता भयवा वह गुस्सा में भरा हुषा होता था । ऐसे समय नताल्या उसके साथ बिस्तर में लेटने से बहुत डरती थी । वह बहुत ही कम बोलता था धोर कभी बोलता भी था तो सिर्फ धरेमू मामलों का ही जिह्व करता या कभी-कभी अपने कुरूप-जीवन धोर जागीरदारों के जीवन की बातें याद करता रहता, जो नताल्या की समझ में बिलकुल नहीं आती थी । सड़ियों में बड़े दिनों की छुट्टियों में वह उसे गाड़ी में बैठा कर नगर में ले जाता । उस गाड़ी को एक बहुत बिशाल कासा घोड़ा खींचता था जो रोप के साथ बड़े भावेप में इधर-उधर सिर हिलाता था । नताल्या इस जानवर से बहुत

डरती थी और उसका यह डर तब और भी बढ़ जाता था जब
 तिखोन व्यासोब कहता—

“यह सरदारों का घोड़ा है इस पर साधारण भावमी तो
 काबू पा नहीं सकता।

नताल्या की माँ प्रायः उसके घर घाती रहती थी। उसे
 अपनी माँ के स्वतंत्र जीवन और उसकी घाँटों में प्रसन्नता की
 भूमक देखकर ईर्ष्या होती। ईर्ष्या का यह भाव तब और भी
 उप हो जाता जब वह देखती कि उसका समुर उसकी माँ के
 साथ नवयुवकों की तरह स्वच्छन्दता पूर्वक ठूठा करता है। और
 आत्मसंतुष्टि के साथ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ अपनी
 सहवासिनी और प्रमिका की ओर प्रशंसारम्ब हृष्टि से देखता है।
 उसकी माँ भी उसके सामने झुन्हों को मटकती मंजर गति में
 निकसती और निर्मलतापूर्वक अपनी सुन्दरता और अङ्ग-सौष्ठव
 का प्रदर्शन करती। सारा नगर बाइमाबोवा और उसके समीप
 के सम्बन्धों के बारे में जान गया था और बुरी तरह निन्दा
 करने लगा था। लाय उससे घृणा करने से। नताल्या की उच्च
 घरानों की पुरानी सहेलियाँ इस कारण उससे किनारा कर चुकी
 थीं, क्योंकि ऐसी पतित स्त्री की पुत्री, एक परदेही पापी समुर
 की पुत्र-वधू और प्रमिमान से बुर पति की पत्नी के पास
 उन्हें जाने की मनाही कर दी गई थी। जब नताल्या को अपने
 वचन की छोटी-मोटी प्रामोद प्रमाद की स्मृतियाँ बड़ी स्पष्टता
 से याद आती थीं।

उसे यह देखकर बड़ा दुःख होता था कि उसकी माँ जो
 पहले बहुत सीधी और सरस थी अब मार्गों में प्रबन्धना और
 आत्यन्तपूर्ण व्यवहार करने लगी थी। वह स्पष्टतः प्योर से
 डरती थी, ताकि वह उसी सम्बन्ध को न समझ जाय। अतः
 उसके साथ वह गृणामद से यात करती और उसकी व्यवहार

कुसुमावता पर विस्मय प्रकट करती । वह बलबसई की परिहास पूर्ण धाँसों से डरती थी और प्रायः उसके साथ विनोदपूर्ण परिहास भी करती । उसके साथ गुप्त कानाफूसी भी करती और प्रायः उसे उपहार भी देती । सन्त दिवस^{१८} पर उसने उसका भीनी की घड़ी भेंट की थी । उसमें चरती हुई बकरियों के बीच पुष्प मुकुट और द्वार से मुसज्जित एक क्री बद्धिष्ठ थी । इस सुन्दर उपहार की सब में प्रशंसा की थी ।

'काई इस घर पास घोरोहर के रूप में रह गया था, वस तीन स्वप्न में । यह चलती तो नहीं—बहुत पुरानी जा है । जब प्रत्याशा धानी करगा तो घर को सजान के लिए कुछ तो हा हो जायगा ।

मैं ही धपना घर सजा सती था । —नतास्या न साधा ।

माँ, नतास्या से घर नुहम्पी के बारे में पूछती और उसे दर तक बहुत कुछ बताती और दिखाएँ देती ।

'सप्ताह के बीच के दिनों में मजदूर पर नेपकिन न रखा करग । वे मरों की भूँछों और दाढ़ियाँ न जल्नी में हा पाठ हैं ।'

यद्यपि वह पहल निश्चिता को चाहती थी परन्तु अब वह उम देवकर मुँह सिकोड़ एक तरफ हा जाती । उसके साथ ऐसे बात करती जैसे मोकर चाकरों से करते हैं जिन पर कईमानों का सन्तह हा । उसने अपनी सड़की को भी साबधान कर दिया—

'ध्यान रखना, इस बहुत मुँह मत सगाना । कृबटे वड़े चासाक हाने हैं ।

^{१८} सन्त-दिवस—किसी भी सन्त के नाम पर यह दिन हा सफटाई ।

कई बार मतास्या न अपनी माँ से पति की शिकायत करने की सोची कि वह उस पर विश्वास नहीं करता और जुबाने को उस पर निगरानी के लिए खोला हुआ है। परन्तु, किसी न किसी कारण से वह भिन्न जाती।

सब से बढ़ कर बुरी बात तब होती जब मतास्या की माँ इस बारे में चिन्ता करती कि वह लड़का क्यों नहीं पैदा कर सकती। वह उसके पति के राशि-सहवास के बारे में पुछती और निर्वन्धता से बिना कुछ छिपाए प्रश्न करती। उसकी सज्जम भाँखें मुस्कराती और उसकी कोमल ध्वनि और अधिक मन्द और मधुर हो जाती। मतास्या के लिए माँ का कीतूहल असाध्य हो उठता और जब उसका समुद्र उसकी माँ को अपने पास बुसाता तो वह प्रसन्न हो उठती।

'समझिन ! सबारी के लिए थोड़ा तय्यार कराडूँ !

महीं मैं पैदास ही बनी जाऊँगी ।'

'बहुत भयघ्न मैं ही तुम्हें पहुँचा पाऊँगा ।

मतास्या का पति सोच कर कहा करता —

'तुम्हारी माँ बड़ी समझदार है। पिताजी को वहाँ में रखती हैं। जब वह यहाँ होती हैं तो पिता हम से बहुत मन्न रहते हैं। उन्हें अपना घर देख कर हमारे यहाँ ही आ जाना चाहिए।

ऐसा तो नहीं होना चाहिए।' मतास्या कहना चाहती, परन्तु कहने का साहस न कर पाती और उसी माँ पर ही नाराज होती—क्योंकि वह एक सुखी प्रेमिका थी।

बहुत बगोचे के छरफ की सिड़की के पास सीने-पिग्नेन का सामान मकर बैठ जाती। और वहीं से वह स्नानागार के पास

बरियों के झगड़ों के परे तिस्रोन घौर निकिता की घाघीपधी घात पीतों को तथा कारखाने की घोर से घाने वाले कोसाहस के बीच दरवान का घात स्वर सुनती ।

“जब सोग दूसरो से ऊय जाते हैं तो वे एक-दूसर से इकट्ठे ही ऊयते हैं घौर नतीजा होता है ब्यापक घसतोप ।’

‘कितनी सच बात है ?’ नतास्या ने सोचा परन्तु निकिता ने मधुर ध्वनि ने उसे भिडका—

“पढ्यन्त्र की बातें करते हो ? घण्डा तो नाच रग, खेल कूद के बार में क्या बिचार है ? क्या बिना सोगों के घामोद प्रमाद सम्भव है ?’

हाँ यह भी ठीक है —खी बिस्मित हो सहमति भाव से सोचने लगी ।

वह देख रही थी कि उसके घास-पास के सब लोग बड़े घातमबिस्वास स घापस में बातचीत करते थे समी घण्ड घानकार थे । यह साफ-साफ देख रही थी कि उनके घब्द कितन मये-मुस घौर ठीक होते थे । वे एक-दूसरे से जुड़े निकसते घाते थे घौर दूसरों की बातों की ठीक-ठीक काट करते, जैसे कि प्रत्येक के पास घपना-घपना कठोर सत्य हो । सब लोग घपने-घपने घण्डों में एक-दूसरे स विभिन्न थे । वे मन्धीभांति घलंकारा के साथ बातते उनके व घब्द बडी की घाँदी या सोने की बनीरों के समान भनभनाते रहत । परन्तु उसक पास ऐस सब्द नहीं थे बिनस कि वह घपन बिचारों का परिघाम पहना सकती । उसक बिचार पतभङ्ग की घुन्ध के समान घस्पष्ट थे घौर उसक लिए भार मात्र थे । इसी कारण वह सूक्ष्म बनी हुई थी । उसन बड़ बिपाद घौर यहरी मनोवेदना स सोचा—

“बस, मैं ही निरी मूर्ख हूँ, न कुछ जानती हूँ, और न समझती हूँ ।”

“रीछ को ही सो, वह जानता है और देखता भी है कि मधु कहाँ है । इसीलिए उसका नाम मधुविद् है ^{१५}’ तिस्रों रस भरियो के भाइयों के पीछे से बोसा ।

‘बात भी ऐसी ही है’ मतात्या ने सोचा और एक घंटा कम्पन से उसे याद आया कि घसकनेई ने किस प्रकार उसके प्यारे रीछ के बच्चे को मार दिया था । तेरह महीने का यह रीछ का बच्चा उसके घागन में पामतू कुत्ते की तरह खनटा रहता था । रसोई में भाकर वह विछनी टाँगों के बल पड़ा हो जाता, गुराठा और अपनी छोटी-छोटी घसीब-सी भाँसों को मटकाता रहता । उन भाँसों को देख कर हँसी घाती थी । वह सभी को खूब हँसाता था । वह बड़ा भसा था और लोगों की हूपा को समझता था । सब उसे प्यार करते थे । निकिता तो उसे बहुत ही प्यार करता था । वह उसने मोटे-मोटे भासों को साफ करता कभी करता और नबी पर अपने माप नहमाने को न जाता । वह भी निकिता को बहुत चाहता था और यदि निकिता कहीं दूर भसा जाता या इपर-उपर हो जाता तो वह अपनी घुपनी उठाए घसी चाह के साथ उसकी गंध को टोहता हुआ घागन में चक्कर काटता रहता । अब-तब लिङ्की क सीपों से भी वह भा टकराता और एक बार तो उसकी पीछट भी तोड़ दी । मतात्या राब और रोटी से उमका घातिष्म करती

^{१५} मधुविद्—इसी भाषा में रीछ का विद्बद् कहते हैं । और, इसी भाषा में विद् (म्याद) मधु या सहद् का भी तथा वेद—धर्मन् जानकार को भी कहते हैं । मधु रीछ का नाम विद्बेद् या मधुविद् है—जो दो चर्यों से बना हुआ है ।

और वह भी चीख गया था कि तस्तरी में पड़ी राख में कैसे रोटी भिगो-भिगो कर खाया करते हैं । जाकर वह बड़े प्रान्तव के साथ गुराता और अपने बने बालों के शरीर को पिछली टांगों पर तोलकर राख टपकती रोटी को पैर-पैरों दाँतों वान सास-सास मुँह में डाल कर राख से सन, बिपबिपे पबों को चाटने लगता । उसकी सरस भाली मोसी बालों ऐसे समय प्रान्तव से चमक उठती । वह नताल्या के घुटनों से अपने बालों का कवस रपड़ता और उसके साथ खेसस की चाह करता । ऐसे मोसे भापे पशु के साथ बातचीत भी की जा सकती था क्योंकि वह बहुत-कुछ समझता था ।

परन्तु एक दिन धसकसेई ने उसे इतनी बोदका^{१०} पिलावी कि वह मदमस्त हो गया । रीछ बहुत नाचा कूदा और सोट पोट होता रहा । फिर, स्नानागार की छत पर चढ़ गया और बिमनी को बाह कर उसकी ईट-ईट करके नीचे फेंकने लगा । उसे देखने के लिए मजदूरों की भीड़ इकट्ठी हो गई और सब रीछ की शरारतों को देख हंसी-मसौल करने लगे । जब ऐसा कोई ही ल्पीहार जाता जब धसकसेई उसे लोगों के बिनोद के लिए शराब न पिसा देता । धीरे धीरे रीछ शराब का इतना शौकीन हो गया कि यदि वह किसी मजदूर को शराब पिए देखता तो उसका पीछा करने लगता और धसकसेई प्रायन में उसका पीछा करते-करते दुखी हो जाता । उस जंजीर में भी बंध विधा गया परन्तु उसने अपनी जगह भी तोड़-फोड़ की और गले में बंधी जंजीर से वह सकड़ी को खींचता । बाँहों को फैला कर और शरीर को हिलाता हुआ वह

१० बोदका—एक प्रकार की धस से बनाई बसी शराब जो बहुत कड़वी और तेज होती है ।

सेकिन चोट खाए हुए की तरह वह पीछे हट कर बिल्साई—

“धोह मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं सकूंगी, मुझे डर है।”

‘डर किस बात का?’ व्योम ने जस्ती से पूछा।

‘भात्मघात से! मैं नहीं जा सकूंगी, जो चाहे होता रहे मैं इससे डरती हूँ।’

‘अच्छा तो बसो, सोने के लिए ही बर्से।’ अर्तमानोव ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर माना—
‘शाम हम बहुत परेशान हो चुके हैं।’

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है। व्योम अर्तमानोव आज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह इतना बुद्धिमान और आसक्त व्यक्ति भी हो सकता है। अभी अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो रही थी।

“निःसंदेह तू मेरे प्रति निकट है,” उसने अपनी पत्नी से कहा—“तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है? सदा ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो तभी सब कुछ ठीक रहेगा।”

उस रात्रि से बारहवें दिन त्रिफिता अर्तमानोव को भोर होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और धमड़े का एक पैसा कंधे पर सटकाए देखा गया। वह ऊबड़-नगाबड़ और रैतीसे मार्ग पर जो रात की धीस के कारण बाला-सा पड़ा हुआ था—जेजी के साथ बंदम बड़ाए जा रहा था। समता या, वह परिवार से जुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी जल्द छुटकारा पाना चाहता है। रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब सोग नौद के कारण

भारी-भारी धाँसा बने लिए एकत्रित हुए थे। वे सबक सब निपटुर बने बैठे थे और निपटुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं जैसे कि उनमें से किसी का भी हृदय में उसका लिए जगह नहीं थी और किसी का भी उससे सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था। प्यात्र बहुत खुश लगता था जब कि उसे प्रती किसी सीढ़ी में साम प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार कहा था—

“ठीक है जब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के समन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति हो गया।

नशात्या न उदासीनता के साथ धार छोड़-न्वाए हुए पाप प्यात्रों में बारी। उसके पूरे जैसे छोट छोटे कान देकरन योग्य लाभ पड़े हुए थे। वह प्रत्यक्षिक सबराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती। उसकी माँ बिचार-मन मुग्ध में मौन सामे बठी थी और जब-तब अपनी उद्गतिपों को अपनी बीच से लगा कर वह बूझ से गोला कर सती थी और फिर अपनी कमपटी पर लटके वामों को ऊपर कर उन पर उद्गतिपों फेरने लगती। कवन मनबसेई ही धसाधारण रूप से चल रहा था और धपन कन्धों का उचका कर बार-बार पूछ उठता—

“निकिता तुम्हें यह कैसे मूग्ध ? धरे, यकायक ही ! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है।”

उसके बराबर ही छाटी और नुकीली माक वाली मोसोबा बठी हुई थी। उसकी कासी भ्रुकुटियाँ बिना किसी सिहाज के किसी धार भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी धाँसे बिल्कुल पसन्द नहीं थी। उसके बेहरे का बेखते हुए वे प्यादा बड़ी थीं और एक सड़की के लिए

लेकिन थोटा साए हुए की तरह वह पीछे हट कर
पिल्सार्ड—

“ओह, मुझे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं
सकूंगी, मुझे डर है।”

“डर किस बात का? प्याज में जल्दी से पूछा।

“भारमपात स! मैं नहीं जा सकूंगी, जा चाहे होता रहे
मैं इससे डरती हूँ।”

‘अच्छा तो बसो, सोने के लिए ही बसें।’ अर्तमानोब
ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर सबा होकर बोला—
“प्याज हम बहुत परेशान हो चुके हैं।”

पत्नी के साथ धीरे धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया
कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ मुक्त भी मिला है। प्योत्र
अर्तमानोब प्याज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह
इतना बुद्धिमान और आभाक व्यक्ति भी हो सकता है। अभी
अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो
रही थी।

“निःसंदेह तू मेरे अति निकट है,” उसने अपनी पत्नी से
कहा—“तुम्हें अधिक समीप और कौन हो सकता है? सदा
ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो तभी सब
बुझ ठीक रहेगा।”

उस रात्रि से बारहवें दिन त्रिजिता अर्तमानोब को भीर
होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और कमरे का एक बैसा
कमरे पर सटकाए बैसा गया। वह ऊबड़-नाबड़ और रैतीसे मांस
पर जो रात की भोज के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—संजी
के साथ कदम बढ़ाए जा रहा था। सगता था, वह परिवार से
पुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी अन्त छुटकारा पाना चाहता
है। रसोई के दरवाजे वाले कमरे में वे सब लोग भीड़ के कारण

मारी मारी धाँसों को लिए एकत्रित हुए थे । व सबके सब निपटुर बने बैठे व धीर निपटुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं जैसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसका लिए जगह नहीं थी धीर किसी का भी उसका सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था । प्यास बहुत मृग लगता था जैसे कि उस प्रती किसी छोड़े में नाम प्राप्त हुआ है । उसने दो या तीन बार कहा था—

ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के क्षमता के लिए प्रायश्चित्त करने वाला एक व्यक्ति होगा ।

नशात्या में उदासीनता के साथ धीर खोए-खोए हुए नाम प्यासों में वाली । उसके पूरे त्रैमे छोटे-छोटे कान देखने माया काल पड़ गए थे । वह अत्यधिक धरलाई हुई-सी लग रही थी । वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती । उसकी माँ विचार मन्त्र मृग में मौन साथे बठी थी धीर जब-तब अपनी उल्लसियों को अपनी जीभ से लगा कर वह धूँक से गोला कर सेती थी धीर फिर अपनी कमपटी पर सटके बामों को ऊपर कर उन पर उल्लसियाँ फेरने लगती । कबल अलबसेई ही प्रमाथारण रूप से अक्षम हा रहा था धीर अपने कर्बों का उषका कर बार-बार पूछ उठता—

“निश्चिता मुझे यह कैसे मूम्य ? धरे, मकायक ही ! यह मर लिए प्रायश्चित्त की बात है ।”

उसका बराबर ही छोटी धीर नुकीली माक वाली मोमोंबा बँटी हुई थी । उसकी कामी मृकुटियाँ बिना किसी मिहाव के किसी धार भी उठ जाती थीं ।

निश्चिता को उसकी धाँसों बिल्कुल पसन्द नहीं थी । उसका बेहरे को देखते हुए व ब्यादा बड़ी थी धीर एक सड़की के लिए

लेकिन चोट लाने हुए की तरह वह पीछे हट कर
बिस्तराई—

“घोड़, मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं
सकूँगी, मुझे डर है।”

“डर किस बात का ?” ज्योत्र ने जल्दी से पूछा।
‘आत्मघात से ! मैं नहीं जा सकूँगी, जा जाहे होता रहे
मैं इससे डरती हूँ।’

‘पन्ध्या तो बसो, सोने के लिए ही चले।’ अर्तमानोव
ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर सड़ा होकर बोला—
“भाज हम बहुत परेशान हो चुके हैं।”

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलत हुए उसने अनुभव किया
कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ मुझ भी मिला है। ज्योत्र
अर्तमानोव भाज तक अपने को पहचानता नहीं था कि यह
अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो
रही थी।

‘निसदेह तू मेरे अति निकट है उसने अपनी पत्नी से
कहा—‘तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है ? स
ध्यान में रहो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो, तभी स
कुछ ठीक रहेगा।’

उस रात्रि से बारहवें दिन निकिता अर्तमानोव को भो
होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और कमरे का एक पैर
कमरे पर सटकाए देखा गया। वह ऊबड़-गाबड़ और रेंतीले भाग
पर जो रात की घोर के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—तभी
के साथ बंदम बड़ाए जा रहा था। लगता था, वह परिवार से
पुदा होकर पुरानी स्मृतियाँ से भी अन्य दुःखकारा पाना चाहता
है। रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब लोग नींद के कारण

मारी मारी भाँसों को लिए एकत्रित हुए थे। वे सबके सब निपटुर बने बैठे थे और निपटुरता से ही उन्होंने उससे बातों को भी बसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह न थी और किसी को भी उससे सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था। प्योत्र बहुत कुछ सगता था जैसे कि उसे प्रती किसी सीढ़े में साम प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार कहा था—

ठीक है भव हमारे परिवार में भी हमारे पापों के छमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगया।

नतास्या ने उदासीनता के साथ और खोए-खोए हुए भाव प्यासों में डाली। उसके पूरे जैसे छोटे-छोटे कान दस्तन योम्य नाम पड़े हुए थे। वह अत्यधिक घबराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती। उसकी माँ पिच्चार मन्म मुद्रा में मौन साथे बैठी थी और जब-तब अपनी उल्लसिया को अपनी जीभ से सगा कर वह पूक से गोसा कर लेती थी और फिर अपनी कनपटी पर सटके बालों को ऊपर कर उन पर उल्लसिया फेरने लगती। केवल अमनसेई ही प्रसाधारण रूप से बल्लस हो रहा था और अपने कर्णों का उलका कर बार-बार पूछ उठता—

‘निकिता तुम्हें यह कैसे मूझ ? घरे, यकायक ही ! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है।’

उसके बराबर ही छोटी और मुक्कीसी नाक वाली घोसोंवा बैठी हुई थी। उसकी कामी भृकृटियाँ बिना किसी सिहाज के किसी घोर भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी भाँसों विल्कुल पसन्द नहीं थीं। उसके बेहरे को देखते हुए वे ज्यादा बड़ी थीं और एक सड़की के लिए

लेकिन घोट साए हुए की तरह वह पीछे हट कर
बिल्साई—

“ओह, मुझे वहाँ जाने के लिए न बहो । मैं जा नहीं
सकूँगी, मुझे डर है ।”

“डर किस बात का ?” प्यात्र ने जस्ती से पूछा ।

“धारमपात से । मैं नहीं जा सकूँगी, जो चाहे होता रहे
मैं इससे डरती हूँ ।”

‘अच्छा तो असो, साने के लिए ही बनें । धर्तमानोब
ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर बोला—
“भाज हम बहुत परेशान हो चुके हैं ।

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया
कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है । प्योत्र
धर्तमानोब भाज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह
इतना बुद्धिमान और आलाक व्यक्ति भी हो सकता है । अभी
अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो
रही थी ।

“निःसन्देह तू मेरे प्रति निकट है” उसने अपनी पत्नी से
कहा—“तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है ? सदा
ध्यान में रहो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो, तभी सब
बुद्ध ठीक रहेगा ।

उस रात्रि से बारहवें दिन निकिता धर्तमानोब को भोर
होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और कमरे का एक पैसा
कपड़े पर सटकाए देखा गया । वह ऊबड़-गाबड़ और रेंतीले माग
पर जो रात की भोस ने कारण कासा-सा पड़ा हुआ था—तेजी
ने साथ कदम बढ़ाए जा रहा था । सगता था, वह परिवार से
पुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी अन्ध दुःखारा पाना चाहता
है । रसोई ने बराबर याने कमरे में वे सब लोग मीद के कारण

भारी-भारी भाँसों को लिए एकत्रित हुए थे। वे सबके साथ निपटुर बने बैठे थे और निपटुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं जैसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह नहीं थी और किसी को भी उससे सहृदयता के साथ एक पक्ष्य भी कहना नहीं था। प्योत्र बहुत खुश लगता था जैसे कि उसे प्रतीति की सीढ़ में साम प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार कहा था—

‘ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के घमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगा।’

मत्ताल्या ने उदासीनता के साथ और खोए-खोए हुए चाय प्यासों में डाली। उसके पूरे जैसे छोटे-छोटे कान बेखन योग्य साम पड़े हुए थे। वह अत्यधिक धवराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमर से बाहर निकल जाती। उसकी माँ विषाद मग्न मुद्रा में मौन साये बठी थी और जब-तब अपनी उल्लसितियाँ को अपनी ओर से समा कर वह धुक से गोसा कर लेती थी और फिर अपनी कमपटी पर लटके बामों को ऊपर कर उन पर उल्लसितियाँ करने लगती। कल्पन घसकते-ही प्रसाधारण रूप से बजल हा रहा था और अपने कन्धों का उचका कर बार-बार पूछ उठता—

निकिता तुम्हें यह कैसे मूम्य ? धर, यकायक ही ! यह मरे लिए धार्मिक की बात है ! !

उसके बराबर ही छोटी और नुकीली नाक वाली घोसोवा बँठी हुई थी। उसकी वाली मृदुलियाँ बिना किसी सिहान के किसी धार भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी भाँसों विल्कुल पसन्द नहीं थीं। उसका बेहरे को देखते हुए व ज्यादा बढ़ी थी और एक सड़की के लिए

हतनी कटोसी घाँसों जो बार-बार झपझपा उठें—शोभा नहीं
देती थी ।

उन लोगों के बीच निकिता को बैठना भारी पड़ रहा था—
उसके मस्तिष्क में व्यग्रतापूर्ण विचार बार-बार घा जाते—

मान लो यदि व्योत्र सब जो यह बात बतावे तो ? तो,
भव यहाँ से छुट्टी ही सी जाय !”

व्योत्र ने सबसे पहले बिदा ली । निकिता के पास आकर
उसने उसको गले से लगाया और जोर से कम्पित स्वर में बोला,
‘भ्रमछा भैया बिदा ।’

बादमाफोवा न उस टोका “तुम कीसे हो जी ! पहले कुछ
देर बठने तो वो । धाम्ति से बैठकर प्रार्थना करो तब बिदा
करने ।”

तब ऐसा ही किया गया ।

व्योत्र पुन समीप धाया और बहने लगा—“हमारे भूलों
के लिए हमें क्षमा करना । धन-समर्पण के बारे में हमें बताओ
हम उसी तरह तुम्हें भेज देंगे । कोई भारी प्रायश्चित्त करने की
तैयार न होना । भ्रमछा बिदा हमारे लिए प्रायः प्रार्थनाएँ करते
रहना ।’

बादमाफोवा ने कास का पबित्र चिह्न उसके बदन पर बनाया
और उसके मस्तक तथा कपासों को भूमा । किसी कारण से वह
राने-बिसराने भी लगी । धमक्सेई ने उसको कसकर गले लगाया,
और उसकी घाँसों में मजिठे हुए वह बोला—

“भ्रमछा ईश्वर तुम्हारी सहायता करें । सब अपने अपने
रास्ते जाते हैं । किन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुमने
यकायक ही यह निश्चय कैसे कर डाला ?’

सबसे धन्त में नतालया सामने धाई । लेकिन कुछ दूर ही रह कर वह धादर क साथ भुकी घोर अपनी छाती पर हाथ रख कर भीमे स्वर में बोली—

‘नमस्त, निकिता इत्यथ !

यद्यपि वह तीन वर्षों को दूध पिना चुकी थी लेकिन फिर भी उसका वस कुमारी कन्या की तरह उन्नत था ।

तदोपरान्त सब समाप्त हो गया । धाह धामोवा फिर भी रोप थी । उसने अपने छोटे-से गम हाथ का बाहर निकाला । तन्ने की तरह सीधा था । हाथों को दखत हुए उसका रंग अधिक कुरूप लग रहा था । उसने मूसतापूबक पूछा—

तो क्या सधमुष ही तुम साधु बन जा रहे हो ?

बाहर धांगन में दस-बीस वृद्ध बुनकर बिना करने को प्राए हुए थे । बहुत बुद्धा बोरिम मोरमारोव सिर को हिमावे हुए जार स बोला—

सिपाही घोर साधु य दोना ही बगं ससार क सबसे बड़े सेबक हैं यह विलकुल सच है ?

इसके पश्चात् निकिता अपने पिता की समाधि स विवा सेने के लिए कश्चित्तान गया । उसने सामन नुकते हुए उसन कोई प्रापना नहीं की अपिसु बिचारों में ही खो गया ।

जिन्दगी ने भी क्या पल्टा साया था । जब सूरज उसकी पीठ के पीछे निजान रहा था तो उसक पिता की प्रास से घुसी हुई कब क उस नू भाग की विलुत तिन्नी छाया तुनुस की मही कोठरी की तरह पड़ रही थी । निकिता न अपने मापे को जमीन पर टेका घोर बोला—

पिताजी मुझे क्षमा करो ।

प्रमात की उस प्रसस नीरवता के बीच उसका कर्कश-स्वर

सुनाई दिया। एक क्षण रुक कर वह फिर बोला, "पिताजी मुझे क्षमा करो।"

इतना कहते हुए ही वह फट पड़ा और बिसर-बिसर कर बिरों की तरह दहन करता रहा। भाग उसकी स्पष्ट और मधुर आवाज असहनीय रूप से मष्ट होगई थी।

जब वह कब्रिस्तान से लगभग एक बस्त दूर पहुँचा तो उसने रास्ते में चौकीदार तिलोम को देखा। एक सन्तरी की तरह सबक के किनारे वाली भाड़ियों के बीच वह खड़ा हुआ था। उसके कंधे पर बैसबा रखा हुआ था और पेनी में कुन्हाड़ी सटकी हुई थी।

तो तुम आरहे हो ?" तिलोम ने पूछा।

"हाँ मैं अब आ रहा हूँ। तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

'मैं विचार किया है कि मैं अपनी पिढी के भीषे रोबम घुस सगाऊँ। इसीलिए उसकी पीद सेने को आया हूँ।"

ये दोनों कुछ क्षणों तक एक-दूसरे की ओर देखते हुए खड़े रहे। तिलोम ने अपनी छसकती हुई आँवों को दूसरी ओर कर लिया।

'अच्छा बसो मैं तुम्हें सड़क तक पहुँचा आऊँ।'

दोनों चुपचाप चल पड़े। तिलोम ही पहले बोला—'कितनी अधिक घोष पड़ती है अब। यह सदाएँ अच्छा नहीं है। इस तरह भास पड़ने का मतलब है—मूला और कम उत्पादन।'

'परमात्मा ही रक्षक है।

उत्तर में तिलोम व्याभाव न बहबड़ाते हुए कुछ कहा।

"तुमने क्या कहा ? निकिता ने पूछा। वह इस ब्यक्ति से कुछ भयभीत रहता था क्योंकि वह अन्य लोगों की अपेक्षा

“अध्या, नमस्कार निकिता इन्द्रधनु !” वह बोला । अपने गालों को सहसाता धीरे सोचता हुआ वह आगे कहने लगा, “मैं तुम्हें बिनयी स्वभाव धीरे कोमल हृदय के कारण पसन्द करता हूँ । तुम्हारे पिता की विशेषता उसके शरीर में थी लेकिन तुम— तुम्हारी विशेषता तुम्हारा हृदय है—तुम्हारी आत्मा है ।”

निकिता ने अपने हाथ की छड़ी को पटक दिया, बमर पर रखे सन के घस को ठीक किया धीरे फिर चौकीदार को पुपचाप अपने गले में लगाया । तिस्रो न उस मिसन का उत्तर प्रशिक्षता के साथ उसे धावी से बिपटा कर धीरे धीरे-धीरे से बोले हुए दिया—

तो मैं बकर घाड़ंगा ।

‘अन्यथा ।’

एक मोड़ से वहाँ कि सड़क भीड़ के अङ्गुल म दिए गई थी निकिता न पीछे मुड़ कर देखा । तिस्रो सड़क के भीषो भीष अपने घेनघे पर भुजा सडा था धीरे उसने अपने टोप को बगल में दबा लिया था । प्रतीत होता था कि उसने यह निष्पत्ति कर लिया है कि अब वह किसी को भी उस मार्ग से न निकसने देगा । सुबह की शीतल बजार उसक कुरूप शिर के बालों को इधर-उधर बिखेर रही थी ।

किसी प्रकार तिस्रो ने अपने मस्तिष्क में मूर्त अन्तोनुदका को बुनाया । निकिता अर्थात्मानोब न अपने कदम खींचे से बढ़ाए । उसक बिचार इस युद्ध व्यक्ति के बारे में खाना-पाना बुन रहे थे धीरे बार-बार उसके कानों में आबाज था रही थी—

आह, ईसा का अक्षरार हुआ, अक्षरार हुआ,
गाड़ी का पहिया गुम हुआ, गुम हुआ ।

पिता के नवम निर्वाण दिवस से पूर्व अर्धमासोर्ध्व
 के गिरजे की इमारत किसी प्रकार पूरी न
 हो सकी थी। उन्होंने उस सन्त इतिबाह को
 समर्पित किया था। इमारत के निर्माण का कार्य
 सात साल से बराबर स्पगित होता आ रहा था इस
 मुस्ती का प्रयुक्त अपराधी अलबसई ही था।

परमात्मा तो प्रतीक्षा कर ही सकता है
 उस जल्दी की क्या जरूरत है? वह नास्तिकता
 पूरा उत्तर तुरन्त दे दिया करता था। उसने गिरजे
 के लिए तीमार हुई ईंटों का दो बार इधर-उधर संच
 कर दिया। तीसरी बार मिस के एक हिस्से के
 निर्माण में और फिर अस्पताल के बन्दान में
 उन्हें लगा दिया था।

घुड़ि-संस्कार और पिता एवं यज्जों की
 कब्रों पर संस्कार-वाठ के हो जाने के बाद भीड़
 के छूट जाने तक अर्धमासोर्ध्व परिचार कस्बिस्तान
 में ही रहा। फिर चतुरताई से उम्माना बाइमा
 कोशा को छोड़ कर वे धीरे-धीरे अपने घर की

घोर चल दिए । उस्याना बाइमाकोबा परिवार के लिए निश्चित स्थान में एक देवदास के वृष के नीचे बम्ब पर बैठी थी । उन्हें जल्दबाजी करने की कोई आवश्यकता न थी क्योंकि समारोह के भवमर पर जो भोज पादरियों, परिचितों और कर्मचारियों को दिया जाने वाला था उसका समय तीन घंटे का था ।

बहु घावों से बिरा दिन था । आकाश ने सगमग धरक श्चतु का-सा इस अपनाया हुआ था । नमी लिए हुए हवा वर्षा का वायदा करती और बके धोड़े की तरह हिनहिमाती चल रही थी । मासिमा लिए हुए रेतीले मार्ग पर कासी मानव प्राकृतियाँ भूमती मामती हुई मिल की घोर जा रही थीं । एक सामान्य वृत्त के तीन व्यासों पर आधारित ईं की तीन दीवानें पृथ्वी की अपनी साल-साल उल्लसियों में बकड़ना चाहती थीं ।

अपनी छड़ी को हिमाते हुए घसकसेई बोसा 'घाव हमारे स्वर्गीय पिताजी हमारे बहुत हुए नामों को दखते तो बहुत प्रसन्न होत ।

'अब उन्हें पार की हर्या का पता समठा ता न बहुत बुन्धी होत" प्योत्र ने माई के प्रति बिरोध प्रकट रखे हुए कहा ।

"सर, वे दु की होना तो पामते ही न थे । वे पार की घससमन्दी से नहीं, अपनी घससमन्दी न रहते थे ।' घसकसेई ने अपनी टोपी को माथ पर नीचे की पार लीपते हुए घोरतों की घोर निहारा । छाटे इद की बुबमी-मससी माने रङ्ग के सादा रूपडे पहले उसकी पत्नी रतीस माथ पर घोमे-भीमे कदम बड़ाती म्मान स अपने कदम के धीगों का साफ करती हुई चल रही थी । मन्बी घोर स्यूसकाय मतास्या ने बराबर में घसती हुई वह देहात के स्यूस की एक अघ्यापिका-सी प्रतीत हाती थी । मतास्या

ने कामे रङ्ग का रेगमी शोभा धारण किया हुआ था, जिसमें बिगुल जैसे मनकों की माता सटकी थी और उसके मोटे साल-साल बालों से बौधा सहरे बामुनी रङ्ग का स्मास बहुत धब्दा पड़ रहा था ।

‘तैरी श्री तो बराबर सुन्दर हाँसी जा रही है !

प्यात्र ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया ।

“निकिता इस बयेंपाँठ पर भी नहीं आया । क्या वह हमस घप्रसन्न है, या और कोई बात है ?

मीसम में मनी होने क कारण धमकमेई की छापी और शोफों में ह् होने सगता था । और वह छडी पर मुक कर संव बाता हुआ-सा चलता था । वह मन्कार की प्रार्थना के मयावह प्रभाव और नमी लिए बाग्ना बामे दिन की उवासी को हटाने के लिए सदा की तरह साप्रहपूर्वक भाई की जबान को लामने का प्रयत्न करने लगा ।

“तुम्हारी सास अभी क्विस्तान में रोम के लिए रुक गई है । वह उस भूम नहीं सकती । वह एक अच्छी बुद्धिया है । मैं धीरे से तिकोन को कह दिया है कि वह यहाँ रुके और फिर उस पर पहुँचा आए । वह सिकायत करता है कि वह साँस कठिनाई से ले पाती है और चलन में उस कष्ट हाता है ।

श्लेष धर्तमानोत्र ने मजबूर होकर गेहराया—“हाँ, उस बनने में जोर पड़ता है ।”

‘तु सो तो नहीं रहा ? किसका धीर क्या जोर पड़ता है ?

“तिलान का हिसाब कर उसे निकाल देना चाहिए,” प्योत्र ने पास की पहाडी पर भूमते हुए मुकीसे देवगारों के बूजों की ओर देख कर कहा ।

“क्यों ?” माई ने धाश्चर्य से पूछा— ‘भादमी ईमानदार है। नाम ठीक करता है, मेहनती है ।’

“घोर मूर्ख भी है ’ प्योत्र ने धागे कहा ।

झियाँ उनके पास धा चुकी थीं । मनोहर घोर छोटी-सी एक भावति को देखते हुए झोला अपने पति से धाश्चर्यजनक दृढ़ वाली में बोली—

“नतास्या से कह रही है कि वह इत्या को सुस्त भेजा करे, परन्तु वह डरती है ।”

गमिणी नतास्या मोटी बतख की तरह हर कदम को संभाल-संभाल कर रखती चल रही थी । वह बड़प्पन दिखती सामुनासिक-ध्वनि में चीरे चीरे वाली—

“मिरे दिषार में इन सुस्तों का तरीका बहुत पराव है । ऐसीना अपनी चिट्टियों में ऐसे धम्य लिखती है जो समझ में ही नहीं आवे कि वह कहना क्या चाहती है ।’

‘पढ़ाई तो सबका करनी ही है !’ घसकसेई ने अपनी टोपी को उतारकर माये का पसीना पाँछते हुए रोब से कहा । समय से पहले ही कमपटियों से सिर तक फेंकते हुए गम्बज के करण उसका चेहरा किसी क्रूर भद्रिक सम्भा दिखाई दन लगा था ।

पति की घोर प्रस्फारक दृष्टि से देखते हुए नतास्या ने बहस छोड़ी—

“वम्पालोव ठीक कहता है—पढ़ने-सिखान से साग अंगसी बन जात है ।’

हां, यह ठीक है,” प्यान ने कहा ।

तो मही बात है न ! नतास्या ने प्रसन्नता से कहा, परन्तु,

उसका पति विचारपूर्वक बोला—

‘फिर भी पढ़ना तो जरूरी है ही।

उसके भाई और भोला एकदम हँस दिए। नताल्या उन्हें झिड़कती हुई बोली—

‘आप लोग हँस कैसे सकते हैं? याद करो, हम लोग वहाँ से लौट रहे हैं?’

उन्होंने उसको मुआफ़ों से पकड़ा और अधिक तेजी से चल पड़े। लेकिन प्योत्र ने अपने कदमों को धीमे कर दिया और कहने लगा—

“मैं माँ की प्रतीक्षा करूँगा।”

उसको अप्रिय तिखोन ब्यानोव ने नाराज कर लिया था। प्रार्थना से पहले कविस्तान में लड़े हुए उसने दूर अपनी मिला की ओर देखा। और बिना किसी धमक के बेबल अपने विचारों को व्यक्त करता हुआ अरु ऊँचे स्वर से अपने से बोला—

“कारोबार बुरा बढ़ गया है।”

और उसी समय अपने कंधे के पीछे से उसने अपने सूत पूर्व लार्ड लोदने वाले की धान्त आवाज सुनी—

जिस प्रकार तहलाने में सीसन बढ़ती जाती है कारोबार भी उसी तरह अपनी सामर्थ्यानुसार बढ़ता जाता है।

प्योत्र ने उससे कुछ न कहा, और न उसकी ओर मुड़कर ही देखा। परन्तु यह स्पष्ट था कि दरवान की भस्मी न अपने वाली भूर्भवा से वह बहुत दुःखी हो गया था। एक मनुष्य काम करके सौ के करीब आदमियों को रोटी देता है दिन रात कारोबार की चिन्ता में घुमता रहता है। अपने को भी उसने बिल्कुल भुसा दिया है और फिर इसी समय अचानक कोई अज्ञान मूर्ख

वह उस बात को धनस्य जानता है, परन्तु कहना नहीं चाहता । वह किसी नई भाषाति की भाषका भी करने लगा और उसकी धारों ने समाह दी—

“अपने हाथों को दूर ही रखो—तुम्हें मेरी जरूरत है !”

वह तीन बार निकिता के पास साधु-गृह हो गया था । कन्ये पर रीता सटकाए, हाथ में डब्बा लिए, धीरे धीरे ऐसे चल पड़ता था जैसे कि वह पृथ्वी पर अपने अरण्य रखने की इया कर रहा हो । वस्तुतः उसका प्रत्येक काम ऐसा ही होता था जैसे कि वह उसे बड़ी मेहरबानी से कर रहा था ।

वहाँ से सौटकर निकिता के हासवास के बारे में किए गए प्रश्नों के उत्तर में वह सबा ऐसे उत्तर देता जिनसे पता लगता कि वह जो कुछ भी जानता है सब नहीं बता रहा ।

“स्वस्थ है । सब उसका मान करते हैं सन्देश और उपहारों के लिए उसने अथवाव दिया है ।

“उमने क्या कहा है ?”—प्योत्र फिर पूछ उठता ।

“एक साधु धीरे कह ही क्या सकता है ?”

“फिर भी, धनससई अधीरता से पूछता ।

“वह परमात्मा की अर्था करता है । अतुमों में विमलस्पी रखता है, कहता है कि बरसातों समय पर नहीं हो रही हैं । मन्धरों की वह सिनामठ करता है, वहाँ मन्धर बहुत हैं । तुम्हारे बारे में भी पूछता था ।”

“क्या ?”

“बहु घाप लोगों के लिए दुःखी और चिन्तित है ।”

“हमारे बारे में ? ऐसा क्यों ?”

“हाँ, तुम सबके लिए । क्योंकि तुम सोय—बहुत उतावली

से जीवन गुजार रहे हो और वह वहीं का वहीं लड़ा है। उस तुम्हारी परेशानियों के लिए भी अप्रसन्न है।”

अससेई बार से ठहाका मार के हँसा और बिल्पाया—

‘क्या बेवकूफी है !”

तब तिल्लोन की पुठसियाँ स्थिर हो जातीं और अर्धे भाव-सूक्ष्मता से निहारन लगतीं।

“बात यह है कि मुझे पता नहीं कि वह क्या सोचता है, मैं तो बही बता रहा हूँ जो उससे कहा। मैं तो भोला-भासा आदमी हूँ।

‘हाँ तुम बहुत भोले हो।’ अससेई मखौन करते हुए बोला— ‘ठीक पागल पन्तोन की तरह।

व्योत्र अर्धमानोव को सुवासित उत्साह में सराबोर करती हुई मन्द-मन्द हवा वह रही थी और दिन अत्यधिक प्रकाश से परिपूर्ण होता जा रहा था। बादलों के बीच नीसिमा न गम्भीर रूप से सिया था और उसकी नि सीम गहराई के बीच से सूर्य देव भाँक रहे थे। व्योत्र ने सूर्य की ओर देखा तो उसकी अर्धे प्रकाशोंप हो गई और वह गम्भीर चिन्तन में डूब गया।

उसे इस बात से बहुत दुःख हुआ था कि मिक्ता में साधु गृह में एक हज़ार स्वस जमा कराके अपने लिए जीवन पय्यन्त एक ही अम्सी स्वस की बायिक राशि का वायदा करा सिया था। वह अपने उत्तराधिकार के हिस्से को अपने भाइयों के हक में छोड़ चुका था।

“एसा उपहार दे ही कौन सकता है ?” व्योत्र ने मिक्तायत की। परन्तु अससेई प्रसन्नता से बोला—

“उसे वैसे की क्या जरूरत ? उन निठन्ते मुफ्तखोर

सामुग्रों की जर्मी बढ़ाने के लिए ? नहीं उसने ठीक फैसला किया है । हमारे लक्ष्य हैं, कारोबार भी है ।' इस बात न मवाल्या के मर्म को छू लिया—

“हमारे प्रति किए गए अपराध को अभी उसने भुसाया नहीं है ।’ वह सन्तोष के साथ अपने गुलाबी गालों से सामुग्रों को पोंछते हुए बोली, “यह ऐसीना के लिए बहेज होगा ।

माई के इस काम से प्योत्र के विचार कुछ सतक पड़ गए, क्योंकि निकिता के सामुग्र के जाने के बाद सहर में अर्तमानोव परिवार के बारे में तरह-तरह की ईर्ष्यापूर्ण बुरी-बुरी अफवाहें फस रही थीं ।

वहीं तक असकसेई का प्रश्न है, प्योत्र उसके साथ अभी प्रकार निबाह किए जा रहा था । यद्यपि वह देख रहा था कि उसका हाजिरबवाब माई हमेशा कारोबार का आसान भाग अपने हाथ में ले लेता था । वह निम्नी नोवागारद के मेस में जाता और शाम में दो-एक बार मास्को भी हो जाता । वहाँ से सौट कर असकसेई मास्को के निर्माताओं की घान-चौकट के बारे में बड़े-बड़े किस्से सुनाया करता था—

‘वे सोप बड़ी घान के साथ अद्र सोगों की तरह रहते हैं ।’

“अद्र सोगों की तरह साहसी ठाठ से रहना बड़ा आसान है,” प्योत्र ने अपने माई की ओर संकेत किया जो बड़े उत्साह के साथ कहता जा रहा था—

“जब बर्ही ध्यापारी मकान बनाता है वह बिल्कुल पिरजे की तरह दिखता है । व अपने बच्चों का धिंदात करता है ।”

यद्यपि वह अधिक घामु का हा गया था, परन्तु उसकी पबामो की धानन्दप्रियता और माता में बाब की तरह अमक अभी भी बिद्यमान थी ।

“तेरे बेहरे पर हमेशा त्यौरियाँ क्यों बड़ी रहती हैं ?” वह भाई से पूछता । इससे भी अधिक वह भाई को उपदेश भी देने लगता— ‘हमें अपने व्यवसाय को हँसते-हँसते करना चाहिए । व्यवसाय और क्लान्ति का मेस नहीं है ।

प्योम जानता था कि अलक्सेई की यह बात पिता के कवन से मेस जाती थी फिर भी अलक्सेई की बात उसकी समझ में आना कठिन था ।

‘मैं बीमार आदमी हूँ’ अलक्सेई परिवार के लोगों को याद दिलाता रहता था । परन्तु वह स्वयं अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखता था । वह डट कर शराब पीता सारी रात झुमा खेतता रहता और स्पष्ट था कि वह अवारस स्त्रियों के पास भी जाता था । उसके जीवन का उद्देश्य क्या था ? स्पष्ट था कि वह न तो अपने लिए था और न घर-बार के लिए ही । बाइमाकोबा के घर की बुरी हासत थी और उसकी मरम्मत कराना जरूरी था । परन्तु, अलक्सेई उसकी ओर कोई ध्यान ही न देता था । उसके बच्चे कमजोर पैदा होते थे और पाँच वर्ष के होमे से पहले ही मर जाते थे । उनमें से सिर्फ़ मिरान ही जिन्दा रहा था । वह कुरूप भदा बड़ी-बड़ी हड्डियाँ वाला सड़का इत्या से तीन साल बड़ा था । अलक्सेई और उसकी पत्नी दोनों ही उपहास्यास्पद और निरर्थक वस्तुओं की सृष्टि के शिकार थे । उनके कमरों में माना प्रकार का धनमेल फर्नीचर भरा हुआ था । कुसीमवर्म के लोगों से खरीदे हुए उस फर्नीचर को वे अपने मित्रों को भेंट करके अत्यधिक आनन्द का साज करते थे । नताल्या को उन्होंने चीनी मिट्टी के बिसोनों से सबी अनोखी ‘बाइरोव’ भेंट में दी थी । और उसकी माँ बाइमाकोबा को अमड़े की एक बड़ी

१ बाइरोव—कपड़ा सतकामे या रसने की घुसारी ।

भाराम कुर्सी और करेलियन^३ देवदार की लकड़ी का बना पर्तय दिया था जो कांस्य धातु से बना हुआ था। घोस्गा मोती-मनकों की कढ़ाई करके तस्वीरें बनाने में कुमल थी, परन्तु उसका पति राज्य के भ्रमणों से सौटने पर बंसी ही तस्वीरें बनाने लगा करता था।

“तू पागल है”, प्योत्र को जब उसने एक बड़ी डस्क भेंट की तो उससे कहा गया था। उस डस्क पर बड़ी भारीक धुलाई की हुई थी और उसमें घनेकों दरारें बनी हुई थीं। लेकिन मन कसेई अपनी डस्क को बचपपासे हुए बोला—

‘यही तो एक सौन्दर्य है। जब ऐसी वस्तुएं बनती ही नहीं हैं। मास्को में ही इसके निर्माता हैं।’

‘धन्य हो कि तुम जादी करीबो। सम्य समाज में जादी बहुत है।’

‘हां, मुझे बचकर दो। मैं सब कुछ खरीद लूंगा! मास्को में।’

यदि मनकसेई की बातों पर बिश्वास किया जाता, तो मास्को अधीन मूर्तों से मरना हुआ था, वहाँ लोग कारोबार सम्बन्धी कोणियों की अपेक्षा रहन-सहन पर अधिक ध्यान देते थे, और इसके लिए वे सम्य-समाज की तरह भद्रपरिवारों द्वारा बेची गई उन सभी चीजों को खरीदने में अपने महानों से लेकर धर्म के ध्यान तक धन दिया करते थे।

अपने भाई के घर पहुँच कर प्योत्र को एक प्रकार की दुःख ईर्ष्या होने लगती थी। वह अनुभव करता था कि अपने घर की अपेक्षा वह यहाँ अधिक सुखी है। लेकिन इसका कारण

^३ करेलियन—करेलिया का। करेलिया, फ़िनलैण्ड के पास का प्रदेश जहाँ का देवदार उत्तम होता है।

उसकी समझ से बाहर था। उसकी समझ में यह भी नहीं आता था कि भोलिया में उसने क्या बिरोधता देखी है। नतान्या के मुकाबले में वह नौकरानी-सी दिखलाई देती थी। परन्तु मिट्टी के उस के सेम्प से ही भयभीत हो जाय वह इतनी भाली भी न थी। वह इस बात पर बिश्वास नहीं करती थी कि आत्मघातियों की जर्बों में से विद्यार्थी मिट्टी का खेल निकालते हैं। उसकी घान्त मन्द आवाज बड़ी मधुर लगती थी। प्राँखें सुन्दर थीं और उनकी चमक चश्मे से मूट नहीं होती थी। परन्तु वह लोगों और उनके मामलों के दार में उस्तुक बच्चा की तरह बात करती थी जैसे कि वह उन्हें दूर से देख रही हो। इससे प्योत्र किसी क्वर बिस्मित और माराज भी हो जाता था।

“क्यों तू समझती क्या है? ससार में कोई अपराधी ही नहीं? प्योत्र परिहास से पूछता। और वह जबाब देती—

‘नहीं अपराधी तो हैं परन्तु मैं उनके धारे में कैससा करना पसन्द नहीं करती।’

प्योत्र उस पर बिश्वास नहीं करता था।

अपने पति के साथ वह ऐसा ब्यबहार करती थी जैसे कि वह उससे बड़ी हो। और वह अपन को उससे अधिक बुद्धिमान भी समझती थी।

असबसेई कोई बिरोध नहीं करता था। वह उसे ‘बापी’ कहता था और शायद ही कभी वह उद्विग्नता का पुट लिए बिस्मित स्वर से कहता—

“बस-बस बापी यह काफी है मैं ऊब गया हूँ। मैं एक रोगी ब्यक्ति हूँ और मुझे पाडा साइ-प्यार हानि नहीं पहुँचाएगा।’

‘साइ-प्यार तो तुम्हारा बहुत हुआ है।’

वह अपन पति की ओर देख कर मुस्करान लगती। एसी

ही मुस्कराहट प्योत्र अपनी पत्नी के घोटों पर देखना चाहता था। नताल्या एक भादश पत्नी और कुशल गृहणी थी। धीरे धीरे और खुशियों के प्रचार तथा मुरखे बनान में वह बेजोड़ थी और उसके घर में नीकर पढ़ी को सुई की तरह काम करता रहते थे। नताल्या अपने पति से प्रेम करके न सकती थी। और उसका प्रेम भीम जैसा गाढ़ा और गम्भीर रहता था। वह मितव्ययी भी थी।

“अब बैंक में हमारा कितना रुपया जमा है? बिलियन हो वह पूछती ‘तुम्हें विश्वास है कि यह बैंक अच्छी है और कहीं निवासा तो न निकास बढेगी?’

जब वह बैंक का हिसाब किताब करती तो उसके सुन्दर चेहरे पर कठोरता आ जाती। वह रसभरी जैसे अपने घोटों का भीषती और उसकी घाँसों में एक तीव्र स्निग्ध प्रकाश भस्कर उठता। विभिन्न रंगों के कागज के टुकड़ों को गिनते समय वह सावधानी से उन्हें अपनी मोटी-मोटी उँगलियों में फसा लेती थी जैसे कि उसे मन्त्रिया की तरह उनके उड़ाने का भय हो।

‘असकसेई और तुम मुनाफे को ठीक से घोटत हा न?’ प्योत्र को अपने घासिगनों से सम्बुद्ध करती हुई वह साते समय पूछती, ‘तुम्हें विश्वास है कि वह तुम्हें धोखा नहीं दे रहा—यह बड़ा आसक्त है। वह और उसकी पत्नी दोनों ही बड़े सासकी हैं। जहाँ कहीं भी उनका हाथ पड़ता है वे वही स सघाट लेते हैं।’

उस बहम था कि उसको चार-उपड़ों ने भर रक्ता है। कभी-कभी वह कह उठती—

‘तिज्जोम के असाबा मैं किसी पर विश्वास नहीं करती।’

‘तो फिर तुम एक मूरत पर विश्वास करती हो।’ प्यान पनी हुई आवाज में बढ़बढ़ाता।

“वह मूर्ख भल ही हो मगर उसका दिल साफ है ।”

जब प्योत्र उसे पहली बार निम्नी नवगोरव के मेले में से गया तो इस प्रसिद्ध रूसी मण्डी के विश्वास धाकार को देख कर बिस्मय में पूछने लगा—

“क्यों, कसी है ?”

“बहुत धम्मी ” वह बोली । हर चीज की भरमार है और हमारे यहाँ से सस्ती भी ।

और उसने उन सब चीजों को गिनाना शुरू कर दिया जिन्हें कि उसको खरीदना था ।

प्राया हज़ार डबेट सामुन एक बक्सा मोमबत्तियाँ एक डेरी धक्कर और एक थोरी दानेदार ।”

सर्कस में जब नट अपना करसब दिखाने उपस्थित हुए तो उसने अपनी भाँखों को ठकते हुए कहा था—

‘ओह कितने निर्मञ्ज चीज हैं ! ओह, वे अद्भुत हैं । घरे, मैं बच्चे को बस बेन वाली हूँ—मुझे इनकी ओर नहीं देखना चाहिए । तुम्हें ऐसी भयङ्कर अगहों पर मुझे साव नहीं रखना चाहिए—हो सकता है मेरे गर्म में सड़का ही हो ।

ऐसे क्षणों में प्योत्र अर्तमानोव का अनुभव होता था कि किन्ही उवा देने वाले नासमर्थों के बीच उसका पम घुट रहा है, वह बराधा नदी की ससप्तसी मिट्टी की तरह बिपविषा है जहाँ कि बर्बा वाली मूर्ख टन्व मछली ही जीवित रह सकती है ।

मतास्या प्राय भी नियमपूर्वक सम्बो प्रार्थनाएँ किया करतीं

थी। प्रार्थना के बाद वह बिस्तर में घुस जाती और बड़े पल्लों से पति को अपने कोमल-सूदन शरीर के आनन्द को उपभोग करने के लिए उत्तेजित करती। उसकी स्वभास भ्रष्टारूपर की-सी गंध घाती थी जहाँ कि प्रचार-मुग्धों सुनी हुई मछलियाँ घोर सुषार का मांस रक्ता था। प्योत्र का यह अनुभव बराबर बढ़ता जा रहा था कि पत्नी की कामातुरता का आधिक्य ने ही उसकी शक्ति को क्षीण कर दिया है।

‘मुझे मत छोड़ो। मैं यका हुआ हूँ’, वह कहता।

अन्ध्या सो जाओ। परमात्मा तुम पर कृपा करें।” वह आज्ञा मान कर उत्तर देती और आप भी जल्दी ही गहरी नींद में सो जाती। उसकी भौंहें विस्मय करती हिसतीं, उसके घोंठों पर मुस्कान घाती लगता था कि उसकी बन्द घाँसे किसी महद्व आदर्यप्रद दृश्य को देना रही हैं।

ऐसी उदास घड़ियों में जबकि प्योत्र नतास्या ने प्रति अपनी पूणा का विशेष स्पष्टता से अनुभव कर रहा होता, तो साथ ही अपने प्रथम पुत्र के आशंकापूर्ण जन्मदिन को याद करने को भी मजबूर हो जाता। प्रसव-वेदना के चौदह लम्बे घंटों के बाद भयभीत और शर्मिलों को टपकाती हुई उसकी मांस उसे एक महीर और विभिन्न बातावरण के क्रमों में स गई थी। उसकी पत्नी एक प्रस्त-म्पस्त सिमटे बिस्तरे में पड़ी ठडफ रही थी। उसकी घाँसे भयंकर वेदना से फटी जा रही थीं। शरीर पड़ोने से सप पय हो रहा था और वह बड़ी मुश्किल से पहचानी जा रही थी। पत्नी में एक चमकर पीत्कार से उसका स्वागत किया था—

“परया नमस्कार। मैं मर रही हूँ। सबका वेदा होया। परया माफ़ करो।’

उसके कटे हुए मुखे घोंठ मुश्किल से हिस पा रहे थे और

सब्र उसके गले से न निकल कर पेट से निकलते प्रतीत होते थे उसका वह पेट भी बहुत बुरी तरह फुला हुआ था भगता था कि अभी फटने वाला है । उसका नीला-सा चेहरा भी सूज रहा था । वह एक कुत्त की तरह हाँक रही थी और कुत्ते की तरह ही उसकी मूनी हुई थीम बाहर निकली पड़ रही थी । वह भगतावार ऐसे कराहती और बिछाती थी जैसे कि वह किसी को प्रेरणा दे रही हो अपनी अपनी बात को न मानने वाले व्यक्ति को वह तर्क से हराता चाहती हो ।

“स-स—ड-का ।

उस दिन हवा बड़ी तेजी से चल रही थी । सिड़कियों के दीर्घों से चेरी की शाखाएँ टकरा रही थीं । सिड़की के बाहर उनकी सरसरहाट हो रही थी और दीर्घों पर उनकी छायाएँ नाच रही थीं । प्योन ने शाखाओं की हलचलों को देखा और पत्तों की सरसराहट भी सुनी थी । वह आगे में बिछाया—

परदे को नीचे गिरा दो ! क्या खेल नहीं रहे ?

वह मय से कमरे के बाहर दौड़ गया जिसके पीछे औरतों की परिहास मरी बिछाहट आई—

किसी भी की पीछों को सुन कर वह मय से उस ओर ही दौड़ पड़ा—

‘ई—ई—उ—उ ..।’

बेड़ पन्टे के बाद आनन्दातिरेक के कारण बोलने में असमर्थ उसकी सास पुन उसको पत्नी के बिस्तरे के पास ले गई ।

मतास्या ने उसकी ओर अपनी दृष्टि उठाई । उसकी आँखों में धहीदों की आँखों में पाया जाने वाला गौरवपूर्ण तेज था । वह क्षीण स्वर में बोली—

“एक लड़का । एक पृथ ।”

वह उस पर पूरी तरह भ्रुन गया और अपने गाल से उसका सम्बा दशाते हुए वह बुदबुदाया—

अच्छा माँ इस घटना को मैं जीते जो नहीं भ्रुमू या । यह मैं तुम्हें दिखा भी दूँगा ! अच्छा धन्यवाद !”

धान पहली ही बार उसने अपनी पत्नी को ‘माँ’ कह कर पुकारा था । उसका सब भय और उसकी सब प्रसन्नता इस क्षण में ही निहित थी । मत्तास्या ने अपनी आँखें बन्द कर अपने बुबुबु और भारी हाथ से उसके सिर को घपघपाया ।

‘यह बड़ा पहलवान है । माता के दागों वाली और बड़ी नाक वाली दाई ने अन्धे को दिखाते हुए कहा जैसे कि वह बच्चा उसने ही पैदा किया हो । परन्तु व्योम न पुत्र को देना भी नहीं । वह कमर में साध के समान बेहरे बासी अपनी पत्नी के प्रसादा और कुछ भी नहीं देना रहा था । पत्नी की ये धारें जैसे गड्डो के समान लग रही थीं ।

‘क्या यह मर जाएगी ?’

गुन ! माता के दाग वाली दाई तेजी से पिस्तवाई । ‘यदि लोग इसमें ही मरने लग जाँय तो बाइयों का क्या होगा ?’

अब वह ‘पहलवान’ नौ बरस का हो गया था । वह एक सम्बा उग्रत लसाट और मुकीसी नाक वाला स्वल्प सड़का था उसका चहरा बड़ी-बड़ी दो गम्भीर स्पष्ट बाली-नीसी धारों से प्रकाशमान था । अस्वसेई की माँ और निजिता की ऐसी ही धारें थीं । एक बरस के बाद याकोब का जन्म हुआ, परन्तु इस्या अपने जन्म के पाँच बरस बाद ही घर में बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया । उसे सबका साइ-प्यार मिलता जब कि वह किसी की भी बात नहीं सुनता था । वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत

करता और लगातार बड़ो-बड़ी टेढ़ी और भयकर परिस्थितियों में पड़कर लोगों को विस्मित कर देता था। उसकी धाराएँ लगातार प्रसाधारण बनती गईं और ये उसके वाप के अन्तर में अमिमान की एक अनुसूति जगा देती थीं।

एक दिन प्योत्र ने देखा कि उसका बेटा पहिया गाड़ी को सकड़ी के टब से जाइन की कोशिश कर रहा है।

‘यह क्या हो रहा है?’

‘एक स्टीमर।’

‘नहीं, यह चलेगा तो नहीं।’

‘मैं इसे चलाऊँगा’ बेटे ने अपने दादा की तरह जोश में कहा। अपने बेटे को उसके काम की निरर्थकता जतान में असमर्थ होने पर प्योत्र सोचने लगा—

‘यह अपने दादा जैसे ही हठी है।’

इसका अपना इच्छा की पूर्ति में ही लगा रहा। परन्तु वह सकड़ी के टब और पहिया गाड़ी से स्टीमर न बना सका। फिर उसने कोपसे की गाड़ी को एक तरफ करके टब को नदी की ओर खींचना शुरू किया और उस पानी में छोड़ उस पर चढ़ गया और दस-बल में जा फंसा। और नमभीत होने के बजाय वह नदी पर कपड़े भोती हुई धीरतों की ओर धिसाया—

‘धोरी धीरता! मुझे बाहर खींच लो, नहीं तो मैं डूब जाऊँगा।’

मताल्या ने इसका की मरम्मत की और टब को तुड़वा कर जतान के लिए उसकी सकड़ियाँ कटवा लीं। उस दिन के बाद से इसका ने अपनी माँ की भी उपेक्षा करना शुरू कर दिया और वह उसे जैसे ही देखन लगा जैसे कि दो सास की अपनी यहिन ठान्या को। वह बहुत व्यस्त सकका था और हमेशा कुछ-न-कुछ

करता ही रहता था। कभी किसी चीज को काटता, तो कभी किसी का ठोकरा या जैसे ही ठोकरा-पीटी ही करता रहता था। अपने पुत्र को काम में इस प्रकार लगा देस कर उसका ध्यान सोचता—

यह बहुत होखियार है। किसी-न किसी दिन बड़ा निर्माता बनेगा।'

कभी इत्या अपने धाप की भी कई-कई दिनों तक उपेसा करता। और फिर अचानक उसके दफ्तर में जाकर उसके घुटनों पर बैठ कर मांग करता—

'मुझे कोई कहानी सुनाओ।'

'मेरे पास समय नहीं।' बाप जवाब देता।

'और न मेरे ही पास है। इत्या कहता।

हंस कर पिता अपने कागजातों को एक तरफ रख देता और फिर सुनाना शुरू करता—

'अच्छा, तो एक समय की बात है।'

'मैं एक समय के बारे में सब-कुछ जानता हूँ मुझे तो कोई अजीब बात सुनाओ।

लेकिन बाप को कोई अजीब कहानी आती ही न थी।

'अच्छा तो तू अपनी नानी के पास जा।

'उसे तो जुकाम हो गया है।'

'तो फिर अपनी माँ के पास जा।

'वह मेरा मुँह घोल सकेगी।'

अर्थात्मानोष हँसा। अकेले उमके घेरे में ही गामर्ष्य की कि उगे भासामी स हसा कर उसे हमका और प्रसन्न कर दे।

'अच्छा, तो मैं फिर तिगोन के पास जाता हूँ।' इत्या

यह कर उसके घुटनों पर से उतरने लगा । परन्तु प्योत्र ने उसे रोक लिया ।

‘तिलोम तुम्हें क्या सुनाएगा ?

‘सब-कुछ ।

फिर भी कुछ तो ?

‘उस सब-कुछ आता है । वह वसन्ता में रहा है । वहाँ लोग क्रिस्तिमाँ और जहाँना बनाते हैं ।

जब कभी इत्या कहीं ठोकर खाकर गिर पड़ता और चेहरे पर चाट खा कर आता तो माँ उसे मारती हुई चिस्साठी—

‘छत पर मत चढ़ा कर, गिर जाएगा तो लँगड़ा-सूना या कुबड़ा हा जाएगा ।

सड़ना गुस्से में साल हो जाता और माँ को धमकी दते हुए कहना—

‘भयदा यह बात है ? घू ने अगर मुझे मारा तो मैं जकर मर जाऊँगा ।

इत्या की ही हुई धमकिया के बारे में वह बाप को भी सुनाया करती आ सुनकर मूव हँसता ।

‘उसे मारा मत कर, मेरे पास भेज दिया कर ।’

बेटा उसके पास आकर अपनी दोनों बाँहें कमर की तरफ बाँधे दरवाजे के भीष में खड़ा हो जाता । बाप सब कुछ भूलकर उसकी आर उस्मुकता से दखता और उसके दिल में पुत्र के प्रति दुस्वार मर आता । वह उससे पूछता—

‘तुम अपनी माँ के प्रति असम्य व्यवहार क्यों करते हो ?’

‘मैं मूर्ख नहीं हूँ” सड़ना गुस्से में जबाब देता ।

“मूल क्यों नहीं जय बि तू अपनी माँ से उचित व्यवहार नहीं करता।”

“क्योंकि, वह मुझे मारती है। और तिमोन कहता है कि मूल ही पीटा करते हैं।”

“तिमोन ? तिमोन स्वयं ?”
परन्तु किसी कारण से प्योत्र दरवान को मूल न कह सका। वह कमरे में बहलकदमी करन लगा और कमरे के दरवाजे से उस मानव प्राणी की ओर देखने लगा, लेकिन वह कुछ कह न सका।

“तू अपने भाई याकोब को भी मारता है।”

“वह बेवफूफ है—उसे मारो तो भी तो उसके बोट नहीं सगती—वह तो माटा है।”

प्रच्छा यदि वह माटा है तो इसका यह मतलब यह है कि तुम उसको मारो ?

वह बड़ा पटू है।

प्योत्र ने अनुभव किया कि वह अपने लडके को अपने अनुशासन में नहीं रल सकता। बेटा भी यह जानता था। यदि उसका पहले ही से ज्ञान खीने जाते तो शायद वह ठीक भी हो जाता और आज यह समय न आता। परन्तु वह इतने प्यारे पुत्र रास वालों वाले बेटे पर हाथ भी नहीं उठा सकता था। उसका दह देने के बिना मात्र से ही अपने प्यारे बेटे की नीमी घाटा पूर्ण प्राणों को देगकर वह बड़ा बेचैन-सा हो जाता। और कभी गूरज भी बीच बिबाह कर देता था। प्रायः ऐसा होता था कि जिस दिन दत्ता बहुत गररत करता वह तब पूष वासा दिन होता। प्योत्र याद करता था कि कभी उसका भी ऐसे घण्टा मुनन पट ह्यि। परन्तु उम कुछ याद नहीं आता था। क्योंकि

उन डाँट फटकारों ने उसके हृदय को प्रभावित नहीं किया था। हाँ, उनसे वह ऊब और ससेप में, कुछ मय प्रबन्ध का अनुभव किया करता था। लेकिन प्रच्छी तरह पढ़ी भार भासानी से नहीं मुसारी जा सकती, प्योत्र धर्तमानोव यह प्रच्छी तरह जानता था।

दूसरा घेठा याकोव गोल-मटोल गुसाबो गालों वाला और मुसाइति में अपनी माँ से मिसता था। कमी-कमी याकोव ऐसे बिल्लाहा जैसे कि उसे इससे बड़ा धानन्द मिस रहा हो। धाँखों से धाँसू यहाने से पहले वह भीकटा गाल फुलाटा और हथेली से धाँखें मसने लगता था। वह बड़ा दबू और कायर था। पेटू की तरह वह भरपेट खाता और पेट भर जाने पर माँ तो सो जाता या शिकायत करता हुआ कहता—

माँ, मैं थका हुआ हूँ।

बड़ी सड़की एमीना धर्मियों में ही घर धामा करती थी। वह अब जवान हो गई थी। एक सम्ये समय के बाद घर धाने के कारण वह अपरिचित्त और परदेधिन-सी हो गई थी। सात बरस का इत्या पादरी ग्लेव के यहाँ पढ़ने गया। परन्तु यह जान कर कि मिस के बसक निकोमोव का सड़का वाइविस की धजाय बिचों वाली पुस्तक “हमारी मातृ भापा” पढ़ता है वह अपने बाप से बोसा—

“मैं अब पढ़ने नहीं जाऊँगा। मेरी जिह्वा में पीडा होती है।”

वहुत देर के सवास-जबाबों के बाद उसने धताया—

‘पाचा निकोमोव अपनी “मातृ भापा” पढ़ता है जबकि मुझे बिधी और की भापा पढ़नी पडती है।’

कमी-कमी यह जिम्दादिस सड़का किन्हीं धान्तरिक बाधाधों में बँधा हुआ पहाड़ी पर पीड़ के पेड के नीचे धष्टा बैठा ध्यासा

नदी के कीचड़युक्त हरे पानी में पत्थर फेंकता रहता ।

“बह उबा हुआ है,” उसका बाप सोचता । स्वयं बह भी लगातार हफ्तों और महिनों बानों को बहरा बनाने वाले मिन के शोर-गुल को सुनते-सुनते यथायक ही विचारों के घन कुहासे से घिर कर एक प्रकार की क्लान्ति से भ्रमना-सा बन जाता था । उसकी समझ में नहीं आता था कि इस क्लान्ति का कारण क्या है । कारोबार की चिन्ताएँ अथवा घरबार की एक ही तरह की जरूरी चिन्ताएँ ? प्रायः ऐसे दिन बह मिन लोगों से भी मिमता उन्हें नफरत की नजर से देखता—किसी को टेढ़ी नजर के कारण तो किसी दूसरे को अप्रिय शब्द कहने के कारण । ऐसे ही एक यादनों से घिरे दिन उसने तिस्रोत ब्यासोब के प्रति पूरी तरह घुला प्रगट की थी ।

ब्यासोब, प्योत्र की सास के साथ जा उसकी बाह पर मुझी हुई थी, समीप धाता जा रहा था । प्योत्र ने उसे कहत हुए सुना था—

“ब्यासोब-परिवार एक बहुत बड़ा परिवार है ।

‘ता फिर तुम अपने लोगों में क्यों नहीं रहते ?’ प्योत्र ने सास की तरफ बढ़ कर उसकी मुक्त मुखा को धामते हुए प्रश्न किया । तिस्रोत एकदम चुप हो कर अलग हट गया । प्यान अर्थात्मानोब ने बठोरता और हड़ता से प्रश्न को दुहराया । दर बान न अपनी भावगुण्य भाँसों को तिस्रोब कर उदासीनता से उत्तर दिया—

‘क्योंकि घर उनमें स कोई रहा नहीं के सब बात बस है ।

“बस बसने का तुम्हारा क्या मतलब ? किसने उन्हें बस जाने को मजबूर किया ?”

"दो माई सेवास्तोपोल में भेज दिए गए जहाँ व म
 गए। बड़ा माई विद्रोहियों में जाकर मिल गया। उस सम
 किसान लाग स्वतन्त्रता के लिए पागल हो उठे थे। उनका पि
 भी विद्रोह में शामिल था क्योंकि वह धासू नहीं खाना चाहत
 था जबकि लाग उसे जबरदस्ती खिलाना चाहते थे। वह कोड़ों क
 मार से घबरेन के लिए भागा लेकिन उसके पाँवों के मोचे की
 मार से घबरेन के लिए वह पानी में डूब कर मर गया। मरी मा
 बरफ टूट गई और व्यासोव से जो मछुवा था—दो सम्मान और
 के दूसरे पति व्यासोव से जो मछुवा था—दो सम्मान और
 हुई—एक में और दूसरा सर्गेई।

और अब वह तुम्हारा माई कहाँ है? उस्याना ने
 अपनी धासुओं से भारी धालों को झपकाकर पूछा।
 'उसे भी मार दिया गया।

'तू ये सब बातें ऐसे सुना रहा है जैसे कि मृतकों के
 लिए प्रार्थना कर रहा हो— प्योत्र प्रतर्मानोव न गुस्से में कहा।
 'उस्याना इवानोव्ना मुझसे पूछ रही थीं। वह किसी कारण
 बेचैन-सी थीं और इसलिये मैंने अपने बारे में।

अपनी बात को अचूक ही छोड़ कर उसने झुककर एक
 टहनी को सड़क से उठाया और रास्ते के दूसरी तरफ फेंक दिया।
 एक-दो मिनट तक वे बिना बोस धुपघाप बसते रहे।

'तेरे माई को किसने मारा? प्रतर्मानोव अचानक पूछ
 उठा।

'उमे कौन मार सकता था? मनुष्य ही मनुष्य को मारते
 हैं,' व्यासोव न घाम्त भाव से कहा। बाइमाकोवा ने एक घाह
 मरी और व्यासोव की बात को धाये बढ़ाया—

'बिजसी के गिरन से भी तो मरते हैं।

मध्य शीष्म के दिन अनेक परेधानियाँ लेकर घाए

पीसे, धुँधले और भयभीत कर देने वाली नीरवता लिए आकाश के नीचे पृथ्वी पर चारों ओर भुलसान वासी निर्दय गर्मी छाई रहती थी। भाग की लपटें जङ्गलों और यहाँ तक कि दल-दल में पड़ी सड़ी हुई लकड़ियों का घट कर जाती। घुफ्त उल्लस हवा अकस्मात् प्रचण्ड वेग से चल पड़ती—जङ्गलीपन से सीटियाँ सी बजाती—घोर करती वृक्षों के मुरझाए-सूखे पत्तों को घसग करती षोड़ की पुरानी पिछले सास से पड़ीं सुइयों को दहर-उपर बिलेरती, रेत का बादल बना कर उसक साथ सफ़ेदी की छीसत बुलदा और मुँगियों के पङ्क लिए उड़ती और आश्रमियों से आ टकराती, उनके कपड़ों को फाड़ने का प्रयत्न करती और अन्त में जङ्गल में आ छिपती और वहाँ भी दावानल को प्रचण्ड रूप से भड़का देती।

मिल में अत्यधिक अस्वस्थता व्याप्त हो गई थी। लकड़ियों की झूझ और धरकी की चरमराहट के बीच अर्धामोब ने सूरी, रूह रूहकर उठने वाली लाँटी का स्वर भी सुना। करबों के पास मुरझाए और पके बेहरे वाले मजदूरों की गति मन्द थी। उला दन घट गया और कपड़े की किस्म में भी फर्क पड़ गया। गैर छाजिरी की संख्या बढ़ती गई क्योंकि सोमो ने अत्यधिक शराब पीना शुरू कर दिया था और औरतें यीमार बच्चों की दलभास करने को घर पर ही रह जाया करती थीं। ठिगने इद का धुँदा बड़ई सेरापिम जिसका बेहरा एक बालक की तरह मुसाबी था बच्चों के लिए छोटे-छोटे साबून बनान में लगा रहता था और कभी ऐसा भी होता था कि उसे दबदार के पीसे-पीसे तलतों को बड़े खी-पुरपों के लिए भी षोड़ना पड़ता था या आ इस संकार से अपनी इहनीला समाप्त कर चुके थे।

‘अप्य छुट्टियों की जहरत है अलकनेई न जोर निमा
‘ताकि इन सोमो के हृदय उल्लाद न भर जाय और य सोम प्रसन्न

बिस्त हा जाय ।

उमन पत्नी-सहित मझे में जान से पहले इस सप्ताह को फिर बुहराया—

“मजदूरों को छुट्टी द दो य सब पुन जीवित हो जायगे । सुम मरी बात मानो धानन्द से जीवन बिताने पर बीमारियाँ बुर हो जाती हैं ।

“तो इसका प्रबन्ध कर, व्योत्र ने अपनी पत्नी का धामा दी । ‘खूब अच्छी तरह प्रसीमित रूप से ।

नताल्या गुम्बे में मुनभूनान सगी । धीर उसने नाराजगी से पूछा—

“अब क्या बात है ?

मताल्या ने धीर से अपनी नाक साफ की धीर प्रतिषाद में अपने धाँस क सने में मुँह छिपाती हुई बोली—

“मुन तो रही हैं ।”

छुट्टियों की दावत एक विनाय प्रायना से शुरू हुई । पादरी गेव ने बड़ी गम्भीर धार्मिक प्रार्थना कराई । इन दिनों वह धीर भी दुर्बल हो चुका था । उसकी फगी आवाज धनम्यस्त शब्दों का उच्चारण कर ऐसे उठ रही थी जैसे कि उसकी शीण हाठी हुई धक्ति प्रार्थना में ही चुक रही है । शीणकाय मजदूर टकटका समाकर निहारते हुए भक्ति-भाव से म्यिर बैठे रहे । बहुत-सी श्रियाँ जोर से सिसकने भी लगीं । धीर जब पादरी ने अपनी दोकार्त धाँस धुएँ स भरे आसमान की धार उठाई तो सोमों ने भी प्रायना धीर याचना भाव स धुँएँ के बीच धुंधले धीर मन्द प्रकाश बाने मूय की धार देखा । धायद व साधने से कि इस गरीब पादरी को स्वर्ग में कहीं कोई परिचित दीख गया है वह इसकी प्रार्थना को मुन रहा होगा ।

प्रायना के बाद घोरतें वस्ती की गलियों में भेजें उठा लाइ घोर मजदूर मोटे-मोटे धकड़ों के गादत घोर पाक से भरे लकड़ी के कठौतों के चारों तरफ दस-दस घादमी बड़े घोर प्रत्यक भेज पर एक पीपा घरेसू धीघर का घोर भीपाई पीपा बोदका का रक्खा हुआ था । इससे लोगों की उत्साह हीनता दूर हो गई और उनमें स्पर्ति का सञ्चार हो गया । एक प्रकार की गला यॉटन वाली कुप्पी जिसन घरातस पर निराशा का घावरण डाला हुआ था अब हिन्नी घोर दसदसों घोर जसत हुए जङ्गलों की घार भाग गई । वस्ती में धानन्द के गीत घोर लकड़ी के चमचो की सन्धटाहट बच्चों के घामाद प्रमोद माताओं की मिड़किमी घोर नवमुवको क परिहास की ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं ।

प्रत्ययिक भोग्य पदार्थों के कारण लोग तीन घण्टे तक भेजों पर डटे रहे । अब मधे से भूत लोगों का ठोकर धर पहुँचा लिया गया तो नौ-बवान भागों न साफ-सुधरे बड़ई सराफिम को चारों तरफ से घेर लिया । उसने नीमी सूठी कमीज घोर पससून पहन रखी थी आ घनक धार का धुलाई के कारण फीकी हा गई थीं । बड़ई की गुलाबी-नुकीली नाक घोर घराब के मधे के कारण बेहरे किसी कबर घानन्द न चमक रहा था । पससों की भपकनों के बीच उसकी धारें प्रसन्नता से चमक रही थी घोर उसकी प्रसन्नता के कारण उसकी उध न चारे में पाठा हा रहा था । इस प्रसन्नचिन्त तावून बनाने वाले के चारों तरफ एक स्पन्दित करने वाला हल्कापन घोर उल्लास धाया था । उसके बेहरे पर सर्गिक धानन्द का एक भ्रमक थी आ उसका नाम के समुद्र ही थी । एक बंध पर वह अपन पतन गुत्ता के माप सियरा' धाम घोर अपनी काली गौठदार भूमियों की जड़ों के समान उल्लुनियाँ के पारों में तारों से भाबाज निरासता हुआ घोर

१ सियरा—मुनान का एक प्राचीन बाघ यत्र ।

एक धपे मिसाारी की तरह इतिम करण स्वर में नाक क स्वर स गा रहा था—

‘लो, मुनो सञ्जनो मुनो ।

तुम्हें मुनाऊँ नई कहानी
बुद्धि का परिचय दो अपना

मूढ़ पहेली तुम्हें बुझानी ।

उसने फिर वहाँ वठी लडकियों की घोर धौल से संकेत किया जिनके मध्य म मुन्दर मुसङ्ग उन्नत वल घोर घोस धाली घाली एक सङ्की घडी घान क साथ धठी थी । यह सङ्की जिनका सराफिम की पुत्री ही थी घौर मिस में बुनाई का काम करती थी । वह धव धधिक ठेकी धावाज म गाने लगा—

‘प्रभु ईसा हैं स्वर्ग विराजित बानाकरण मुग्धित है सारा ।

उज्ज्वल धामा मजक— कर हस्य बनामी धनुपम न्यारा ॥

सदे हुए स्वणिम पुण्या से दवदार की ऊपर ध्याया ।

रजत-सिंहासन बैठ सुटाएँ सोना-बाँदी-हीरा-माया ॥

धनधानों को गुण की खातिर ब्याकि होते बहुत भल हैं ।

तकदीर क मार दीन-हीन भी उनकी वृषा-दृष्टि पल है ॥

भाई कह हम दीनजनों को प्यार से धपने गम लगाएँ ।

निर्धन पगु, सुधा स पीड़ित है दया इन्ही की रोनी पाएँ ॥”

एकवार फिर उसने लडकियों की घोर इलाग कर यवायक ही माध का तराना छेड़ दिया । एक बाँपती हुई धावाज क साथ उसकी सङ्की भी धाग निकल धाई । उसके हाथ सिर क पीछे—जिन्सियों की तरह बँधे ध—उसका उन्नत वल काँप रहा था घौर धपने बाप के सुरीसे गाने घौर बाजे के तारों की म्दन म्नाहट से नाक से कर उसने गाचना प्रारम्भ कर दिया । उसका बाप गा रहा था—

जिसका बाँदी मिल जाती है

बाँहें टायें उसकी धकती !

सोना पा सेने की इच्छा,
 झङ्क-झङ्क में प्राण लगाती ।
 हीरा-मानक पुरस्कार में -
 मिसल ही घाँसें घँचियाती ।

सङ्घों ने कञ्ज स्वर से सीटियाँ बजाना शुरू किया, जिसमें
 सराफिम की सिपरा की झनझनाहट और आनन्दपूर्ण गीत-ध्वनि
 दूब गई । अब लड़कियाँ और छियाँ द्रुत गति से नाचने लगीं—

‘धीर-धीर सागर की छाती
 द्रुतगति पाठ चने पाते हैं ।
 सुन्दर बासाघों की सातिर
 चपहार प्रमूख्य भर साते हैं ।”

और फिर नाचती हुई जिनैदा भी उनके गाने में पने
 तीव्र स्वर से सम्मिलित हो गई—

‘मुक्क पादका मे है मेजा
 प्सादका की कुछ गज टाट ।
 सी कभीज उसपा वह पहुँचे
 ब जाएगासु दर ठाट ।
 तरयोदका ने माप्र्यादका की
 बी जाड़ी भुमकों की मढ़ कर ।
 वच वृदा के वक्कस के—
 बे भुमक मो व परम सुन्दर ।”

इन्त्या प्रतापिनाब गलीपों के डेर पर पाबेस निकोनाप
 के साथ बैठा था । निकोनाब एक बुबसा-पतसा दराने में प्रौढ़-सा
 गज सिर बासा सङ्घा था । उसपो लम्बी गहम पर रगा सिर
 हमेंगा हिलदा रहसा था और उसके बीमारों के से उदासीन चहरे

में चञ्चल सूरी घाँसों थीं जिनमें कायरता की झलक थी। सामने नीची पोशाक पहने बुढ़ा सेराफिम इत्या का बहुत प्रशंसा मगा। उसे सेराफिम का सिधरा और उसका उछास तथा परिहासपूर्ण गीत भी बहुत पसन्द आया। परन्तु एकाएक वह गहरे साल रङ्ग के झ्माउत्र वाली स्त्री बीच में आकर नाचने लगी और बेसुरे गीत को उठाकर सारा मजा किरकिरा कर दिया। उसे इस स्त्री से बड़ी घृणा हुई—उसी समय निकोनोव ने धीमी आवाज में कहा—

‘जिनैवा बड़ी असम्य है। वह सब लोगों के साथ रह लेती है। तुम्हारे पिता के साथ भी—मैंने उसे भालिगन करते सुब बसा है।’

‘यह किसलिए’, इत्या ने मूसता से कहा।

‘तुम्हें इस बारे में बहुत-बुद्ध पता है।’

इत्या की घाँसों नीची हो गईं। वह जानता था कि सब-कियों का भालिगन क्यों किया जाता है। उसने अपने मित्र से इस बारे में पूछा ही क्यों, यह सोचकर उसे बड़ा दुःख हुआ।

‘तुम झूठ बोल रहे हो’ उसने दृष्टता से कहा और फिर निकोनोव की बातों को सुनना बन्द कर दिया। वह इस कायर, बन्दू लुशाभदी सड़क को उसने नई तरीकों, नीरस आवाज और मित्र में काम करने वाली सड़कियों के बारे में किस्सों से बड़ी घृणा करता था। परन्तु जहाँतक कवूतरों की बात थी निको नोव बड़ा पारखी था और इत्या कवूतरों का बहुत शौकीन था। और इसके साथ ही वह बस्ती के दूसरे सड़कों से इस कमजोर साथी की रक्षा करना भी अपना बड़ा महत्वपूर्ण अधिकार समझता था। सबसे बड़कर निकोनोव में, देखी हुई अप्रिय और गंदी बातों को दण्ड करने की अपूर्व प्रतिभा थी—और वह प्रायः ऐसी

वाते देखा ही करता था। उसका कहने का सहजा इत्या के छोटे भाई माक्रोव के कहने के उस डकड़ से मिलता था जिसे वह दुनिया की हर चीज क विरुद्ध धिक्कायत करन म प्रयुक्त करता था।

इत्या कुछ देर बिना कुछ बहे बठा रहा और फिर उठकर पर बसा गया। घर के बगीचे में भूल से भरे हुए पेड़ों के नीचे घाय की मेजें विद्य चुकी थी। एक बड़ी मेज के चारों तरफ बहुत स भोग बैठे थे। वह घात स्वभाव पादरी ग्लेव साबसा धुँवराम वालों बामा जिनिया जसा कप्तोव और क्लकं निकोनोव भी बैठे था। उसका पहरा इतनी स्वच्छता ने धुसा हुआ था कि उस पर किसी तरह के भाव दोष नहीं थे। निकोनोव क गुनगुणधों वाली छोटी-सी नाक और उसके माथे पर चोट की सूजन थी, और उसके माथे पर की सूजन तथा नाक क धीष और घातों क गड्डों के चारों तरफ की त्वचा की सिङ्कड़नें फड़कती रहती थी।

इत्या अपने बाप के बराबर जा कर बठ गया। उमे विश्वास नहीं होता था कि यह धानन्द-विमुक्त पुराय उस निर्मज्ज मजदूर सड़की के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध रख सकता है। बाप न अपने मारी हाथा स बटे के कर्मों को बपबपाया किन्तु कहा कुछ नहीं। एक भोग गर्मी के कारण मुरझाए हुए बटे प और उनके घरीर से पनीना पू रहा था। बोलने की काधिया की जा रही थी। सिफ कप्तोव की ऊँची धावाज ऐसे उठ रही थी जैसे कि सर्दियों की बर्फानी रात में स्पष्ट धावाज धाती है।

क्या बस्ती की तरफ चलेंगे ? माँ ने पूछा।

हाँ मैं चलता हूँ। बपड़े पहन घाऊँ। बाप ने कहा।

वह गड़ा हो गया और घर की ओर चल पड़ा। एक धाग क धाद इत्या भी उसका पीछ-पीछे चला और ब्योड़ी पर उस पकड़ लिया।

‘क्या बात है ?’ बाप ने प्यार से पूछा । तो लड़के ने भी बाप की आँखों से सीधी आँखें मिलाकर पूछा—

‘तुमने जिनदा का घालिगन किया है या नहीं ?’

इत्या को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका बाप डर गया है । इससे उसे कुछ अचम्भा नहीं हुआ क्योंकि वह बाप को हमेशा से ही कायर और दब्लू समझता था जो सबसे डरता था और इसी कारण वह बहुत कम बातता भी था । इत्या ने कई बार अनुभव किया कि स्वयं उससे भी उसका पिता डरता था । और, इस अवसर पर भी वह सचमुच ही भयभीत हो गया था । डर हुए पिता को हौसला देने के लिए लड़का बोला—

‘मैं इस सब पर विश्वास नहीं करता । मैं तो सिर्फें पूछ ही रहा हूँ ।’

बाप उसे दरवाजे में धकेल कर हॉल में भे गया । और फिर अपने कमरे में पहुँच कर दरवाजा बन्द कर दिया । वह कमरे में एक कोन से दूसरे कोने तक भारी साँस सता हुआ अहल बदमी करने लगा जसा कि प्रायः वह कोष में किया करता था ।

‘इधर आओ, बड़े अर्तमानोब ने बेक्स के बराबर टक कर कहा तो छोटे अर्तमानोब ने उस आजा का पासम किया ।

‘तुमने क्या कहा था ?’

‘मैंने नहीं पाबसूदका न कहा था । मैं इस पर विश्वास नहीं करता ।’

अच्छा ! तुम विश्वास नहा करत । बहुत अच्छा ! अपने बटे का ऊँचा माया और हँसी रहित गम्भीर चेहरे को धूर लेने के बाद प्योत्र का गुस्ता ठण्डा हो गया । उसने अपने कानों का खोपा जैसे कि वह सोच रहा हो कि आया यह ठीक है या बुरा कि उसका लड़का इस मूर्खता-पूर्ण अफवाह पर विश्वास नहीं

करता जिस एक ऐसे ही लड़के ने कहा है जो उसकी ही धातु का है। लड़के के विश्वास न करने से उसे कुछ शान्ति-सी मिली थी। परन्तु उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बेटे को क्या और कैसे कहे, और न वह लड़के को धातु देने का ही फंससा कर सका। परन्तु उसे कुछ-न-कुछ जरूर करना चाहिए, और इस लिए उसने सीधी समझ में घाने वाली बात—मर्णाथ ताड़ने का ही फंससा किया। बड़ी धनिच्छा से उसने अपने भारी हाथों को बेटे के मोटे घुंघराले बालों में डालकर उल्लसिया फंसई और उसके सिर का मूक धोर कर घोसा—

‘मूखों की बातें नहीं सुना करते समझे !

और फिर उसने बेटे को दूर धकेल दिया और धाता दी—

जाओ अपने कमरे में जाओ। और वहीं रहना समझे !

बेटा दरवाजे की ओर जाता गया उसका सिर एक तरह मुका हुआ था जैसे कि वह कोई पराया भ्रूण है। उस बेंतकर पिता अपने को सन्तोष देता हुआ सोचने लगा—

घरे वह तो रोया भी नहीं। मैंने उसे मार नहीं सपाई।

उसने फिर नाराज होने का प्रयत्न किया—

“मूख, जरा सोचो ता ! वह विश्वास नहीं करता ! धग्दा मैं अभी उसे बठाता हूँ।

परन्तु, इसस अपने बेटे के प्रति दया और उस मारने की भावना अपने अपने प्रति असन्तोष और नाराजगी दूर नहीं हा सकती।

पहली बार ही मैंने उन पीटा है। उसने घुणापूर्वक अपने साल बालों वाल, हाथों का देस कर साधा— और मैं, दग बरस की उम्र तक सीकड़ा बार निट चुका था।

परन्तु इसमें भी उसे सन्तोष नहीं हुआ उसने सिद्धी से मूरख की ओर दखा जो गँदले पानी में तेल के घबूके समान दिखाई दे रहा था और फिर कुछ समय तक बस्ती से उठने वाले धार को मुनन के बाद वह अनिच्छा से बस्ती में मनाए जाने वाले त्यौहार का देखने के लिए चला पड़ा। रास्ते में निकोनाथ से वह धीरे से बोला—

‘तुम्हारा मौतना लड़का मरे इन्धा से सब तरह की मूर्खतापूर्ण बातें करता रहता है।’

‘अच्छा मैं उसकी मरम्मत करूँगा’ कसक ने ठपाक से प्रसन्न मुँह से कह दिया।

‘तुम उसकी जवान रोकने प्यास ने धाँस की ओर से निकोनाथ के छाती बेहर की ओर देखते हुए कहा और कुछ हस्तापन अनुभव कर सोचन लगा—

‘यह और सब की तरह सरल है।’

बस्ती के मजदूरों ने मासिक को देख कर जोर की खुशियों के साथ अभिमन्दन करना शुरू कर दिया। मुरा-मत्त सींगों के बेहरे धानम्ब से तमतमा उठे और आपसूसी का जार अधिक था। सेराफिन जिसन टाट के नए जूत पहन रखे थे और सफ़ेद पट्टियाँ का साम फीले से पाँवों पर मर्नोबियन फगन से बाँधे रखा था। भय अर्थात्मानाथ के सामने आकर पिरक-पिरक कर नाथन और प्रवसा के गीत गाने लगा—

‘आस हैं वे कौन बताओ ?
 क्यों हमारे स्वामी ही तो—
 जिन पर है हमका भी गर्भ ।
 पास पसे हैं जा मदमाती
 साप था रहीं स्वामिन् प्यारी ।’

झुरी दाढ़ी सम्बन्धे बासों वासा धीर देखने में पादरी के समान इबान मरोबोव गम्भीर मद ध्वनि में चित्लाया—

“हम आपके साथ बहुत मुक्त से हैं। हमें—आपको अपने बीच पा कर बड़ी प्रसन्न हुई है।

एक धीर वृद्ध पुरुष ममायेव बड़े आनन्द में चित्लाया—

“वर्तमानोव-परिवार अपने लोगों का ध्यान राजा की तरह रखता है।”

धीर निकोलेव सब लोगों को सुनाते हुए कोलेव से बोला—

“यदि साग कितना कृतज्ञ है? ये अपने दुर्भाग्यवशों की कदर करना जानते हैं।”

“माँ, लोग मुझे पकड़ा रहे हैं। अपनी गुलाबी रेशमी लंग बनिमाम में गेव की तरह सगने वाले याकोव ने शिकायत की। माँ ने उसकी उलझनी पकड़ रखी थी। मजदूर श्रियों की धीर बड़े गौरव के साथ मुस्कराती हुई वह उससे बोली—

‘देस ! वह बुढ़ा जैसा नाच रहा है।

बुढ़ा बड़ई धमक रूप से फिरकनी की तरह चक्र घाट रहा था धीर उछल-उछल कर एक के बाद दूसरा टप्पा पा रहा था—

“दौड़ो दौड़ो दौड़े आओ,
धम्-धम्, धम् धम् भागे आओ !
धमड़े के पूत हाथ भारी—
टाट के पूते तुम बननाओ !
बवारी बासा मधुर न उठनी
मुबती को तुम गत सगाओ !

वर्तमानोव ने इसलिए यह प्रशंसा नहीं की। उसके

पास इन प्रसक्तियों की सच्चाई पर संदेह के कारण थे। परन्तु, फिर भी वह उन प्रसक्तियों से नरम पड़ गया और आनन्द से मुस्कुराता हुआ बोला—

‘बहुत अच्छा आप लोगों की दुःखकामनाओं के लिए धन्यवाद ! कोई बात नहीं हम इसी प्रकार मित्रतापूर्वक निबाहे जाएंगे ! क्यों नहीं !’

और वह सोपने लगा—

‘अपस्तोष है कि इन्हीं आपने पिछा के इस सम्मान को नहीं देखा रहा।’

अर्थात्मानों को उन लोगों की किसी तरह सहायता करने की आवश्यकता अनुभव हुई। कुछ सोपने के पश्चात् वह अपनी और लोगों को आकर्षित कर पोपला कर उठा—

‘यद्यपि के अस्पृश्यों को हम दुःखाना कर देंगे।

अपने हाथों को ऊँचा फेंक कर सराफिम उछल पड़ा।

‘लोगों तुमने सुना ? मासिक की जय हो !’

लोगों ने ऊँची आवाज में जय-घोष किया। मजदूर किराँतों से घिरी गतास्या इस अवसर से अधिक प्रभावित हुई। वह नाक के स्वर में बोली—

‘तुम में से कुछ जाकर दीवार के तीन पीपे और से जाएँ। तिरपान तुम्हें दे बना। जाओ, घाने बढ़ो।’

इसमें खिचों का आनन्द और अधिक बड़ गया और निको नाक सिर हिलाता हुआ भादुकतावत वाला—

‘यह प्रधान पादरी का स्वागत जैसा मौका है !’

‘माँ-माँ ! मुझे गर्मी लग रही है’ यानोव बुनकृमाया।

इस प्रसन्नता के अवसर पर कुछ रंग में भंग भी हुआ।

कमरे में दरवाजे से खिड़की तक वह सहूलकदमी करता हुआ इस बातचीत को अंतिम करने के लिए छत्पटान लगा। वह डर रहा था कि बेटा कुछ घोर न पूछ बैठे।

“यहाँ मिन में तुम बहुत-सी ऐसी बात सुनोगे घोर दसोगे जो तुम्हें नहीं देखनी चाहिए। वह कमरे से पसग को दबाते हुए बेटे की घोर बिना देखे कहता गया। “तुम्हें बहुत-कुछ सीखना है। अब तुम्हें नगर के स्त्रुत में भेजना है। तुम वहाँ पढ़ने जाओगे ?”

“हाँ।”

“तो ठीक है।

उसने बेटे को दुसारे करमा चाहा। परन्तु, किसी कारण वह रुक गया। उसे याद नहीं था रहा था कि कभी उसके माँ बाप ने उसे मारने के बाद दुसराया भी था।

“अच्छ अब तुम जाओ घोर धला देखना उस पारका रो तुम्हारी दोस्ती न रहे, मैं यही चाहता हूँ।

“उसे तो कोई भी नहीं चाहता।”

“ऐसे गन्दे लडक को कौन प्यार कर सकता है ?”

अपने कमरे में पहुँच कर खिड़की के पास बैठे अर्तमानोव ने सोचा बेटे के साथ बातचीत करना ठीक नहीं रहा।

मिन उसे जिगाड़ दिया है। अब तो वह मुझसे डरता भी नहीं।

अस्ती की घोर से तरह-तरह की मिथित भाषाओं धारणी थीं। सदसियों की निस्साहट घोर गीत ऊँची धाबाज में की जान वाली बातचीत घोर हाग्मानियम की भी-भी मुनाई दे रही थी। तभी फाटक के पास स तियाज की धाबाज साव-साक मुनाई दी—

‘क्यों बच्चे, तुम घर में ही क्यों हो ? सोग खुलिया मना रहूँ और तुम घर में ही बैठे हो ? पाठघासा जा रहे हो, यह बहुत बच्छी बात है। अनपढ़—ठा जन्म ही ब्यर्थ है ऐसा लोग कहते हैं। परन्तु, मैं तुम्हारे बिना बकेला ही रह जाऊँगा।’

अर्धमानोव चाहता था कि और से बिल्साए—

‘तू झूठ बोल रहा है ! बकेला तो मैं रह जाऊँगा ! घाह ! मासिक के बटे के लिए तू कितनी चापखूसी कर रहा है ? बेईमान कहीं का ! उसने ईर्ष्या-युक्त सोचा।

जब सड़का बाहर में पढ़ने जमा गया जहाँ पादरी स्लेव का भाई जो स्कूल मास्टर था उस स्कूल में भगती करन के लिए तैयार था प्योत्र ने अनुभव किया कि उसका हृदय खामी हो गया है और घर उसे काटने मना है। उस अपनी आत्मा में बड़ी भारी रिक्तता और घर में स्थापन दिखने लगा। उस ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उसके सोने के कमरे में लैम्प बुझ गई हो। वह घर में बहुत बचनी और भवराहट-सी अनुभव करने लगा जैसे कि वह सोने के कमरे में लैम्प बुझ जाने पर करता था प्योत्र प्रकाश का इतना भावी हो गया था कि सम्झी रातों में जब कभी लैम्प बुझ जाती तो वह जाग उठता था।

अपने जाने से पहल इत्या ने ऐसा व्यवहार किया जिससे लगा कि वह जानबूझ कर अपने पीछे बुरी याद छोड़ कर जाना चाहता है। उसने अपनी माँ से बड़ा बुरा व्यवहार किया और आतिरकार बहु रोने लगी। उसने याकाब के सय परिश्यों को पित्रर के बाहर छोड़ दिया और अपनी मैना जिम याकाब को देने का बायदा किया हुआ था उसने निजानोव को दे दी।

‘तुम्हें क्या हो गया है ? आप न उमस पूछा। परन्तु उसने एक तरफ सिर करने के असावा कोई जवाब नहा दिया।

अर्त्तमानोव को ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसका बेटा उसकी मञ्जीस कर उसे धार-धार याद दिला रहा था कि वह क्या भूमना चाहता है। यह बड़ी विचित्र बात है कि प्योत्र के हृदय में इस छोटे-से सड़के ने कितना स्थान घेर रखा था।

“क्या मेरे बाप ने भी कभी मेरी इतनी परवाह की थी ?”

उसकी स्मृति ने उसे विस्वास के साथ उत्तर दिया कि उसने अपने पिता को कभी किसी निःकटवर्ती प्रेमी पुरुष के रूप में अनुभव नहीं किया बल्कि, सदा कठोर स्वामी के रूप में। वह उसकी उपेक्षा कर अस्वस्थता का अधिक ध्यान रखता था। “तो, क्या मैं अपने बाप से अधिक दयालु हूँ ?” अर्त्तमानोव ने मन-ही-मन सोचा और घबराहट से रुक गया। वह नहीं कह सकता था कि वह दयालु है या शोधी। इन विचारों से उसे चैन नहीं मिल रहा था, ये विचार प्रायः अंधान्ध ही उसे काम के समय दुःखद रूप से घेर लेते थे। उसका काराबार बड़े जोर-शोर से बढ़ रहा था। सँकड़ों अस्त्र उसकी ओर लगी थीं और निरन्तर उसकी ओर से सावधानी चाहती थीं। परन्तु, जब कभी उसे इत्या की याद आती तो उसके सब कारोबार सम्बन्धी विचार सामे की तरह टूट जाते जिन्हें वह फिर जोड़ने की काविश भी करता। इत्या की अनुपस्थिति के कारण हृदय के धूम्रकाश को पुरा करने के लिए उसने छोटे सड़के याकाब की धार ध्यान देना शुरू किया। परन्तु उस बहुत निराशा के साथ मानना पड़ा कि याकोव से उसे सन्ताप नहीं हो सकेगा।

पिताजी ! मुझे एक बकरा खरीद दो, याकोव ने माँग की। वह हमेशा ही बुद्ध-न-बुद्ध माँगता ही रहता था।

‘बकरा ही क्या ?’

मैं उसकी सशरीर करूँगा।

“यह तो बड़ा बड़ा विचार है। बकरों पर तो सिर्फ
चुड़लें सवारी करती हैं।

“एसीना न मुझे एक चिभो की किताब भेंट की है। उसके
एक चिभ में एक बहुत अच्छा सड़का बकरे की सवारी कर
रहा है।”

बाप न साधा इत्या न तस्वीर पर कभी भी विश्वास
नहीं किया होता। वह तो मुझे चुड़सो क बारे में बतसाने के
लिए ही परेधान करन सगता।

वह याकोव की इस बात को भी पसन्द नहीं करता था
कि मजदूर सड़कों स सड़ने-भगड़न के बाद फिर शिकायत सेकर
भा जाता था कि उसे सड़कों ने मारा है।

घटा सड़का भी कोभी और सड़ाकू या परन्तु उसन कभी
भी किसी की कोई शिकायत नहीं की। भसे ही वह वस्तियों क
सावियों स पिटकर और चुटस होकर ही क्यों न घाया हा। यह
घोना सड़का कायर और घालसी था। वह हर समय कुछ-न-कुछ
बवाता या पूसता ही रहता था। कभी-कभी याकोव का उन
बेष्टाओं में एक कठिनाई स समझी जाने वाली बात होती, जिसके
कारण उससे कुछ आशा भी की जा सकती थी। एक दिन, चाय
के समय जब मतास्या उसका दूध उँबेल रही थी तो उसकी
घास्तीन स उसक बर चाय का एक ग्लास उसट गया और
उसकी टाँग जल गई।

घोर में देखा रहा था कि तू ऐसा ही करेगो' याकोव
न आर स हँसत हुए पाली मारी।

तूने देखा और फिर भी चुप रहा। यह बड़ी बुरी बात
है बाप न उमे बतयाया। अब देखो ता माँ की टाँग जल
गई है।

याकाव मुँह स घाँखें भपकाता और बिना कुछ कह साने

की वस्तुएँ षबाता रहा । कुछ दिनों के बाद बाप ने घागन में किसी से उत्साह के साथ धन-यज्ञ करते हुए उसकी घाबाज सुनी—

“मैं देख रहा था कि वह उसे मारन आ रहा है । वह लुकटा-छिपता उसके पीछे से आया और इसे मूब मारा और एक मूसा लिया ।”

सिद्धकी से भीक कर अर्त्तामानोव ने देखा कि उसका पुत्र बड़ी ध्यप्रता से उस बेकार सड़क पाबसूदका निकोनोव ने साथ घातपीत कर रहा है । उसने याकोव को घर में बुसाया और निकोनोव से पोस्ती क लिए मना किया । वह उस कुछ और भी उपदेघ देना चाहता था लेकिन सड़के की आमुनी-सपेद और बिचित्र प्रकाश वाली पुमलियों को देग कर—उसने सिर्फ एक छांस मरी और सड़के को दूर कर दिया—

‘धन परे हट, भावमून्य आर्त्ता बासे !’

याकोव इतनी साबधानी से गया जैसे कि फर्श पर बर्फ बिछी पड़ी हो । उसकी कोहनियाँ कोरों से सगी थी और हाथ ऐसे फने हुए थे जैसे कि वह किसी अघिक भारी वस्तु को उठाए हुए हो ।

‘फहड ! और मूब भी है । पिता ने मिअय क साथ कहा ।

उसकी यही ऊँची और धुपबाप रहन वाली सड़की एसीना में भी कुछ ऐसी मीरमता थी जैसे कि वह माकाज में देगता था । वह सेटे-सेटे इत्ताव पटना पसन् करती थी पाय के समय मूब मुरख्या या सती और फिर भोजन के समय रोटी को बड़े मजरे से अपनी कोमल टैंगी उन्नसियों से तोहती और शोरवा में धमधम को एगे पसाती जब कि उसमें मवगी पड़ी हा । उसक बटे-बड़े

ताम-मात घाठ हमेशा मिथे हुए रहने और वह अपनी माँ से ऐसी आवाज में बात करती जो सबकियों के लिए अनुचित थी—

‘यह सब ऐसे नहीं करते । सब यह फँगन में नहीं है ।’

और जब बाप ने उससे पूछा—

‘तू कसी पढी-लिखी सबकी है । तू कभी यह भी देखती है कि मिस में सरी कमीजों के लिए कपडा कैसे चुना जाता है ?’

‘हृषा कर मुझे वहाँ ले चलिए । यह योसी ।’

तब उसने अपनी यद्रिया पोशाक पहनी और अपनी छतरी साथ ली जो उसके बाधा घसकसेई की नेट थी और अनुज्ञा से अपने बाप के पीछे बड़ी सावधानी से बस पड़ी ताकि उसकी पोशाक में कोई भी ब तमऊ न जाय । मिस में जाकर उसने कई बार छीका लेकिन जब मजदूरों ने उसके स्वास्थ्य की कामना की तो वह धरमा कर चुपचाप बिना मुन्कराए किन्तु यड़े गौरव के साथ अपने सिर को हिमाती रही । बाप ने उसे कपडा चुनने की सारी क्रियाएँ समझाई । परन्तु यह देखकर कि मशीनों की बजाय वह अपनी टीगों का बेल रही थी बाप चुप हो गया और उसने अपनी लड़की की कारोबार के प्रति उपेक्षा दख एक चोट-सी अनुभव की । कारखान से बाहर आकर जब बाप ने उससे पूछा—

‘क्यों पसन्द आया ?’

‘बहुत मर्द है,’ अपनी पोशाक का निरीक्षण कर उसने जवाब दिया ।

‘तो तुम्हें कुछ नहीं बखा ।’ प्योन ने दुःखद वाणी में कहा— ‘अपन इस घाबरे को उठाए क्यों फिर रही है ? आसन

साऊ है और ठेरा घायरा भी ऊँचा है ।”

वह खीब उठी और अपनी छोटी-छोटी उङ्गलियों से पकड़े घायरे को छोड़ कर वह समा भाव स धोली—

यहाँ सेल की बड़ी गम्ब घाती है ।

अर्तामानोव को सङ्की का एक उङ्गली और अँगूठे से घायरा पकड़ने का तरीका विशेष रूप से अप्रिय लगा था । वह बोसा—

‘देख सिर्फ इन दो उङ्गलियों स तू जीवने म कुछ नहीं कर सकती !’

एक बार बरसात के दिन जब वह सोफे पर सटी हुई किताय पढ़ रही थी, तो बाप उसके बराबर बठ गया और पूछा— ‘क्या पढ़ रही है ?’

‘एक डाक्टर के बारे में ।’

‘अच्छा मतलब है कि कुछ बमानिक बीज पढ़ रही है ।’

परन्तु अब उसने किताय को देला तो उसे बड़ा दु ग हुआ ।

‘झूठ क्यों बोलती है ? यह तो कबिता है क्या कभी विज्ञान भी कबिता म लिया जाता है !’

बहु पन्दी-बल्दी बबरार्ई हुई बाप को बतान लयी कि किस प्रकार परमात्मा ने सतान का घाजा दी कि एक पमन डाक्टर को फुससाए और किस प्रकार सतान म डाक्टर के पास उम पुससाने के लिए अपने छाटे सतान भेजे । अर्तामानोव ने अपने बाना को ऊँचा कर इस बहानी का अन्निप्राय उमभने की कागिण की परन्तु उम अपनी सङ्की की एक उपदराव-सी ध्वनि बड़ी उपहास्यास्पद और दु गद प्रतीत हुई जिसम वह थिड़ गया और

उसे समझने में कठिनाई हुई ।

“डॉक्टर—घराबी या क्या ?

वह बेस सक्ता या कि इस प्रश्न से एमीना घबरा गई और फिर उसकी सफाई का सुन बिना ही वह गुस्से में बोसा—

“यह बड़ी गड़बड़ कहानी है—एक मन गड़मत्त कहानी । डॉक्टर तो शतानों में बिश्वास ही नहीं करते । यह किताब तेरे पास कहीं से आई ?

‘मैकनिक ने मुझे दी थी ।

प्योप को स्मरण आया कि एमीना किस प्रकार विचार मग्न अपनी विल्सी जैसी मीसी-नीसी धातों से सामन देखती है और उसने सड़की को चलावनी देना जरूरी समझ—

‘कोप्लेव ठेरा जोड़ा नहीं । पू उसके साथ बहुत अनिष्टता मत कर ।’

है एमीना और याकोव दोनो बड़े सुस्त और इत्या के कावले म निरर्थक से थे । अब उसे स्पष्ट दिखलाई देता या कि या इन दोनों स अण्डा है । उसने इस बात पर कमी और किया कि किस प्रकार धीरे-धीरे अपने पुत्र के प्रति प्रेम की है उसके हृदय में पाबस निकोमोव के प्रति भ्रूणा पैदा होन । अब कमी वह इस बीमार नाटे-से बच्चे को देखता वह ता—

‘इस गढ़े लड़के से ही ।

इस लड़के के प्रति उसे भ्रूणा होने लगी । निकोमोव कंधा अपनी पठली गर्दन के ऊपर बचनी के साथ अपना सिर हमा चसता, और जब कमी वह लड़का दीड़ता भी तो को ऐसा प्रतीत होता कि यह कायर बुरे काम करने

वासा सड़का कुछ चारों करके जा रहा है। वह दिन भर घर में काम करता रहता। वह अपने सौतेले बाप के छूते साफ करता उसके कपड़े धुश करता। घर में सफ़ाई डोकर साता घोर फाड़ता पानी साता घोर रसाई से कूड़े करकट की बास्तियाँ बाहर स जाता। अपने छोटे भाई क पोतडे धोता। एक चिड़िया की तरह मेहनती गन्दा फटे हास सड़का जिस किसी से भी रास्ते में मिसता कृत्त की तरह हँसता हुमा उसका स्वागत करता। जब भी अर्त्तमानोक उसे चाह कितनी भी दूर से देखता तो यह सड़का अपनी बत्तल बसी गर्दन ऐसे हिलाता कि उसका छिर छाती पर डलक घाता। अर्त्तमानोक जब कभी इस सड़के को पतझड़ की बरसाता में भीगते या सर्दी के दिन लकड़ी काटते — अपनी ठिठुरसी सस्न उँगलियों का मुँह की साँस स गर्म करने या प्रयत्न करते या बत्तल की तरह एक टाँग पर सड़े घोर दूसरी को गमने के लिए उठात हुए घोर एड़ियों से पिसे-फटे पुरान फूते पहिन कर जाठा बखटा तो बिल में बड़ा प्रसन्न हाता। जब यह सड़का साँसना था तो इसका सारा शरीर हिलता था घोर यह अपनी छाती को अपने सफे छोटे-छोटे हाथों स धाम सेता था।

अर्त्तमानोक को जब पता लगा कि यह सड़का उमर गुसल पान के छग्ने में अपने क्यूतर रखता है तो उसन छिरसोम को भाजा दी कि यह इन सब पक्षियों को छोड़ द घोर भागे के लिए ध्यान रख कि यह सड़का छग्ने में न बड़े।

“बहु किसी दिन छत से गिर जाएगा घोर हाथ-पौब ताड़ सेगा। कौसा गन्दा निर्बस सड़का है !”

एक दिन शाम क समय अपने दफ्तर में घाते समय उसने देगा कि यह सड़का बाहू स फर्न का गुरथ रहा है घोर एक कपड़े से गिरी हुई स्याही का हटान की काशिग कर रहा है।

'यह स्याही किसने गिराई ?
'कर्पताजी ने ।'

'तूने तो नहीं गिराई ।

'परमात्मा की कसम—मैने नहीं !

तो फिर तू क्यों रोने लगा ?'

घुटनों के बल सिर झुकाए बैठे हुए, पप्पड़ की प्रतीक्षा में पावेल में कोई प्रयास नहीं दिया । उस समय भर्तामानाब ने उस पर नजर डालते हुए सम्बोधन संकहा था—

'तरे साथ ऐसा ही होना चाहिए ।'

धीरे ध्यानक क्षण भर में ही प्रसन्न होकर वह अपनी दाढ़ी में से हँसा और सोचन लगा कि यह छोटा-सा नाबीज बच्चा कितना उपहास्यास्पद प्रतीत हो रहा है ।

मैं भी कितना मूख हूँ कि इसकी बातों में समय नष्ट करने लगा । उसने लड़के की धार तुलना से देखकर सोचा और उसके सामने ठाँव का पाँव कुपिच का एक भारी सिक्का फक दिया ।

'लो ! मिठाई लरोद सेना ।

लड़के ने डर कर सावधानी से अपनी मैसी हड्डियों वाली उद्गसियों से सिक्के को इस तरह पकड़ा जैसे कि नहीं उसकी गन्धी उद्गसियों में ठाँवा बहू न मार दे ।

'तेरा सीतेला बाप तुम्हे मारता है क्या ?
हाँ ।

तो क्या हुआ ? सभी पिटते रहते हैं— भर्तामानोब ने साम्बना देते हुए कहा ।

कुछ दिन बाद याकोब ने अर्तमानोब से पाबसुस्का के बारे में सिकायत की, तो उसने बिश्वास न करते हुए भी अपने खनाब के अनुसार बसर्क को सुझाया—

‘अपने सौतेले बेटे को ताड़ना दो।’

“मैं उसकी खूब मरम्मत करता हूँ” आदर से बसर्क ने बिश्वास दिलाया।

गर्मी में इत्या छुट्टी के दिनों में घर आया वह। अक्षरहित पोशाक में, साफ-सुधरे बास कटबाए था—बिस्से उसका चेहरा और चौड़ा हो गया था। अब अर्तमानोब की पाबेस के प्रति पूणा घोर अयिब हो गई क्योंकि उसका सड़का फिर इस छोटे से निरर्थक गुब्बे सड़ने के साथ दोस्ती बढ़ा रहा था। इत्या का व्यवहार बिपान्त रूप में नम्र हो गया था और वह बड़े सुधरे हुए पाब्यों में अपने माता-पिता को ‘आप’ कहकर पुकारता जब में हाथ डालकर बसता घर में मेहमान की तरह व्यवहार करता और भाई का इतना खेड़ता कि वह खर्सा-सा हो जाता। अपनी बहन का भी इतना सताता कि वह गुस्से में उसके किताब फेंककर मारती। मतलब यह है कि उसका व्यवहार बहुत ही गन्दा था।

“मैंने तुम्हें पहले ही कहा था।” मतास्या ने पति से सिकायत की—“और अन्य लोग भी कहते हैं कि पढ़ाई से उद्विग्नता पड़ती है।”

अर्तमानोब चुप रहा और बिन्तापूर्वक पुत्र की घोर बेगता रहा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि यद्यपि इत्या बहुत सरारतें करता है परन्तु वह दिल से नहीं केबल सताने के लिए करता है। शानागार के छज्जे पर बबूतर फिर फड़फड़ाने और गुटगुट करने लग। इत्या और पाबेस पणों बिमनो के बराबर बड़े बबूतरों का उड़ाने और बड़ी तगमपता से बातचीत करते रहते।

एक बार इत्या के घाने के पुरू के दिनों में ही बाप ने बेटे से कहा था—

‘कहो स्कूल में तुमने क्या-क्या सीखा ? मैं तुम्हें बहुत सी कहानियाँ सुनाई हूँ । पर तुम्हारी बारी है ।’

इत्या ने बहुत संक्षेप में धीरे धाली-जली निरर्थक कहानी सुनानी पुरू को कि सड़क धम्पापकों से कंसी-कसी मामों सेमते हैं ।

इन मामों की क्या जरूरत ?

‘वे भी तो हमें दुखी कर दत हैं ।’ इत्या ने बताया ।

‘धरुधा पर समझ ! सकिन यह बात मुझे उचित नहीं पती क्या तुम्हारी पढ़ाई कठिन है ?’

‘नहीं हल्की ।’

‘सब बोस रहा है ?’

‘तुम मरे स्कूल की रिपोर्ट देखो —इत्या ने कन्पे हिसा कर कहा धीरे इस समय उसकी नजर लगातार बगीच धीरे पासमान की धीरे लगी थी । बाप ने पूछा—

‘वहाँ क्या देखते हो ?’

‘बाब ।’

बड़े धरुधामानोष ने एक गहरी साँस मरी ।

‘धरुधा जाधो धसो-बूदा ! दिसता है तुम्हें मेरी बातों में दिसतस्यो नहीं ।’

जब वह धकेला रह गया तो उसे याद धाया कि बपपन में जब कभी बाप उससे बुद्ध कहता था तो उसे भी उसके साथ नीरसता धीरे भय का अनुभव होता था ।

“मास्टर्स के साथ जैसे भी चलते हैं। मेरी सोपड़ी में तो यह बात उस समय कभी धाई नहीं जब गिरजे का पादरो मुझे चाबुक से सिखाया करता था। मालूम पड़ता है कि जब बच्चों के लिए विद्यार्थी जीवन बहुत आसान हो गया है।”

शहर के सूत को वापिस जाने से पहले इत्या ने बाप से एक प्रार्थना की। यह उसकी एकमात्र प्रार्थना थी

‘पिताजी! पावेल को स्नानागार के छगबे में क्यूतर रखने की इजाजत दे दीजिएगा।’

पिता ने किसी प्रकार का वायदा किए बिना ही कहा—
‘हर किसी की तकसीफें दूर नहीं की जा सकतीं।’

“मतलब यह कि वह उन्हें वहाँ रख सकता है” बेटे ने निश्चित किया। ‘मैं उसे कहता जाऊँगा—बहुत सुस हो जाएगा।’

बड़े अर्त्तामानोव को इस बात का बड़ा दुःख था कि सड़का उस बेकार गन्दे सड़के की परबाहू किया करता है और अपने बाप के जीवन में कुछ आनन्द सान का कोई स्यास नहीं करता। इत्या के उसे जान क बाद उसने हृदय में अपने बगर्क के इस सौतेले सबके के प्रति जबरदस्त घृणा बढ़ गई। और जब वह यहाँ तक बढी कि जब कमो घर में, मिस या शहर में कोई दुर्घटना होती तो इस गन्दे सैले-बुचसे सड़के की मूर्ति धमिच्छित रूप से अर्त्तामानोव की इच्छा-कम्ब में घा जाती। उस एसा प्रतीत होता कि वह उसके सब कटु बिलारों और मदी भावनाओं को सटकाने के लिए अपने भङ्ग फैसाकर भेंट कर रहा है और यह बचना, कोई और साँक की घामाओं की तरह उसके बिलारों में वास्तविक रूप से बढ़ने सगा। या एक और, उपकटे सतान की तरह उसकी घाँसों के सामने घा जाता था।

एक बार म,रतीय-शीप्म के मुसद दिन को यथा-माँदा और

नाराज अर्तमानोव वगीचे म धाया । सध्या मुकी धा रही थी
 श्रीर श्रीष्म का बका सूर्य बिना किसी ताप के वायु प्रतापित हो रहा
 था । वगीचे के कोने में तिलान ब्यासोव गिरे हुए पत्तों को पञ्जा
 कुस स मनेट रहा था जिनकी शोकात बोमस सरसराहट वगीचे
 के बीच ठर रही थी । वगीचे के पेड़ों के परसी धोर से मिल की
 धाबाज धा रही थी श्रीर कामा-नीसा पूष्म मन्द धलस गति से
 पारदर्शक वायु को मलिन करता हुआ धाकाध में उठ रहा था ।
 दरवान को देखने धा बातचीत की धनिष्ठा से मासिक वगीचे
 के दूसरी तरफ जहाँ स्नानागार धा बसा गया । उसने देखा कि
 स्नानागार के दरवाज विस्तुम तुमे पड़े है ।
 'हो न हो वह यहीं है ।

साबधानी से कपड़े बदलने क कमर में न्यौककर उसने
 अपने छोटे से दुधमन की धक्स दली । उसका सिर मुड़ा हुआ
 धा टाँगें धलस-धलस थीं धोर सड़का हन्त-मैधुम में लगा हुआ
 धा । एक क्षण क लिए अर्तमानोव को प्रसन्नता हुई परन्तु इसी
 क्षण उसे याकोव धोर इत्या का स्मरण धाया धीर वह बड़ी
 घृणा स बिलसाया—

सूपर नहीं के । तू यहाँ क्या कर रहा है ?

पावेस के हाथ चलने बन्द हो गए धीर उसका साध
 धरीर धजीब तरीक से बक पर झुक गया । उसका मुँह खुस-धा
 यया धोर वह पीछे को सिमटकर उस बड़े धादमी क पाँवों पर
 गिर पड़ा । अर्तमानोव बड़ी खुशी से अपनी दाईं सात स उसकी
 धासी पर ठोकर मार कर रक गया । सड़का हिला धीरे-से कराहा धीर
 एक बरबट सेकर फटा पर मुड़क गया । एक क्षण धाया जब अर्त-
 मानोव को प्रतीत हुआ कि सात की इस चोट स उसन किसी गन्दे
 पटे हास की धात्मा को उसक धरीर स धृषक कर दिया है ।

वोम से वह ऊन चुकी थी। परन्तु भगसे ही मिनट उसने बगीचे की ओर भाँका। दरवाजे को बन्द कर वह बाहर को माहट सुनने लगा और उस पर बोझ-सा मुकुर धीमे से बोला—

‘बस रुका हो, बाहर बसें।’

सड़का अपना एक हाथ धागे कीबि सेटा रखा और उसका दूसरा हाथ फर्श पर पड़े बूटों में ऐसे दबा हुआ था कि उसकी एक टाँग दूसरी टाँग से छोटी दीखती थी। जिससे प्रतीत होता था कि वह अचानक प्योत्र की तरफ सरकना चाहता है। उसकी धागे की ओर बड़ी हुई बाँह अवास्तविक रूप से भयङ्कर सम्भी दिखाई दे रही थी। अर्धमानोब धबरा गया। उसमें दरवाजे की पीछट पकड़ी। अपनी टोपी उतार सी और उस भारीभार कपड़े से अपना माथा पोंछा जो पसीने से तर हो लिया था।

“रुका हो, मैं किसी को कुछ नहीं करूँगा” वह बीरे से बोला। यद्यपि वह जान गया था कि सड़का मर गया है और छाप ही फर्श से सगे गानों के नीचे उसने काम गाड़े धून की एक पतली-सी धार फर्श पर बहती देखी।

“मर गया है,” प्योत्र ने सोचते हुए कहा। और इन सीमे संक्षिप्त शब्दों से अर्धमानोब के हृदय में एक बहरा कर देने वाली धबराहट बढ़ गई। अर्धमानोब ने टोपी उतार कर बोट की जेब में डाल सी, अपनी छाती पर क्रॉस का निशान किया और इस छोटी-सी दयनीय एवं सनकी भावति की ओर मूर्खता से निहारन लगा। उसके विभाग में बड़े डरावने और प्राचीन पाषाणिक विचार उठ रहे थे।

‘मैं करूँगा कि यह एकसीद्धत मनजाने में हो गया है। इसे दरवाजे से बोट सगी है। हाँ, दरवाजा भी मापी है।’

उसने धात्र-पास मुड़ कर देखा और बेव पर भार-सा

बैठ गया—उसके पीछे तिस्रोण हाथ में मझू लिए खड़ा था, और अपनी गोसी-गीसी धाँसों में निकामोव को देख रहा था। वह अपनी उङ्कलियों से पत्थर जैसे गासों को रगड़ रहा था जैसे कि किसी गम्भीर बिचार में था।

‘सो घर्तमानाव न बेंच के छोर को अपने दानों हाथों से पकड़ कर कहा। परन्तु तिस्रान ने माथा हिसा कर उसको टोकते हुए कहा—

“मझका कमजोर घोर भड़ा था। कितनी बार मैं मेझसे समझया घोर मना किया था कि ऊपर न बढ़ा कर।”

“क्या ?” मम घोर घ्राणा से प्यान ने पूछा।

‘तू फिरकर बाट खाएया’, मैंने इस बहुत बार समझया। — प्योन इत्यथ ! तुमने भी उस मना किया था याद है ? हर खस के लिए तुम्हें चुस्त होना चाहिए। यह बेहोश है क्या ?’

फर्स पर बैठाकर बरबान न पावल की कसाई घोर घने की नाकी देखी उनके गासों पर उङ्कलियाँ फेरी। फिर अपने एगन से उङ्कलियाँ ऐसे रगड़ी जैसे कि वह दियासलाई जला रहा हो। घोर फिर बोसा—

“सयता है, उत्तम हो लिया। पहन से ही बढ़ा कमजोर था। इस बहुत बोट की जरूरत नहीं थी।

तिस्रान भीर भीरे बोस रहा था। उसकी पतियाँ मन्द थी घोर वह सदा की भाँति ही था। परन्तु मासिक उस पर प्रबि श्राव कर रहा था घोर घ्राणा में था कि वह तुरन्त ही भिड़की के शब्द कहने वाला है। फिर तिस्रोण ने छत व चौकोर छे की घोर देखा। कुछ देर कबूतरों की गुटरगू मुनी घोर फिर पहले की तरह तरस घान्त भाव से बासा—

‘वह हमेसा इस बरपात्रे से ही बढ़ता था एक टाँव बेंच

पर रखता और दूसरी टाँग दरवाजे के हाथे पर, फिर ऊपर छज्जे का दरवाजा घाम बाँहों से छज्जा पकड़ कर किसी तरह ऊपर बढ़ जाता था। उसके छोटे-छोटे हाथों में ताकत नहीं थी। सगता है वहीं से गिर पड़ा और दरवाजे के किनारे से उसके बिस पर चोट आई है।”

“मैंने यह कुछ नहीं देखा।” प्योब ने धात्मरसा की सहज भावनाओं से प्रेरित होकर कहा और फिर जल्दी-जल्दी सोचने लगा—

“क्या यह झूठ बोल रहा है ? बहाने कर रहा है ? कहीं मुझे फँसा कर पकड़ना चाहता है या यह मूर्ख सचमुच कुछ नहीं जानता ?

उसे पिछली बात अधिक सम्भव लगी। तिस्रोम भी मूर्खों की तरह हरकतें कर रहा था। सिर को हिसावर माया ठोकरा हुआ वह घाई भर रहा था—

“ओह, मिट्टी नहीं की ! ऐसे दुनियाँ में घाते ही क्यों हैं बसूँ, इसकी माँ को बतसाऊँ। सीतेसे बाप का तो कोई दुःख नहीं होगा। उसके लिए तो सबका फासतू ही था।”

अर्थात्मानोब ने दरवान की सब बातों को बड़े सदेह से सुना। वह उनमें झूठ और मझुरी तलाश कर रहा था, परन्तु तिस्रोम सदा की भाँति कौतूहल बिहीन व्यक्ति की तरह बहता जा रहा था—

“मुनमा ! वह भीहों को हिसावर बासा और मुनने सपा। वहीं बाहर कोई औरत गुस्स में बिस्ता रही थी—

‘पादका ! पादका—मा !’

तिस्रोम ने धपन बेहरे पर हाथ केरा।

“यह से तरा पादका ! घाँसुओं की तयारी कर।”

“तहीं यह मूल है” अर्त्तमानोव ने सोचा घोर जेव सै टोपी निकाल कर बगीचे म बाहर प्राया घोर सावधानी स टोपी के ऊपर बेसन लगा ।

दो-तीन सप्ताह तक वह घबराया घोर अदृश्य भय स अस्थिर-सा रहा । उस प्रति दिन नई आपत्ति आती निसाई दती । उसे लगता कि अगले ही अग वरुवाजा गुमेगा घोर सिन्धाम आ कर कहैगा—

“अब मैं सब-कुछ जान गया हूँ ।”

वाक्य रूप मे सब-कुछ ठीक-ठाक लग रहा था । सबन सङ्गे की मौत का सन्तोष और साधारण रूप म मान लिया जैसे कि पीडा करना और मरना उनका स्वभाव हो । निकानोव ने अचानक गले में पीसी की बजाय कासी टाई लगा ली और उसका धुले बेहरे पर एक महत्वपूर्ण विमर्शता आ गई जैसे कि उसे कोई बहुत दिनों से मिलन वाया इनाम मिला हा । मृत सड़क की माँ ऊँची मजबूत और घोटे म बेहरे बामी थी थी आ पुप और अच्युरहित धाँकों म घेटे का दफनान में जल्दी कर रही थी—कम-स-कम अर्त्तमानोव को ता ऐसा ही प्रतात हुआ । वह ताबूत के गिर की तरफ सदैव नम्सी-सी झालती रही, सास क मोस भाये की ओर मासा का ठीक से लगाया और सावधानी से अचानी उद्गलियों स नाँव क अमजमात कापक रखती रही जिससे उसका धाँके डक गई और फिर अत्यधिक धीमता से वह अचानी छाती पर धार-धार आस का निहल बनासी रही । प्यात्र न दम्भा कि उसको बाँहें इतनी एक चुकी थी कि दूसरी धार वह अचानी बाँहों को भी न उठा पा रही थी । उसन क्रम का विह्वल करन क लिए हाथ उठाया परन्तु वह ऐसे गिर गया जैसे कि टूट पया हो ।

ही इस प्रकार सब ठीक-ठाक चलता गया । महीं तक

निकोले ने दाह-क्रिया के सब को दान देने के लिए उसे अपनेको बार पस्यबाव दिया। लेकिन इस घनाबन्धक उदारता से तिलोन को कुछ सन्देह हो गया। अभी तक उसे यकीन नहीं होता था कि दरबान इतना मूर्ख होगा जितना कि बही स्नानागार में वह दिखाई दिया था। यह दूसरा मौका था जब स्नानागार ने इस व्यक्ति को इतनी प्रशानता दी थी और वह प्योत्र के जीवन में प्रवेश कर गया था। यह बड़ी घबरीब और रूपा देने वाली बात थी। प्रथमानोव ने इस पर यहाँ तक सोचा कि इस स्नानागार को जमा देना या ठोकर जमाने की सकिरिया काट लेनी चाहिए, क्योंकि वह पुराना और गस चुका था। अब जरूरत थी कि एक दूसरा स्नानागार बनीबे म नई जगह बनाया जाय।

तिलोन का सावधानी से देख कर उसने पाया कि दरबान के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं। सदा की भाँति वह घपन प्रस्तिब के लिए अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी की दयापुता या पुनिसमन तथा मिन-मजदूरों की तरह नाराज-सा रहता था जो उसे पसन्द नहीं करते थे। खासतौर से वह खियों को बड़ी प्रशिक्षता से बरतता था। केवल मात्र नतात्या के साथ वह बिनेप व्यवहार करता था जिस कि वह उसकी मासकिम की जगह कोई सगो सम्बन्धिनो जाधी या यड़ी बहिन हो।

‘जया बात है तु तिलान के साथ पुस-मिस कर रहती है?’ प्योत्र ने कई बार पत्नी को टाका भी था। इस पर पत्नी जवाब देनी थी—

‘वह मेरे बहुत काम करता है।

‘अगर दरबान के कोई मित्र या प्रतिधि पाते तो प्योत्र उन्हें उसका परापाठी समझता। परन्तु यड़ी सेराफिम के प्रताबा

तिल्लोम के कोई अधिक मित्र भी नहीं थे । वे दोनों साथ-साथ गिरने को जाते और भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते । यद्यपि वह कभी कभी बहुत मुँह फाड़ कर बड़े बड़े तरीके से प्रार्थना करता था जैसे कि वह चित्तमाने लगा हो । कभी-कभी तिल्लोम की टिमटिमाती मजराँ को दब उसके भासिक का चेहरा गम्भीर और भयालु हो जाता था । अर्तमानोब को ऐसा प्रतीत होता कि इन गीसी घाँसों में कोई बमकी छिपी हुई है । कभी वह अनुभव करता था कि वह इस किसान की काँभर से पकड़ कर खूब हिंसाएँ और चिस्ता कर पूछे—

“अब क्या क्या कहता है ।

परन्तु तिल्लोम की पुतसियाँ सिकुड़ जातीं और घाँसों में कोई भाव न दोनता । उसका परभर जैसा कठोर मारी चेहरा भावरहित होकर प्योत्र के भय को नष्ट कर देता । मूर्ख अन्तोन जब तक पीवित रहा अक्षर दरबान की भोंपड़ी में घाता था फाटक के पास बेंच पर घटा रहता और तिल्लोम उस भूखटा से पूछता—

‘तू फिरून की बातें मठ किया कर, जरा सोच कर मुझे बता कि यह कुयाठिर कोम है ?

ब्यामस अन्तोन वड़े घानन्द के साथ चित्तानाता और अपना गीत गाने लगता—

ओह ईसा का अबतार हुआ—अबतार

‘कुप भी रह ।

‘गाड़ी का पहिया गम हुआ, गुम हुआ ..’

‘तू क्या चाहता है ? एक बार अर्तमानोब ने चिड़ कर उसे पूछा था । चिड़ने का कारण वह खुद भी नहीं बता सकता था ।

और मुख्य बात की परवाह उन्हें नहीं। लोग बग़ावत को घोर मुक़र रहे हैं, जिससे सरकार उन्हें दण्ड देती है। बस इस प्रकार हमारे यहाँ किसी-न-किसी कारण गड़बड़ी ही बस रही है। इस समय एक ही भावात्म इस सारे सार-शराने में आ रही है जो बहुत ऊँचे मनुष्य की आत्मा को जगाने के लिए जोर दे रही है। यह भावात्म एक कास्ट टालस्थाय की है जो बहुत बड़ा दार्शनिक और साहित्यकार है। वह बड़ा अद्भुत व्यक्ति है और उसकी भावात्म में बड़ा आप्रह है। परन्तु पता नहीं क्या बात है कि हमारा सनातन-धर्म (गिरजा) इस बारे में सापरबाह है।'

वह देर तक सियो तास्तताय के बारे में बातचीत करता रहा यद्यपि भर्तमानोव को पादरी की अम्भकार में स मुक्त होकर निकलती हुई भावात्म और उस असाधारण व्यक्ति के चित्रण का मतसब कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पर उसके विचार धोता को अपने विचारों से बहुत दूर सीध से गए। इस बात को न भुसते हुए कि उसने पादरी को क्यों बुलाया है प्योत्र न अनुभव किया कि उस पादरी पर बहुत दया आ रही है। वह जानता था कि सहर की गरीब जनता पादरी के प्रति बड़ी अनुकम्पा का भाव रखती है और यह पादरी सवके साथ दयालु और प्रसन्न रहता है। वह गिरजे में सबकी एक-सी सेवा करता है और बिसेपकर अन्वेष्टि-सस्कार बड़ी भावुकता से करवाता है। भर्तमानोव इसको बड़ा स्वाभाविक समझता था—पादरी को होना भी ऐसा ही चाहिए। इस पादरी के प्रति उसकी सहानुभूति इस कारण थी कि वह सहर के दूसरे पादरियों से भूणा करता था जो ग्लेब से अन्धे नागरिक थे। परन्तु पादरी को कठोर भी होना चाहिए। वह विनापकर हृदय का पार करने वाले सध्व कहना जानता हो, जो पाप के प्रति भय पैदा कर भोगों को उनसे हटा सके। भर्तमानोव जानता था कि ग्लेब में यह शक्ति नहीं

थी। और कभी-कभी पादरी की निम्न मरी जगमगाती वातचीत से यह स्पष्ट दिखलाई देता था कि वह किसी को नाराज नहीं करना चाहता है। अभानक वह कह उठा—

‘पिता म्नेव ! मैंने आपको इसलिए कष्ट दिया है ताकि मैं सुचित करू कि मैं इस वर्ष हृष्य (धर्म-संस्कार) नहीं खूँगा।

‘क्यों ? पादरी ने सोचते हुए पूछा, और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना बोला— ‘तुम अपनी आत्मा के सामने उत्तर दायी हो।’

अर्तमानोब को प्रतीत हुआ जैसे कि म्नेव ने ये शब्द दरबान तिखोन की सी उपेक्षापूर्ण ध्वनि में कहे हैं। गरीबी के कारण ही पादरी ने रबड़ के झूठे नहीं पहने थे। अतः भारी जिसामी बूतों के साथ आए हुए दरफ के कण फर्श पर छोटी-छोटी धाराओं में पिघलने लगे और वह इन धाराओं से अपने पाँव को बचाकर शिकामत और भस्मना करने लगा—

“जब तुम अपने चारों तरफ होने वाली बातों को देखते हो तो सिर्फ एक बात से ही सन्तोष होता है कि जीवन पाप है, जैसे-जैसे यह बढ़ता है, इसका पिण्ड भी बढ़ता जाता है और प्रतीत होता है कि हम उसकी शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेंगे। मैंने जीवन का ऐसे ही देखा है—पहले तो वह बीज की तरह एक सूक्ष्म रूप में बीजता है और फिर एकएक पर सिपटे लाने की तरह वह बढ़ता जाता है। अगर यह विकसित हुआ हो तो उस पर विजय प्राप्त करना हमें कठिन हो जाता है परन्तु जब इतना होता है तो म्याय की तसवार की एक चोट से इसे काटा जा सकता है।”

अर्तमानोब की स्मृति में ये शब्द बैठ गए और उसे एक प्रकार की शान्ति हुई। पापों का वह बीज—वही पापेस था।

क्या उस पर ही उसका सारे काले विचार एकत्रित नहीं हो रहे थे। और एक बार उसे इसी समय फिर याद आया कि उसके इस पाप में वस्तुतः उसके सड़के का भी कुछ भाग है। यह सोच कर और अपनी धारणा में हल्कापन अनुभव करते हुए उसने एक गहरी साँस लेकर पादरी का नाम के लिए प्रामाणिक किया।

मोजम का कमरा प्रकाशमान और आरामदेह था। वहाँ स्वादिष्ट भाजनों की महक के साथ एक उष्ण सुगन्ध भी आ रही थी। मेज पर रत्ना समवार धंगीठी पर चढ़ा था और उसमें से भाप की छाटी-छोटी फुहारें बड़े परिहास के साथ निकल रही थीं। उसकी सास आराम कुर्सी पर बैठी अपनी धार सास की धेवती के लिए गीत गा रही थी—

सौभाग्यवती माता प्रकाश की—

देती है हरपा-ठरपा कर,
निज प्रकाश की भेंट निरासी।
पीटर को द ज्ञानी उनसे
तेजस्विता गर्मी की प्यारी।
सन्त निकासी को है दोनी
सहरो-सी अस्थिरता म्यारी।
वीम्यर इतिवाह के हेतु
वासन को है दोर सँवारी।

"यह तो भक्ति-गूँजकों का गीत है। पादरी ने कुर्सी को ग्राम निसलकर एक घान्त मुम्काम के साथ कहा।

रामन-बस में पानी में प्योन को बताया—

"अनकसेई वापस आ गया है मिन उम देगा था। वह तो हर बनकर म मास्को पर दीवाना होता नजर आता है। मुझे डर है कि—।

गर्मों के दिनों में मत्तात्या की शुद्ध घोड़ा घोर बिकने गुसाबी गावों पर कुछ साल-नाम बच्चे से दीखने लगे । यद्यपि वे बच्चे मुई से होने वाल खड़ा क बराबर थे । मकिन फिर भी उन बच्चों न उस परेशान कर रखा था और वह सप्ताह न दो बार सोने से पहलू तन्ममता और सावधानी के साथ बमकी पर सहृद धीमे रङ्ग का मरहम मना करती थी । उस समय वह धीसे क सामन अपनी नयी बोजहनिया का धामे-पीछ करती हुई होती ता उसके वक्ष के उपरत उगाज उसकी बमीज में लेबी स हिलते रहत । प्यात्र अपने सिर के नीच हाथों का माइकर अपनी दाढ़ी की नाक को छत्र की धीर उठाए हुए पसय पर सटे हुए था । तभी कनलियों से मत्तात्या का दलकर उसन निदयय किया कि वह एक तरह की मग्नीन की तरह काम करती है । उसक उस मरहम की गंध उबसी स्टर्बन (एक समुद्री मछली) की तरह थी । जब मत्तात्या अपनी नियमित प्राथमाधो का करम के बाद पसय पर मटी और अपनी धावत के धनुसार उसने स्वस्थ धरीर को अपने पति को अपने कर दिया तो वह सोने का बहाना करम लगा ।

“एक डीब, ’ उसने सोचा । “घार में भी तो तकुए की तरह मगातार भूम रखा है । धीर इस तकुए को बसा कौन रखा है ? तितान कहता है—मनुष्य बर्जा बसाता है और दैतान टाट बुनता है । घोह ! बँस-बँस बबफूफ है !”

अस बारोवार का धसेबनेई बड़ी सक्ति मगाकर बड़ाए जा रहा था, धव वह नदा के ऊपर भुम्बने वाले टीनों तक पहुँच सिमा था । उसका सुनहरी रंग धव नष्ट हा चुका था, धभक की धमक और मुकीसे पत्थरों की धमक भी नष्ट हुंती जा रही थी । मगातार बसती रह सीपों के पीचा स रौंठी जा रही थी और उस पर हर बसन्त ऋतु में नई पास धीर प्रकुर भावा में हरे

पीवे उगते घा रहे थे । घाम भोगों के पारियों से बने रास्तों पर
 नए पीवे उग रहे थे और बड़े पत्तों वाले पेड़ दिखाई देने लग
 थे । कारखाने के चारों तरफ पेड़ अपने नए बीज बिखार कर भी
 रहे थे और पतझड़ में गिरे पत्ते मोटी रेतीसी भूमि को अधिक
 धिक उपजाऊ बनाते जा रहे थे । मिस अब अधिकाधिक ठोपी
 घाबाज में एक शिकायत के रूप में धोर करती थी उसमें भय
 और बिम्ता का वायुमण्डल साँस लेता दिखाई देता । सैकड़ों तबुलों
 का फटना, सैकड़ों सड़ियों की भड़भड़ और सुबह से शाम तक
 सैकड़ों मशीनों का हाँफते हुए चलना लगातार जारी रहता था ।
 कारखाने में दिन रात मेहनत का धोर होता रहता था । और
 इस सब पर अपने स्वामित्व की भावना भाङ्ग्यजनक प्रसन्नता
 और अभिमान पैदा कर रही थी ।

परन्तु अब समय आ लिया था जब घर्तामानोव अपने
 घन्दर अधिकाधिक चिन्ताएँ और पकान अनुभव करने लगा ।
 उसे अपने बचपन की याद आने लगी जबकि इसी स्पष्ट छाटी
 सी मदी के किनारे एक दान्त नाँव बस रहा था । और दूर
 तक किसानों का दान्त जीवन फला हुआ था । अब उस अनुभव
 होने लगा कि किसी घट्ट हाथों ने उस जकड़ रखा है जो उसे
 मरोड़ कर घुमा रहा है । दिन भर मिस के धोर से उमका
 दिमाग भर चुका है और उसमें कारोवार की बिम्ताओं के
 घमाका कोई स्थान नहीं रहा है । मिस की चिमनी से घुमाव
 गाता हुआ घुमा घास-पास के वायु-मण्डल में निराशा, भय और
 नीरसता पैदा कर रहा था ।

घट्टों और दिनों तक इस प्रकार की चिन्ताओं से मिस
 मजदूर बिगबवर घप्रमन्न थे । उसे प्रतीत हुआ कि अब मजदूर
 लगातार कमजोर हो रहे हैं उनमें किसानों की सी पुरानी महन
 शीलता मह होती जा रहा है और खियों की सी चिड़चिड़ाहट

बढ़ रही है। वे धन अपनी नाराजगी और मुँहफूट पने में अधिक
 अधिक घुट्ट होते चल जा रहे हैं। धन उनमें फिज़ूल खर्ची और
 अस्थिरता बढ़ती जा रही है। पिता के काम में पहले उन लोगों
 में पारिवारिक जीवन पाया जाता था। वे लोग अधिक शान्ति
 और मित्रता से रहते थे। धन जैसी शराबखोरी और निर्मल
 धारणाहीनता उस समय नहीं थी। धन तो सब-कुछ गड़गड़
 हो रहा था। मजदूरों में शोर-धराबा करने वाले सज़ाज़ और यहाँ
 तक कई प्रकममन्द भी खींचने लग गये। वे काम के प्रति सापरबाह
 हो रहे थे और धापस में बहुत सड़ते-मजड़ते रहते थे। धन के
 अधिक शरारती और कटु होसे जा रहे थे और हर बात की
 पड़तास और हिसास करते थे। सासतौर से नोजवान बहुत
 मगझासू और बदतमीज और अशिष्ट हो रहे थे। और मिल ने
 नोजवानों का किसान स्वरूप विल्कुल बदल दिया था।

कोपसा भोंकने वाले मजदूर बल्कोफ को बाहर के पागल
 खाने में भेजना पड़ा। धनी पाँच बरस ही तो हुए थे जब यह
 सुन्दर स्वस्थ और सुदृढ़ किसान अपने घर के धनि में भस्मसात
 हो जाने पर अपनी जिन्दादिल सुन्दर स्त्री-सहित मिल में धाया
 था। एक बरस में ही वह स्त्री अरिबभष्ट हो गई और बल्कोफ
 उसे मारने-पीटने लगा जिसके कारण उसे तपेदिक हो गई।
 और धन दोनों ही इस दुमियाँ में न रहे। धर्तमानोव ने इस
 प्रकार तेजी से बढ़ती गिरावट के बहुत से उदाहरण देते थे।
 पिछले पाँच सालों में बार हज़ारों हुई थी—जिनमें स दो शराब
 के कारण, एक धापस को ईर्ष्या से, एक बड़े मजदूर ने एक
 नोजवान स्त्री में ईर्ष्यास लुरा भोंक दिया था। धन सज़ाइयाँ
 भी प्रायः खतरनाक खोटों में ही समाप्त होती थीं।

धनकेई पर स्पष्ट इसका कोई प्रसर नहीं था। माई को
 इन दिनों समझना कठिन हो रहा था। धन यह बढ़ई सेराफिम

भी पहले जैसा साफ और परिहास प्रिय नहीं रहा था जो बड़ी बुद्धिमत्ता और धारणा में काम करता हुआ मिल के वहाँ के लिए छोटी-छोटी सीटियाँ और घनुष बनाता था उनके लिए ताबूत पर क्रोमों ठोकता था । अलबत्ता की भाँव जैसी धारों पहले की तरह विद्वान्पूर्वक चमकती रहती थीं जैसे कि सब-कुछ ठीक है और ठीक ही रहेगा । उसके घर से अस्मिन्तान में तीन कब्रें बन चुकी थीं । अब उसका नेवल मात्र एक घंटा मिरोन ही जैसे-जैसे अपने जीवन से छिपका हुआ था । वह बड़ा भरा और मम्बी अस्मिन्तान और उपास्य का असावधानी से बनाया हुआ हाँसा था जिसके अन्दर से अतन्त समय एक प्रकार की लड़कड़ाहट होती थी । उसकी आदत थी कि वह अपनी उल्लसियों का आर से बटकाता रहता था । तरह साल की उम्र में ही उसने तेजक लगानी शुरू कर ली थी जिससे उसकी परिधियों की धौंल जैसी नाक किसी कदर छोटी दिवसाई देती थी और उसकी चमकीली धारों में एक अग्रिम काभिमा-सी था जाती थी । यह सड़का सदा किताब के पन्नों के बीच उल्लसी दबाए चमकता, जिससे प्रतीत होता था कि किताब भी उसके अन्दर के साथ उगी है । अपने माँ-बाप से वह समान स्तर पर गठ बोल करता, उनकी आलोचना करता, जिसे वे दोनों पसन्द करते थे । व्यापक अपने अतीत के प्रति अग्रिमता अनुभव करता था और उसी सिक्के में वह उसे घटा कर देता ।

अलबत्ता के घर में गम्भीरता, स्वयं और सम्यता का विस्तृत अभाव था । ज्येष्ठ अर्थात्मानोब को अपने और भाई के जीवन में लगभग ऐसा ही अन्तर दिवसाई से रहा था जैसे कि गिर्जे के माधु प्रायम और बाजार की दुकान के बीच । नगर में अन्वयेई और उसकी पत्नी के नाई मित्र नहीं थे परन्तु उनके गात्रम की तरह लिखाई देने वाले—पुराने फरनीचर और पुरानी बीजों से पिरे चमरों में त्योहार के दिन अस्मिन्तानों के

पंडित इकट्ठे होते जिनमें सोन के दाँतों वाला मिल का डाक्टर थाकोन्नेव, जो बड़ा मसौली इन्विसु और गुस्से वाला था, बिल्वाकर बोनन वाला मकेनिक कार्यालय—जो बड़ा धराबी और जुधारी था मिरोन का अभ्यापक एक विद्यार्थी—जिसकी पुसिस में पढ़ाई घन्ट कर बी बी मुर्गी जैसी नाक वाली उसकी पत्नी, जो सगातार सिगरेट पीती और गिटार बजाती रहती। इनके प्रतिरिक्त और भी अनक मनुष्य-जाति के विकृत भजीव नमून इकट्ठे हाते जो पारिया को गाली देन में सरकारी प्रफसरों के प्रति अशिष्टता पूर्ण बकवास में एक दूसरे से होड़ लगाते रहते थे। उनमें से प्रत्येक अपन को बुद्धि का अवतार समझता था। अर्तमानोव अपने पूर्ण अस्तित्व से अनुभव करता था कि ये लोग असली और भल नहीं उसकी समझ में यह भी नहीं आता था कि वे उसके भाई के घर में—जो उसके साथ एक महत्वपूर्ण कारोबार में भाषे का भासिक है क्यों आठ है ? उनकी चिल्लाहटों को सुनकर उस पादरी की शिकायत याद आती थी—

वे चाहते बहुत-कुछ हैं परन्तु असमियत उनमें कुछ नहीं है।

उसन अपने मन से यह नहीं पूछा कि यह असमियत क्या और कैसे है ? वह तो कारोबार का ही असमियत समझता था।

उसके भाई का सबसे प्रिय था जार से चिल्लाकर वासने वाला जिप्सी कपडेव। वह सदा ही धराव के मध्य में प्रवल पक्तिपूर्ण और एक प्रकार से बुद्धिमान दिखाई देता था। वह शायद सब लोगों के सामन डोंग मारता था—

'यह दाशनिकता तो फिज़ल की बात है ! व्यवसाय—वस, मशोन हो है और कुछ नहीं। स्पष्ट अर्तमानोव कपडेव को बड़ी सदिह की दृष्टि से देखता था, उसकी बातों में कुछ अधानिकता

से दूर जाने का प्रबन्ध मिसता तभी वह फिर अपने धास-पास के लोगों के प्रति और अपने प्रति गहरी घृणा से भर जाता। उसके जीवन में केवलमात्र एक ही प्रकारापूर्णा स्थान था और वह था अपने पुत्र के प्रति प्रेम। परन्तु यह प्रेम भी उस सड़के निकोनोव के प्रति घृणा से ढका हुआ था, जबकि उसके मृत के अपराध के बोझ से उसकी छास में घुम घुमा था। कमी-कमी इत्या की ओर देख कर उसकी इच्छा होती कि वह उस इस बारे में सब कुछ बता दे—

“देख, ऐसी चिन्ता में क्या कर बैठा है ?”

अपने भावों को छिपाने में वह बहुत बुद्धि नहीं था और वह यह छिपा भी नहीं सकता था कि इस घात में कुछ संकेत पहले ही उसे अपने पुत्र के प्रति भय पैदा हुआ था, परन्तु व्याज जानता था कि वह इस भय से ही अपने पाप को चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, म्यामसगत नहीं बता सकता था। फिर भी इत्या से बात करते हुए वह उसके साथी का जिक्र भी नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसे डर था कि वहीं वह भ्रम से उसके अपराध की चर्चा न कर बैठे जिसे कि वह अपनी बहादुरी के रूप में उपस्थित करना चाहता था।

वह देख रहा था कि उसका बेटा इत्या बड़ी तभी से बढ़ रहा था। चाहे वह एक विचित्र दिशा में ही था। सड़का घर अधिक घात और खराब था, माँ से वह सम्बन्ध से बात करता, छोटे भाई याकोव को जा हाईस्कुल में जाने लगा था उसने छेड़ना बन्द कर दिया था। और छोटी बहिन एनीना के साथ रोमन ब्यंग में यात्रे किया करता। परन्तु उसकी मातृहीन और व्यवहार में एक प्रकार की चिन्ता और विचार-हीन सीतलता भी थी। पाबस निकोनोव की जगह सब मिगन ने न सी थी। दोनों भाई समय-समय सदा साथ रहते और बाहों में बाँह डाले बिना

पकान ब गप लड़ाते रहते । वे बघीचे में बठ कर साध-साध पढ़ते । इत्या लगभग धर में कम रहता था । जैसे ही सुबह होती वह किसी काम से सहर में अपने पापा के पास भयबा मिरोन और कास भुंभरासे बासो बासे गोरिस्त्वेतीब के साथ पञ्जस में पसा जाता । वह एक नाटा थालाक मागफन की तरह कटीसा और लम्बी लक्षकीली बाल बासा सड़का था । उसकी बाँहें सदा ब्यग में ऐसे बूरती थी जैसे कि वह नाराज हो ।

‘तुम्हे यहूदकों के साथ भावारा गिर्बी पसन्द है । माँ ने भूणापूर्वक बेटे की भर्त्सना की । प्योत्र ने देखा कि बेटे की सुन्दर भृकुटियाँ हिम उठी थीं ।

‘यहूदका ! माँ यह एक भपमान-जनक सभ्य है । आपको पता होना चाहिए कि अलबसान्द्र—हमारे पावरी ग्लेब का भतीजा है इसका मतलब यह है कि वह खूबी है । वह स्कूल में पढ़ता है—और अपनी धेणी में प्रथम रहता है ।

भूणा से माँ फिर उबस पड़ी—

‘‘यहूदके, सब जगह ही घामे होने की कोशिस कर रहे हैं ।’

आपको इसका पता कहाँ से चला ? —बेटा भी पीछे नहीं हटा— सारे शहर में से-दकर चार तो यहूदी हैं और सिफ दवाफरोस के असाबा सब परीब हैं ।’

हाँ, हाँ चासीस यहूदी हैं और बरगारद में जाओ तो बाजार में सब जगह यहूदी-ही-यहूदी भरे पड़े हैं ।’

चिड़ कर इत्या न आग्रह के साथ अपनी बात दोहराई—

‘‘यहूदके बहुत बुरा छन्द है ।’

माँ न गुस्से में सास होकर पिरब पर भयबा मारा और चिल्लाई—

“तु मुझे सिखाता है ? क्या मैं नहीं जानती कि मुझे कैसे बोलना चाहिए ? मैं—मैं घन्धी नहीं हूँ ? मैं जानती हूँ कि ये छोटे-छोटे चापसूस किस भास-पास घुसने की कोशिश करते हैं । मैं तिलोन को भी जानती हूँ । वह भी बड़ा खुशामदी और चाप-सूस है । इसीलिए मैंने कहा कि यह यहूदका है, खुशामदी और खतरनाक है । मैं ऐसे खुशामदियों को खूब जानती हूँ !”

‘बस, बस ! इत्या ने कठोरतापूर्वक कहा । और मतास्या शिकायत में राने हो बाली थी—

‘प्योत्र इत्यक, यह क्या बात है, मैं एक शब्द भी नहीं कह सकती ?’

इत्या भीड़ें थड़ाए चुपचाप बैठा रहा और माँ ने उसे याद कराया—

“मैंने तुम्हें जन्म दिया है ।”

‘घन्यवाद’ इत्या ने भाव का जाली व्यासा परे हुग कर कहा । माप ने घाँसों क बोने से उसे देखा और घपना फान मस कर थोड़ा-सा मुस्कराया ।

घपनी पत्नी के शब्दों में वह जान गया कि वह बेटे से बसे ही डरती है जैसे कि पहले कभी केरोसीन सेम्प से डरती थी । और अब वह काफी के एक पेचीद बर्तन में डरती है जिसे आस्ता न भेंट दिया था । वह डरती थी कि कहीं यह काफी का बर्तन एकदम फट न पड़े । उस भी माँ की तरह ही घपने बटे से तनिक भय-सा अनुभव होने लगा । नौजवान लड़के को मस भाना मुद्रिकस हा रहा था । तीनों ही बच्चों का व नहीं समझ पाए थे । पता नहीं उन्हें दरबान तिगान में क्या घजीय और घबधी बात दिखलाई दती थी । वे राध्या-समय उसके साथ दर आज पर बटे रहत और ज्यष्ठ घनमानोव, उपदेश देत हुए इस विशान की ठँबी घापाज का गुमता ।

‘यह ठीक है, जितना कम चाकू हागा—उतना ही हल्का चसागे । परन्तु यहाँ तक कोनों की बात है क्या तुम्हें यकीन नहीं आता ? आसमान में कोन कैसे हा सकता है ? वहाँ दीवाने तो हैं नहीं ?’

इस पर स्कून बान वाले सड़के हँस पड़त । इत्या की हँसी कोमल और सूक्ष्म हुआ करती । मिरोन की हँसी गुफ़्त और तीखी हुआ करती और गारिस्स्वेतोव हँसता तो या परन्तु धन्य मार्गों की तरह इतनी जल्दी नहीं । वह हमेशा हड़ता क साथ अपने साथियों को हँसन से रोकत हुए कहता—

‘हँसो नहीं, यह हँसने की बात बिन्दुस नहीं ।’

और, फिर तिखान का अस्पष्ट भाषण और-भीरे बन पड़ता —

‘बदो तुम्हें मानव प्राणी क बारे में अधिक-अधिक अध्ययन करते रहना चाहिए । आखिर यह मनुष्य क्या है ? उसका म इसका क्या काम है और उसके भाग्य म क्या लिखा है ? हमें इसी पर विचार करना चाहिए और फिर उनके धर्म-शास्य आत हैं । इस बातों को भी समझना चाहिए । तुम लोग प्राय किसी चीज के लिए कमी दूसरा ही गोसमोस शब्द कहते हो, और उनका कोई अन्त नहीं ।

और फिर तिखोन व्यालोव ने उस पहिली का दुहराना गुरु किया जो व्योत्र ने पहले ही सुन रखी थी—

“मनुष्य आगा बुनता है और शैतान उससे टाट बुनता है, और समय अनन्त है तथा समय का चक्र चलता ही रहता है ।’

इस पर सड़के थोर से हँस उठते और तिखोन व्यासाव भी भारी आवाज में उनका साथ देता और फिर साँस लेकर कहता—

“धरी प्रकाशपूर्ण शक्ति ! तुम बुद्धिमान् हो लेकिन धमी पूर्णता पर नहीं पहुँची हो ।’

सध्या की छायाओं में ये बच्चे दिन के प्रकाश की अपेक्षा और छोटे दिखलाई देते और तिलोन उनके मुकाबले में अधिक चमका और फना दिखाई पड़ता था तथा दिन की अपेक्षा अधिक बढ़-बढ़ कर मूर्खता की बातें करता ।

इसका और तिलोन की घातघीत से बड़े अर्थात्मानोव के हृदय में दरबान व प्रति अधिक घृणा पैदा होने लगी और उस तरह-तरह के अस्पष्ट भय सताने लगे । उसने बेटे से पूछा—

तिलोन तुमसे क्या कहता है ?

‘वह बड़ा विसवस्य घादमी है ।’

‘किस बात में विसवस्य घादमी है ? अपनी बेबकूफियों के कारण ?’

इसका म धीरे से उत्तर दिया—

‘हाँ बेबकूफों का भी ता समझना पड़ता है ।’

यह उत्तर अर्थात्मानोव को पसन्द आया ।

‘हाँ ठीक है हम बेबकूफियों म ही रहते हैं ।’ और उसी क्षण उसने अनुभव किया -

य वाद ता तिलोन क ही है ।

पुत्र का उत्तर उसका हृदय में एक प्रकार की विशेष आशाएँ जागृत हो उठी थीं । जब वह देखता कि इसका जेबों में हाथ डाले किम प्रकार धीरे धीरे सीटी बजाता हुआ तिलोनी स मैदान में मजदूरों को दण्डता भववा धीरे-धीरे बिना किसी जल्दी व दुनाई पर म जाता था कर्मी दर पाँच मजदूरों की यस्ती में जाता, ता बाप बड़े सत्राय स सोचता—

‘यह बड़ा तज मामिन बनगा और व्यापार में मेरी तरह उगड़ा उगड़ा और उराम लगी रहगा । वह व्यापार में अच्छी कृषि व माघ भाग लगा ।’

कभी-कभी उसे निराशा भी होती, क्योंकि बेटा मितभाषी था। और यदि कभी दोस्तता भी था तो बड़े सख्तप में जैसे वे पहले से ही सोचे-समझे शब्द हों। उन बातों को सुन कर बातचीत भारी रखने की इच्छा ही न हाती थी।

‘किसी कदर रुका है’—बाप न सोचा और उसे सन्तोष हुआ कि इत्या बिस्वाने और बात करने वाले मोरिस्बेटोव प्रथवा मन्द घाससी याकोव प्रथवा मिरोम जैसा न था। ये सबके धमी से अपनी जबानी के मिथानों को छोड़कर किताबी कीड़ों की तरह बात करते थे। और मिरान सरकारी मीकर की तरह बड़ा धमकी हो गया था। उसकी नजर में किताबों में जीवन की सब घटनाओं और बातों के लिए नियम दिए हुए थे।

छुट्टियों के सप्ताह बड़ी तेजी से गुजर गए और ये नीब बाम बच्चे फिर बाहर के स्कूल में जाने की तयारियाँ करने लगे। किसी कारण ऐसा हुआ कि एक और नतास्या याकोव को दुमार से उपदेश दे रही थी और दूसरी और पिता इत्या को। लेकिन वह वे बातें नहीं कह सका था वह उससे कहना चाहता था। और वह यह कैसे कह सकता था कि काराबार की बिन्ताओं में मच्छरों के झुंड़ में वह बड़ा मीरस और ऊबा है? ऐसी बातें बच्चा से बोड़े ही करते हैं।

ज्येष्ठ अर्धमानोव की बहुत इच्छा थी कि वह अपने प्रतिदिन के साधारण जीवन से पृथक किसी एक जीवन का अनुभव से— एक ऐसा जीवन जिसमें बर्फ, सर्पा, कीचड़, गर्मी और धूल धनि कार्य न हो। और अन्त में उसे एक ऐसी बात भी मिस गई। जिसे के एक सुदूरवर्ती जङ्गली हिस्से के बीच एक बार उस जून के दिनों की भयकर धाँधी-धानी-धोसों का सामना करना पड़ा था। बिजली लड़क रही थी और बादलों को पीर कर नीसा

प्रकाश पैला देती थी। जङ्गल में घाघकार छा जाने के कारण संकीर्ण मार्ग पर प्रवाहित जलपारा देखने में नहीं आ रही थी। पाइलों के गुरों से जमीन की नरम मिट्टी मुद-मुद कर पानी में घुस कर कीचड़ के रूप में घनती जा रही थी। गाड़ी की धुरी, पहिए सभी कीचड़ में सन गए थे। विजसी रह रह कर चमक उठती थीर उसके नीस प्रकाश में पीछे के कणों की तरह मंह की फुधारे धीर सड़क क शीनों धीर क वृष कीचड़ हुए दिमाई देने सगते थे। उद्य समय पृष्ठी पर चारों धीर एक मयानक हृदय उपस्थित हो गया था। गाड़ी के म दिस्ताई पड़ने वाले पीछे सहसा ही रुक कर हिमहिनाले सगते सो भी उनके अस्थिर पाँवों से चारों धीर क पानी का छिटकना बन्द म हो पाता। शास्त स्वभाव वाले माट कीचड़ान यकीम म उन्हें शास्त रहन का कहा। धीनों की वृष्ि जब बन्द हा गई तब धीनों के गिरने का सड़ सड़ स्वर भी जङ्गल में बिनीन हा गया। लेकिन इसक बाद ही पानी धीर अधिच चारों से बरसने सग गया। पानी की तज चौधारे वृषों के पत्तों पर गिर गिर कर जंगल के अग्यकार को कोषपूर्ण गर्जन से भरने लगी।

‘हमें पपोव क घर जाना ही पड़ेगा। यकीम म कहा।

धीर इस प्रकार एक स्वप्न की तरह अर्तमानाव ने मूग बरड़ों में बँडे हाने पर भी एक बग्यन अनुभव किया। यह मेज के महारे अर्द्ध अघकार में डूबे हुए गरम बमरे म साता हुभा सा बँठा रहा। बमरे में मज पर रगा निकल-गानिग किया हुभा एर समवार धीर कह रहा था। एक सम्बो-मतसी वाली पोगाव पड़ने श्री तिमक पस्से बायी भीचे लटक रह थे थाय उँटस रही थी। साम-साम धानों का पगड़ी के नीस उगपी मुन्दर धुरी धीर पीस भरूरे को प्रशानित कर रही थीं। यह बट कोपस धीर सगन धानों में त्रिनग किनी प्रकार की गिरायत

नहीं व्यक्त होती थी, अपने पति की हास में ही होने वाली मृत्यु की बात सुना रही थी। वह कह रही थी कि वह अपनी सब सम्पत्ति का बेच कर सहर में धाकर एक प्राइवेट स्कूल खोलना चाहती है।

‘यह सलाह आपके भाई न ही मुझे दी है। वह बड़ा विसमस्य जीवनपूर्ण और मौलिक-व्यक्ति है।’

प्योत्र ने अपने घास पास कमरे में चारों तरफ दल कर ईर्ष्यापूर्ण ध्वनि-सी की। जवानी क दिनों में अपने घास क साथ वह इस जिसे स गुजर कर कई बार सरदारों के घरों में गया था और उनमें उसे कोई धाकपेंग नहीं दिखाई दिया था। इन लोगों के घरों और उनकी सबावट तथा चीजों को देखकर उसका विस एक प्रकार से बैठ-सा जाता था। परन्तु इस घर में कोई एसी घात नहीं थी जिससे उसका विस बैठ। यहाँ सब-कुछ प्रसन्नता दया और सचाईपूर्ण था। दीप न एक बड़े दोड़ क नीच सेम्प, भज पर रस चीनी और चादी के बठनों पर शुभ दूध जसा प्रकाश फैक रही थी। उसका कामस प्रकाश एक झाईंग की पुस्तक पर मुकी छाटी-सी एक कन्या पर भी पड़ रहा था, जिसकी घासों पर हरे हरे रङ्ग की एक छाया पड़ी हुई थी, उसके सामन चापी तुली पड़ी हुई थी और वह कन्या एक पठसी पेन्सिल स उस पर चित्र बना रही थी, साथ ही धीरे-धीरे कोमस ध्वनि में कुछ गुनगुनाती भी जा रही थी। उसका यह गुनगुनागा ना की समरस वाणी में किसी प्रकार का बिम्ब नहीं डाल रहा था। कमरा बड़ा नहीं था, परन्तु फर्नीचर स काफी भरा दिखाई देता था। सब चीजें उसका धावश्यक धङ्ग दिखाई द रही थीं और उसकी प्रत्येक चीज अपने बारे में पृथक-पृथक बोस रही थी। यहाँ तक कि दीवारों पर तीन चमकदार चित्र टंग रहूँ थे, उनमें से एक परिवर्णों की कहानियों का सफेद घोड़ा था, जो बड़े

गव से घपनी गदन मोड़े बहुत मन्वी घयास के साथ—जो सग भय जमीन तक पहुँच रही था खड़ा था ।

बमरे में सब-बुद्ध धाध्वप्रण सुख एवं शान्ति देना बासा घोर एव काल्पनिब कबिता के समान अनुभव हा रहा था । यह साज सज्जा दूर से ही स्वामिनी क सुन्दर, सुमधुर गीत में सुर घोर तान-सी देती मासूम द रही थी । ऐसी परिस्थिति में कोई भी पुष्ट्य घपना सम्पूर्ण जीवन बिना किसी भय या किसी प्रकार का हीन काम किए व्यतीत कर सकता था । एसी पत्नी के साथ सम्पूर्ण जीवन उमकी प्रतिष्ठा घोर सब क बारे में हादिक-बार्धा साथ करके गुशारा जा सकता था ।

बरामदे से दूर रङ्ग-बिरंगे चीशों से काम २ घासमान में नीली बिजसी को कौप दिनाई द रही थी । परन्तु इसत उसका विल भयनीत नहीं हो रहा था ।

घोर हात ही घर्तमानोव धानन्द शान्ति, सुग घोर लगभग नीली धानों वाली इस शान्त स्वभाव की स्त्री की घपापिब मूर्ति को स्मृति का साधघामी के साथ सकर वही स बल पड़ा । उमन उसे एसा ही सुन्दर धायय दिया था । गाड़ी में बैठे रास्त के छाटे-छाटे पानी से भरे गड्डों को, वा बिना किसी भन्भाव क मूय की स्वणिमता घोर वापु से प्रताड़ित भादनों क मसिन घटकों को समान रूप से प्रतिसहित कर रहे थे प पार बरत हुए उसने सोच घोर ईर्ष्या में साधा—

‘देगी बुद्ध सोन ऐसा भी जीवन व्यतीत कर रहे हैं ?

पता नहीं किस कारण से उसने इस मनीन परिचय के घारे में घपनी पत्ना का नहीं बताया घोर घसकसई से भी धिगाब किया । इसा से उम एक प्रकार की स्वप्रता रही । बुद्ध सपनाहों के बाद एक बार घपने भाई क घर पहुँचन पर बठक में साधे पर

धाल्सा के बराबर बैठी पपोबा को उसन देखा । भाई ने उसे धागे धकेलत हुए कहा—

‘बिरा निकालायेन्ना ! यह मरा भाई है ।’

महिला ने मुस्करा कर अपना हाथ धागे बढ़ाया और कहा—

‘हम सो पहल से ही परिचित हैं ।’

‘यह कैसे ? —धसकसई धारणम में बोसा । ‘कव से ? तूने सो मुझे कमी बताया भी नहीं ।’

भाई क इस धात्र्य स प्योत्र बडे धसमज्जस में पड़ गया, और उसकी दाढ़ी के बाल बडे धजीब तरीक से हिलन लग । उसने अपने कानों को रगड़ कर उत्तर दिया—

मे—भुल गया था ।

धसकसई बढ़ी निसंज्जता से उसकी धोर उज्जसी से संकेठ करते हुए बोसा—

धो हो ! जरा देखो तो—यह मॅव कर कितना लाल हो गया है ? घेटा ! तुमने ठीक जबाब नहीं दिया ! हाँ क्या कमी ऐसा भी हो सकता है कि एसी महिला को देखकर भुसाया जा सके ? जरा देखना इसके कान कैसे हिस रह हैं !

पपोबा मुस्करा उठी सकिन उसकी मुस्कराहट में कोई कमूर नहीं था ।

उहोंने धोध क बड़े-बडे ग्सासों में बरफ के साथ मधु-पान धुक बिया जिस पपोबा धोन्ना के लिए मॅट में धाई था । यह धाहद तृणमणि की तरह सुनहरा था और जिह्वा पर एक प्रिय कुभन पैदा करता था । उस मधु का पान करत ही धर्तमानोब क मस्तिष्क में धनब धन्दे-धन्दे भाव उठने लगे । परन्तु उन्हें धग्दो म प्रगट करने का धवसर उसे नहीं मिस रहा था, क्योंकि उसका भाई सगातार अपनी ही कहता जा रहा था—

“वेरा निकोलायेव्ना ! आप अपनी चीजों को बेचने की जल्दी न करें । उन्हें किसी पारसी को ही देना जो धारमा की शांति की सहाय में हो । वह स्थान मानसिक शान्ति चाहने वालों के ही योग्य है । और हमारा भाई—आपको क्या देगा ? भूमि आपके पास है नहीं । फिर सक्की भी—उसमें धम्मी नहीं । और—वह सक्की भी सरगाशों के सहायता जिसे चाहिए ?”

प्यात्र बीच में बोस उठा—“बेचन की भी तो कोई जरूरत नहीं ।

‘क्या नहीं ?’ पपोवा ने विचारमग्नता से साहद की पुस्की सेते हुए पूछा और फिर एक सांस लेकर बोली—“बेचना ही पड़ेगा मुझे ।”

प्यात्र का घोस्ना की सावधान दृष्टि और संयत, रहस्यमय मुस्कराहट बड़ी अप्रिय लग रही था । वह तिग्रता से साहद-मान करता रहा और पपोवा को कोई जबाब न दे, चुप हो गया ।

दो दिन बाद मिस के दफ्तर में धमकसेई ने घोपणा की कि वह पपोवा के कर्नीधर का रहस्य रख कर उसे श्राण देना चाहता है ।

‘उसकी सम्पत्ति तो बहुत नहीं, परन्तु चीजें बहुत बड़ीया हैं ।’

“मत दो, प्योत्र ने हड़ मिश्रय से कहा ।

“क्यों नहीं ? मैं चीजों का दाम जानता हूँ ।”

“मैं कहता हूँ, मत दो ।”

परन्तु—“क्यों नहीं ?” धमकसेई और से पिस्माया ।—मैं किसी जानकार कीमत लगाने वाले के साथ बर्दा जाऊँगा ।

प्यात्र धम्वीदृष्टि में मिर हिसाठा रहा, वह चाहता था कि भाई को इस मोद त राह । परन्तु जब उसे कोई उचित

कारण न मिला, तो उसमें प्रश्नानक प्रस्ताव रखा—

प्रच्छा प्राये-प्राये में प्राधा तू और प्राधा मैं ।'

प्रसन्नर्षी जोर से हँसा और उसकी घोर देर तक देखकर बोला—

'कहीं सौदाई तो नहीं हो गए तुम ?

'बात यह है—भगर हो गया है तो वक्त घा गया है —
प्योत्र अर्त्तामानोष ने ऊँची प्राबाज में कहा ।

'तुम स्वयं प्रच्छी तरह विचार कर लो यह पार्टी प्रच्छी है । भाई ने उसे सचत किया । 'मैंने भी कोशिश की थी लेकिन वह—एक मछली है जो हाथ से हर बार फिसल जाती है ।

दो-सीम वार के मिसन के पश्चात् ही अर्त्तामानोष पपोवा के ही सपने देखने लगा । प्यों ही वह कल्पना करने लगता कि यह स्त्री उसके पार्श्व में बैठी है । त्यों ही उसके सामने एक ऐसे अद्भुत और प्राश्चर्यप्रकृत कर देने वाले सुखमय जीवन के कपाट खुल उठते जो उसकी प्राँसों को सौन्दर्य से तृप्त कर हृदय को प्राणन्दशायक प्राग्ति से भरपूर कर देता । एक ऐसा जीवन—जिसमें दर्जनों प्राससी प्रयोग्य और हमेसा क प्रसन्नपुष्ट और बोखने बिस्ताने, शिकायत करने झूठ बोलने और बोला देने वाले लोगों से सम्पर्क रखने की प्रावश्यकता न होती । इसके प्रासावा वह झूठी सुशामद करने वालों से न घिर पाता था । वे सुशामदी जितनी सुशामद और चापसूसी करते उतना ही वह कोषित हो जाया करता और उसका यह कोष उतना ही हृष्ठा करता जितना कि मुष्ट बिडेप भावना और धीरे धीरे बढ़ते हुए विद्रोह क हाने पर हो सकता था । सास-सास मकड़ी की तरह तेजी से जास फैलाती हुई मिस के जीवन से बहुत दूर के एक जीवन का चित्रा

झुन करना बहुत सरल था । उसने अपने स्वयं के बारे में कल्पना की कि वह एक ऐसा बड़ा बिसाव है जिसको अपनी मासकिन से सुरक्षित धान्ति प्यार और दुसार भी अपनी मिसती रहती है । वह भी इससे अधिक कुछ और की आकांक्षा नहीं करता—बिल्कुल भी नहीं ।

पहले कभी जिस प्रकार निकोनोव का सड़का उसके विचारों का एक अप्रिय और कटु केन्द्र बना हुआ था—उसकी जगह अब पापोवा एक चुम्बक परवर के रूप में आ गई जो केवल सुन्दर-सुसद विचारों को आकर्षित किया करती थी । उसने अपने भाई के साथ एक लगाए एक आसाक बूढ़ पुरुष को लेकर पापोवा की आयादाव देखने को जाने के लिए इस्कार कर दिया । वह व्यक्ति उसकी सम्पत्ति की कीमत लगाने के लिए साथ लिया गया था । परन्तु जब असक्सेई रहन का सब सौदा कर के सौदा तो प्यात्र ने उसके सामने प्रस्ताव रखा—

“इस रहन को मुझे बेच दो ।”

असक्सेई को एक अप्रिय आश्चर्य हुआ । उसने प्रश्नों की एक झड़ी-सी लगा दी—क्यों किसलिए—और अन्त में उसने घोषणा की—

“अच्छा सुन लो—यह रहन मेरे किस महसब का है । वह मेरा रुपया चुकाने में बिल्कुल असमर्थ रहेगी और इस तरह उसकी वस्तुएँ मेरे पास ही रहेंगी । उसकी सभी चीजें अमूल्य हैं समझे । यदि तुम अधिक दे सको तो कह दो ।

फिर दोनों के बीच सौदा तय हो गया । असक्सेई ने मुँह बनाकर कहा—

“तुम्हें यह सौदा सफस हो । सौदा—अच्छा है ।”

प्योत्र भी अनुभव करने लगा कि उसने एक अच्छा सौदा

क्रिया है—उसने अपने लिए एक सुक, शान्ति का आश्रय मंड में प्राप्त किया है ।

“तेरी पत्नी से तो इसका कोई विक्रम न करे ?” भाई ने धाल भारत हुए पूछा ।

‘यह तेरी अपनी मर्जी है ।’

भाई की तरफ सोजपूर्ण नजर से देखकर अलखसेई बोला—

‘घोस्वा का क्यास है कि तू पपीया से प्यार करने सया है ।’

‘और यह मरी अपनी मर्जी है ।’

‘देखो मुराओ नहीं ! हमारी जैसी आयु में सभी पुरुष ऐसी मड़बड़ क्रिया करते हैं ।

प्योप ने बड़े इन्तेपन से गुस्से में उत्तर दिया—

‘देख तू मुझसे छेड़वानी मतकर, मुझे अकेला छोड़ !’

छीघ्र ही यह अनुभव करन सगा कि घोस्वा उससे बहुत पुनमित कर बातें करने लगी है । परन्तु इससे एक प्रकार की अनुकम्पा का भाव प्रगट होता था जो उसे पसन्द नहीं था । एक दिन शरद की शाम को उसका भायन में बैठ उसने पूछा—

“तुम्हारे पति ने तुमसे पपीया के सम्बन्ध में तो कुछ निरर्थक बातें नहीं की ?’

घोस्वा ने उसकी ओर जोससता से देखकर उससे धालों धाल हाथ को धपना हल्की उझमियों से सपा किया और बोली—

“ये सब बातें मुझसे आय न सही जाएँगी ।”

“ठीक है, ये बातें अब आगे कही भी नहीं जाएँगी ।” अर्थात्माव ने अपने हाथ की मुट्टी बंध कर उस अपने पुन पर

मारते हुए कहा—“यह सब—मुझ तक ही सीमित रहेंगी। तुम्हें इन बातों को समझने की भी जरूरत नहीं। वस, तुम पपोवा से कुछ न कहना।”

अर्थात्मानोव का पपोवा के प्रति प्रेम वासनापूर्ण नहीं था। उसके स्वप्नों में वह एक ऐसी स्त्री के रूप में प्रगट न होती थी जिसे वह चाहता हो। वह तो उसे अपने शास्त्र, सुखी और सुख्यवस्थित जीवन के लिए परम आवश्यक समझता था। जब वह स्त्री छहर में घा गई तो वह अलक्सेई के घर जा कर प्रायः उससे मिसला और एक दिन वह अपने पर काबू न रख सका और प्रेम-प्रवाह में बह ही गया।

एक बार जब वह अलक्सेई के यहाँ पहुँचा तो उसने पपोवा को अपनी बाँहों ऊपर चढ़ाए बीमार घोस्मा के पसंग के पास खड़ा देखा। वह चिममची पर झुकी ठोसिए को भिगो रही थी। वह बार-बार झुकती और सीधी होती—उसका शारीरिक गठन अद्भुत और आकर्षक था। किछोरियों के से छोटे-छाटे उसके रतन उसको बरबस आकर्षित कर लेते थे। वह द्वार के बीच खड़ा उसकी मोरी-गोरी बाँहों सुष्टक पिण्डनियों और सुन्दर कटि-प्रदेश को अपसक दृष्टि से देखते-देखते यकायक ही वासना की तरंगों में बहकर अचेतावस्था में अनुभव करने लगा था कि पपोवा के हाथों ने उसके शरीर को आभिगन में कस लिया है। उसके अभिवादन के उत्तर में बड़ी कठिनता से उसने सिर झुकाया और कमरे में घुस कर बिड़की के पास बैठ गया। फिर उदास भाव से पूछने लगा—

“तुम्हें क्या हो गया है, घोस्मा। इस प्रकार बीमार होते रहना ठीक नहीं।”

यह पहला ही अवसर था जब एक स्त्री ने उसे इतनी प्रवसता और पराधिता से अभिभूत कर लिया था। वह किसी

क्रुद्ध भयभीत होकर एक प्रकार का अस्पष्ट भयानक संकेत अनुभव करने लगा । अपनी गाड़ी डाक्टर को साने को भेज कर वह स्वयं उसी समय पैदल ही घर की ओर चला पड़ा ।

यह फरवरी मास का अन्त था पिबलती हुई बर्फ़ घाने वाले बर्फ़ानी तूफान का भय पैदा कर रही थी । भूमि एक भूरे हल्के कुहरे से ढकी हुई थी । उस कुहरे के कारण आकाश अस्पष्ट था और प्रतीत होता था कि पृथ्वी और उसके बीच की दूरी कम हो गई है और वह अर्धमानाब के सिर के ऊपर एक उलटे कटोरे की तरह लटक रहा है । सीसी ठण्डी गर्द यहाँ-वहाँ से धीरे-धीरे उड़ कर उसकी मूँछ और दाढ़ी को अच्छी तरह धाँसा दिख कर साँस लेने में बाधाक हो रही थी । इस विरी हुई बर्फ़ को अपने सम्बन्धों से रोंद कर बढ़ता हुआ अर्धमानाब उस रात की तरह जब निकिता ने आत्म-हत्या करने का प्रयत्न किया था और उस दिन की तरह जब उसने पाबेल निकोनीव की हत्या की थी एक प्रकार की व्याकुलता—एक प्रकार की पराजय की भावना से एक कर चूर चूर हो उठा था । इन दोनों घटनाओं की दुःखद अनुभूति और दोनों की समानता उसे अति नाशिक स्पष्ट और भयप्रद होती जाती थी । उसे यह भी स्पष्ट था कि वह इस महिमा को अपनी रखैल नहीं बना पाएगा । उसने यह भी अनुभव किया था कि पपोबा के प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण एकदम सुप्त होता जा रहा है और उसकी वह प्रिय महिमा निम्न स्तर की स्त्रियों की श्रेणी में आकर साधारण होती जा रही है । पत्नी किस कहा जाता है, यह भी वह भलीभाँति जानता था और पत्नी के अनिश्चय एक रमैस किसी भी रूप में श्रेष्ठ सिद्ध हो सकेगी—ऐसा तो कोई कारण नहीं था । यद्यपि उसकी पत्नी की साधारण-सी कामुख चेष्टाएँ और अनिवार्य प्रेमा सिगन उसके हृदय में आसक्ति आग्रह करने में सर्वदा असफल

विद्य हुए थे ।

“तुम चाहते क्या हो ?” उसने अपने से ही प्रश्न किया ।
शारीरिक तृपणा की शान्ति ? तो इसके लिए तुम्हारे पास
तुम्हारी अपनी विवाहिता भी है ।

जब भी उसे इस प्रकार के क्षणों में किसी की धमकी का
सामना करना होता तो अर्धमानोव यथाशीघ्र ही उस खतरे
में छुटकारा पाने को आकुल हो उठता । वह उससे बचकर निक-
सना चाहता और चाहता कि वह पीछे मुड़कर भी उधर न
देखे । किसी सङ्कट का सामना करना उसे ऐसा प्रतीत होता
जैसे कि वह बसन्त की किसी अन्वकारमयी रात में भरमराती
हुई बर्फ के ऊपर सड़ा हो । उसने इसकी भीषणता को जवानी
के दिनों में अनुभव किया था और उसकी याद आज भी उसे
अच्छी तरह थी ।

कुछ दिन और बीत गए । इन दिनों वह अत्यधिक व्यग्र
और चिन्तित रहा । एक रात को उसे नींद ही न आई, किसी
प्रकार रात को बिताकर वह बहुत सुबह उठकर अगिन में आया
तो उसने तुम्हुर नामक अपने कुत्ते को रक्त से सराबोर पाया ।
उस घुँघसके में वह रक्त तारकोम जैसा काभा प्रतीत हो रहा
था । उसने झालों वाले कुत्ते की साँस को पाँव से हिसाकर देखा
तो उसका बफ के ऊपर झुला हुआ पंजा मुँह इधर उधर सरक
सा गया और उसकी बाहर को निकली आँसों उसके बूँते की
ठोकर की घोर देखने लगीं । अर्धमानोव देखकर सिहर उठा ।
उसने चौकीदार की कोठरी का छोटा-सा दरवाजा ठोकर से ठेस
कर सोला और बाहर ही लड़े-लड़े पूछने लगा—

‘कुत्ते की हत्या किसने की है ?’

अपनी पाँचों उङ्गलियों को पसारे तपतरी को घामकर चाय

पीठे हुए तिखोन ने उत्तर दिया— 'मैंने !'

'क्यों ?'

राहगीरों को यह फिर काटने लगा था ।

'आज इसने किसको काटा था ?'

'सेराफिम की सड़की जिनेदा को ।

व्योत्र एक क्षण मौन रहा और फिर कुछ सोचकर बोला
'यह एक दुखी करने वाली बात है ।

'मिसन्दह ! मैंने इसे उस समय से पाला-पोसा है जब यह एक छोटा पिछ्वा था । और आजकल तो इसने मुठ पर भी गुराना शुरू कर दिया था । सच तो यह है कि यदि भावमी को भी बखीर से बकड़ कर रखा जाय तो वह भी पागल हो जाएगा ।'

तुम ठीक ही कहते हो । इतना कहकर अर्तामानोव सावधानी से दरवाने को बन्द कर बाहर निकल आया और साधने लगा—

'यदाकदा तिखोन भी बुद्धिमानी की बात कहता है ।'

भांगन में पहुँचकर वह कुछ क्षण तक सड़ा मिम की ओर से घाम वाले गोर-गुस का सुनता रहा । दूर एक कान में—घस्त बल के निकट ही सेराफिम की कुटिया की सिड़की से पीले प्रकाश की एक किरण दिखलाई दे रहा थी । अर्तामानोव उस सिड़की के निकट पहुँच कर उसमें अन्दर झाँका । मेज पर एक लम्प जल रही थी और सिर्फ एक बोली पहने बठी जिनेदा सूई से कुछ सी रही थी । जब वह कमरे में अन्दर पहुँचा तो जिनेदा ने बिना सिर को ऊपर उठाए ही पूछा—

'तुम फिर क्यों सोट आए ?'

लेकिन जैसे ही उसन द्वार की धोर दृष्टि उठा कर देखा तो वह अपना काम छोड़ कर एकदम उधल पड़ी धोर मुस्कराते हुए बोली—

“उई माँ ! मैं तो समझी यादू हूँ ?”

‘सुना है तुम्हें तुमुन न बाटा है !’

‘हाँ, देखो न कैसा ?’ उसने बीग मारते हुए कुर्ती पर टाँग रखी, धोर अपने घाघरे को उठाते हुए कहा— ‘धरा देखो तो !

अर्धमानोव ने उस टाँग की धोर तनिक देखा जिस पर घुटनों के नीचे पट्टी बँधी हुई थी । फिर सड़की के निकट पहुँच कर भीमे से पूछा—

“धोर तुम इतनी सुबह उठकर प्राँगन में क्यों गई थीं ?”

वह भिन्नासा से उसकी तरफ देखने लगी धोर फिर बात का अर्थ समझ लेने के बाद स्वयं हँसने लगी । उसने सम्प को फूँक मारकर बुझा दिया धोर कहने लगी—

‘मुझे दरबाजा बन्द कर देना चाहिए ।

आध घण्टे बाद प्यात्र अर्धमानोव एक प्रसन्नतापूर्ण धकान के साथ धीरे-धीरे मिस की धोर चम पडा । वह अपने कानों को रगड़ता इधर-उधर धूकता धोर उस बुनकर की सड़की के निरलम्ब कुम्बनों धोर प्रेमालियनों की आश्रयजमक अनुभूति से रोमाञ्चित हो रहा था । वह मुस्करा रहा था धोर ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे कि वह किसी को आसानी से ठग कर चला पा रहा हो ।

मिस की सड़कियों के साथ वह दुराचार करने को ऐसा दूटा जैसे कि रीछ मधुमक्खियों के छत्ते पर दूटता है । उन सोंगों के बारे में जैसा उसने सुना था उनका जीवन उससे कहीं

अधिक छट था । पहले तो वह उनके छात्रों और उनकी भाव
 नाओं की आनन्ददायक नमनता का सुना प्रदर्शन देख कर एवं उनके
 व्यभिचारी जीवन और उनकी निरसज्जता को देखकर हतबुद्धि-सा
 रह गया । यह इस निमज्जता के ही कारण था कि उनका गीत
 स्वयं अपनी दुर्दशा पर खन करते थे । और वे साग—जिर्नदा
 और उसकी सहेलियाँ जिसे प्यार कहने से उसमें एक बटु
 तीक्ष्णता थी—दम का घाटने वाली कड़वाहट और मदिरा से भी
 अधिक मादकता थी ।

मिस के बलक मोग सेराफिम की बुटिया को 'जास' और
 जिर्नदा का 'पम्प' कह कर पुकारते हैं यह बात अर्थात्मानोव को
 मासूम थी । लेकिन सेराफिम उसे एक आघम घतभाषा करता
 था । वह बन्दी हुई तौमिया से ठके हुए सिधारे को कन्धे पर
 लटकाए अंगीठी क निकट बैठा अपने धूपरासे शर्मों के सिर को
 हिमाला लाल सेहरे का सिक्केछसा और धौल्लों का मटकाटा हुआ
 कहता, धरे साधुनिधो मौज करो मूज मौज करो ! प्योन इसिब
 क्या तुम्हें यह पता नहीं ! वे सब साधुनी तो हैं ही । इन्होंने
 मौज क शैतान के सामने छपस ही है और मैं इनका महन्त है
 हूँ, मुझे एक तरह का पुरोहित ही समझ ल स स स
 सा S । एक लवन वा और मौज भी !

इसके बाद वह पैसा लेकर अपने पाँवों में पैपी पट्टियों में
 रखता । फिर वह जोश के साम सिधारे क तारा को मकर के
 बीच मान सगता—

' बठ नरक में एक मृगार् ।
 माये बीठी तली बरफ ॥
 शैतानों ने उस मोली को ।
 टका कर डाला एड़ से ॥

तुम्हारे मराओं और हास्य-गीतों का कोई अन्त नहीं ।

मासिक शक्ति हो कहता । इस पर बुढ़ा भी मारता हुआ कहने लगता—

‘मे पत्नी हूँ—एक पत्नी । तुम कैसा ही गन्ध छूँट कर मुझे दो—मैं उसको गीत में बदल दूँगा । ऐसा हूँ मैं भादमी—एक पत्नी ।

एक बार वह बोला—

‘यह सब मुझे उल्लवर्ग के भद्र सागों—सरदारों ने ही सिखाया है । क्या सानदार सोग वे—जैसे कुतुबाब । और फिर एक सरदार यापुश्किन भी था । ओह ! कसा घराबी और कैसा चासक था । गरीबों का बहाना किए और कस्ये पर पैसा डाले ऐसे घूमता था जैसे देहासों में छोटी माटी चीजों की फेरी लगाने वाला हो । वह जा कुछ देखता या सुनता था—सब सिखाता जाता था । वह उन्हें लिखता रहा और फिर वह एक दिन, बार के पास जाकर बोला—

‘देखिए महाराज ! हमारे किसान क्या सोचते हैं ?’

‘बार ने वह सब सिखा हुआ पढ़ा उसे दिन से बड़ा दुःख हुआ और उसने किसानों का मुक्त करने की धाजा दे दी तथा साथ ही यापुश्किन की स्मृति में कामे की एक मूर्ति—ठीक मास्को के बीच खड़ी करने की भी धाजा निकाल दी । उसने यापुश्किन का हाथ तक न सगाया और उसे जोबित सुखवाला भेज दिया । सरकारी तर्ज पर उसे मनचाही रागब देने का भी हुकम दिया । क्योंकि तुम जानते हो यापुश्किन ने धामसोगों के रहस्यों को सिखा था और वे बार के खिलाफ हो गए । बार के लिए वह सब सिखाना फायदेमन्द सिद्ध हुआ इसीलिए उसको गुप्त ही रखना अच्छा था । सुखवास में यापुश्किन पीठ-पीते ही भर गया और सब सागों ने उसक सेवों को चुरा लिया ।

‘क्या झूठ बोल रहा है ?’ अर्धमानोव बोला ।

“सहकियों के असावा—मैंने कभी किसी से झूठ नहीं बोला । यह मेरा धन्धा नहीं,” बुड्ढा बोला । यह समझ सना बडा मुश्किल था कि वह मजाक करता है या मन्मीरता से कह रहा है ।

“झूठ वह आदमी बोलता है, जो सच्चाई जानता हो — वह बोला ‘घौर मैं झूठ नहीं बोल सकता क्योंकि मुझे सच्चाई का ही पता नहीं ?’ हाँ, आहो तो मैं—तुमसे सच-सच कहूँ । मैंने सरह-सरह क सच देखे हैं । लेकिन मरी कविता का टप्पा यह है—सत्य है खी, अच्छी जबतक तस्ली है ।

उसे सच का भसे ही पता न था परन्तु उसे उच्चवर्ग के सौम्यों के सौक, उनक दौर्मण्य, उनकी कठोरताएँ, मनबहुलाव और सम्पत्ति इत्यादि क अनगिनत किस्से याद थे । उनक बारे में वह सुना चुकने पर सदा खिन्न-भाव से कहता—

“भव वे सतम हो सिए । व जीवन-केन्द्र से हट गए, धर उन्हें अपना ही म पता ! तितर बिठर हो चुके हैं फिर चुक है वह कह कर उसने सिर पर उज्जमियों से एक घेर-सा बनाया और हाथ की नीचे कर बसा ही एक घेर फर्त पर चित्रित किया ।

“क्या बूब ! उन्होंने क्या-क्या ऐश किए हैं ! वह आँख मारता हुआ भाग कहता गया और फिर गाने लगा—

‘कमी रहते थे नवाब-सरदार ।
बिसासी, साते रहे गो-मांस ॥
जब तक खतम हुआ परिवार ।
ही पुरखों की जायदाद बिगाड़ ॥”

खेरफिम आमुमो चुईसों किसानों क बिद्राहों दीर्मण्यपूर्ण

प्रेम रात को दुःखी बिचबाघों के पास जाने वाले अग्निमुख सर्पों कावि की नाना प्रकार की कहानियाँ सुनाता और वह ये कहानियाँ इतनी दिलचस्पी से सुनाता कि उसकी प्रसंयत, भ्रष्ट सबकी भी बच्चों की तरह बौतूहन से उनको सुनती रहती ।

अर्तामानोब ने जिनैवा में इन्द्रिय सोसुपता तथा स्वार्थ-सिद्धि की दक्षता का एक अजीब मेस पाया था जिसे दस कर उसे प्रसन्न उत्पन्न हुई थी । पावेल निकोगोब की जो कसकू सगाने की बात थी वह भविष्यवाणी ही सिद्ध हुई ।

“मैंने इसे ही क्यों चुना है ? उसने मन-ही-मन सोचा । ‘और भी तो बहुत-सी सुन्दर सबकियाँ हैं । अब इत्या का इसके इसके बारे में पता सगेगा तो मैं कितना अच्छा सगूँगा ।’

वह जानता था कि जिनवा और उसकी सहेलियाँ अपने इन शौकों को किसी अनिर्धार्य कर्तव्यों की तरह प्राप्त करत हैं । कभी-कभी वह सोचता था कि वे अपनी इस निर्मग्नता से दूसरों का ही नहीं, अपितु स्वयं को भी धोखा देती है । जिनैवा का पैसे का सामन और उसकी बक्त-बे-बक्त माँ के कारण वह उससे दूर रहने लगा । सेराफिम की अपेक्षा जिनवा में यह बात बहुत प्रसन्न थी । वह भगभग अपना सारा पैसा मीठी टनेरिफ मुरम्बे मीठी रोटी और सहस्रन मिसी चटनियों पर खर्च करता था जो उसे बहुत पसन्द थीं । मीठी टनेरिफ को न जाने किस कारण वह ‘भूली की घराब’ बतसाया करता था ।

अर्तामानोब को यह प्रसन्नचित्त मनोरञ्जक बुद्धा बहुत पसंद आया था । वह अपने काम में बहुत कुशल ही नहीं वरन् दूसरों से मेस-मिसाप करना भी अच्छी तरह जानता था । अर्तामानोब को पता था कि इस बुद्धे को सब लोग चाहते हैं । मिस में लोय उसे ‘सान्बना देने बासा’ के नाम से पुकारते थे और व्योत्र यह भी जानता था कि इस नाम में परिहास की अपेक्षा सच्चाई

घषिक है और इस परिहास में भी प्रेम की ही भूमक स्पष्ट होती है ।

फिर भी न जान क्यों मराफिम की तिलान क साथ मित्रता उसे बड़ी अप्रिय लगती थी । उस ऐसा दिखलाई दता कि तिलोन भी जानबूझ कर अपन प्रति मासिक की घृणा को गहरा बनाता जाता है । अर्थात्मानोब क यहाँ नौबरी करते हुए उसन बीसबां सास पुरा किया था । इसी स नतास्या ने फंससा किया था कि इस दिन के उपसदा में उत्सव मना कर उसके नाम का चिरस्मरणीय बनाया जाय ।

‘जरा साधो ठा, यह कैसा बिरला घादमी है ! —नतास्या पति स बोली । “इन बीच सासों में हमने उसमें काइ बुराई नहीं देखी, उससे कोई सक्तीफ नहीं हुई । एक अच्छी मामबसी की तरह यह चुपचाप उज्जतापूवक जसता हुआ हमारी सबा कर रहा है ।

दरबान का बिधाय रूप स सम्मानित करने के लिए उप हार सेकर स्वयं प्योन ही उसक पास गया । दरबान क घर में सराफिम स्पौहार के कपड़ो म सजा-भजा बैठा था । तिलोन उसक पीछे सिर झुकाए खड़ा था और मासिक क पाँवा की धार देख रहा था ।

“दलो मेरा धार स—तुम्हारे लिए—यह बड़ी है ! पत्नी की धार स यह कपड़ा है और साथ म य कुछ स्वस भी है ।

“कबल—य तो बेकार है,—तिलोन ने अस्पष्ट स्वर में कहा । एक पल रुक कर वह फिर बोला— इन सब के लिए मैं अल्पवाद देता हूँ ।”

फिर उसने मासिक का टेनरिफ्ट मदिरा के पान क लिए धामन्वित किया बिसे सराफिम साया था । इस पर उस छोटे-छे

बढ़ई ने अपनी बकवास शुरू कर दी—

प्यात्र इत्यत्र । तुम हमारी कौमल जानते हो और हम तुम्हारी जानते हैं । रीख को बहद पसन्द है तो मुहार अपने लोहे को ही चाहता है । वे धनी लोग हमारे लिए रीख से और तुम हमारे लिए सोहार हो । हम देखते रहे हैं कि तुम्हारा काम कितना बड़ा और कितना कठिन है ।

ब्यासोव ने चाँदी की उस चढ़ी को चङ्कसियों में दबाए और उसकी घोर देखते हुए ही कहा—

कारोबार—मनुष्य के लिए एक रेसिंग की तरह है जिसे पकड़े हुए ही गडबड़े के चारों घोर किनारे किनारे हम घूम रहे हैं ।'

'बिस्कुम ठीक ! —सरोकिम एकदम खुश होकर चिल्लाया—
'बिस्कुम ठीक कहता है ! नहीं तो हम साग गिर ही जाते !'

तुम लोग फिरोज की बातें कर रहे हो ' अर्थात्मासोव बोला, 'तुम्हें कारोबार के बारे में क्या पता है, तुम्हें इस विषय में बात करन की आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम व्यवसायी नहीं और तुम इन बातों को समझ भी नहीं सकते !'

यद्यपि तिस्नोन के घबड़ों से वह एकदम नाराज हो गया था, परन्तु उसे अपने भावों को प्रगट करने के लिए काफी जोरदार शब्द न मिस सके थे । यह पहली बार ही नहीं था कि तिस्नोन ने अपने अस्पष्ट और आग्रहपूर्ण भावों को ऐसे घबड़ों के पहुरावे में कहा था कि जिससे भासिक नाराज हा गया । प्यात्र ने दरबान के खूब तन से चुपड़े पत्थर उस सिर को दसा और कानों को लुझाये हुए अधिका कठोर शब्दों से उसके इन भावों को कुचस देने के लिए शब्द सोजने लगा ।

'कारोबार भी नि सन्देह तरह-तरह के होते हैं " सेराकिम ने सात्वमा देते हुए कहा "बुरे भी हैं और अच्छे भी ।

“अच्छे-से अच्छा तेज चाहू भी तुम्हारे गले पर बेकार है”
तितान बुदबुनाया।

मासिक को इच्छा थी कि वह उसे खूब गालियाँ मुनाए।
चूँकि आज उसे सम्मानित किया गया था इसी से अपने भावों
का मुद्रिकन से छिपाते हुए उसने कठोरता न पूछा—

“यह क्या बात है कि तू हमेशा श्री काराबाग के बारे में
कुछ-न-कुछ अजबसूल बकवास करता रहता है? जिस समझना
कठिन है।

तितान न मज के नीचे गलत हुए स्वीकार किए।
इन्हें समझना कठिन है।

बढ़ई न फिर कहना शुरू किया—

“प्योत्र इत्यथ! यह तो कवन एम ही कामों को काम
समझता है या हानिकारक नहीं।

‘सराफिम! जग ठहरा इस स्वयं बहने दो।

तितान इस पर भी बिचलित न हुआ। उसने अपने सिर
का मुका कर हथेली जितने गज का दिवान हुए एक टही चाह
भर कर कहा— यतान न जा कुछ भी आदम-पुत्र का मित्रा दिया
कहीं व्यवसाय है।

मुनो यह क्या कहता है? सराफिम न अपनी हथेली
का घुटनों पर मारते हुए कहा।

अर्थात्मानोब एकदम खड़ा हो गया। उसने गुम्स में दरवान
का सत्ताह दी—

‘जो बात सरी समझ न नहीं आए उसके बारे में कुछ
भी कहना ठीक नहीं समझे।

वह दरवान क घर से बड़ी नाराजगी के साथ यह साधता

हुआ कि इसका हिसाब चुकता कर छुट्टी दे देनी चाहिए, बाहर निकल आया—कल ही उसे नौकरी से घसग कर देगा। मच्छा, कल नहीं तो एक हफ्ते के बाद सही। जब यह इस्तर पहुँचा तो नपोबा उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। उसने बड़ी दयाई से उसका अभिवादन किया जैसे कि वह कोई अपरिचित ही घोर स्टूल पर बैठे हुए वह छतरी से पर्दा का ठक-ठकाती रही। वह अपने रहन-सामे के मूद के बाद में बिल करके मगो कि यह उसे तुरन्त चुकान में असमय है।

“यह कोई बात नहीं प्योत्र धीरे से वासा घोर उसकी तरफ देखे बिना ही उसके घम्बों को सुनता रहा।

“यदि आप मिमाद बढ़ान के लिए रजामन्द नहीं, तो आपको इन्कार करने का अधिकार है।

वह बड़ी नाराजगी से यह कहकर फम पर छतरी से चोट कर एकदम इतनी जल्दी से बाहर चली गई कि जब वह अपने पीछे दरवाजा बन्द कर रही थी तभी प्योत्र उसकी तरफ देख सका।

‘नाराज है, —घर्षामानोब ने सोचा— ‘पता नहीं, क्यों?’

घण्ट मर बाद घोम्गा के यहाँ बैठे हुए घपनी टोपी को सोफे से मार कर यह बोला—

‘तुम उसे जता दो—मुझे उसके मूद की बरूण नहीं। मुझे उसके पैसों की जरूरत नहीं? उसे इस बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए, समझीं।

घपनी खमकीली रेहमी धाये को गुच्छियों और मनकों के बक्सों पर मुड़ी हुई धात्ना बिचारपूर्वक बोली—

“मैं तो यह समझती हूँ परन्तु वह बड़ी मुदिकल से

समझी ।

तो, तुम ऐसा करो कि वह समझ जाय । तुम्हारे समझ देने से मेरा क्या बनता है ?

बन्यबाद " घोस्मा ऐनक के पीछे से धालें बमकाती हुई बोसी । उसके पीछे जब परिहास से व्योम नाराज हो गया ।

तुम मझीस मत करो । वह दस्ताई स बोसा— 'मैं उसके बपीचे में सूझर नहीं चुगाना चाहता मैं यह बिस्तुकल नहीं चाहता; तुम ऐसा मत सोचो ।

'घोह ! तुम लोग —घोस्मा ने घ्राह भरते हुए अपने बिकने-भुपटे सिर को हिला कर संदेह से कहा ।
व्योम बिल्लाया—

"तुम सब मानो ! मैं जानता हूँ मैं क्या कह रहा हूँ ।"
घ्राह सबमुच जानते हो क्या ?"

बह सहानुभूति में घ्राहें भरती रही और अर्थात्मानोव सुनता रहा । वह देख रहा था कि उसकी धालें अनुकम्पा से उसे निहार रही हैं । परन्तु व्योम इससे भी बिड़ गया । वह लिङ्गकी के पास बिगोनिया के सुन्दर फूलों और उनक मोटे-मोटे पत्तों की ओर निहारता रहा, जो जानवरों के जान की तरह दिखाई दे रहे थे । वह उससे बिश्वासपूर्ण और अन्तिम बात साफ-साफ जमा चाहता था परन्तु उस दृष्ट ही न मिस रह से । अन्त में ह बोसा—

"मुझे उसके घर के लिए अफ़जोस है । वह एक सुन्दर जगह है जहाँ वह पैदा हुई थी ।

"पैदा तो वह याजनि में हुई थी ।"

"लेर, वह यहाँ की घादी तो हो चुकी है । इसमें फर्क

क्या है ? उस घर में मेरी आत्मा पहली बार शान्ति के साथ सोई थी ।’

‘तुम्हारा मतसब है—आगी थी धोला ने कहा ।

“आत्मा के लिए यह एक ही बात है—चाहे जाये, चाहे सोए ।

वह देर तक बातचीत करता रहा जिसका मतसब स्वयं उसकी समझ में नहीं आ रहा था । मेज पर बोहनी टेके धोला देर तक उसकी बातें सुनती रही और फिर बोली—

‘अब तुम जरा मेरी बात सुनो !’

उसने प्योत्र को बताया कि मतात्या उस बुनकर की सबकी के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में जानती है । इससे वह बड़ी नाराज है, रोती है और शिकायत करती है । परन्तु, अर्धमानोस पर इसका कुछ असर न हुआ ।

बड़ी आसक्ति है —प्योत्र ने एक मन्द मुस्कान के साथ सोचा । “एक बात से भी उसने पता न हाने दिया कि वह यह सब जानती है । वह तुमसे शिकायत करती है ? है और वह तुम्हें बिल्कुल भी नहीं चाहती ।

कुछ सोच कर वह फिर बोला—

जिमवा को लोग ‘पम्प’ कहते हैं, यह—ठीक है ! उसने मुझमें से सब अस्वीनता बाहर निकाल दी है ।’

‘अस्वीन बात क्यों कर रहे हो —धोला ने उसे झिड़का और वह फिर घाहें भरते हुए बोली—‘तुम्हें याद है तुम अपनी आत्मा की एक वस्त्र के समान समझते हो । तुम मानो—यह बात ऐसी ही है । तुम अपने आप से ऐसे डरते हो जैसे कि तुम स्वयं अपने दुश्मन हो ।

यह बुनकर प्योत्र नाराज हो गया ।

'तुम मेरे साथ बहुत बढ़ बढ़ कर बात करनी हो क्या मैं बच्चा हूँ या तुम ऐसा सोचती हो। तुमने यह ऐसे क्यों साधा। देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि मरी आत्मा साफ है और मुझे किसी और से कुछ नहीं कहना। एसी ही बात है। नतास्या के साथ कोई बात नहीं हो सकती। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उसकी लूय पिटाई करूँ। और तुम चाह तुम खिया।'

उसने टापी पहनी और गुँथ निपट पागन की तरह चुपचाप अपनी पत्नी के बारे में सोचता हुआ बाहर निकल गया। बहुत दिनों से उसने पत्नी के बारे में कुछ साधा नहीं था—और घर में भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था यद्यपि वह नित्य रात को परमात्मा की प्रार्थना करके अपने सहज स्वभाव और प्रेम से उसका साथ सा जाती थी।

'वह सब जानते हुए भी साथ सोती है उसने बड़े गुस्से में साधा—'भूषरिया बड़ी थी।'

पत्नी का जानी-बूझी पगडण्डी थी जिस पर प्यात्र बिना देखे भासे बिना किसी दुर्घटना के जा सकता था। उसका बारे में सोचने की कोई इच्छा नहीं थी। उसे याद आया कि उसकी सास का सारा सूखे शरीर और बेहतर के साथ चारामकुर्सी में बैठती धीरे-धीरे मृत्यु की धार जा रही है अब उसकी ओर बढ़ी अनिच्छा से दलती है। उसकी आँखें जो कभी बड़ी मुन्दर थीं आज वे ज्योतिहीन हो गई हैं उनमें कीचड़ भर रहते हैं और वे समझ हो उसकी धार निहारती हैं। उसके विकृत शोड तो हिसते परन्तु वह कृष्ण कहने में असमर्थ थी। उसकी जीभ हिसती, परन्तु मुँह से बासने में अशक्त हो जाती और उसे अपने जालें हाथ से मुँह से आधी निकली उस विज्ञा को अपने मुँह में धकेलने की वाञ्छित करमा पड़ती थी।

'वह—अनुभव कर रही है। मुझे उस पर क्या आती है।

और आश्चर्य होता था कि कभी वह इसी गम्भीर सूट-घाती गौरवपूर्ण नवयुवक के घुंघराले बालों को पकड़कर उन्हें हिमाया था। जहाँ तक याकोव का प्रश्न है वह बड़ा अक्षर हो गया था, लेकिन वह पहल की तरह ही गोल-गोल और लोंद वाला था, और उसका चेहरा यज्ञों का-सा और प्राँव पहले की तरह ही निर्मल था।

इत्या ! तुम अब बड़े हो गए हो ? बाप ने कहा—“अब काम की वेस मास करो। दो चार बरस में तुम सब कुछ सम्भाल जागे।”

सिगरेट के एक छोर से लकड़ी के बने सिगरेट-केस से खसते हुए और बाप के चेहरे की ओर देखता हुआ इत्या बोला—

“नहीं मैं अभी और पढ़ूँगा।”

“कब तक ?

चार-पाँच बरस तक।

और क्या पढ़ेगा ?

‘इतिहास।’

उसका बेटा सिगरेट पीने लगा है यह देखकर अर्जामानोव को बुरा लगा। इसके असावा उसका सिगरेट-केस भी पटिया किस्म का था। वह उससे अच्छा बेस खरीद सकता था। सबसे अधिक भली न सगन वाली इत्या की बात तो यह थी कि उसने जागे और पढ़ने की इच्छा व्यक्त की और यह भी कि उसने पर जाने पर तुरन्त ही यह बात कह दी थी।

कारखाने की छत के पास की लिटकी की ओर इशारा करते हुए—जहाँ एक पतली चिमनी से हल्की-हल्की भाप निकल रही

वी धीर वीच में धम का कोलाहल हा रहा था, वह बड़े गौरव से धीमे से बासा—

“वह देखो तुम्हारे लिए इतिहास जो उबल उबल कर आ रहा है ! तुम्हें इसे ही सीखना चाहिए । हमें कपड़े का बुनना सीखना है और इतिहास—हमारा धन्दा नहीं । मुझे पचास साल हो रहे हैं समय आ गया है कि तुम मुझे छुट्टी दो ।

‘मिरोन और याकोव प्रायकी जगह लेंगे । मिरोन हस्ति नियर होने आ रहा है ’ इत्या ने उत्तर दिया । उसने अपनी सिगरेट की राख सिड़की से हाथ बाहर निकाल करके भिड़ी । पिछान जाताया—

“मिरोन मेरा भतीजा है घेटा नहीं ! खर, इस बारे में हम फिर बात करेंगे ।’

सबके सबे हुए और बाहर चले गए । बाप धाड़धपीम्बित हो आहत दृष्टि में उनका पीछा करता रहा क्या मामला है— वे मुझसे कोई बात नहीं करना चाहते ? दोना बैठकर पाँच-सात मिनट बात कर सकते थे । एक तो मूर्खतापूर्ण बातें करना था और दूसरा कमरे में जम्हाई लेता रहा तम्बाकू का धूँआ भरता रहा और प्रारम्भ में ही उसने परेषान कर दिया । वे धमी प्रागत में ही पहुँचे थे । इत्या को आवाप्र साक मुनाई दे रही थी—

घाघो, नदी किनारे घूमकर वहाँ का दृश्य देख ?

“नहीं मैं पक गया हूँ ।

‘ठीक, नदी पर हम काम भी जा सकते हैं, वह सूख तो जाएगी नहीं । नानी के मरने से माँ बड़ी दुःखी है और धन्पटि की तीव्यारियों से पक चुकी है ।’

‘धप्रियता से सुरन्त मुकाबला कर उससे बचने के पुराने धम्पास के कारण प्योब अर्तामानोव ने बेटे को एक सप्ताह का

घबसर दिया। इस काम में उसने देखा कि वह मजदूरों के साथ तुम कहेके बात करता है और सभ्या समय तिखोम और सेराफिम के साथ बैठकर गप-शप भी सड़ाता रहता है। उसने सिङ्की के पास से तिखोम की निर्जीब ध्वनि को भी सुना। वह अपनी भूलताओं की ऋणी सगाए रहता था—

‘ओ यह ऐसी बात है। गरीबों का क्या जीवन है—कुछ नहीं। ठीक है इत्या पेनोविच। यदि लोग सोम करना छोड़ दें तो सब को सब चीजें मिल भी सकती हैं।

और सेराफीम भी प्रसन्नतापूर्वक बोला—

‘हाँ मैं यह सब जानता हूँ। मैं यह बातें बहुत दिनों से सुनता था रहा हूँ।

याकाब जब अधिक बिचारशीलता से व्यवहार करता था। वह मिस की इमारतों में इधर-उधर चक्कर काटता। मिस की सड़कियों की घोर नजरें मारता और घोपहर के भोजन के समय जब क्षिया नदी पर नहा रही होती तो वह झुंझसा की छत से उनकी तरफ निहारता।

‘विल्कुल आभाव बढ़ड़ा है। बाप ने निराशापूर्वक सोचा। “मुझे सेराफिम का इस पर नजर रखने को कहना पड़ेगा। कहीं इस भी जवानो का बहर न चढ़ जाए।

मंगलवार का वह दिन बड़ा गीसा भूँसला और घान्त था। बड़ी सुबह से ही घण्टे भर से हल्की हल्की बूँदें असस गति से पड़ रही थीं। और मध्याह्न में मूस में बड़ी घमिच्छा से मिल और दोनों नदियों के संगम की घोर नजर मारी और पुन कामस नील बादलों से अपने को ढक लिया जैसे कि मतास्या अपने गुलाबी गालों को फले-बोमस तकिए में रात के समय छिपा लिया करती थी।

सभ्या की शाम के समय घर्तमानोव ने याकोब से पूछा—

"सुम्हाग भाई कहाँ है ?"

'मुझे नहीं पता । सामने की पहाड़ी पर एक खीड़ के पेड़ के नीचे कुछ समय हुआ वह बैठा था ।'

बापों उसे बुला बापों । नहीं—उहरो, कोई जहरत नहीं । तुम बानों भापस में मिल-जुसकर रहते हो या नहीं ?'

उसे प्रतीत हुआ कि उसका छोटा लड़का कहने से पूर्व कुछ हँसा था—

"ठीक है हम मिसकर रहते हैं ।"

'देखो ठीक-ठीक बताना ? क्या ऐसी ही बात है ?'

याकोब की नजर गिर गई और वह कहने लगा—

"विचारों में—तुम एक दूसरे से सहमत नहीं ।"

"किन विचारों में ?"

'सगमग सब बातों में ।'

"और, किन किन बातों में मतभेद है ?"

"वह हमेशा किताबों के पीछे रहता है और मैं—सीधा-

साधा बुद्धि से जैसा बखता है ।'

"यह बात है"—बाप ने कहा । उसे बेटे से और अधिक

पूछने का साहस नहीं हो रहा था । उसने अपना बरसाती कोट

पहना और भलकसेई की मेंट की हुई छड़ी—जिसकी मुठ में चाँदी

के एक पक्षी के पंखों में बिस्तोरी पत्थर की गेंद थी हाथ में ली

और फाटक के बाहर रुक कर उसने हथेली से माँखों पर छाँह

की और मही के पास पहाड़ी की ओर देखा—वहाँ पेड़ के नीचे

सके कमोज पहने इत्या सेट कर पढ़ रहा था ।

धारा रेत भीगी हुई है । कहीं उसे बुझान न हो जाय ।

वह बड़ा सापरवाह है ।

घबसर दिया। इस काम में उसने देखा कि वह मजदूरों के साथ, 'तुम बहके बात करता है और संध्या समय तिस्रोन और सेराफिम के साथ बैठकर गप-शप भी लड़ाता रहता है। उसने छिड़की के पास से तिस्रोन की निर्जीव ध्वनि का भी सुना। वह अपनी मूर्खताओं की भङ्गी भगाए रहता था—

“सो यह ऐसी बात है। गरीबों का क्या जीवन है—कुछ नहीं। ठीक है इन्सा पेनाबिच! यदि भोग खोब करना छोड़ दे तो सब को सब चीजें मिल भी सकती हैं।”

और सेराफिम भी प्रसन्नतापूर्वक बोला—

हाँ मैं यह सब जानता हूँ। मैं यह बातें बहुत दिनों से समता था रहा हूँ।

याकोब अब अधिक विचारशीलता से व्यवहार करता था। वह मिस की इमारतों में इधर-उधर चक्कर काटता। मिस की सड़कियों की धार नहरें मारता और दोपहर के भोजन के समय, जब कियो नदी पर नहा रही होतीं तो वह पुइसान की छत से उनकी तरफ निहारता।

‘बिल्कुल धाजाय बछड़ा है बाप ने निराशापूर्वक सोचा। ‘मुझे सेराफिम को इस पर नजर रखने को कहना पड़ेगा। कहीं इसे भी जबानी का जहर न चढ़ जाए।

मंगलवारका वह दिन बड़ा गीला धुंधला और घास था। बड़ी सुबह से ही घण्टे मग से हल्की हल्की धुँद, भ्रमस मति से पड़ रही थी। और मध्याह्न में सूर्य ने बड़ी धनिभ्या से मिल और दोनों नदियों के संगम की धार नजर मारी और पुन कोमल नीसे बादलों से अपने को ढक लिया जैसे कि मतास्या अपने गुलाबी गालों को फले-कोमल तकिए में राठ के समय छिपा लिया करती थी।

संध्या की जाप के समय धर्तमानोब ने याकोब से पूछा—

“तुम्हारा भाई कहाँ है ?”

‘मुझे नहीं पता । सामने का पहाड़ी पर एक पीड़ के पेड़ के नीचे कुछ समय हुआ वह बैठा था ।

‘बापों उस बुला साधो । नहीं—ठहरो कोई ज़रूरत नहीं । तुम दोनों आपस में मिस-मिसकर रहते हो या नहीं ?

उसे प्रतीत हुआ कि उसका छोटा सड़का कहन स पूर्व कुछ हँसा था—

‘ठीक है, हम मिलकर रहते हैं ।

‘देखो ठीक-ठीक बताना ? क्या एसी ही बात है ?

याकोव की नजर गिर गई और वह कहने लगा—

“विचारों में—हम एक दूसरे से सहमत नहीं ।

किन विचारों में ?

‘सबभग सब बातों में ।

‘और, किन किन बातों में मतभेद है ?

वह हमें किताबों क पीछे रहता है और मैं—सीधा सादा, बुद्धि से बँसा दलता हूँ ।”

यह बात है —बाप ने कहा । उसे बटे से और अधिक पूछने का साहस नहीं हा रहा था । उसने अपना भरसाती फाट पहना और धसकसेई की भेंट दी हुई छोड़ो—जिसकी मूठ में चाँदी के एक पक्षी के पखों में बिस्सोरी परपर की गैर थी हाय में सी और फाटक क बाहर दक कर उसने हपेसी से माँलों पर छोड़ की और नबी क पास पहाड़ी की ओर दला —जहाँ पेड़ के नीचे सफेद कमाज पहने इत्या सेट कर पड़ रहा था ।

माज रेत भीगी हुई है । कहीं उसे जुकाम न हा जाय । वह बड़ा सापरवाह है ।

घातों ही से हम लोग नहीं जीत सकते ।”

ज्येष्ठ अर्धमानोव छड़ी पर झुक कर बड़ा हो गया, बेटे ने उसे उठने में मदद नहीं की ।

‘इसका मतलब यह हुआ कि मैं सब और ठीक नहीं कह रहा ?’

“नहीं इसके विपरीत भी सत्य है ।

‘झूठ है । दूसरा कोई—सत्य नहीं है ।’ और पिता छड़ी को मिला की ओर हिंसाते हुए बोला—

‘वक्तो सत्य वह है । तुम्हारे दादा ने इसे शुरू किया मैंने इसमें सारा जीवन लगाया और अब—तुम्हारी बारी है । बस—यही सब कुछ है । तू कैसा है ? हमने मेहनत की—और तू मुझ छरें उड़ाना चाहता है ? दूसरों की मेहनत पर संत साधुओं की तरह रहना चाहता है ? खूब सोचा ! इतिहास ! इतिहास पर भूक । इतिहास—कोई भड़की नहीं जिसस शादी कर लेया । और यह इतिहास क्या मूर्खता है ? इसका क्या नाम ? मैं तुम्हें भाससी नहीं बनने पूंगा ।”

यह अनुभव कर कि वह माहक नाराज हो रहा है, ज्येष्ठ अर्धमानोव ने अपने शब्दों में कुछ कोमलता की पुट देनी शुरू की—

‘मैं समझता हूँ, तू मास्को में रहना चाहता है, वहाँ प्रामोद प्रमोद के साधन हैं । और असर्सेई भी ता ।’

इस्या न कितना उठा सी और उसके कबर से रेत भड़क कर बोला—

‘मुझे प्रयति करने की आज्ञा दीजिए ।

‘कोई आज्ञा नहीं दे सकता । पिता ने रेत में छड़ी मार कर कहा—“इन घातों के लिए मुझ स मत कहो ।’

“धौर, धमी यह पूछेगा कि कौन सा धादमी ? उसने सोचा धौर नीचे से पहाड़ी से नीचे की धौर उतरने लगा । परस्तु, वेटा गया फाइकर जोर से उसके पीछे धिझाया—

‘एक को ही नहीं मारा देखो यहाँ कश्मिरान में, कारखाने के किसने धादमी मरे पड़े हैं ।’

धर्तमानोव रुका धौर मुड़ा तो इन्मा ने हाथ उठाकर किताब से नीचे धासमान की तरफ कास लगी कर्षों की धौर इशारा किया । धाप के पाँवों के नीचे रेत धर धर की धावाय कर रही थी । धर्तमानोव को याद धाया कि धम्ह मिनट पहले ही उसने कारखाने धौर कश्मिरान के धारे म धपमानजनक धार्ते सुनी थीं । उसन धपनी जवान स कही गई फिझूल धाल को धिपाने धौर उस बेटे की स्मृति स हटाने की कोशिश की धौर रीस की तरह भारी भरकम धाल से उसकी धौर चलकर छड़ी का हिसाते धौर उसे धराते हुए धर्तमानोव धिझाया—

क्या कहा ? नीच कही का ।

इत्या एकदम दौड़कर पेड़ के पीछे धिप गया ।

ठहरो ! धाप क्या कर रहे हैं ?

धाप ने पेड़ के तन पर छड़ी मारी जिससे बेटे के पाँव के पास कर्पता हुआ धाल का एक ठुकड़ा रेत में धिरा, जिसका धरा भाग उसकी तरफ मुड़ा हुआ था । वह धड़े गुस्से में धमकाठा हुआ बोला—

‘मैं तुम्हसे दृष्टियाँ साफ करवाऊँगा !’

फिर वह बड़ी तेजी से सड़कधाता हुआ पहाड़ी से सगभग फिसलता-सा नीचे की धौर उतरने लगा । उसका धिर भारी हो गया था धौर ताने-धामे म रथ दृष्टि की तरह धिपाद धौर शोध में चहुँकर लाठा वह धसंगठ धार्ते बकने लगा ।

इन कतिपय मिनटों से ही उसके हृदय से निकल कर दूर हट गया है और उसके हृदय में एक क्रोधपूर्ण विषाद खोड गया है। अर्त्तमानोव को विश्वास था कि इन बीस सालों में उसने प्रति दिन में अघिराम रूप से केवल मात्र अपन पुत्र की ही धिन्ता की थी, वह उस पर भगाई आघातों और प्रेम के ऊपर बीवित रह रहा था। उसने इस्त्रा से बड़ी-बड़ी आघातों की थीं।

और अब वह दियासलाई की तरह भड़क उठा, और यहाँ नहीं रहा। यह क्या है? यह क्यों हुआ?

नीसे आसमान में एक मन्द प्रकाश दिखाई दिया जो एक स्थान पर पुराने कपड़े पर बिकनाहट के धब्बे के समान प्रकट हुआ। फिर अदिका का क्षणित टुकड़ा दिखाई दिया। वायु मच्छल साजा और मम था और नदी पर एक हस्का धुभ उठ रहा था।

अर्त्तमानोव पर बापिस आया तो उसकी पत्नी कपड़े उतारे बैठी थी। अपनी गोम मोटी नाई जाँघ को सीधे पाँव के छुटने पर रखे वह झँपूटे का नाखून काट रही थी। पति की ओर देखकर उसने पूछा—

‘इस्त्रा को सुमने कहाँ भेज दिया?’

‘खेतान के पास’—उसने कपड़े उतारते हुए कहा।

‘तुम हर समय मुझे मं भरे रहते हो,’ नतास्त्रा ने शीर्ष झाँस मरी। पति जोर-जोर से साँस लेकर जानबूझ कर कपड़े उतारने में शोर कर रहा था। बूँदें खिड़कियों के छीसों पर पड़ रही थीं और बगीचे में आदर सरसराहट और टपटप आवाज आ रही थी।

‘इस्त्रा को अपनी पढ़ाई का धमक हो गया है।’

‘हाँ, क्योंकि उसकी माँ इतनी मूर्ख है।’ माँ ने नाक

मैं इसे यहाँ से भगा दूँगा। ज़रूरतें इसे वापिस माएँगी। फिर—टट्टियाँ साफ़ करवाऊँगा। मैं किसी तरह की फ़िज़ूल बात सहन नहीं करूँगा। हाँ! मेरे साथ मे धरारतों नहीं चल सकूँगी! —उसक दिमाग में चक्कर साथे विचार-जाम के घब घप बाहर को निकलने लग। धीर साथ ही वह प्रस्पष्ट रूप से समझने लगा कि उसन यह ठीक नहीं किमा। स्वयं वह भी पुत्र से थोट छाकर बहुत अधिक अपमान अनुभव कर रहा था।

धोका नदी के किनारे पहुँचकर वह रेत के टुकड़े पर बकान से बठ गया। उसने अपने बेहरे का पसीना पाछ घोर नदी की धोर देखने लगा जहाँ पानी के उमलेपन में मछलियाँ सोह की मुइयों की तरह तैर रही थीं धोर पानी को मन्द स्पनन्दन प्रदान कर रही थी। उसके बाव छोटी मछलियों का एक तरफ़ भगाती हुई एक बड़ी घफरी बड़े गौरव के साथ अपने मुँह को खोले प्रमट हुई धोर एक तरफ़ मुड गई! उसने अपनी साल भाँखों से मलिन धाकाय की धोर दखा धोर धूर् के एक घेरे की तरह प्रकाशमान् बुमबुसे पानी में छाड़े।

धर्तमानोब ने उज़्जसी से घफरी को डरया धोर ऊँचे स्वर में बोला—
“मैं तरी किस्मत बना दूँगा।

धोर पीछे को मुड़ा। उसने सुना कि उसक घब्दा से एक प्रतिध्वनि-सी हुई है। नदी के मन्द प्रवाह न उसक क्रोध को धोना शुरू कर दिया धोर नौसी ऊँघ घान्ति ने उसके विचारों को कुच्छित कर दिया। सबसे बड़कर दु लद बात यह थी कि उसका बेटा—जिसे वह प्यार करता था जिसक लिए इन पिछने बीच सालों में वह लगातार चिन्ता धोर कष्ट उठाया रहा था,

इत्या क प्रति घन उसकी घुरणा घौर घधिक स्पष्टरूप से उबाल खान लगी ।

‘नहीं झूठ है तुम इससे बच नहीं सकते । इसी समय उसे निकिता की याद घाई जो एक घान्त कोन में जीवन की कडुताघों स बच कर छिप गया था ।

सब मुक्त पर ही काम सारने हैं घौर स्वय बचते हैं ।

परन्तु, घतमिनोव ने उसी क्षण घपने को घाम सिया—
‘यह-ठीक नहीं । घसकसेई काम से नहीं भागा उसने कारोबार का पिताजी को ठरू ही प्यार किया है । वह बडा मालधी है घौर सब काम बड़ी घसुराई घौर सरलता से करता है ।’ उसे याद घाया जब एक वार कारखान म घराबियों की सड़ाई क याद भाई ने उसने कहा था—

‘य लोग बिगड़े जा रहे हैं ।

घसकसेई स्पष्ट भाई के साथ सहमत था ।

‘पता नहीं किस कारण से सब घिड़े हुए हैं । एना दितवा है कि सबही नजरों में एक ही बात है ।

घसकसेई इसच भी सहमत हुआ । वह हँसा घौर बोला—
है यह बात भी ठीक है । कभी-कभी मुझे एक पिछली

बात याद घाती है । तुम्हारी गावी क दिन तिखोन की नजर में भी ठीक यही बात थी । जब उसने पिताजी को सिपाहियों स कुदती करत देखा तो वह स्वयं भी उनके कुत्ती लइन सगा । याद है ?

‘लौर तिखोन को यहाँ साने की क्या जरूरत ? वह तो—
निपट मूर्ख है ।

घसकसेई फिर घम्भीरता से कहने सगा—

बकरतें घामने घाती हैं धारमो खुद समझने लगता है । अपने
 घाप सौटेगा । सो था, मुझे दुःखी मतकर ।'

मिनट भर चुप रह वह फिर बोला—

“याकोब को घोर अधिक पढ़ाने की बकरत नहीं ।’

वह फिर एक मिनट बाद बोला—

“मैं परसों मेसे में जाऊँगा । सुन रही है ?’

“हाँ, सुन रही है ।

‘क्यों ? इसका क्या मतलब ?’ अर्थात्मानोव परेशानी में
 पड़ गया । जब उसने अपनी घाँसों मूँद सीं ता घाँसों के घामने
 इत्या की तस्वीर धा गई । उसकी घाँसों में अपमानजनक भ्रमक
 और उसके चौड़े माथे की कल्पना करत हुए उसने सोचा ‘अपने
 बाप का उसने एक मजदूर की तरह मर्सास्त-सा कर दिया है ।
 नोब कहीं का एक मिसाठी की तरह उस दुस्कार दिया ।
 उसकी समझ में नहीं था रहा था कि किस तेजी से यह विस्फोट
 फूटता गया था । उसे ऐसा लगा कि इत्या इस विस्फोट की
 तयारी पहले स कर चुका था । परन्तु, वह क्या बात है जिससे
 यह इस अपराध के लिए मजदूर हुआ ? इत्या के कठोर और
 तीक्ष्ण शब्दों को याद कर अर्थात्मानोव धाग सोचने लगा—

‘दिल्लता है उस पिछलग्गू कुत्ते मिरोदका’ ने ही उसे मेरे
 सिनाफ कर दिया है—और कारोबार मनुष्य के लिए हानिकारक
 है—यह तिसान का विषाद है । वह मूर्ख है, मूर्ख । उसने उस
 पर कैसे बिश्वास किया ? वह पढ़ा सिखा कैसा है ? उसने सीखा
 क्या ? मजदूरों पर उसे क्या घाती है, परन्तु, पिता का कोई
 अफसोस नहीं ? और मुमस डूर जा रहा है जिससे कि अपनी
 सच्चाई से एक तरफ रह सके ।

१ मिरोदका—मिरोन का ही सुदता सूचक नाम ।

इस्या के प्रति प्रथम उसकी धृष्टा और प्रथिक स्पष्टरूप से
उत्ताल खाने लयी ।

“नहीं झूठ है तुम इससे बच नहीं सकते ।” इसी समय
उसे निकिता की याद आई जो एक सान्त कोने में जीवन की
बहुताओं से बच कर छिप गया था ।

“सब मुझ पर ही काम सान्ते हैं और स्वयं बचते हैं ।’
परन्तु, प्रथमानोव ने उसी कारण अपने को धाम लिया—

‘यह—ठीक नहीं । प्रसक्सेई काम से नहीं भागा उसने कारोबार
को पिताजी की तरह ही प्यार किया है । वह बड़ा लालची है
और सब काम बड़ी धनुराई और सरसता से करता है ।’ उसे
याद आया जब एक बार कारखाने में घराबियों की लड़ाई के
बाद भाई से उसने कहा था—

‘ये लोग बिगड़े जा रहे हैं ।

प्रसक्सेई स्पष्ट भाई के साथ सहमत था ।

‘पता नहीं किस कारण से सब बिड़े हुए हैं ।
दिलता है कि सबकी नजरों में एक ही बात है ।

प्रसक्सेई इससे भी सहमत हुआ । वह हँसा और बोला—

‘हाँ, यह बात भी ठीक है । कभी-कभी मुझे एक पिछले
बात याद आती है । तुम्हारी घावी के बिन तिलोन की नजर में
भी ठीक यही बात थी । जब उसने पिताजी को विपाहियों से
कुस्ती करते देखा तो वह स्वयं भी उनसे कुस्ती लड़ने लगा ।
याद है ?’

‘खैर तिलोन को यहाँ साने की क्या जरूरत ? वह तो—
निपट मूर्ख है ।

प्रसक्सेई फिर गम्भीरता से कहने लगा—

“क्या बात है, तू इसी बात को बहुधा कहता रहता है—
 “योग बिगड़ रहे हैं—बिगड़ रहे हैं। देखो यह हमारा काम
 नहीं। यह तो पाश्चरियों साधु-सन्मासियों और सिखकों का काम
 है—और किसका यह काम हो सकता है ? तरह-तरह के इत्ताज
 करने वाले और प्रफुल्लित हो रहे हैं। यह उनका काम है कि
 वे देखें कि लोग बिगड़ न जाएँ। इस मामले को बही देखते हैं, और
 मैं या तू—उसके लरीवार हूँ। भाई ! सब चीजें धीरे-धीरे बिग
 डती जाती हैं। देख, तू बुढ़ा होता जा रहा है और मैं भी।
 परन्तु, सिर्फ इसीलिए कि लड़की भी बुढ़ी हो गई है, तू उससे
 यह नहीं कहोगे कि लड़की तू बुढ़िया हो गई है इससे जीवन
 की मौड़ें उड़ाना छोड़।”

“कितना बुढ़िमान् है”—ज्येष्ठ अतामानोव ने सोचा था—
 “बहुत बुढ़िमान् !

यह भाई की बाक-पटुता और प्रगल्भता और तरह-तरह
 के नए मुद्दावरों को सुन उसकी हासिकता और साहसिकता से
 ईर्ष्या करने लगा और उसे फिर निकिता की याद आई—बहु
 कुबड़ा जिसे पिता ने संभालना देने के लिए निश्चित किया था।
 वह भी एक ली के अक्षर में फँस गया और अब हमारे बीच नहीं
 रहा।

उस बरसाती रात में ज्येष्ठ अतामानोव तरह-तरह की बातें
 सोचता रहा। और तरह-तरह के कटु विचारों के उदास में उस
 अन्वकारपूर्ण बरसाती रात की टप-टप में अनेक विरोधी विचार
 उठ रहे थे जो उसके लिए आत्मनिर्णय में बाधा डाल रहे थे।

‘और मैंने क्या अपराध किया है ? उसने किसी से पूछा।
 और, जैसे कि उसे कोई उत्तर न मिला हो, वह अनुभव करन
 लगा कि इसका कोई-न-कोई जवाब जरूर है। पौ-फटते ही उसने
 अथानक निश्चय किया कि वह भाई के पास साधु-बुढ़ जाय, सायब

वहाँ संसार के प्रमाणना घोर प्रापतियों से दूर उसके पास किसी प्रकार की सत्त्वना घोर शान्ति मिल सक। घोर हो सकता है, सब वह किसी निम्न पर पहुँच सक।

घोर जब देहाती सड़का से हिपकामे साती हुई गाड़ी साधु-गृह क समीप पहुँची तो वह सावन लगा—

‘एक कोने में बठे रहना बहुत प्रामान काम है भाई, तू भी जरा बाहर रास पर दौड़। तहन्नाने में खोरे का प्रचार बिगड़ता नहीं। घूप में वह जल्दी ही सराब हो जाता है।

भाई म निम उन चार साम हो गए थे। पिछली मुसा कात बड़ी क्ली नीरस थी। प्योत्र को एसा प्रतीत हुआ था कि कुवड़ा उसके पहुँचन से प्रसन्न नहीं था। उसक पहुँचन पर जैसे उसक कटि-म उभर आए हों वह कुछ मुड़ा-मुड़ा घोर घपने खोल में पापे की की तरह छिप गया था फिर भारी-भङ्गे प्रावाज में न परमात्मा क बारे में बात की घोर न परिवार क बारे में पूछ-ताछ की। वस साधुगृह घोर यात्रियों की प्राबन्धकताया तथा सागा की मरीची क बारे में घनिष्ठ घोर बिपाद से जिक्र करता रहा। प्योत्र ने जब उन कुछ घन भेंट किया था तो वह यही उदासीनता से बासा—

वड़े पादरी को द दो। मुझे जरूरत नहीं।”

सष्ट था कि वह प्रमान पादरी पिता निकोदिम का वड़े पादर-भाव से देखता था। प्रमान पादरी एक बिद्यालकाय यड़ी इट्टिया घोर सम्ये बालों वाला तथा कान से बहुरा था जो घपनी पोसाक म एक नूत की तरह दिखाई दे रहा था। प्योत्र क चेहरे की घोर घपनी काली धाँकों से देख एक विचित्र घनक लिए उसने प्रनावस्यक उब स्वर से कहा था—

‘पिता निकोदिम हमारे गरीब साधुगृह क प्रानूपण हैं।’

यह साधुगृह एक छोटी-सी पहाड़ी पर थीक क पड़ा के घेरे में बड़ा और उनक सपन सीपों से दिया हुआ था। सप्ता प्रार्थना के लिए पतनी भाषा में बबने वाली घण्टियों से प्रार्थानोव का स्वागत हुआ। एक ऊँचे फटावर दरवान ने, जो फिस्ती के बाँस के समान दिखाई दे रहा था, जिस पर एक पुरानी टोपी वाला अनावश्यक सिर था, फाटक खोला और वह लड़खड़ा कर बोला—

सु—म।

और, फिर हाँपते स्वर में बोला—

‘घा-य-म-न-सु।

एक नीला धूर बावस साधुगृह के ऊपर घाघे पाकास में स्थिरता से सटक रहा था। ताँके क भारी घण्टों की ध्वनि भी यहाँ के नाम घबराह और भारी गम्भीर वायुमण्डल को दूर करने में असमर्थ थी।

“मेरे लिए यह बहुत भारी है, —मतिवि-गृह के सेवक ने अपराध भाव से कहा, जबकि वह निकिता के लिए साए उपहार के बखस को माँकी से निकाल रहा था और उसने छोटे-से कामे स हाथ स उसके इत्कत को बनाया।

प्योज गर्द स भग और थका बीरे-बीरे बगीचे से गुजर, अपने भाई के सफेद कमरे की ओर गया जो सेवों और बेरी क पेड़ों के बीच दिया हुआ था। वह सोचता था रहा था “वेकार मही भासा” —प्रच्छा होता मेसे में ही चला जाता। अमली पयबुखी ने, जिस पर पेड़ों की मोस-गोल पदें इधर-उधर निकल कर बिखर रही थी उसके दु खद बिचारों को धीरे हिलाकर मड़ बड़ में आस दिया था। और जब उसकी जगह एक कटु पीड़ा ने ली,

तो विषाम कर सब कुछ भूलन की उसकी इच्छा प्रबल हो उठी ।

‘ मेरे लिए घोड़ा-सा घामोद प्रमाद लाभदायक होगा ।

उसने माई की तरफ वासुधाय वृक्षों के घन चन्द्राकार घेर में सामने एक बंश पर लगभग घामे दर्जन लोगों के साथ बठे देखा । यह दृश्य एक परिचित चित्र के दृश्य के समान था । प्योत्र न देखा कि एक काली बाड़ी वासा व्यक्ति बरसाती कोट पहन बैठा है जिसका एक पाँव चिबड़ों में लिपटा और रबड़ के जूतों में है एक माटा चूड़ा घादमी जो सिकक प्रवस-प्रदम करने वाले नपुंसक के समान धीसता था और एक सम्भे घानों वासा नौजवान भी था जिसने फौजियों का सम्भे कोट पहिन रक्ता था । उसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई और घालें माटी-माटी थीं । वही त्रयमोद नगर का रोटी पकाने वाला धराबी और भगडासु—मुजिन भी था । यह एक सम्भे की तरह सीधा और न्यायाभोस के सामने धोर की तरह खड़ा था । मुजिन फटी घाबाज से कह रहा था—

सब है परमात्मा—बहुत दूर है ।

घालने से सक्त पड़ी जमीन पर घपनी सफेद छड़ी से चित्र से बनावे हुए और सोगा की धार दस्तते हुए निश्चिन्ता न भर्त्सना की—

‘ मनुष्य घपने पापों में जितना ही नीचे गिरेगा परमात्मा उतना ही दूर हाँ जाएगा । परमात्मा सोगा के पापों से बड़ा पूणा करता है ।

“साँत्वना दे रहा है, ज्येष्ठ घसामानोद ने साधा और घपने घाप सोचता हुआ पाड़ा-सा हँसा ।

परमात्मा देखता है कि हम बंकार भूठ वालते हैं । बंकार धर्म का नाम करते हैं—यह सब कुछ क्या ? हमसे एक दूसरे के प्रति सहामता और प्रेम कहाँ है ? हम किसलिए प्रापना

करते हैं ? सब छोटी-छोटी बातों के लिए ही तो प्रार्थना करते हैं और फिर ।'

बुढ़े ने अपनी भाँसे ऊपर उठाई और सण भर की चुप्पी के बाद भाँसे की ओर ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा । और फिर धीरे से एक बड़े बोक की तरह उसने अपनी छाँड़ी को उठाया जैसे कि, वह किसी पर चोट करना चाहता हो । बुढ़ा उठा और छाँटी तक अपना सिर झुकाए, अपने भाँसे पर कास का चिह्न करता हुआ प्रार्थना के स्थान पर बोला—

“सो—मेरा भाई सा गया है ।

मोटे और वाम रहित बुढ़े ने अपनी ठाँवे जैसी सास-सास भाँसा को मोड़ते हुए धृष्ट से देखा । और इधर अपने ऊपर कास का चिह्न कर ओर से उच्चारण किया—

‘जाओ परमात्मा तुम्हारा सहायक हो,’ निकिता न कहा ।

सोम चारागाह के बोरों की तरह बस पड़े । बुढ़े भादमी ने घामस पाँव बाने व्यापारी को उसकी एक बौह धामते हुए सहायता दी और मुजिम ने उसकी दूसरी बौह धामी ।

‘नमस्कार । आशीर्वाद दो ।

अपने लम्बे कासे चोमे म डैनों की तरह लम्बी बाँहों को निकाल, पिता निकोदिम ने उसके बँधे हाथों को बिना किसी प्रशंसा के छुआ ।

“मुझे तुम्हारे धाने की भाषा नहीं थी ।

फिर उसने अपनी छाँड़ी से अपनी कोठरी की ओर संकेत किया और भाँसे के भागे धाम एक धक्के से अपनी टैकी टाँगों

का पासों पर फेंकता हुआ और एक हाथ से अपनी छाती पर हृदय को धाम हुए धागे-धागे बस पड़ा ।

“तू काफी बुढ़ा हो लिया” — व्योम ने विवाद में कहा ।

इसीलिए तो जी रहे हैं । टाँगें खर्व करने लगी हैं । हमारी बगल सीसी है ।’

निकिता धब और अधिक कुबड़ा दिखने लगा उसको कमर का कोना और दाया कंधा और ऊपर उठ गया था घरीर मुड़ कर और जमीन के समीप आ गया था जिससे वह अधिक चौड़ा दिखाई दे रहा था । वह पादरी एक मकड़ी के समान दिखाई दे रहा था, जिसका सिर कट चुका था और बहु धगधों की तरह टढ़ा-भेड़ा बफड़ों के बजस हुए गस्ते पर बसा जा रहा था । अपनी साफ-सुधरी लम्बे काठरी में पिता निकोदिन किसा कदर बढ़ा, परंतु और अधिक भयानक दिखने लगा । जब उसने अपना बोमा उतारा तो उसका हाथी दाँत जैसा सफेद गजा सिर पानिस की हुई सापड़ी के समान दिखने लगा । धौले-धौले बाल खुरदरे मुच्छों में उसके कनपटा में कानों के पीछे, सिर के चारों तरफ थे । उसका चेहरा भी हठी बाला मोम के रंग का सफेद-सा दिखाई दे रहा था, हड्डियाँ बाल चेहर पर कहीं मांस दिखाई नहीं पड़ रहा । उसकी नुरम्यतो हुई धाँसों में किसी प्रकार का प्रकाश नहीं था और उनकी नजर उसकी बड़ी घोंड़ी नाक के छोर पर कन्द्रित होती दिखाई दे रही थी । वा काल बचनों के नीचे उसके मुख घाँठ नि सख्य गति कर रहे थे और उनका मुख गालों में गहड़ों के कारण दो पूयक भागों में बटा और अधिक बढ़ा दिखाई दे रहा था । विषेय तथा उसके ऊपर के घोटों पर धौले बाल डरावने और अप्रिय लग रहे थे ।

धीरे से जैसे कि वह किसी घाहट का मुन रहा हो और

प्रयत्नपूर्वक शब्दों को स्मरण कर पावरी ने एक सूजे से वेह
वाले स्नानागार के सेबक की तरह विखनाई देने वाले एक
सड़के से कहा—

समवार । रोटी । घाहू । '

'तुम भीमे-भीमे कैसे बोल रहे हो ?'

'मेरे दाँत मूढ़ फुंक हैं ।

पावरी लकड़ी की मेज के पास सफेद रंग की एक धाराम
कुर्सी पर बैठ गया ।

क्यों ठीक हो ?

सब ठीक है ।'

तिस्रो ठीक है ?

ठीक है । उसे क्या होना है ?

बहुत दिनों से वह यहाँ नहीं आया ।'

वे फुप हो गए ।

निकिता हिंसा उसके योगे ने भींगर की सी आवाज की
जिससे प्योय की ब्यप्रता और अधिक बढ़ गई ।

'मैं तुम्हारे लिए कुछ उपहार लाया हूँ । जरा कित्ती को
कहना कि बक्सा उठा जाए । उसमें घराब है । तुम्हारे यहाँ
घराब की छा आना है ?

माई ने गहरी साँस से उत्तर दिया—

हमारे यहाँ—कठोरता नहीं है । हमारे यहाँ कुछ धीर
फठिनाइयाँ हैं । हमारे बीच घराबी भी हैं । क्योंकि, सब तरह के
सोग घाते रहते हैं । और पीते हैं । क्या किया जाए ? बुनियाँ
साँस से रखी है । पावरी धीर साधु भी तो मनुष्य ही है ।'

'सुना है कि तेरे पास बहुत सोग घाते हैं ।'

“घाते हैं, और वे प्रज्ञानी हैं,” पावरी बोला—‘हाँ, घात है, घेर लत है ज्ञानी से ज्ञान की तसाध करते हैं। पूछते हैं—कैसे रहा ज्ञान ? रहते हैं। जीवन को गुजारत हैं और उन्हें अभी तक यह भी नहीं पता कुछ नहीं पता। सहनशीलता रही नहीं।

पावरी के चब्दों से मयभीत हो अल्प प्रतीमानाव बढवड़ाया—

“बकवास है। जागो मे घट्ट मुसामी को सहन किया, भव स्वसन्नता को सहन नहीं कर सकत। घासन की कमजारी है।’

निकिता चुप रहा।

‘सरदारा की घट्ट-मुसामी म वे इपर-उपर की घाबारा गिर्वी और घाघरतें नहीं करत थे। कुवड़े ने उसकी तरफ निहारा और अपनी घातें नीची करनीं।

घोर, इस प्रकार से प्रयत्न-पूर्वक चब्दों को बुँदते, घातसाप को सन्वे बिरामों से भग करत, भीम-भीमे तबतक बात करते रहे, जब तक कि संबक समवार सुगणित बासन्धाय-भभु और ताबी पकी भाप छोड़ती रोटी न स घाया। वे दोनों गम्भीरता से उसे दस्तते रू जा बहुत भइपन से फर्त पर रखते बक्स का खोसने की कोशिश कर रहा था। प्योत्र न मज पर दा बोतसँ और दो-रीन कवियार+ के डिये रख।

‘फोर्ट,’ निकिता ने एक बोतस क सेबस को पककर कहा—‘हमारा बड़ा पावरी इसे बहुत पसन्द करता है। वह बड़ा बुद्धिमान् व्यक्ति है। वह बहुत बातें समन्ता है।’

‘घोर, मैं—बहुत कम समन्ता है।’ प्योत्र न साग्रह

+कवियार—मदसी क घण्टे।

स्वीकार किया ।

'जितनी जरूरत है—तुम भी समझते हो और फासतू समझने की जरूरत भी क्या है ? जरूरत से अधिक—समझना भी हानिकारक है ।'

पादरी ने सावधानी से सांस ली । प्योत्र ने उसके धन्नों में एक प्रकार की कटुता-सी पाई । कोने में मेज पर रखी सस्त पीले से शीशे वाली मम्म के कुपण प्रकाश के धमकार में उसका जोगा मँसा और चिकना लग रहा था । धपने भाई की मन्द हिंसावी भाससा के साथ 'भदिरा' के व्यासे से धराव की कुस किया मरते हुए प्योत्र ने ध्यंग में सोचा—

धराव पीना जानता है ।

प्रत्येक प्यासा पीने के बाद धपनी सूखी और बहुत सफेद उज्जलियों से रोटी का टुकड़ा तोड़ उसे सतह में डुबो धपनी नीली-सी दाढ़ी को हिंसाता हुआ वह धीरे-धीरे पकाने लगा । पादरी में धराव के नसे के कोई चिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे परन्तु उसकी धुंधली धाँसे नाक के काने पर केन्द्रित होती हुई धमकने लगी थी । प्योत्र सावधानी से भाई से धपने मधे को छिया कर धीरे-धीरे पीता हुआ सोचने लगा—

"नतात्या के धारे में—कुछ नहीं पूछता । और पिछली बार भी इसने कुछ नहीं पूछा था । धरमाता होगा । किसी के धारे में कुछ नहीं पूछ रहा । हम दुनिर्भावार हैं । और वह—सम्त है । सोग इसके पास उपदेश पान के लिए धाठ है ।

उसने नाराजगी से जकेट की ओर धपनी दाढ़ी को भटक दिया और काना को मलते हुए वह धाला—

'तूने धासानी से धपन को यहाँ छिया लिया है । सूब ।'

'पहले ठीक भी था, अब ठीक नहीं । बहुत धापी धाने लगे

हैं और यह स्वागत ।”

‘स्वागत ?’ प्यात्र हँसा ।— यह तो दाँता बालें बास्टर की बात है ।’

“मैं चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं और बस दिया जाऊँ” पादरी ने प्याले में सावधानी से छराब डालत हुए कहा ।

‘जहाँ और अधिक एकान्त हो,’—प्योत्र ने कहा और फिर हँस पड़ा । पादरी छराब की चुसकियाँ भरता तथा कासी और विधिसत पीन का मोठा पर धुमाता रहा । और फिर अपने प्रस्थित-सिर का हिला कर यह बोला—

‘अद्यान्त और दु धी सामों की सख्या स्पष्ट बढती जा रही है । लोग सासारिक चिन्ताओं से बचना और छिपना चाहते हैं ।’

मैं तो यह नहीं देखता —प्योत्र ने यह जानत हुए कि वह ठीक नहीं कह रहा फिर भी विरोध किया । “यह तो तू ही अपने आप छिपना चाहता है” —उसने कहा थाहा ।

‘भय और चिन्ताओं की छायाएँ उनक पीछे हैं ।’

प्यात्र की भाषा में विरोध और भर्त्सना अपने-आप भरते जा रहे थे, यह भाई से भगड़ना चाहता था और उस पर चिन्ताना चाहता था । अपने बेटे के बारे में सोचता वह कटुता पूर्वक बोला—

‘चिन्ताएँ तो मनुष्य स्वयं बुँदेता है । वह अपनी आवश्यकता समझता है । अपना काम करा और बहुत समझदार बनने की कोशिश मत करा—पस, तुम दान्त रहान !’

परन्तु, भाई ने जो अपने ही विचारों में भूला हुआ था, उसके दाँदों को नहीं मुना । अचानक उसने अपने कर्नदार तरीर के दाँते को एकदम हिलाया, जस कि वह नींद से जागा हो ।

उसका चोगा काली सलवटों में धागे को बुनक धाया । धब वह धपन धोठों को प्योत्र की तरह कटुता धौर रोष से हिमाता हुआ बोला—

सोग मेर पास ध्राते हैं, उपदेश धौर शिक्षा चाहते हैं । परन्तु मैं क्या जानता हूँ जो उन्हें शिक्षा सकूँ ? मैं कोई ज्ञानी नहीं । यह सब पादरी का ही काम है । मैं—स्वयं कुछ नहीं जानता, ऐसा दिखता है जैसे कि मुझे यह धन्यायपूर्ण, धप्रसुद्ध, वषड मिसा है । मुझे वषड मिसा है कि सार्धों को उपदेश दूँ । धौर पठा नहीं यह वषड क्यों मिसा है ।’

‘इधारा कर रहा है —व्यथ धर्तमानोव न सोचा, हो सकता है धिकायत करना चाहता है ।

वह जानता था कि निश्चिन्ता धपने धाम्य के बारे में धिकायत करना चाहता है । वह इम धिकायतों की पहले भी उम्मीद करता था जबकि वह पहली बार उसक पास ध्राया था धौर धपने काना को गरमाते हुए उसने रोव धं नार्ई से कहा—

‘धाम्य की तो बहुत लोप धिकायत करते हैं परन्तु पठा नहीं यह किसलिए ।’

‘ठीक है । इससे उन्हें सम्तोप मिसता है ’ कुबड़ ने उसकी धौर ध्यान न दे काने में सड़ी सम्य की धौर देखत हुए कहा ।

धौर तुझे तो हमारे स्वर्गबासी पिता ने भी धाज्ञा दी थी—
‘साम्बना दे ! सोर्धों को सान्त्वना देने बासा बन ।

निश्चिन्ता का मुख एक ध्यंगारमक ध्रुक्ष्यान में फँस गया । उसने धपनी धौली धाड़ी को मुट्टी में धामा धौर धपनी मुस्कराहट का मसस दिया । वह धपने धर्धों की धस्यष्टता से प्योत्र को भटकाता रहा जिससे उसम एक प्रकार का कीतूहस जागृत हो गया ।

‘सोगों पर यहाँ मेरा रौब डाला जाता है जसेकि मैं बड़ा ज्ञानी हूँ, नि स्ववेह यह भाष्य के लिए लाभदायक है, यानी बहुत संख्या में घात है। परन्तु मेरे लिए—यह कर्त्तव्य बड़ा दुःख है। भाई ! यह बड़ा कठिन काम है ! मैं उन्हें क्या शांति और सतोष दे सकता हूँ ? सहन करो, यही कहता हूँ। और—भव दखता है कि सब लोग इससे भी ऊब गए हैं। उनसे कहता हूँ—भाषा रखो, भाषा रखो। लेकिन भाषा भी किस पर रखनी जाय ? परमात्मा के नाम से तो—कोई शांति नहीं होती। कहीं भी विस नहीं घमता। दखो, वह मामलाई घा रहा है।

‘मरे ! यह तो—हमारा भुजिम है। यह हमारे घर का है। बड़ा सराबी है—ज्येष्ठ भर्तमानोव ने किसी कारण से बपते हुए कहा।

‘वह समझता है कि वह घपना भाष्य विघाता स्वयं ही है। वह परमात्मा को ससार का स्वामी नहीं समझता। भाष्य कस ऐसे साहसी सोगों की कमी नहीं। यहाँ एक और पुरुष है—तुने उसे देखा, दाढ़ी नहीं रखता वह—बड़ा ईर्ष्या और विश्वत्रोही है। यहाँ और लोग भी घाते हैं और तरह-तरह के प्रदल करते हैं। पता नहीं क्यों घाते हैं ? मुझे परेधान करते हैं और मेरी शान्ति भंग करते हैं।’

पादरी बड़े धावेश से बोझ रहा था। भाई को देखकर प्योत्र को याद आया कि इसकी मुलाकातों में उसकी धारें पहले इस प्रकार अपराधपूर्ण नहीं रूपकती थीं। पहले कुबड़े की अपराधपूर्णता से प्योत्र घात हो जाता था। क्योंकि अपराध को शिक्कायत का अधिकार नहीं। परन्तु भव वह स्वयं शिक्कायत कर रहा है। वह कह रहा है कि मरा न्याय ठीक नहीं हुआ। ज्येष्ठ भर्तमानोव को भय हो रहा था कि भाई कहीं यह न कह बैठे कि—

‘तू ही था, जिसने मेरा इस प्रकार न्याय किया !’

मौहें बढ़ा कर, अपनी घड़ी की जखीर से सिसवाड़ करते हुए वह आत्मरक्षा के लिए शब्द बुँडन लगा ।

‘हाँ,’ कुबड़ा वाला, और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अप्रत्यक्षरूप से अपनी सिकामत से सन्तुष्ट है । सब सोम नाराज हैं, उनके विचारों में साहस है । अभी कुछ समय—दो सप्ताह पहल हमारे यहाँ एक शिक्षित नवयुवक आया, जो बहुत भयभीत सा दीखता था । बड़े पादरी ने मुझे आदेश दिया—‘तू इससे बात कर, अपनी सरसता से इस कुछ शांति और शक्ति प्रदान कर । और, मैं दूसरों के विचारों को भन्धी तरह स्मरण नहीं रखता । वह विद्वान् था और उसने भष्टों वाद विवाद में मेरी बातें निकाल दी । वह मोक्षता रखा यहाँ तक कि मुझे उसका शब्द तक समझ में नहीं आ रहे थे । विचारों को समझने की बात तो दूर रही—‘शैतान को हम अपने जीवन का स्वामी स्वीकार नहीं कर सकते यदि ऐसा करते तो हम दो परमात्मा स्वीकार करने पड़ेंगे और इससे ईसा के शरीर का अपमान होगा । जिसे हम युखारिस्त^१ क दिन स्वीकार करते हैं । ईसा के शरीर का स्वीकार करो जो अमरत्व का ज्ञात है । उसने परमात्मा का विरोध किया—‘चाहे परमात्मा चींगों बासा ही हो परन्तु वह एक जाना चाहिए, अथवा जीवन असम्भव है । उसने मुझे बुझी कर दिया और मैं पिता प्योवर के सब उपदेशों को भूल गया । मैं उस पर चिल्लाया । तुम्हारा शरीर परिवर्तनशील है और आत्मा नष्ट हो चुकी है । इसके बाद बड़े पादरी ने मुझे बहुत बुरा भसा कहा ‘‘तुम्हें क्या हा गया है ? तुमने कौसी अर्थात्मिक बकवास की है ? हाँ हाँ, बात ऐसी ही है ।’ प्यात्र का यह

१ युखारिस्त—ईसाइयों का एक त्योहार ईसा का पवित्र भाज-दिवस पवित्र राटी और मविरा का दिवस ।

सब बातचीत बड़ी उपाहास्यास्पद दिल्ली घोर भाई को इस प्रकार प्रवस्था में देखकर अत्यंत अर्थात्मानोष किसी प्रकार शान्त हो गया ।

“परमात्मा के वार में कुछ भी कहना कठिन है’ वह बुदबुदाया ।

हाँ कठिन है पिता निकोदिम ने सहमति प्रगट की और एक स्निग्ध-कटुता से पूछन लगा— याद है पितानी हमें क्या उपदेश देते थे । हमसोग—सीधे-सादे मजबूर हैं हम लोगों के लिए यह सब ऊँचा ज्ञान है ।’

“मुझे याद है ।”

‘हाँ पिता फियोदोर हमें आदेश करता है पुस्तकें पढ़ो !’ और मैं पढ़ता हूँ । पुस्तकें मरने लिए ऐस ही हैं जैसे कि एक सुदूरवर्ती बङ्गल, जहाँ पेड़ों के साथ हवा घोर कर रही हो । मानकस के दिनों में पुस्तकों से कोई उत्तर नहीं मिलता । आज कस ऐसे विचार पैदा हो गए हैं कि पुस्तका से उनका कोई उत्तर नहीं मिलता । सब साम्प्रदायिकता बन रही है । लोग ऐसी दलीलें करते हैं जैसे शराबी नाग अपने स्वप्नों को बताते हैं । इस मुजिन को—ही सा ।”

पादरी न पाड़ी-सी पाटें और पी और रोटी का टुकड़ा चबाया । नरम रोटी का पाड़ा-सा टुकड़ा ल उसकी गोली बना कर वह अपनी उँगली से उस मुड़काता हुआ बाँट करता रहा—

“पिता फियोदोर कहता है, सारे दुःख बुद्धि के कारण हाव हैं पैतान कोपी मुसा की तरह उसका पाछा करता है । वह उठ करता है और कुत्ता उसकी तरफ निरर्थक भौंकता रहता है ।’ हो सकता है, यह ठीक हो, परंतु इसके साथ सहमत होना कठिन

है। हमारे यहाँ एक डाक्टर भी है जो बड़ा सोचा-साधा प्रसन्न चित्त व्यक्ति है। वह बुद्धि के बारे में प्रौर हो विचार रखता है। उसके लिए बुद्धि प्रौर मन बच्चों के समान है—प्रौर बाकी सब खिसीने को तरह है जिन्हें सब बातों में दिसबस्ती है। वह कल्पना करता है कि ये सब खिसीने कैसे बनते हैं। ये प्रन्दर प्रौर बाहर से कैसे बने हैं। प्रौर प्रन्त में उसे सोझ वेता है।”

‘मुझे मगता है कि तू बहुत खतरनाक बातें करने मया है,’ प्यात्र ने कहा। माई के सभ्दों से वह फिर विचमित हो गया था। उसकी वे बातें वकित प्रौर तीखी थीं जिनसे वह बिस्मित प्रौर मयमीत हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह निकिता को पकड कर अमोन पर गिराद।

‘पावरी बहुत पी गया है’ उसने मन-ही मन कहा प्रौर प्रपने को घान्त करने मया।

कोठरी में धब घुटन-सी हो गई थी। उसके एक कान से एक प्रकार की सड़ी गन्ध घा रही थी। कोयसों से उठने वाली सड़ी प्रौर मम्म की बिकनी गन्धें प्यात्र के विचारों को मन्द बना रही थीं। बिड़की के छोटे-स काने चौसटे में कुछ पसे मोहे पर लुवे बित्र की तरह विछाई वे रहे ये प्रौर मकड़ी के समान मगने माला उसका माई धीरे-धीरे तत्परखा के साथ प्रपना नाम पुने जा रहा था—

‘ये सब विचार—खतरनाक हैं। सासतौर से—सीधे-साध विचार। तिलोन का ही मो।’

‘वह तो निर्बुद्धि है।’

‘महाँ, वह ऐसा महीं। उसकी बुद्धि प्रौर विचार बड़े पटार है। कुछ-कुछ म, मैं भी उससे बात करन म डरता था।’

लेकिन जब पिताजी का दहान्त हुआ तो तिखान भर बहुत नजदीक भा गया। तुम जानते हो कि पिताजी का तुम इतना अधिक प्यार नहीं करते थे जितना कि मैं। तुम और अक्सर इस मृत्यु से इतने डुलौ नहीं हुए, जितना तिखान। तुम जानते हो उस सन्यासिनी पर मुझे उसकी मुखता के लिए मुस्सा नहीं धाया था मुझे धाया था परमात्मा पर, और तिखान इस बात को मट समझ गया। वह बोला— 'हाँ मच्छर जितना रह जाते हैं और मनुष्य ।'

'तू क्या धक्कास कर रहा है ?' प्यात्र ने कठोरता से कहा— 'सयता है बहुत पी गया है। कौन-सी सन्यासिनी ?'

निकिता टड़ठापूर्वक अपनी बात कहता गया—

'ठीक है। तिखान कहता है— 'यदि परमात्मा संसार का मासिक है तो वृष्टि समय पर हानी चाहिए जो जनता के लिए सानदायक हो। और इन सब धर्मिकाओं के बारे में बताता है कि ये सब मनुष्य से ही नहीं हात अङ्गुली भी छोड़ बिजली से भस्मसात हो जाते हैं। और हमारी मृत्यु के लिए काइन' को पाप करने की क्या जरूरत थी? और परमात्मा को सब प्रकार की इन कुरूपताओं की भी क्या जरूरत? उदाहरण के लिए प कुवड़—परमात्मा को इनकी क्या जरूरत ?

'अच्छ यह बात है !' प्योत्र अपनी दाढ़ी में मुस्करा कर सोचने लगा और उसने अनुभव किया कि परमात्मा के विरुद्ध उसका भाई की शिक्षण, उस किसी प्रकार बंधन नहीं बना रही। यह भी अस्मिता है कि पादरी अपने माँ-बाप की शिक्षण नहीं कर रहा।

'पहले तो तूने इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं।

१ काइन—आदम का पुत्र जिसने धर्म का वध किया था।

“सब बातें एक साथ नहीं कही जाती। हाँ शायद मैं सारे जिनगी इस बारे में चुप रहता, परंतु अब मैं भक्त—यात्री सोय सान्ति भग कर मेरी आत्मा को बुखी कर देते हैं और यह बड़ा सतरनाक हा जाता है और तिसोन मरे दिमाग म मडरने सगता है ? नहीं, वह समझदार है। हो सकता है कि— मैं उस नहीं चाहता। वह तेरे बारे में भी सोचता रहता है। “कहता है यह भावमी विन भर बच्चों के लिए मेहनत करता है और बच्चे उससे दूर होते जाते हैं।

“और भी कुछ कहता है ? प्योत्र ने नाराजगी में पूछा—“वह इस बारे में क्या जान सकता है ?

“नहीं। जानता है। कहता है, कारोवार और धन्या सब भोसा है।

“मैंने भी यह सब सुना है अब उस मूर्ख को यहाँ से खदेडमा पड़ेगा। हाँ, उसे हमारे परिवार के बारे म बहुत जानकारी है।”

अर्तमानोव ने यह निश्चिन्ता को उस बुखव रात का अब तिसोन ने उस फाँसी के फन्व से उतारा था स्मरण कराते हुए कहा। परन्तु उसे घामक निकोमोव की भी याद आ गई। पावरी इस संकेत को न समझ उसन सराब के प्याले को मुँह से सगाकर जीभ को सराब में डुवोया और छोठों को चाटता हुआ अपने कठोर सख्यों को कहता गया—

‘तिसोन का भी किसी ने कुछ पहुँचाया है यही कारण है कि वह विवाप्ति के तरह ससार से भाग आया है।’

यह एक ऐसा विषय था जिससे बातों को दूसरी तरफ मोड़ सेना ही उचित था।

‘क्या, अब तू परमात्मा में विश्वास नहीं रखता ?

प्योत्र ने पूछा । उसे भ्रमना हाँ रहा था । वह कटुता से कुछ और पूछना चाहता था परन्तु ऐसा कर न सका ।

‘यह समझना बड़ा कठिन है कि आजकल कौन परमात्मा में विश्वास रखता है और कौन नहीं साधु ने कुछ रूक कर फिर कहा— ‘सोग बहुत कुछ सोचते हैं परन्तु विश्वास कहीं भी दिखाई नहीं देता । यदि विश्वास है—सा बहुत सोचन की जरूरत नहीं यह सीग बाल परमात्मा के बारे में कहने वाले विद्वान् का कथन है ।

‘छोड़ इन बातों को —प्योत्र ने अपनी कनखिया से देखते हुए ससाह बो । यह सब बेकारे और एकान्त जीवन का नतीजा है । लोगों को भय मजबूत सोहे को वेदियों की जरूरत नहीं ।

‘नहीं, दोनों में विश्वास नहीं किया जा सकता, पिता निकोविम ने हड़तापूर्वक कहा ।

भय घण्टी दूसरी बार बज रही थी और उसक तपे-तुले घाघात खिड़की के मलिन शीशे पर टकरा रहे थे । प्योत्र ने पूछा—

‘प्रायना के लिए आओगे ?

‘नहीं जाया करता । टीयों पर खड़ा हाना मुश्किल है ।’

‘हमारे लिए भी प्रार्थना करते हो या नहीं ? साधु चुप रहा ।

‘भ्रष्टा भय मुझे सोना चाहिए । मैं यात्रा से बहुत थक गया हूँ ।’

निकिता फिर भी चुप रहा । अपनी धारामकुर्ती की बाजूओं पर अपनी सम्बो बाँहा को टिकाकर उसने अपने कोण बार छतरे को छावपानी से उठाया और बोला—

‘मित्र्या । मित्री ?’ और फिर कुर्सी में घँसते हुए अपराधी की तरह कहने लगा —

“मुझे क्षमा करना, मैं झूल गया, मेरा सेवक तो प्रतिपि-गृह में सी रहा है । मैंने उसे भेज दिया था ताकि खुलकर बातें की जा सकें । य सब लोग यहाँ भेड़िए और जासूस है ।’

उसने अनेक अनावश्यक बातें करते हुए भाई को प्रतिपि-गृह का मार्ग दिखाया । जब व्यात्र हल्की-हल्की ठण्डी वारिष्ठ के अन्धकार में उबर चल दिया तो वह सोच रहा था

‘वह मुझे जाने देना नहीं चाहता था और अपनी बकवास जारी रखने की उसकी इच्छा थी ।’

और उसने एक आकस्मिक अज्ञात मय अनुभव किया कि वह फिर एक गहरी छाई की ओर जा रहा है, जिसमें वह किसी छान गिर सकता है । उसने जल्दी-जल्दी अपने फव्वल और हाथ भागे को बड़ाए और सब अपनी उँमसियों से रात्रि की हल्की वारिष्ठ की धौंछार का अनुभव करने लगा । प्रतिपिशासा का कुछ हिस्सा एक मोटे स्निग्ध अख्ये के समान भेम्प के प्रकाश में दूर से दीप्त रहा था ।

‘नहीं,’ उसने जल्दी मं सोचा और सड़कड़ाया, “मुझे इस की बकरत नहीं । मैं यहाँ से कल ही चला जाऊँगा । मुझे बकरत नहीं । आखिरकार तुम्रा क्या है ? इस्या बापिस था बाएसा । जीवन टढ़तापूर्वक वित्ताना चाहिए । देखा तो असभसेई कैसे प्राये बढ़ रहा है और सफल हुआ है ! हो सकता है किसी दिन वह मुझे भी पीछे फेंक दे ।’

असभसेई क यारे में वह तेजी से सोचने लगा, ताकि निकिता और तिखोन को दिमाग से निकाल सके । और जब वह साधुगृह के प्रतिपिपृह क कठोर बिस्तर पर सेट गया तो उस

पावरी क घोर दरखान के पीड़ित करने वाले बिचारा ने घेर लिया । तिस्रोम कैसा घादमी है ? सब जगह उसकी ही छाया घा जाती है और उसके वे शब्द और विचार वक्त्रों की तरह चारों तरफ प्रतिध्वनित होने लगत हैं । उसके शब्दा की प्रति ध्वनि उसके घटे इत्या क शब्दा और भाई के विचारों मं मिल रही थी ।

सान्त्वना देने बासा !' उसने भाई के बारे म सोचा । "घोर यह सेराफिम—सीधा साधा बड़ई भी ता सान्त्वना दं सकता है ।

उसे नोंद नहीं घाई । मञ्छर काट रहे थे और दीवार के दूसरी घोर भाई और दो-तीन घादमी घापस मं बातचीत कर रहे थे । प्योत्र को लगा कि य नानवाई मुञ्जिन र्वंधी टाय वाला ब्या पारी और हिजड़ा की सी लकल वाला वही घादमी होगा ।

ये प्रवश्य ही छराय पी रहूँ हैं ।

साधुगृह के चौकीदार न कुछ अधिक समय का अन्तर दं दकर साहे के तस्ते को छटखटामा इसकं वाद ही अथानक बड़ी तेजी स जस कि सुबह की प्रार्थना के लिए समय निकला जा रहा हो, पष्ठी का बजना शुरू हो गया । उस घष्ठी के घोर से प्यात्र जाम उठ्य । तनी उसका भाई उसके पास भा पहुँचा और उसकी घोर बस ही देखन लगा जैसे कि उसन पिछ्ल दिन नाराजगो स नीच से ऊपर तक बगीचे म उस देया था । ज्येष्ठ अर्वामानोव ने जल्दी से मुँह हाय घाया, रुपड़े पहन और संबक को घात्रा दी कि यह उसके लिए अगसे पोस्ट स्टेशन तक घाड़े तय करद ।

'इतनी जल्दी ? साधु ने घाअय स पूछ्य । मैं ता सोचता था—कि तुम कुछ दिन ठहरागे ।

"कारोबार घात्रा नहीं दसा ।'

दोनों ने चाम पी । प्योम देर तक सोचता रहा कि भाई से और क्या पूछूँ । फिर उसे याद आया—

‘अच्छा, तो तुम यहाँ से जाना चाहते हो ?’

‘सोचता तो हूँ । परन्तु वे मुझे जान नहीं देते ।’

‘उन्हें इससे क्या ?’

‘मैं उनके लिए लाभदायक हूँ उपयोगी हूँ ।

‘अच्छा यह बात है तो फिर आघोगे कहाँ ?’

‘हो सकता है, परिव्रजको की तरह घूमने लगूँ ।’

‘इन दु सती टांगा को लेकर कहाँ जाओगे ?’

‘क्यों नहीं घुले-लंगड़ भी तो चलते हैं ।’

‘यह ठीक है, वे चलते तो हैं — प्योम न सहमति में कहा ।

कुछ देर दोनों भाई चुप रहे । फिर निकिता बोला—

‘दिल्लीत को मेरा नमस्कार कहना ।’

‘और किसको ?’

‘सब का ।

‘बहुत अच्छा । तुम यह ता पूछा ही नहीं कि घमस्तेई कैसे है ?’

इसके पूछने की क्या जरूरत ? मैं जानता हूँ कि वह ठीक ही होगा । और मैं हा सकता है यहाँ से जल्दी ही चला जाऊँ ।

‘सदियों में तो नहीं आघोगे ?’

‘क्यों नहीं ? सदियों में भी ता सोग जाते हैं ।’

‘ठीक है, जाते हैं’ व्योत्र फिर सहमत हुआ। उसने भाई को कुम्ह घन भेंट किया।

‘ठीक है यह घाट की चक्की की मरम्मत के काम घा जाएगा। बड़े पादरी का देखना नहीं जायागे ?

‘समय नहीं पाड़े छप्पार लड़े हैं।

विदाई के समय दोनों भाइयों ने घाघस में घासिगन किया। वह घासिगन निकिता के लिए बड़ा दुखद था। उसने भाई को घासीबाव नहीं दिया। निकिता का बाया घाघ घाग की बाहीं म फेंस गया—घौर व्योत्र का एसा प्रतीत हुआ कि यह जानबूझ कर किया गया था। घपन कुम्ह का उसक पट की तरफ दबा कर निकिता ने घीम से कहा—

‘यदि कस रात कोई फिजूल बात मरे मुँह से निकल गई हो तो दमा करना।

यह भी लुव कहा। हम भाई भाई हैं।

‘य तो रात के समय बराबर घानता ही रहता है।

‘घण्ड्या नमस्कार।

घौर जैसे ही साधु घाधम के फाटक न बाहर निकला तो व्योत्र न पीछे मुड़ कर घसिघि-गूह की सफेद बीबार के सम्मुख परधर के समान घपन भाई की मूर्ति दम्बी -

‘विदाई नमस्कार’,—व्योत्र न घपनी टापी उठारत हुए कहा। उसका लुसा सिर निरतर वारिघ की हल्की बीछार गोला हा गया था। मार्ग भीड़ के पेड़ों के बीच से हाकर था। उन पेड़ों के घीपों पर नड़ती वारिघ भीड़ की मुइया के साथ टकरा कर एक प्रकार घीघ जैसा धव्य कर रही थी। कानबान की जगह एक साधु बैठा हुआ था। घौर गाड़ी का बाड़ा माल था घौर उसके फानों पर बाल नहीं था।

“सोग भी कैसी-कैसी बातें करते हैं !” प्योत्र ने सोचा—
 “परमात्मा समय से पहले वरसात नहीं भेजता । यह सब
 नाराजगी, ईर्ष्या और कुम्भता के कारण है—घासस्य के कारण
 इन्हें किसी प्रकार की चिन्ताएँ तो हैं ही नहीं । बिना चिन्ताओं
 के मनुष्य—स्वामिहीन कुत्त के समान हो जाता है ।”

प्योत्र काँपता हुआ पीछे की ओर निहारने लगा । उसने
 देखा कि होने वाली यह बारिश कम-से-कम जरूर भ्रष्टामयिक है
 और फिर उसे नीचे वाले वादलों के समान विचारों ने घेर
 लिया । उन विचारों से बचने के लिए वह प्रत्येक डाक पडाक
 पर थोड़ी-थोड़ी बोझा पीता जाता था ।

सन्ध्या समय जब धूमिल दाहर दूर से दिखाई दे रहा था
 तो एक रेशगाड़ी सड़क की बीच से काटती हुई गुजर रही थी ।
 इन्जिन ने एक तेज सीटी दी भाव उगसी और पृथ्वी के घम
 भन्नाकार गर्त में कुसुकर इष्टि से धोमल हो गई ।

मेव में बिताए हुए सुफामो रङ्गीन विना की
 याद कर प्यात्र प्रतीमानाब न एक नयकूर
 प्रबस्यता का अनुभव किया उसकी यह प्रबस्यता
 हमेशा वास्तव में एक प्रकार के नय का ही रूप
 होती थी । उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि
 जितनी बातें उस प्राण याद थीं रही हैं वे सब
 कभी घटित हुई हैं । और यह भी कि वह स्वयं
 नी धार धराब, सङ्गीत की ध्वनिया धराबियों
 के गानों गुन-गपाइ प्रामाद प्रमाद और प्रात्मा
 का छिन्न निन्न कर इन बाल मदिरा-मस्त की
 पुष्पा के निनाद से भरे किसी पत्थर के विशाल
 कण्ठाह में उबसा है । उन सब का सुपरास बासों
 वास सिर पर टाप रख तथा फ्रॉक-कोट पहन
 व्यक्ति में उत्तजित किया था । उसकी उत्सू जैसा
 धारों चिकन-बुपड़ हजामत किए चहर से पूर
 ग्ही थीं । इस मनुष्य में धपन माट-माट धाटा
 को शत्राव हुए प्रतीमानाब का प्रातिपन में कसा
 और फिर आर से पीसत हुए बोला था—

“मूर्ख कहों का—बुध रह ! जानता नहीं कि स्व का वपतिस्मा X हा रहा है । समझ ? प्रतिवर्ष बोला घोर प्रोका नदी के किनार यह वपतिस्मा होता है ।

यह मनुष्य बेहरे से रसाइया विलमाई दता था घोर पोशाक में उन मशालचियों के समान था जो धनी-यानी व्यक्तिओं के मृत-शरीरों को श्मशान पहुँचाने के लिए भाड़े पर किए जाते हैं । प्योत्र को प्रस्पष्ट रूप से स्मरण हुआ कि उस मनुष्य के साथ उसका भगोडा हुआ था और उसके बाद उन दोनों न साथ बैठकर कोन्याक पी पी उसमें मसाई की बरफ मिलाई थी । यह मनुष्य सुबधते हुए कहन लगा था—

रूसी आत्मा का राना सुनो ! मेरा बाप एक पादरी था घोर में है एक वपनाष्ट ।’

उसकी धाबाज बिगुल जैसी भारी लकिन फिर भी कोमल थी । वह सब लोगों को अपने मस्तिष्क प्रदलील भाषण के धन सुने शब्दों के प्रवाह में बहा रहा था । उसके शब्दों को सुन आत्मा धनिर्वास रूप से विचलित हो जाती थी ।

‘हमारा पार्थिव शरीर भ्रष्ट है ! यह चिन्ता—‘शैतान के साथ सड़ो ! उस सुधर को अपनी मस्तिष्कप्रो का धनकर दो ! पेट्या ! अपने शरीर के विद्रोह को शान्त करो । यदि पाप नहीं करोगे तो प्रायश्चित्त कैसे करोगे ? और यदि प्रायश्चित्त नहीं करोगे तो सुन्हारी रक्षा कैसे होगी ? अपना धारम—स्नान करो । क्या हम स्नान नहीं करते ? क्या शरीर पानी से नहीं धोते ? और, आत्मा ? आत्मा भी स्नान चाहती है । रूसी आत्मा के लिए रास्ता छोड़ो, जा बड़ी सपीतमय, पवित्र और महान् है !’

X वपतिस्मा—ईसाई बनान का संस्कार ।

कोन्याक—एक प्रकार की वादका जैसी कड़वी शराब ।

प्योत्र नी राया विचलित हुआ और फिर बुदबुदाना -

यह ठीक है कि हमारी आत्मा एक अनाथ पिगु है—
मूसी जा चुकी है और उपेक्षित है ।

और सब सब लोग चित्तमत्त लगे—

‘ठीक है ! बिल्कुल ठीक ।

और एक गल्ला साम दाढ़ी वाला मनुष्य जिसका भोग-सा
स चेहरा था और कान गुलाबी थे उसके धारों और लट्टू को
वह घूमता हुआ स्त्रियों की सी आवाज में चिल्लाता लगा—

स्त्योपा ! ठीक है । मैं तुम्हें बड़ा प्यार करता हूँ । मृत्यु
तुम्हें प्यार करूँगा । मुझे तीन चीजें बहुत प्रिय हैं—तुम
मर और सत्य । आत्मा के विषय में सत्य ।

और, वह रोते हुए गान लगा—

मौत की जय होता है मौत स ।

प्यात्र न मूल अन्तान के दर्शों को दाहराया—

‘गाड़ी का पहिया टूट गया टूट गया ।

उम ऐसा प्रतीत हान लगा कि वह इस सबसे स्त्यापा को
र-सा करने लगा है और वह बड़े विस्मय से उसकी आवाज
सुनने लगा । यद्यपि कभी-कभी उसने विचित्र शब्द उस भय
त कर उठते थे परन्तु अधिकांश ऐसे थे जिनसे वह घम्भीर,
गुरता के साथ विचलित हो गया उस कि कोई एक अन्वकार
र कोसाहसपूर्ण विनाश के बाद प्रकाशपूर्ण शांत प्रदय का द्वार
ल व । उस विद्यपत पान वाली आत्मा ! आश्चर्य बहुत
दि आया । उसमें एक प्रकार का परम सत्य और विपाद था
एक पुरानी स्मृति के दृश्य में बिल्कुल ठीक बैठते थे । श्रमोव
एक गन्धी पत्नी में एक सम्बा नूर यासों वाला अस्थिर

मनुष्य के समान बृद्ध पुरुष खड़ा था जो हाथों से 'धर्मात्मा' का हस्ता धुमा रहा था और उसके सामने खिर हिमाती बारह सास की लड़की सिद्धुड़ी नौसी पोशाक में घाँसे बन्द किए और ऊपर को मुह उठाए पकान से मरई हुई आबाज में गा रही थी—

‘जोवन से नहीं कोई धारा ।

नहीं डूँडता धाँति, स्वतन्त्रता ॥’

इस लड़की का स्मरण कर प्रतापानन्द कामुनी कानों वाले मनुष्य से कुछ फुसफुसाया—

“इसकी धारमा-सवोतमय है । ठीक है, यह वही है ।”

‘स्तोपा ! सास दाढ़ी वाले पुरुष ने चिछावे हुए पूछा—
“स्तोपा सब जानता है ! उसके पास सब धारमाओं की धारियाँ हैं ।

और भी धारिक उलखित भाव से सास दाढ़ी वाला पुरुष चिछाया—

स्तोपा, मनुष्य-जाति का मित्र है । कभीस परादिखोब तुम भी धिस्साओ और ज्यों घसमानता की अगम्य गुफा की ओर से असो ! मैं इसकी धारमा देता हूँ ।

मनुष्य-जाति का यह मित्र एक गढ़रिया या और कार खानेदारों की इस मण्डली की इन रंगरेसियाँ का अगुया था । वह अपने धारारियों के रेवड़ के साथ जहाँ कहीं पहुँचता, वहीं संगीत बजने लगता और भीत मूँज उठते जो कभी बड़े विपादपूर्ण होते और धारमा को बिदीर्ण करके धारमा बहाने लगते तो कभी उमत्त नृत्य भी हान जगते और इस सङ्गीत के बाद स्मृति में

१ धर्मात्मा—एक दाआ जो हस्ता धुमान से अपने धाप बचता है ।

बजते हुए बड़े ढोल की ठम-ठम और किसी नऊोरी की तीखी सी सीटी सुनाई देती थी। जब ये विपादपूर्ण विचलित कर देने वाले गीत समाप्त हो जाते तो ऐसा प्रतीत होता कि मंदिरा समय की पत्थर की दीवारें सिझुड़ कर आत्मा को पिचका रही हैं। और जब यह सामूहिक संगीत पार का और प्रावेगपूर्ण होता और नाना रग-विरगे रूपके पहल नवयुवक उछलते-कूदते नाचते तो प्रतीत होता था कि हवा से ये दीवारें हिल रही हैं और दूर हट रही हैं। बड़े प्राबल्य के साथ आनन्द से प्राबल्य और विपाद के बीच हिंसठा हुआ व्योम प्रतीमानाब इन भड़ियों में एक प्रसाधारण आन्दोलन करने वाली इच्छा से भरपूर हो जाता। उसकी इच्छा हाथी कि वह या तो किसी को मार दे, या लोगों के सामने घुटनों के बस झुक कर सब को सुनाता हुआ चिल्लाने लगे—

“मरा न्याय करो। मुझे कठोर-से-कठोर दण्ड दो।”

य ‘समाकाठ’+ नामक उन्मत्त मधुशाला में भी गए। जहाँ धूमने वाला एक फर्ल सब लोभ, नौकर भाकर मज-कुसिया के साथ धीरे-धीरे अनन्त गति के साथ घूमता था। जिसके हाल कपी तर्किए में भरे पक्षों के समान लोगों से खचाखच हांस के भरे कोन ही स्थिर थे। जब फ्रश घूमता था तो ये भी एक के बाद एक क्रम से सिर घुमाते हुए घूमते और पीतल के बेण्ड को बजाने वाले पागलों का झुण्ड दिखाई देता। दूसरे कोन में रग-विरगी स्त्रियों की गाने वाली टोसिया दिखाई देती, जिन्होंने सिर पर फूल सजाए हुए थे। तीसरे कोन में काउण्टर के पीछे प्लटा और बोतलों से सजी प्रत्मारिया थीं। जिनके ऊपर छत से सटकी लैम्पों की रोशनी फल रही थी। चौथे कोन में एक दरवाजा था जिससे अधिकारिक सभ्या में लोग एक-दूसरे को धक्कत हुए

+समाकाठ—अपन प्राय घूमने वाला पहिया या पक।

मा रहे थे। इस घूमते हुए चक्र के किनारे पर पाय
ही ये योग बगमगाते गिरते और अपनी बाहें फैलते,
हुए चिल्लाते जैसे कि कहीं बसे जा रहे हों।

मनुष्य-जाति के मित्र सबसे स्योपा ने प्रधानक प्रतियानोब
कहना शुरू किया—

“कोरो मूर्खता है, परंतु—फिर भी है बहुत अच्छी। यह
उत्तम, बलिष्ठों पर फैली हुई उगसियों पर रखी एक तस्तरी की
रूप सदा है। और ये बलियाँ एक मोटे स्तम्भ से प्रघातित हा
ही हैं। इस स्तम्भ में दो पुरे घाके सग हुए हैं और घोड़ों की
दो जोड़ियाँ उनमें से हर एक में बांधी हुई हैं और जब वे चलते
हैं तो फर्क घूमता है। बिल्कुल सीधी-सी बात है परन्तु—इसमें
भी एक रहस्य है। वेत्या ! याद रख। सभी बातों का कोई न
कोई प्रय हाता है, समझे।

उसने छत की तरफ उगसी की तो एक हरा पत्थर
उसकी उंगली पर भड़िए की मुरी घाँस के समान भमकने लगा।
एक चौड़ी छाती वाले व्यापारी ने जिसका सिर कुस जैसा था,
प्रतामानाब का घाहों से हिमाया और मुर्दे की सी पत्थरीसी
घाँसों से उसके चेहरे को निहारता हुआ बहरे प्रादमी की तरह
ठंडी प्राबाब म पूछने लगा—

“और तुम्हा क्या कहेगी, रे ? तू कौन है ?”

और, उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह पास बैठे दूसरे
प्रादमी की ओर मुड़ा और पूछने लगा—

‘तुम कौन हो जी ? मैं तुम्हा से क्या कहूँगा ? ए ?’

उसने पीठ के बल अपने को कुर्सी पर झल दिया और
बबबड़ाने लगा—

उ—ऊ—ऊ सैतान !’ और फिर बहुत जोर से

बिल्साया—

‘घामो, कहीं दूसरी जगह चले ।’

फिर, वह एक गाड़ीवान हो गया । वो भूरे घोड़ों से खींची जान वाली गाड़ी में बालक की जगह बैठ गया और सड़क पर सब धान-जान वाले लोगों को जार-ओर से बिल्साकर बुलाने लगा—

‘घामो, पावसा के पास चले ! घामो हमारे साथ !

सब बारिश में चले पड़े । गाड़ी में पाँच घामो थे, और उनमें से एक अर्धमानोब के पास में लेटा हुआ बक रहा था—

“उसने मुझे भोला दिया है—मैं भी उसे भोला दूँगा ।
उसने मुझे मैं उसे ।’

एक पहाड़ी के नीचे चौराह पर जो एक बड़ी गोस डबल रोटी के समान दिखाई दे रहा था वह गाड़ी पहुँच कर उमट गई । प्योत्र गिर पड़ा और उसक सिर और बाहों में चोट आई । उस पहाड़ी की गानी जमीन पर पड़े हुए उसने देखा कि सात सिर और जामुनी से कानों वाला वह घामो पहाड़ी पर मस्जिद की ओर घुटना के बल सरकता हुआ और बड़बड़ाता चला जा रहा है—

“दूर हटा मैं तातारों से बिल्समा करवाना चाहता हूँ ।
मैं मुहम्मदी होना चाहता हूँ मुझे जाने दो !’

सबसे सत्यापा न उसे टांगों से पकड़ लिया और खींच कर उस पहाड़ी के नीचे की ओर कहीं ले गया । तब पास-पास की दूकानों और करवान-सराय से ईरानी तातार, पुष्तारी साग और दूसरे साग फिर आए और एक पीसी उल्लाह और हरी पमड़ी वाले वृद्ध मनुष्य ने प्यात्र का डण्डे से नमस्ती करत हुए कहा—

“स्त्री खेतान !”

एक तबिये के रङ्ग के बेहरे वाले पुसिसमैन न प्योत्र को उठाया और उसे पाँच पर खड़ा करते हुए बोला—

‘यहाँ भगड़े की इजाजत नहीं दी जाती ।’

गाइयाँ फिर बस पकीं और खराब में मस्त ब्यापारी उनमें साव कर आगे भेज दिए गए । मनुष्य जाति का मित्र सबसे आगे वाली गाड़ी में था और वह गाड़ी में खड़ा हो मुक्का दिखाते हुए जोर-जोर से खिन्ना रहा था, जैसे कि वह सातव स्पीकर हो । वर्षा बन्द हो चुकी थी, लेकिन आकाश कासा और बराबना ही था जैसा कि वह कभी भी भार में भी नहीं होता था । करवान सराय की बड़ी इमारत पर बिजली बमक रही थी और अन्धकार में वह उसकी आग की बिगारियाँ-सी दिख रही थीं । और जब बतिनकोर नहर को पार करने लगे लकड़ी के पुस पर बोड़ों के सुर बोये से बजने लगे, अर्तमानोव को भय हाने लगा कि कहीं पुस टूट न जाए और वे सब सोम इस फासे स्तम्भ बस में गिर कर डूब न जाएँ ।

अर्तमानोव ने देखा कि वह इन दुःस्वप्नपूर्ण अवस्थाओं में स्मृतियों के और मादरा-मस्त सोना का भ्रष्टा न जिनके बीच लगभग वह अपरिचित पड़ा हुआ है । उसने जब खराब पी और बड़ी आसुरता से प्रतीक्षा करने लगा कि अभी आगामी कतिपय क्षणों में कोई परम आसाधारण बात होन वाली है, जो बहुत महत्वपूर्ण और आनन्ददायक होगी—या तो वह किसी असीमित दुःख में डूब जाएगा अथवा उसी तरह असीमित आनन्द में सदा के लिए परिप्सावित हो जाएगा ।

सब से बढ़ कर अनोखी बात उसकी भुँबसी स्मृति के धब्बों में आ रही थी वह एक स्त्री पाबला-मैजोधी की थी । उसने उसे एक बड़े खाली कमरे में देखा था । उस कमरे का तिहाई

भाग बातलों, रग-द्विरये प्यासा गिमासा, फसदाना तथा फसों इका
 और दीम्पन स भरे चांदी के बर्तना स सजी मेजों न घेर रखा
 था । उस-बारह साल और सफेद बालों वाला गजे सिरों वाला
 आदमी बड़ी व्याकुलता और आतुरता स उस मेज को घेर हुए
 थ, और घनक खासी कुर्सियों के बीच एक कुर्सी पर फल सजे
 हुए थे ।

काले बालों वाला स्तोषा कमरे के दीपो-बोंब खड़ा था
 और अपनी सोने की मूँठ वाली छड़ी को मोमबत्ती की तरह
 उठा कर हुकम दे रहा था—

“घरे ! मुफ्तो ! जरा टहो । अभी निगमन का समय
 नहीं आया !

किसी ने मन्द ध्वनि में कहा—

‘क्यों भौंक रहे हा ?

‘धुप रहो !’—अचानक एक मानवीय-ध्वनि आई—‘ मैं
 हुकम देता हूँ ।’

और, अचानक कमरे में अंधेरा हो गया उसी समय
 दरवाजे स बाहर डाल बजन की हल्की आवाजें आन लगी ।
 स्तोषा दरवाजे की ओर गया, उसे खोला, और एक मोटा
 व्यक्ति सामन पट पर डोल बांधे सड़खड़ात हुए, सम्भे-सम्भे कदम
 बढ़ा कर बसतल की तरह अन्दर आया और जार-ओर से डोल
 पीटन लगा

‘बूम—बूम—बूम ।’

इसके बाद उस ही ठोस और गम्भीर पाँच व्यक्ति और
 अन्दर आए जो भारवाहा धाई की तरह कमर से मुके हुए
 टीशों में बंधे खीसिए से एक पियाना को कमरे में स आए ।
 पियाना के बमकीम काले पृष्ठ पर एक नमन खी सटी हुई थी

वो अपनी प्रकाश करने वाली शुभ्रता और निमज्जता पूर्ण
 नम्रता से एक प्रकार का भय पैदा कर रही थी। वह अपने
 उग्र-वस्त्र को उठाए सिर के नीचे वहाँ का तड़िया लगाए पीठ
 के बस मेटी हुई थी। उसके छुन सटकत काने वाल पियानो के
 डकने की काली पालिश के साथ पुन मिल रहे थे और जैसे-जैसे
 उसके शरीर की रूप रेखा अधिकधिक स्पष्टता के साथ प्रस्फुटित
 होती जा रही थी और देखने वालों की दृष्टि उसकी बगलों और
 उदर के रोम गुच्छकों पर अनिच्छापूर्वक पड़ रही थी।

तबि के पहिए पर-पर कर रहे थे, फर्ष भीमे भीमे बज
 रहा था और डोल जोर-बार से डम-डम कर रहा था। इस
 भारी पहिएदार रथ को खींचने वाले मनुष्य बरा रूके और
 उन्होंने अपनी कमरें सीधी कीं। प्रतमानोब प्रतीक्षा कर रहा
 था कि सब लोग हँसते-और इसस उस परिस्थिति का समझन
 प्राप्त हो जाएगा परन्तु इसकी प्रपक्षा सब लोग लड़े हो गए
 और चुपचाप देखने लगे कि उस खी ने किस प्रकार बड़ी मन्दा
 प्रलस गति से अपना सिर पियानो के डकन से उठाया और
 उससे प्रसंग हो गई। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि वह किसी स्वप्न
 के बाद प्रती जाती हो और उसके नीचे—निशान्यकार का एक
 प्रबलप पापाण कठोरता के साथ पड़ा हुआ था। यह सब एक
 कहानी की तरह दिखाई दे रहा था। खी ने लड़े हाकर अपने
 लम्ब-काले बालों को कन्धों के पीछे की ओर झटकाया। पियानो
 की काली चमक को अपने शरीर की शुभ्र प्रभा से मज्ज करती हुई
 यह अपने पावों को चिरकान लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि
 उसके पदाघाता के नीचे पियानो की तंत्रिया धज रही हों।

फिर दो और व्यक्ति प्रन्वर आए—एक सफेद बालों वाली,
 एक पहने हुए बुढ़िया थी और एक मुख्य सौध्य-नोशाक में था।

चुड़िया बैठ गई और उसी समय उसने अपने पीले-पीले दाँतों का निखाते हुए पियाना के काले और सफेद हाथी दाँत के की-बोर्ड के साथ खेलना शुरू किया। सांध्य-भोपाक पहन पुरुष ने बायसन को कंधा की तरफ रूठाया और सात प्राँतों को ऐसे मरोड़ा जैसे कि वह किसी चीज का निघाना समा रहा हो। कमान से बायसिन के तारों को काटना शुरू किया ता उसकी पतली धावाज पियानो की मन्द ध्वनि के साथ मिलने लगी। नग्न स्त्री ने एक दम अपने सुगठित शरीर का सीमा किया। सिर पीछे का फका तो उसके काने-काने वालों न निश्चयता से उग्रत यक्ष को धाकर ठक दिया। वह निर्लज्जता से यक्ष और शरीर को हिलाती हुई धीरे-धीरे सानुनासिक स्वर न स्वप्निल और उदासीन भाव से गाने लगी।

सब लोग चुप हो गए। उन सब के चेहरे विस्मित पक्षापाय हुई प्राँतों से उसकी तरफ ही निहार रहे थे। सब के चेहरों पर एक ही भाव था। व सब धुंधली विस्मित प्राँतों से उसकी तरफ देख रहे थे। और वह स्त्री अनिच्छा-सूक्ष्म धर्तु निद्रिता-सी गा रही थी और उसके प्रतिरञ्जित पाठ कुछ यज्ञात धनमुन शब्दों को गा रहे थे। उसकी धुपसी प्राँतें सागों के कंधों की ओर धनवरत रूप से देख रही थीं। धर्तमानाथ न कल्पना भी नहीं की थी कि कभी स्त्री का शरीर इतना सुगठित, भयङ्कर और सुन्दर हो सकता है। उस स्त्री न अपने हाथ को यक्ष और कटि पर फेरते हुए सिर को हिलाना शुरू किया। और धन्तर्भ उसका सात यज्ञते हुए से दिखने लग और ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसका सम्पूर्ण शरीर ही परिवर्द्धित और विकसित हो रहा है और सामन की सभी दृश्यमान चीजा का छिपाता हुआ कबल माय अपना अस्तित्व बढ़ाए जा रहा है। धर्तमानोव मती भाँति जानता था कि यक्ष भर के लिए भी उस स्त्री ने

उसके हृदय में उस पर अधिकार करने की आकांक्षा पैदा नहीं
 बल्कि ठीक कबल मात्र एक भय और छाती के सङ्कोच को पैदा कर
 रही थी। उससे तो आदुगरी का भय ही प्रस्फुटित हो रहा था।
 साथ ही वह यह भी अनुभव कर रहा था कि यदि वह भी उसे
 साथ पसने को कहे तो वह उसका पीछे पस देगा और जो चाहेगी
 वह करने को तैयार हो जायगा। फिर भय लोगों की ओर
 देखकर उसका यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

‘सब लोग उसके पीछे पसने को तैयार हैं।’

उसका नशा कम हो रहा था और वह चुपचाप वहाँ स
 पसा जाना चाहता था उसका यह निश्चय दृढ़ ही हो रहा था
 कि उसे किसी की ऊँची आवाज सुनाई वी—

‘बाइसा, प्रकृति का आस। कुछ समझे ? बाइसा,
 माया।’

प्रतीमानोव जानता था कि, बाइसा का क्या अभिप्राय है।
 बाइसा दसदसी अङ्गुलों में हरी-हरी सुस्वर रेखमी पास का एक
 टुकड़ा होता है जिस पर पाँच पङ्क्तें ही आसमी एक घतम गहराई
 में डूबने लगता है। और यह सुनते हुए भी वह इस स्त्री की
 ओर देख रहा था और उसकी परास्त करने वाली नम्रता की
 अप्रतिम शक्ति के सामने अकड़ा हुआ अनुभव कर रहा था। और,
 जब भी उस स्त्री की भारी नवनीत-कोमल कटाक्ष उस पर पड़ती
 तो उसके कन्धे हिलते, गर्दन मुड़ती और उसकी नजर दूर हट
 जाती। उसने देखा कि भयङ्करता से डूबते सब भवमस्त लोगों
 की फटती हुई आँखें मूर्खतापूर्ण विस्मय में उसकी ओर निहार
 रही थीं। इसी प्रकार एक दिन द्रुपमोव के भागों में देखा था
 जब कि एक रंगसाज गिरजे की छत से गिर कर मर गया था।

काल पुँचराने भासों बामा सत्यापा खिड़की की चौखट पर

बैठा हुआ था। उसके मोठ घोंठ फटे हुए थे और कापते हुए हाथ से वह अपने माथे को रगड़ रहा था। उसे देखकर प्रतीत हो रहा था कि अभी फिर कर फल से उसका सिर टकराएगा। परन्तु, पता नहीं किस कारण से वह वहाँ से उठा और एक कोन में चला गया।

श्री की अंगभंगिमाएँ एक गतिशील अथिक् द्रुत और कंपायमान हो चलीं। उसका शरीर इस प्रकार मुड़न-मुड़न और मराड़ खान लगा जैसे कि वह पिमाना से झूदना भावती है। परन्तु झूद न सकती है। उसकी दुःखद चीखें और अथिक् सामुनासिक हो चलीं और उसकी ध्वनि और अथिक् रह दिखन लगी। श्री की सुगठित टांगा श्री धिरकनें उसके सिर की तज अटकनें उसके सपन पंखों के समान कसों का कंधा और बक्ष पर गिरना और फिर पीछे को लेप करना किसी पशु की खान के गिरने के समान अयकूर प्रतीत हो रहा था।

संकीर्ण एकदम बन्द हो गया और वह श्री फल पर झूद पड़ी। कान बालों वान स्यापा न उस एक पुनहरी पोशाक में डक दिया और उस कमरे से बाहर ल गया। सारी महकिस चिदान धोखन जाँर २ स तामियाँ बजान और एक-दूसरे को भक्का दन लगी। सफ़व पासाकभारी साधों के समान बटर कमरे से अन्दर और बाहर भा जा रहे थे। घोस के प्यास लड़खड़ा रहे थे। सब गर्मी के सुग दिन के समान परम तृपणा से पीने लगे। इन सोमा की अविष्टता गंभारपन और मज पर भुक उन सिरों को दलकर पूणा होन लगती थी।

इसी समय तिसगानों की एक भीड़ सामन आई। उनक नाप से यह सारा मडली नाराज-सी हो गई और सब उनकी

घोर तबतक सीरे घोर नेपकिन फेंकते रहे प्रयत्न कि वे वहाँ से बच न गए । स्तोपा ने छोर-धारावा करने वाली खियों के एक मुण्ड को वहाँ से खदेड़ा । उनमें से एक माटी, मोल-मटोल भर खदन की साम पोसाक रम थी, जो प्योत्र के घुटनों पर धाकर बैठ गई और रोम्पेन का एक व्यासा उठा कर उसके घोंठों से जगाया । अपना व्यासा प्योत्र के व्यासे से टकराते हुए वह चिल्लाई— धायो सास बालों वाले मीत्पा का स्वास्थ्य पाल करें ।” वह मञ्जर बैसी झुंकी थी और लोग उसे—पाशुता कहते थे । वह गितार बड़ा सुन्दर बजाती थी और बड़ी भावुकता के साथ गाती थी—

‘स्वप्न हुआ हुआ सुन्दर प्रभाव का ।
स्वप्न हुआ-नील-स्फटिक भाकाश का ॥”

घोर, अब उसकी मधुर ध्वनि इस पव पर बन्द हुई—

“स्वप्न हुआ विपत्त नव-पौवन का ।
मधुर, बिमल कम्यापन का ॥”

घर्षामानोव ने उसके सिर को मित्रता और पितृ-पूर्ण भाव से छोटबना के लिए बपबपाया ।

‘रोघो मत ! तू अभी नौजवान है, डरने की क्या बात है ?”

रात्रि-समय उसका घालियन करते हुए उसने अपनी घाँबें खोर से भाँबीं, धाकि वह एक और की पावला मैनीसी—का भसीनीति स्मरण कर सके ।

अपने होश के कुछ क्षणों में उसने बड़े विस्मय से अनुभव किया था कि यह कुमागगामी पाशुता उसे प्राश्ययजनक मंहगी पढ़ रही है । उसने पुन सारा—

“कसी मञ्जर-सी है ।”

मह बड़े अभन्ने की बात थी कि मत के समय वे धीरों

किस चतुरता से लोगो की जेबा स पसा निकास सेती थीं और मदिरापान-पूण निमग्नता के कायों स कमाए पैस का किस मूलता स खर्च भी कर देती थीं । उस लागों न बताया कि कुरो बस बेहरे वाला पयम का बड़ा ब्यापारी पाबसा मैनोंली पर दस हजार खस खप कर चुका है और वह उसक मन प्रयट होन पर प्रतिबार तीन हजार खस उस देता रहा है । एक जामुनी स काना बाल ब्यापारी न सी खस का नाट सकर उसे मामबता की ली स बसाकर अपनी सिगरट मुनयाई और जेब स एक नाटा की गद्दी निकास कर उसक बख म बसाकर वाला—

‘प्यारी जमन मानो मेरे पास धनी एम बहुत हैं ।’

बहु सब खियों का ‘जमन’ कह कर पुकारता था । घटा मामाव भी प्रत्यक खी में घनाबेष्टित निमग्नता देखन लया । इस माटे-मोटे बालों वालो पाबसा के रूप में ही बहु देखन और अनुभव करन लगा कि सब खियाँ जानाक मुख और घिराव करन वाली साहसी होती हैं । वह उन्हें घनुसा क भाव स देखन लया । उस जब अपनी पत्नी का स्मरण प्राया ता उसन दया कि उसमें भी एक बिराष भावना दबो थी ।

‘मुन्दर कहीं की,’ उसन सब एकत्रित मुन्दर तरुण खियों का जा गुलाब की तरह मुन्दर तथा जीवनपूण थीं और जा उसका स्मृति म धा रहा था—दखत हुए साथा ।

उसकी समक में नहीं धा रहा था कि इनका मतलब क्या है और एसा क्या है ? साग क्या इतनी महनत करत हैं अपनी धंधों की जञ्जीरों में जकड़ रहत है और फिर ससार म अपना ही प्रति बहर बने रहत हैं । यह कवन इसतिए ही कि व अधिक-अधिक बन एकत्रित कर सकें और फिर इस सम्पूर्ण गाड़ी कमाई

का जमाने को बड़ी आसानी और इच्छा से ध्वनिधारिणी और कुमार्गगामी स्त्रियों के पाँवों पर उसे नुटा देते हैं। और, यह सब हमारे समाज के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। ये विवाहित हैं, सम्पत्तिशाली हैं और बड़े-बड़े कम-कारखानों के मालिक हैं।

शायद मेरा पिता भी इसी तरह भटकता।' उसने सग-भग एक दृढ़ विश्वास के साथ सोचा। उसने जीवन की इन रग-रस्मियों में हिस्सा नहीं लिया बल्कि एक आकस्मिक अनिच्छुक दर्शक के रूप में ही वह वहाँ था। परन्तु य विचार धराब से भी अधिक मदमस्त करने वाले थे जो धराब से ही बुझाए जा सकते थे। तीन सप्ताह तक यह मदिरापान के भयंकर दुस्वप्न में डूबा रहा जो अधानक प्रसक्तों के आगमन से ही भग हो सका था।

ज्येष्ठ अर्धमासाव फर्य पर एक पत्थर से पत्थर जैसे कठोर गड़ पर पड़ा था। उसके समीप बर्फ की एक बास्टी, बस की कुछ बोटसे एक प्लेट सुपर क्रास जिसके साथ दासजम मूसी प्रचुरता से रखी हुई थी। सोफे पर नताम्या की तरह भौंहों को उठाए मुँह खोले पादुता सो रही थी। पादुता की टाँगें सफेद और नीली-नीली सिराघों वाली थीं सफेद घोंठे वाली एक टाँग फर्य पर सफेद मछली-सी लटक रही थी। सिड़की के बाहर हज़ारों तृपित मसे इस अजिल रूसी व्यापारी मार्केट में चिल्ला रहे थे।

धराब के नसे स भरे सिर में जो विपाक शरीर की पीड़ाओं की धड़कन से बज रहा था अर्धमासो ने विपाक स पुरानी घटनाओं पर और पिछली रात की रगरेसिया के बारे में विचार किया। लेकिन सभी अधानक प्रसक्तों के कमरे में ऐसे था पहुँचा उस वह दीवाल फाड़कर प्रगट हुआ हो। कमरे में घुसते हुए उसने फरा पर जोर स छोड़ी पटकी और सँभलते हुए कमरे में प्रवेश किया। प्योत्र के पास आकर वह तेजी से कहल

समा—

“क्यों क्या बात है जो पीठ क बल सेट पड़े हो ? कब सारे दिन और सारी रात और घब सुबह तक मैं तुम्हें तमाश करता रहा हूँ और अब यहाँ आ पहुँचा हूँ ।

उसने उसी समय बटर का बुलाया और लमनड बोर्का और बर्फ लान का आह्वार दिया । साँके को घोर मुँह झुंझुकर उसने पापूता के कन्या को घपघपाया ।

‘उठो बारिदिया’ !

घोर, बारिदिया ने एकदम बिना साँके सोल ही बकना शुरू किया—

“तुम जहन्नुम में जाओ लेकिन मुझे मत छोड़ो ।

जहन्नुम तो तू अपना घाप जाणो - फलबसई ने बिना किसी टोप क प्रमो म कहा । घोर नवमुबती क कन्ये पकड़ तम बैठा दिया फिर उस हिंसा कर दरवाज की घोर इशारा किया ।

बिल्ली कहीं की ।

‘इस मत छोड़ो प्योत्र न कहा । इस पर उसका भाई हँसा और उसने साँखना दते हुए कहा—

“कोई बात नहीं । जब चाहेंगे हम फिर नुमा सकते हैं ।”

‘घाह पतान ! ख ने कहा घोर आजाकारिणी की तरह अपने कपड़े पहनने लगी ।

फलबसई ने बाबटर को तरह हुकम देना शुरू किया—

“प्योत्र छोड़ो हो जाओ । अपनी कमीज उतार दो घोर जरा बर्फ रसड़ा ।’

1 बारिदिया—कसी भापा में नवमुबती को कहत है ।

पाकूता न फर्श पर गिरे अपने तुड़े-मुड़े हूट को उठाया और उमर्रे वालों वाले सिर पर रखा । झुककर छोटे में दसते हुए वह वाली—

‘कितनी सुन्दर है रानी !’

और निद्रापूर्णा जैमाई सेते हुए उसने टोपी को फर्श पर फेंक दिया ।

‘प्रन्था नमस्कार मीस्या । याद रखना, मैं सिमान्की में ठहर रही हूँ मेरा कमरा नम्बर १३ है ।’

प्योत्र को उसके जाने पर बहुत दुःख हुआ । बिस्तर पर सेटे-सेटे ही उसने माई से कहा—

इस कुछ दे दो ।

कितना ?

“यही पचास ।”

‘यह बहुत अधिक है,’ असक्सेई ने उस स्त्री के हाथ में फामज के कुछ नाट देकर उसे बाहर निकाला और परवाजा मजबूती से बन्द कर दिया ।

‘तू बड़ा कंजूस है । प्योत्र ने उसे ताना बते हुए कहा— “कस ही इस हूट के लिए उसने इससे भी ज्यादा खर्च कर दिया था ।”

असक्सेई आरामकुर्सी पर बैठ गया । उसने अपने हाथ छड़ी की मूठ पर रखे और उस पर अपनी टोपी टिका कर बैठ गया । वह खड़ी सुधी घासन की ध्वनि में बोला—

“पेस्या ! यह तू क्या कर रहा है ?”

‘पी रहा है,’ बड़े माई ने मधुर ध्वनि में कहा । फिर वह खड़ा हो गया और तेजी से घरीर पर बरफ रगड़ते हुए

छीकने लगा ।

'भाई पियो जकर परस्तु बुद्धि मत छाओ । लेकिन यह मया कर रह हा ?

"क्यों, क्या बात है ?

'अलबसई उसक समीप आया और अपरिचित की तरह मन्द स्वर म पुछने समा—

'तुम्हें कुछ पता नहीं ? नूस गए हो ? तुम्हारे खिलाफ शिकायतें है । तुमन एक बकीत का जबड़ा तोड़ा है और एक पुलिसमैन का नहर में फेंक दिया है ।

यह दर तक प्यष्ट प्रतीमानाव की दरारता और शिकायतों का गिनाता रहा । लेकिन ज्येष्ठ प्रतीमानाव को लगा कि यह झूठ बोलता है और डराना चाहता है ।

उसन पूछा— 'किस बकीत का ? सब बकबास है ।

"मैं बकबास नहीं कर रहा । उसी काम नामों काम ब्यक्ति को—उसका नाम मैं मूल मया है ?

'हाँ उसक साथ पहले कुछ भगड़ा ता हुआ पा । —व्याय न हाथ में आते हुए कहा । परन्तु उसका भाई और कटोरता स कहता गया—

'घोट तुमने इन भस प्रतिष्ठित घादमियों को गालियाँ ब्याँ दी ? और, अपन सार्गा को भी ?'

"हाँ-हाँ, तुमन ! तुमन अपना पत्नी का नी गालियाँ दी । तिखोन, मुझे और किसी बन्ध को भी गालियाँ न थी और फिर रत हुए मुदबुवान सग । फिर तुम बिज्ञाए नी—'भशाहन, इसाक सब नहें है !' इस सबका क्या मतलब है ?'

प्योन का दिमाग भय स भर गया और यह प्राराम

कुर्सी में गिर पड़ा ।

“मुझे कुछ नहीं पता ।”

“यह कोई कारण नहीं है और सज़ा के पीछे की तरह ।” — प्रसन्नसेई सगभग चिल्लाते प्रारामकुर्सी से उछलते हुए बोला । जो बातें होश-हवाय में प्रावनी में भी बकता है ! और, क्या इसके पीछे कुछ बात और है । जो बातें होश-हवाय में प्रावनी में भी बकता है ! और, क्या सोचता है वही पाप के नशे के बारे में क्या शराबखानो में प्रजीव बात है । प्रेसू बातों के बारे में क्या शराबखानो में प्राकर विज्ञाया करत है ? और प्रवाहम और उसकी बलि इत्यादि के बारे में बकशास ? तुम समझते नहीं कि तुम इसस सारे कारोबार को ही गड़बड़ में डाल दे रहे है और मुझे भी बदनाम कर रहे हो ? तुम क्या समझते हो कि तुम यहाँ भाप का स्नान कर रहे हो जो यहाँ अपन को नगा कर सकत हा । यह भी प्रकृष्टी बात हुई कि तुम्हारी इस बकवास के समय मेरा मित्र सक्त्येव यहाँ मौजूद था और बह समझ गया कि तुम सिर से थोटी तक बोदका से भरे पड़े हो । उसने तार मेज कर मुझे बुनवा लिया और मुझे प्रादि से प्रस्त तक सब सुना दिया । पहले सब हँसत रहे और फिर तुम्हारी बातों को उन्होंने ध्यान से सुनना शुरू किया—और जान गए कि तुम किस प्रकार के बकवासी प्रावमी हो ?”

“शराब पीकर तो सभी बकवास करते हैं”—व्योत्र ने भीमे से कहा । भाई के प्राया से बह फिर नशे में प्रात सगा । परन्तु प्रसन्नसेई कहता ही गया और प्रस्त में उसकी प्रावाब काना फूँसी की तरह भीमी हा गई—

“वे सब किसी विषय में बकवास कर रहे थ, और तू— तुमिपों के बारे में । प्रकृष्टा हुआ कि सक्त्येव वहाँ मौजूद था और उसने बड़ी समझ से सबको पुल्नु मर २ कर शराब पितादी ताकि, सब मुन हुए शब्दों को भूस जाएँ । तू जानता है, हमारा

कारोबार राजनीति की तरह है। सक्षय घाज हमार मित्र है और कल घार घत्रु भी हो सकता है।'

प्यात्र घपन सिर का पकड़ कर बीबार क सहारे बैठ गया। वह चुप बठा रहा। गभी क कासाहस म बीबार क कापती सी दिखाई व रही थी और उस एसा प्रतीत हान समा कि इन कम्पना स उसका नशा उतर जाएगा और उसक दिमाग की गड़ बड़ घोर भय दूर हा जाएंगे। उस बिल्कुल नी पाद नहां घा रहा था कि उसका भाइ क्या कह रहा है।

न्यायाधीश की सी भाई की वह घावाज जस वह उसस बड़ा हो उस घुरी प्रतात हा रही था। घाम वह घोर क्या कहगा इसकी प्रतीक्षा उस बराबनी दिख रहा था।

तुम्हे क्या हा गया है ? — फमर में भटक क साथ घसत हुए उसने जवाब तनब किया — 'तू निकिता क पास गया था, यही कहना चाहता है न।'

हां, मैं उस मिसन गया था।

घोर मैं भी गया था। जब ठार का उत्तर घापा कि तू बहीं नहीं है ता मैं भी बहीं जा पहुँचा। हम सब डर गए कि कहीं तू मर तो नहीं गया।

मेर दिमाग म पता नहीं क्या गन्द भर गया था — प्योत्र न घीर स बहुकर घपराघ स्वीकार किया।

घार इधलिए तून यह घच्छ सोचा कि लाग म यह गन्द उच्छात ? तू समझ स यदि तू एसी बातें करगा ता सार कारा बार का बदनाम कर संग। घोर बहीं कौन स बलिदान की बात है ? तू ईरानी ता है नहा जा नइका क साथ खिसबाइ करता है ? कंसुा नासमझ बनता है। घपन हाप का बहर पर सा कर दात्री क बातों का कधी कठत हुए प्यात्र न उद्गसियों क

वीच से कहा ।

‘यह सब इत्या के कारण हुआ है ।’

धीरे-धीरे रुक-रुक कर जैसे कि वह घंघेरे में रास्ता टटोल रहा हो उसने इत्या के साथ हुए भगड़े के बारे में भाई प्रसन्नसर्द को सब कुछ बता दिया । उसे देर तक धोसना नहीं पड़ा । उसका भाई बहुत संतोष के साथ भीमे से बोला—

‘कु-ह ! यह तो कोई बात नहीं । और लक्ष्यब ने इस सब को भद्र एशियाई तरीके से समझया । अन्ध्या इत्या के बारे में ? नकिम भाई । तुम मुझे क्षमा करो, यह कोई—बुद्धिमानी नहीं । व्यापारियों को सब सीखना चाहिए । उन्हें जीवन के सब क्षेत्रों में प्रागे बढ़ना चाहिए—तुम्हारी तरह नहीं ।’

बहुत देर तक वह बड़े प्रभावपूर्ण और सुन्दर तरीके से कहता रहा कि व्यापारियों के सङ्का का इच्छीनियर होना चाहिए, सरकारी नौकरियों और फौज में अफसर होना चाहिए । सिङ्की के बाहर बहुत शोर हो रहा था मियटर की घोर गाड़ियाँ जा रही थीं बर्फ के ठण्डे पेय-यदाथों और घाइस-स्कीम बेचने वाले ओर-ओर से बिल्ला रहे थे और सब से बढ़कर शोर पैथीसियन से उठन बास सगोत का हो रहा था जिस थाजीसवासियों ने नहर के पानी के ऊपर लम्बों पर सोहे और सीधे से बनाया था । डोल के डमाकों से पावता मनोली का स्मरण हो रहा था ।

‘भरे अन्दर किस प्रकार का गन्ध घुस आया । —ज्येष्ठ प्रतमानोय ने बुहराया । उसने एक हाथ से कात में उङ्गसी डामी और दूसरे हाथ से मोड़े के गिलास में बोदका डाली । भाई न मरान की बोतल को दूर हटा कर उसे साथभान दिया—

‘देसो फिर अधिक पी जासोये । अन्ध्या भरे मिरान को

ही सो,—वह इञ्जीनियर होना चाहता है मैं बहुत खुश हूँ । यह विदेश जाना चाहता है—यह घोर भी अच्छी बात है ! यह सब हमारे घर में ही रहना है पर से बाहर तो नहीं जाना । तुम इस बात को समझ लो कि हमारी आयदाव कम-कारखाना ही है । यही हमारी प्रधान शक्ति है ।

प्योभ इस सब को समझना नहीं चाहता था । अपने भाई के बुद्धिमत्ता और प्रभावपूर्ण भाषण को सुनने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी । वह सोच रहा था कि उसका यह पाचाल, प्रगल्भ भाई बहुत बुद्धिमान हो गया है और कई मामलों में उसने अपने से अधिक धनी और सम्भवतः अधिक बुद्धिमान लोगों का भावर प्राप्त कर चुका है जिनके हाथों में राष्ट्रीय पैमाने पर व्यापार की सब बोरियाँ हैं । उसका भाई साधुगृह में सिपा पड़ा है जो ज्ञान और दया कमा रहा है । और वह—स्वयं भाग्य की क्रूरता का शिकार बना हुआ है । ऐसा क्यों है ? उसने कौन से अपराध किए हैं ?

घोर तूने इन ध्यमिचारी जीवन में भन लोगों को क्यों गालियाँ दमी शुरू कीं !—असबसेई न भीर-भीरे प्रेरणा बते हुए कहा । 'यह ध्यमिचार नहीं परन्तु प्रतिरिक्त शक्ति है । वकील—बड़ा बदमाश है परन्तु समझदार है । वह सब बातों को ठीक-ठीक समझता है । भेदक—लोग बुजुग हैं बहुत स इनमें बुद्ध हैं, परन्तु दुराचारिता और घोर घराबा ता उनम नोजवानों जैसा है । घोर, हाँ नोजवान भी घोर-घराबा और दुराचार में पड़त है परन्तु अपनी बड़ती हुई शक्ति के कारण ही । घोर, फिर तुम्हें इस बात का नी बिचार करना चाहिए कि हमारे घरों में कियी सीधी-सादी है उनम जीवन का मजा नहीं व नीरस हैं । मैं आला के बारे नहीं कह रहा । मैं उसक बारे में नहीं कह रहा—यह तो एक बिषय खी है ! हमारे यहाँ ऐसी

मूर्ख—बुद्धिमान खिया भी हैं, जो इतनी झंभी ह कि घाँसों से घुराइयाँ ही देखती हैं । आत्मा भी ऐसी ही है । उसे कोई बात कुरी नहीं लगती । वह न तो घुरा देखती है और न घुरा मानती है । परन्तु, नतास्या के बारे में एसी बात नहीं । तूने सोगों म उसके बारे में ठीक ही कहा था— वह एक परेसू मशीन है ।”

क्या मैंने ऐसा कहा था ?” प्योत्र ने उदासीनता से पूछा ।

“सक्त्येव ने यह बात अपने आप तो गढ़ी नहीं ?”

प्योत्र भाई स और बहुत सारी बातें पूछना चाहता था, परन्तु उसे डर था कि असक्त्येई को कहीं और बातें याद न आ जाएँ बिम्हें वह भूल रहा है । उसके हृदय में भाई के प्रति भय, घ्राणका और ईर्ष्या क भाव पैदा होने लग ।

‘यह अधिक होशियार हुआ जा रहा है । उसने असक्त्येई में एक प्रकार की आलबाजी देखी जिसमें सोमड़ी की तरह पलटना और तत्परता का भाव भी था । प्योत्र उसकी बाण जैसी घाँसों सुनहरे वाँत जो उसके ऊपर क घाँठ क हिलने से कम कते थे उसकी धोली धोली मूर्छें, जा फोजी अफसरों की तरह हिलती थीं—उसकी बारीक कटी बाड़ी—उसके पक्षी के पंखों क समान पकड़ वाली उङ्गलियो और सासतौर से, उसके बाएँ हाथ की तर्जनी जो हवा में समातार तरह-तरह (के नमून ही बनाती थी उसको देखकर बड़ा डर लगता था । [असक्त्येई छोटी सलेटी रंग वाली जैकेट से एक रीताम, बर्हिमान वकील के समान प्रतीत होता था । एक एसा वकील जो दूसरों क मामला म पढ़ताम करता रहता हा ।

अपानक प्योत्र की इच्छा हुई कि असक्त्येई यहाँ से टस जाए ।

“छाड़ा भी, मैं जरा साना चाहता हूँ,”—उसने भाँखें बन्द करके हुए भाई से कहा ।

‘ठीक है यह समझ की बात है’ भाई ने सहमति प्रगट की ‘आज तुम वहीं बाहर मत निकलना ।’

‘देखो, बच्च की तरह कैसा मुझे सिखा रहा था ! जब घसकसाई बाहर चला गया तो प्यास न बिलकुल हुए सोचा । बाद में वह काने में बिलमबो क निकट हाथ-मुँह धान क लिए गया और वहाँ ठिठक कर खड़ा हो गया । उसने देखा कि बिलकुल उसक जसा ही कोई मनुष्य उसक समीप टहल रहा है । उसक बास बिधर हुए, बहुरा बिगड़ा हुआ और भाँखें डर से सूजी हुई थीं वह धपन लास-लास हाथों से धपनी मांगी वाली बगलें और छाता का टटोल रहा था । पहले कुछ क्षण तक प्योत्र का इस पर विश्वास ही न हुआ था कि यह दण्ड में उसका ही प्रतिबिम्ब है । एक उदासी भरी मुसकान से वह पुन बरक क टुकड़ से धपन चहरे, मदन और छाती को धान लगा ।

पलू किसी गाड़ी को लय कर जरा चहर हो धाऊँ ।’ उसने निश्चय किया । उसने बैकेट को धभी धाधा ही पहना था कि उस उतार कर कुर्सी पर फक दिया और फिर धपनी उगलिया से नुसान वाली धप्टी के बटन का जार जोर से बजाने लगा ।

पाप नामों, दला गूब प्रच्छी तरह पका के साना !’ उसने नोकर को धाशा दी—‘देखो ! साथ में कुछ नमकीन भी लाओ । और हाँ बादका भी ।’

उसने गिड़की से बाहर भाँककर देखा—धनी तक दुकानों के पीछे-पीछे किबाड़ बन्द थे परन्तु सड़क पर लोग धा-जा रहे थे और उष्ण प्रग्नकार में वे सड़क के पत्थरों के साथ मिश्रित थे

दिल्ललाई देते थे । पिपेटर के दरवाजे में एक हिस्-हिस् करती हुई लम्ब धुंधला पीला-सा प्रकाश छोड़ रही थी और कहीं समीप ही स्त्रियाँ गा रही थीं ।

“मध्दर कहीं की ।”

“क्या मैं सफाई कर सकती हूँ ? किसी ने उसके पीछे से कहा । वह एकदम मुड़ा और देखा कि उसके पीछे ही साफ कराने वाले दूध और चिपड़ों को हाथ में लिए एक प्राँच वाली एक मुढ़िया खड़ी है ।

वह पुपचाप बिना कुछ बोले वरामदे में पहुँचा तो वहाँ एक ब्यक्ति से जा टकराया । उसने धुंधले खीरों वाली ऐनक और कामा हैट पहन रक्खा था । यह ब्यक्ति प्रधसुने दरवाने से कह रहा था—

‘हाँ हाँ और कुछ नहीं ।

यहाँ सब कुछ गड़बड़-सा दिलाई दे रहा था । वह इन प्रच्छन्न धब्बों का अर्थ सोचने लगा । इसके बाद ज्येष्ठ अर्ध-मानोव एक गोल मेज पर बैठ गया जिस पर छोटा-सा समबार भाप से भन-भन कर रहा था और उसके ऊपर एक लम्ब की चिमनी धीमे-धीमे हिल रही थी, जगता था जैसे कोई एक अदृश्य हाथ उसे हिला रहा हो । उसकी स्मृति में विभिन्न विभिन्न प्राकृतियाँ— ऐस सोंगों की प्राकृतियाँ आ सराव के नक्ष मं धुत थे सरह-उरह की बरबास करती हुई गीठ गा रही थीं । भाई क धमानपूण भापण के टुकड़े, और किसी की बमकती हुई प्राँचें सब उसके सामने एक बसते हुए चित्र की तरह धूमन सय । परन्तु, बाबजूद इस सबके उसका दिमाग सामी और अचकारपूर्ण-सा था । केबल मन्द प्रकाश की एक क्षीण किरण ब्रेस रही थी और इसी गर्बिनि बायुमंडल में सब प्राकृतियाँ और मूर्तियाँ नाबसी दिलाई दे रही थीं । और

इस कारण वह किसी भी बात पर अपने विचार स्थिरता से केन्द्रित नहीं कर सकता था ।

उसने गरम-गरम कढ़ी चाय पी तो उसकी जीभ जल गई । फिर उसने थोड़ी-सी बोझा भले में डाली । उसका तालू घोर मुँह जरा बसे । इस सबसे उसे नशा नहीं बढ़ा परन्तु एक प्रकार की बचैनी पदा हो गई । घोर वह अनुभव करने लगा कि कढ़ी खला जाए । उसने फिर घब्टी बजाई । एक नौकर घन्घकार में खैरता हुआ-सा उसके सामने आया जिसके न बहरा था घोर न ये बात । वह उसे हड्डी की मुट्ट बाली छड़ी के समान लगा था ।

‘थोड़ी-सी हरी सिकर’ साधो बान्का हरी सिकर, जानते हो कंसी होती है ?

‘हाँ-हाँ श्रीमान्-सायेंब ।

तू बान्का तो नहीं है ?

‘नहीं, नहीं मैं कन्स्तामिन हूँ ।’

‘घबघा जाओ !’

जब नौकर सिकर से आया तो प्रतामानोव ने पूछा—

‘बया फौजो सिपाही हो ?’

‘नहीं ।’

‘बात तो तुम सिपाहिर्षों की तरह ही करते हो ।’

‘काम दोनों एक ही हैं । सिपाही घोर नौकर—दोनों को हुकुम बजाने पड़ते हैं ।’

प्रतामानोव पाड़ी देर तक साबता रहा घोर फिर उसे एक

१ सिकर—एक प्रकार की शराब ।

एक खस देकर सलाह देने लगा—

‘देख सू किसी का हुनम मत बना । इन सबको बहनुम जाने दे । तू, बस मसाई की बर्फ बंध । धीरे कोई काम मत कर ।’

लिकर मन्ने की राब जैसी माड़ी की तथा धमोनिया जैसी तेज धीरे कड़की । परन्तु इससे प्योष का सिर किसी तरह स्वच्छ हो गया । अब उसे बीज साफ-साफ देखने लगी जेस-जसे उसका दिमाग ठीक हो रहा था उस गली से जाने मानो ध्वनिया भी हल्की धीरे एक बूसरे से मिलती सुनाई देने लगी । यह हल्का धीरे-धराबा कहीं किसी धीरे बहता हुआ सा मासूम हाँ रहा था जो अपने पीछे नीरवता छोड़ता जाता था ।

‘तुम्हें हुकुम प्रदूनी करनी है क्यों ऐसी बात है ? भर्ता मानोष ने सोचा । ‘धीरे किसकी ? मैं स्वयं मासिक हूँ किसी का नोकर सो हूँ नहीं । मैं मासिक हूँ या नहीं ?’

परन्तु, ये सब बिचार एकदम छिन्न-भिन्न हाँ गए धीरे सुप्त झाकर उसके सामने भय पैदा करन लगे । धर्तमानोष ने अपने सामने उस ब्यक्ति का देखा जा उसके जीवन में धाराम धीरे ऐसा विश्वासपूर्वक जीवन व्यतीत करने में बाधा बन रहा था जेसा कि समझदार लोग की तरह धमकसई जीवन गुजार रहा था । यह व्यक्ति जो बाधा डाल रहा था चौड़े चेहरे धीरे दाढ़ी घासा एक मनुष्य था । वह उसके सामने समार क पीछे बैठ हुआ था धीरे फिर जिसने चुपचाप बडे अपने बाएँ हाथ से दाढ़ी का पकड़ रखा था धीरे हथेली से पास धामे हुए था । वह बडे बिपाद से व्योत्र धर्तमानोष की तरफ देख रहा था जेस वह उसकी भर्सना कर रहा हो धीरे कसणा प्रकट कर रहा हो । उस ब्यक्ति की धार धूरते हुए वह रोन लगा धीरे एक प्रकार के बिपाक धामू उसकी लाल पजकों से दाढ़ी पर टपकने लगे । एक

बड़ी मक्खी उसक चेहरे पर घा बठी जैस कि वह किसी मुँह क चेहरे पर बठी हा, और फिर भीहा के ऊपर रुक कर, उसकी घाँसों म भँकन लगी ।

“क्या बदमाश क बच्चा ? — प्रथमानानाब न अपन घत्रु का सम्बोधन करते हुए पूछा । परन्तु उसका घत्रु नहीं हिला और न उसन कोई जबाब ही दिया । घस, उसक घ्राठ धीम-धीम स हिलत रहे ।

‘क्यो, घब क्या गुनगुना रहा है ? प्योभ प्रथमानानाब बड़े घ्राह्लाद स चिल्लाया—‘नीच कहीं क । मुझे इस हासठ म पहुँचा कर घब तू रा रहा है ? घब प्रफसास करता है ? घो फ ।’

उसन मेरू पर रली एक बाठम का उठायो और हाथ घुमाकर ओर स सामन घ्रादमो क गज सिर पर द मारी ।

बोतस टूटकर मबार और ठस्तरिया के साथ एक कोसा हल करती मज स गिरी । घासपास क माग जमा हा गए । यह छोटी-सी भीड़ दा हिस्सा म बँटकर, धीरे धीरे घोर बङ्गन लगी । एक घाँस वाली घोरठ ममबार का उठान के लिए भुकी घोर उसक सामने सीपी खड़ी हो गई ।

फर्त पर बठे हुए प्रथमानानाब न घिकायत भरी घनक घाबात्रे मुनी ।

“यह राठ में जब सब साग सोए हैं ।

“सोपा ताड़ दिया है !

‘तुम जानत हा, यह कोई फँसन तो है नहीं ?

प्रथमानानाब न अपन हाथ इधर उधर हिलाए जैस कि वह फहीं तैर रहा हो घोर फिर कराहा—

“यह मक्खा !

प्रगले दिन संध्या समय प्रसक्तेई वही तेजी से घन्वर घाया
 घोर डाक्टर की सी चिन्ता से घोर जैसे साइस पांके की परीक्षा
 करता * भाई की घोर देखने सगा । अपनी मूर्खों में उद्गलियों
 स कंधी करने हुए वह बोला—

'तू भलमनसाहत से बिल्कुल गिर चुका है । क्या ऐसी
 हानत में घर पहुँच सकता है—कभी नहीं । घोर साथ ही तू
 मेरी यहाँ क्या मदद कर सकता है ? तेरी दाढ़ी को छोटने की मस्-
 रत है प्योत्र ! जूते भी नए खरीदन पड़ेंगे—तेरे जूते गाड़ीवानों
 जैसे हा रहे हैं ।

अपने दाँतों को भीचता हुआ ज्येष्ठ अर्धमानोव भाई के
 पीछे-पीछे नाई की दुकान की घोर जम पडा । वहाँ प्रसक्तेई ने
 बड़े रीब घोर वागीकी के साथ हिदायत देनी शुरू की कि दाढ़ी
 घोर सिर के बाल फितने घोर कंने काटे जाएँ । इसके बाद
 प्योत्र के लिए जूते खरीदते समय उसने अपने लिए भी एक जोड़ा
 लिया । इसके बाद प्यात्र न जब शीघे में बेहरा देखा तो अपने
 को एक मनक के समान पाया । उसके जूते महराब के नीचे कुछ
 तंग से थे । परन्तु वह बिल्कुल गुप रहा क्योंकि जानता था कि
 जो कुछ उसका भाई कर रहा है वह ठीक है । अपने बाल
 कटवाना घोर नए जूते बदलना—मब जरूरी तो था ही । होग
 म घाने पर घोर मस घादमियों के बीच बैठने के लिए यह भी
 जरूरी था कि वह दुराधारिता घोर नये के भारी दु खर बाक
 को उतार कर फेंक दे ।

परन्तु अपने मस्तिष्क के पुन्य घोर बिपास शरीर की
 बकान क बीच अपने नाई को दबते हुए उसने भाई के प्रति ईर्ष्या
 घोर घावर का मिश्रण—एक गुप्त मानन्द घोर बिरोप का मिश्रण
 अनुभव किया । पतला सम्बा कुर्तीसा घोर सब नजर बासा

व्यक्ति अपना छोटी हिंसाता हुआ उसके सामन मौजूद था और कारोवारी जूग की अनृष्ट तृपणा क उबर का घुर्मा और चिंगारियाँ चारों धार बिखर रहा था । नाइ क साथ मन क एक बर्दिया बलपान-गूह क प्राइबट रुम में बड़-बड़ प्रमिद व्यापारियों क साथ वापहर का नाजन नाते हुए प्योत्र न बड़े धाम्मव न अनुभव निया कि प्रसकई एक पत्रवर विदुषक का तरह बात करता है और प्रपन यनी साधियों का मनारजन करता है । परन्तु इन सब भोगों में कोई नो उसक इस ममम्पन का अनुभव महा करता । वल्कि सभी उसका धावर कर उनकी कौतूहलपूग बातों का बड़ ध्यान स मुन रह है ।

एक बड़ी माटी दाड़ी और भारी भरकम बदन क कपडे क कारमान क मामिक—कमालाव न अपनी यावर जैन रग वाली धैगुणियों का प्रसकई की धार हिंसाया और अपनी बल जनी धाँसों का मटकाता हुआ और हर दा-एक टप्पों क वाव घोटा पर जीभ का फेरता हुआ बोला—

“प्रस्यागा नू बडा कुदाल और बनुर है । नू मुनस बाभी स गया ।

“इर्मायाइ इवानाविच ! —प्रसकई धानन्द स चिहाना—
‘यह तो मुकाबिना है ठीक है न ?

बहुन धन्दा । उँना नठ मुण्य का इकरा पत्ता ।

इमालाइ इवानोविच !—मैं ता धनी साथ रहा है ।

कमालाव न सिर हिलाया हाँ हाँ ! सीखना हा चाहिए ।

सञ्चना ! प्रसकई न धानन्द नरी धनि में दृष्टिधेप करने हुए ध्यग म कहा— नरा सडका मिरान बड़ा बुद्धिमान् है— इन्जिनियर होन जा रहा है । उसन मुझे बनाया कि सिरातुन नगर में एक बिद्वान् रहता था । उसन राजा क सामन प्रस्ताव

रक्सा कि यदि मुझे खड़े होने की कोई जगह मिल जाए तो मैं सारी जमीन को उलट दूँ !”

घोह ! क्या अजीब बात है ।

‘बिल्कुल उलट दूँ’ । सज्जनों ! ऐसी अवस्था में हमें कहीं न-कहीं खड़ा होना होगा । हमें किसी परम बुद्धिमान् व्यक्ति की जरूरत नहीं । हम भी तो उलट सकते हैं । वस, हमें इन अप्सरों के पलटने की जरूरत है । सज्जनों ये दरवाज़ी सरदार भोग—अथ अन्तिम साँसें से रह रहे हैं—हमें इनसे कोई स्काबट नहीं । अब देश के अफसर भी हममें से घोर हमारे ही होने चाहिए । हमें सभी तरह के प्रावियों की जरूरत है—जो सब अपने ही, हम वनिए—व्यापारियों में से हों ताकि वे हमारी बातों को हमारी भाँषों को समझ सकें—वस, इसी बात की जरूरत है !

सफ़ेद बासों और गंजे सिर तथा मोटे-मोटे पेट वाले भारी भरकम लोगों ने सहमति प्रगट की—

‘बिल्कुल ठीक है !

और एक धाँस चुकाली नाक और भारी हड्डियों के ढाँचे वाले बुद्धियों के वसास लोसेव ने धानत्व के साथ तिससिल्लाते हुए कहा—

“हमारा असखेई इत्यथ बड़ा चासाक पूहा है, उसे सब पता है कि मन्खन-यनीर कहाँ रखा है और वह सब पुरा साठा है ! बड़ी अछड़ी बात है ! आधो उसके स्वास्थ्य के लिए पान करें ।”

सबने अपने प्याले उठाए, असखेई ने बड़े धानत्व से सब के साथ प्याला टकराया और लोसेव ने अपने बच्चों जैसे छोटे से हाथ से कमानोव के भारी कन्धों का पपमपाकर कहा—

अब हमम बुद्धिमान् भोग भी घांठे जा रहे हैं ।”

“ऐसे तो हममें हमेशा ही रहे हैं।” कमालोव ने साभिमान कहा— मेरा बाप बोझ उठाने वाला मजदूर या घोर मुन्हे देखो, मैं कितना ऊँचा उठा हूँ।

“लोग कहते हैं कि तेरे बाप ने एक घनी धार्मीनियन के पेट में छुरा भोंकने के बाद यह काम शुरू किया था।”—सोसेव ने हँसते हुए कहा।

इस पर मोटी हाडी जाने कपड़े के कारखाने वाले ने बकरे की तरह हँसकर उत्तर दिया—

‘यह सब झूठ है। लोग मूर्खतावश ऐसी बातें किया करते हैं। यदि कोई माध्यमाली है तो वह पापी है। घोर कमला। तेरे बारे में भी तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही हैं।

‘घोर मर बारे म भी —सोसेव ने समर्पण किया। वह साँस लेकर बोला— ‘अफवाहें तो हवा की तरह होती हैं।

अप्येष्ठ धर्तमानाव दार्त निपोरते हुए खूब खाता रहा लेकिन जहाँ तक हो सकता था उसने बहुत कम पी। उसने अपने को इन लोगों के बीच बैठे एक विभिन्न नस्ल के जानवर की तरह अनुभव किया। वह जानता था कि वे सब कस क किसान हैं। सबके अन्दर उसने एक प्रकार की दस्युवृत्ति घोर सुखद्वयन पाया था इन बातों के कारण वह अपने पिता का भी आदर करता करता था। उसने सोचा कि यदि मेरा पिता एक मीक पर हाता तो वह भी इन रङ्गरेनिया म पुरो तरह आम लेकर उन्हीं की तरह बन का लकड़ी की छोसल की तरह जला देता। हाँ, पैसा दोस्त इन लोगों के लिए लकड़ी की छोसल की हो तरह है घोर य लोग अपनी अथक शक्ति से गाँव-गाँव जाकर बनता पर रंदा बसाकर यह छोसल निकालते हैं।

परन्तु, उसका भाई अलबसई इन बड़े लोगों से किसी प्रकार

भिन्न था। फिर भी कभी कभी ऐस भी मौके घाते थे, जब वह अपने इस भाई के प्रति पूर्ण अनुभव करता था, क्योंकि वह बहुत पुस्तकालाक समझदार और यहाँ तक कि उन सबसे अधिक खतरनाक था।

सम्जनो ! धनकसई न बढे घावेग स कहा— 'जरा सोचिए तो ! हम लोगों के हाथ में कितनी अनन्त-अक्षय भूमि शक्ति है। ये करोड़ों किसान हमारे हाथ में हैं। ये ही मेहनतकश हैं और ये ही खरीददार हैं। और कहाँ इतनी संस्था मिल सकती है ? कहीं भी नहीं और हमें इन भूमनों और दूसरे विदेशियों की क्या जरूरत है ? हम अपनी व्यवस्था अपने हाथ कर सकते हैं !

'ठीक है ठीक है इस अर्धमत्त मण्डली ने ऊँचे स्वर में सहमति प्रगट की।

उसने विदेशों से आने वाले मास पर ऊँची क्यूटी सगाने की पर्चा की। जमींदारों से जमीन खरीदने और जागीरदारों तथा सामन्तों के बनाए बैंकों से हुई हानि की भी पर्चा की। वह इन सबके बारे में जानता था। लोग उसकी बातों को विस्मय से सुनते और सहमति हाथ में। इस सबसे अच्युत अर्धमानोब का और भी विस्मय हुआ।

'निकिता न ठीक ही कहा था कि धनकसई जीवन को समझता है,'—व्योम ने ईर्ष्या से सोचा।

स्वास्थ्य निवस हासे हुए भी धनकसई दुराचारिता का सिकार था। उसके पास भी अपनी सगी-बेबी मास्को की रहने वाली एक रस्सि ली थी जो इस मसे में एक संगीत मण्डली लेकर आई थी। यह ली भारी भरकम, सुगठित, दाहद जसी भीठी ध्वनि और चमकीली घाँसों वाली थी। कहा जाता है कि उसकी प्रामुखासीस बय की थी, परन्तु अपने मलाई जैसे दुध बर्ण और गुलाबी

बेहरे और गम तून के कारण तीस बप स अधिक नहीं दिखती थी ।

प्रास्योदिम्का, मरे पात्र — वह सोमड़ी जैसे तब दाता का विकास कर कहुती और प्रलम्बई को प्रपन पोछ एस दिपा सेती थी जम किसी बन्ध को मां दिपा सिया करती हे ।

वह जानती थी कि प्रलम्बई उसकी संगीत-मण्डली को सङ्कियां का भी नहीं छोड़ता था । उसन कई मौकों पर यह दखा भी था फिर नी उसक प्रति उसक सम्बन्ध बड़े मिप्रता पूर्ण थे । प्योत्र न कई बार यह भी सुना था कि वह सागा और उनक कारनामों क धारे में उसम सत्ताह मता था । यह विस्मय करान वाली बात थी । इस कारण प्रपन पिता और सास उत्पाना बाइमाकावा क सम्बन्ध की स्मृतियाँ हरां हो जाती थी ।

‘शतान कही का उसन प्रपने भाई का देखते हुए साचा ।

यहाँ तक कि प्रलम्बई जब कभी कोई धरारत भी साचता था तो वह भी बिदाप और नई ही हाती थी । एक माटा जमन भाई जिसका नाम मयर था सरफस में एक सध हुए मूषर का दिखाता था । वह मूषर कोट टाप और पटन्ट बमड़ क जूत पहन प्रपनी पिछली टाँगों पर बसता था एक ब्यापारा की तरह दिखता था । सब बर्षक उस देखकर प्रानन्द-विभार हा जात थ । और यही तक कि ब्यापारी साग भी हेसत थ । परन्तु प्रलम्बई नहीं हेसा और इसस माराज हो गया । उसन प्रपनी मित्र-मण्डली क साथ सत्ताह कर इस मूषर का पुरान का पडयेत्र रचा । तब उम्हान तबमे क नोकर को रिदबत दकर मूषर का पुरा सिया और सब ब्यापारियों न बरबान्यम्का हाटल क बड़िया रसाइए द्वारा उसका तरह-तरह का नात्रन पढ़वा कर उस हड़प कर सिया । प्योत्र प्रतमानाव न इस किरस को सुना था । इस दुःख क कारण वह

जर्मन भाँड़ एक दिन फाँसी लगाकर मर गया। उसने इस मेले में प्रसन्नसेई को जिस रूप में भी देखा उससे उसके हृदय में प्रसन्नसेई के प्रति घोर भी अधिक चिन्ता पैदा हो गई।

“यह बड़ा तेज है। इसमें कोई धारणा नहीं। हो सकता है कि वह मुझे भी इस दुनियाँ में सदा के लिए सबाह कर दे और उसका पता भी न लगने दे। यह चाहे सासप से न भी हो परन्तु जुए में हारने से तो हो ही सकता है।”

इस भय के ज्ञान से उसका नशा भग हो गया और वह साधारण प्रवस्था में आ गया। वह घर चकेला धाया क्योंकि प्रसन्नसेई मास्को चला गया था। जिस दिन अर्तामानोव द्रपमोव वापिस आया वह सितम्बर का चौथी वाला अक्षरपूर्ण दिन था। बरसात से पंक्ति भूमि में जोर-जोर से घंटियों के बजते हुए डाक के घोड़ों के खुरों की धावाज के साथ वह मार्ग के दोनों ओर संतरियों की तरह इस सँकरे नीचे दलदली मार्ग की रक्षा करते हुए, पीड के पेड़ों के बोध से गुजरता हुआ प्रासिरी मजिस तै कर द्रपमोव पहुँचा।

जब प्राकाश नीचे घु घसे पतझड़ के बादलों के धोल से पुता हुआ लगा तो अर्तामानोव के चके दिमाग को उससे कुछ शान्ति मिली। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे कि वह अपने निकट वर्ती मित्र को दफनाने के बाद बक कर सौटा हो। उस मृत व्यक्ति के घार में उस दया आ रहा थी, परन्तु फिर भी यह जानकर प्रसन्नता हा रही थी कि वह उससे कभी मिलेगा नहीं और न उसके घार में अस्पष्ट भावों के कारण उसकी शान्ति भंग होगी और न सोच उसे दुस्कार कर ही उसके जीवन के अन्त

१ इस तथ्य को प दे साबोरिकिन ने ‘दस्की इयोर’ नामक पत्र में सन् १८८० में लिखा था।

को भग करमे ।

श्रव मुझे अपने घरे में लग जाना चाहिए और कुछ नहीं !' उसने अपने मन को संतोष दिया । सब लोग काम से ही प्रोवित हैं । ठीक है ।

फिर वह अपनी पूरी क्षति से काम में जुट गया । भारतीय यमियों के स्वच्छ प्रकाशमान दिन विपादपूर्ण धुन्न चाँदनी रातों के घने प्रकाश में परिवर्तित होते जा रहे थे ।

पतञ्जल क मुक्तामय अर्घ्य प्रभकार में ज्येष्ठ अर्थात्मानोव मज दूरों का बुसाने वाली मिस की सीटी को जैसे ही सुनता था प्राये घण्टे के अन्दर ही मजदूरों की अथक सरसराहट और सदा की भाँति बहल-बहल और धम की अन्वयत सट-सट धुन्न ही जाती । प्रातःकाल से लेकर सध्या समय केर तक किसान खी और पुरुष कारखाने और गोशालों के दरवाजों के पास बिस्तात और खोर करते रहते । बन्नावा नदी के पास सरावसाने से मद जल भोगों का संगीत और हारमोनियम बजने की ध्वनि आती और उन असाध्य ध्वनियों में हारमोनियम पर मरोजोब की एक सङ्गीत ध्वनि भी सुनाई पड़ती । प्राँगन में भारी और नियमपूर्वक काम करने वाला ब्यासोव इधर-उधर मशीन की तरह अङ्कू, मुरपी और कुल्हाड़ा लिए काम करता रहता । पीर पीरे बिना किसी अस्ती के वह सक्की काटता जमीन खोदता ब्यारियाँ बनाता और किसानों और मजदूरों पर बिस्ताता । कनी-कमी सदा नीली और स्वच्छ कमीज में सराफिम नी सामन पा जाता । उस अपने घर में नतास्या भी मशीन की तरह काम करती दिखाई देती जो अपने पति द्वारा भेस से लाई कीमती भर्तों के कारण बड़ी प्रसन्न और सन्तुष्ट दिखाई देती थी । अथ अपने पति के दात स्वभाव से वह और भी अधिक सन्तुष्ट थी । उसे मिस, मिस के साग और यहाँ तक कि घोड़े भी अथ ऐसे

प्रतीत होते थे कि वे धनादिकास तक अपना काम ऐसे ही करते आएँगे। और इस प्रकार बामु से प्रताड़ित भाइयों की तरह दिन सप्ताह महीने वर्ष बीतते-बीतते शीत हुए समय का एक डेर लग गया।

ज्येष्ठ अर्धमासों की तरह सिर झुकाए मिल की इमारतों और उसके प्रांगण से गुजरता। यह मजदूरों की गली कूबों में भी आकर बच्चों को भयभीत करता। इससे उसे एक नवीनता और विचित्रता अनुभव होती थी और वह इन कामों में अपने का निरर्थक—एकमात्र केवल निरीक्षण के रूप में अनुभव करता। उसे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती थी कि—उसका छोटा पुत्र याकोब अब कारोबार को समझने लगा है और उसमें गम्भीरता से दिलचस्पी भी लेने लगा है। याकोब के इस व्यवहार को देखकर पिता के विचार ज्येष्ठ पुत्र इत्यादि से हट गए और उसने उसके प्रति राय की जगह बहुत कुछ उदासीनता और शान्ति स्वीकार कर ली।

कोई बात नहीं करे बिना मेरा काम चल जाएगा, बेटा ! तू बस, पढ़े जा !

शुद्ध आहार-पुष्ट गुमावी पेहरा और संतुष्ट, प्रसन्न भाँखों वाला याकोब अब कभी मुस्कान से हँसता था उससे साबुन के बुलबुल की तरह सब रंग चमकता। माल-माल भारी बदन का याकोब गौरव से चलता और एक मोटे, फले कपूतर का स्मरण कराता हुआ दूर से एक सशक्त समर्थ और योग्य कारोवारी की तरह दिखाई देता। मिल मजदूरनियति उसकी और बड़ी प्रसन्नता से मुस्कराती और वह भी उनकी और तिरछी कामातुर हँसि से निहारता। वह उनके बराबर से गुजरता हुआ कन्धे मिड़ता और एक समय उस अपने मोरब का खयाल न रहता था। वह इस तरह गुजर कर एक सर-भरी मुँह का स्मरण कराता। पिता उसे

दखकर घपने कानों का रगड़ता हुआ हँसने लगता ।

‘मूर्ख ! यदि पाबला को दस लगा तो तेरा क्या हास होगा ?

याकाव को यह बात उस बहुत पसन्द थी कि जब कभी वह घसकसई के घर जाता तो वह मिरोन और उसके भई घन एक पापलूस, गोरिस्वेनाव के साथ घनन्त बहसों में नहीं पड़ता था । मिरान घव ब्यापारी के बेटे की तरह बिसाई नहीं देता था । वह पतला सम्बी नाक एनकभारी मुनहरी बटनों वाली अकट पहन और कंधा पर एक प्रकार का बिछु लगाए एक न्या याभीष की तरह प्रतीत होता था । वह एक फीमी सिपाही की तरह सीमा अकड़कर घनता रोम और गौरव के साथ बातें करता । प्यात्र जानता था कि उसका भतीजा हुमगा कार्ई-न कार्ई जैसी बिद्वतापूर्ण बातें बपारता रहता है परन्तु वह मिरोन को पसन्द नहीं करता था ।

‘भाई, यह तो कोरी फिमासफी है’—वह एक सिदाक के रूप में घपनी जबों में हाथ पेंसाए और कोहनी से काना बनाए मन्नीरतापूवक कहता—‘यह निर्बलता का विचार घयाम्यता से पैदा होता है ।’

ज्यष्ठ घर्तामानोव घनुभव करता था कि गारिस्वेतोव भी घच्छी तरह और बुद्धिमत्ता के साथ बात करता है । वह नाटक के कामी बिना इन्तरो की हुई कमीज और बिघाषियां का कोट पहन घपनी कुन्ती-कन्ती माटी घाँघ्रां के कारण एसा लगता था कि वह कई रातों से साया में हागा । उसका अहुरा साबसा लज और कुन्तियां से बिफूत हा थुका था । बहस करते हुए वह मिरान के ऊपर बढ़ जात से चिल्लाता, इधर-उधर हाथ मारता और दूसरों की बात मुनना ही नहीं चाहता था ।

‘ठीक है, तुम अपना सक्षय प्राप्त कर लोगे, सूरज तुम्हारी मिल की सीटी के साथ आसमान में उभेगा—निकसेगा। और घंघिमाला दिन दसवनों और जङ्गलों को पार कर तुम्हारी मशीनों के आह्वान पर आएगा। परन्तु, तुम मनुष्य-जाति के लिए क्या कर रहे हो?’ मिरोन अपनी मोहों उठाकर माथे पर स्योरियाँ बढ़ा और ऐनक को सीधा कर रखेपन से धीरे धीरे उत्तर देता—

‘यह फ़िलासफी है—एक समझ में न आने वाला राग है। यह शब्दों का मरोड़ना और घोड़े ब्याल करना है। मेरे मित्र! जीवन—एक सघर्ष है उसमें संगीत उमाव इत्यादि का कोई स्थान नहीं। उसके साथ यह एक मखोल जगती है।

यादी प्रतिवादी के शब्द काने कबूतरों में सफेद कबूतरों के समान प्रतीत होते हैं। अ्येष्ठ प्रतमानोय सोचता—

‘हो ठीक है। नए पक्षी हैं नए राग हैं।’ इस वाद विवाद को वह अस्पष्ट रूप से समझता था। अपने याकोव की ओर देखकर उसे प्रसन्नता होती थी कि उसका पुत्र अपने ऊपर के मोठ का छिपाता था ताकि वह अपनी हँसी का छिपा सके।

‘आज यदि इत्या होता तो इस बारे में क्या सोचता?’
गोरिस्त्रेसोव चिन्ताया—

‘जब तुम सारी पृथ्वी और उसके लोगों को अपनी मोहों की जंजीरों में जकड़ लोगे जब तुम मानव को मशीनों का दास बना लोगे।

मिरोन अपने सिर को हिलाकर जबाब देता—

‘मानव जिसकी तू चिंता कर रहा है, वह मिरबंक है—बेकार है। यदि वह आज इसे नहीं समझता तो कल मर जायेगा। बड़बड़े हुए उद्योग-व्यवसाय और कस-कारखानों में ही

उसका त्राण है ।”

‘इन दोनों में कौन ठीक कहता है ? दोनों में से कौन सच है ?’ प्यात्र धर्तमानोव ने बिस्मय से सोचा ।

गोरिस्वेटोव का वह अपन नतीज से भी कम चाहता था । उसमें उस एक प्रकार का यहूदीपन और अधिश्वास दिखलाई देता था और वह उससे किसी कारण से भी भयभीत भी रहता था वह एक धराती की तरह बिना किसी शिष्टाचार के अपने मजबान से पहले मेज पर बैठ जाता फटे लुरी घजाता और पत्नी-बस्ती बिना किसी सम्यता के खाता और राती खाता रहता । प्रसक्त की तरह ही उसमें भी एक प्रकार की भ्रष्टाचार की भावना थी जिसे प्यात्र बहुत बुरी नजर से देखता था । धर्तमानोव से पुपचाप बिना किसी धावरभाव के वह धर्मवादना करता और दो-एक रुस-भूत शब्द कहकर अपन मुरदरे गम हाथ को बापिस में सता । आतिरकार, वह उसे बेकार घनाबन्धक मनुष्य समझता था । पता नहीं किस कारण वह मिरोन के साथ पिपका रहता था ?

‘स्तोपा ! भावन करो, बहुत बातें मत बनाओ ।’ घोस्ना उस सलाह देता ।

तो वह बड़ी पड़ितारी से जवाब देता—

“जब मरे सामने कोई किरल शूलित बात की जा रही हो तो मैं ऐसा नहीं कर सकता ।”

प्यात्र ने कुछ बिस्मय से अनुभव किया था कि प्रसक्त भी इन दो बिचापियों के वाद-विवाद का ध्यान से सुनता है और कभी वह भी एक-दो मन्त्र अपन पुत्र के समथन में जाड़ देता है ।

‘यह ठीक है ! जहाँ शक्ति होगी वहीं अधिकार भी

होगा। और आज सक्ति उद्योगपतियों के हाथ में है। इस लिए।”

भोजन और चाय के बाद प्रोस्वा अपने कसीदे का फंम हाथ में लिए सिड़की के पास बठी, चुपचाप बड़ी सावधानी से रंग-बिरंग मनकों के फूसों पर काम करती रहती। कभी-कभी उसके माथे पर बस पड़ने लगते जो प्राँसों के कोने से और रिम-सैस ऐन्कों के नीचे नाक के कोने से प्रतिक्षिप्त होते थे। प्योत्र भाई के घर में अधिक सुख और शान्ति अनुभव करता था। भाई के घर में उसका मनोरंजन तो होता ही था पर हमेशा अच्छी खराब भी मिलती थी।

याकोव के साथ घर लौटते हुए बाप ने पूछा—

‘जानते हो किस वारे में बाव-विवाद था?’

‘समझता हूँ’ बेटे ने संक्षेप में उत्तर दिया।

अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अ्येष्ठ अर्तामानोब ने कुछ रोव और कठोरता से कहा—

तो फिर क्या?

याकोव हमेशा ही अनिश्चयपूर्वक संक्षेप में परन्तु समझदारी से उत्तर देता था। उसके अर्थों में मिरोन के कथन का सारांश भी रहता था कि रूस को यूरोप की तरह ही रहना चाहिए। और गारिस्बतोव का विश्वास था कि रूस का अपना अलग मार्ग है। इस अवसर पर अ्येष्ठ अर्तामानोब ने बेटे को अतामा आहा था कि इस सम्बन्ध में उसके अपने भी विचार हैं, अर्थात् वह जब रोव के साथ बोसा—

“अगर विदेही लोग अपने यहाँ अच्छे हैं, तो वे हमारे यहाँ आकर क्या पुसते हैं?”

परन्तु—यह विचार भी अलक्ष्मि का ही था। उसका अपने कोई विचार नहीं था। अर्थात्मानोब बड़ी नाराजगी और गड़बड़ में पड़ गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि बटे न उसकी नाराजगी का यह कह कर और भी बढ़ा दिया था—

‘इस प्रकार की बुद्धिमत्ता की बातों का कहे बिना और इन बाद विचारों के बिना ही तो हम रह सकते हैं।’

ज्येष्ठ अर्थात्मानोब भी गड़बड़ाया—

‘हां रह तो सकते हैं। इनके बिना भी रह सकते हैं।’

प्यात्र प्रायः छोटी-छोटी नाराजगियां और अपमान का शिकार होता ही रहता था। यही कारण था कि वह एक तरह का हाता जा रहा था और अपने का एक एक दण्ड के रूप में ही अनुभव करता था जिसका काम घास-पास की सब बातों का देखना और साधना ही था। उसका घासपास की सब बातों में एक महत्व परिवर्तन होता जा रहा था और लोगों के व्यवहार और हुरकतों में एक प्रकार का नवानता आगमि के रूप में धीरे-धीरे उठती थी। एक बार, पता नहीं किस कारण प्रायः के समय घोसना वाली—

सब तब हैत्रव तुम्हारी आत्मा पूरा ही अपना तुम्हें और किसी चीज की चाह न है।

‘ठीक है प्यात्र न सहमति प्रणत की। परन्तु मिरान की एक चमकी और उसने अपनी माँ के कथन का ठीक करत हुए कहा—

‘यह ठीक नहीं। यह तो मोत है। सचार्थ कम में है—क्रिया में नहीं।’

जब वह कामवां के एक मोट पुन्य का शगल में सपटे बाहर आया गया तो प्योत्र न आत्मा को टोका—

होगा । और भाव शक्ति उद्योगपतियों के हाथ में है । इस लिए ।”

भोजन और चाय के बाद प्रोफेसॉर अपने कसीदे का फ्रॉम हाथ में लिए खिड़की के पास बैठी, पुपचाप बड़ी सावधानी से रंग बिरंग मनकों के फूसों पर काम करती रहती । कभी-कभी उसके माथे पर दल पड़ने लगते, जो भाँसों के कोन से और रिम-सैस ऐन्कों के नीचे नाक के कोने से प्रतिक्रिप्त होते थे । प्योत्र भाई के घर में अधिक सुख और शान्ति अनुभव करता था । भाई के घर में उसका मनोरंजन तो होता ही था पर हमेशा अच्छी धराव भी मिलती थी ।

याकोब के साथ घर सौंठे हुए चाप ने पूछा—

‘जानते हो किस बारे में बाद-विवाह था ?’

‘समझता हूँ,’ बटे ने संक्षेप में उत्तर दिया ।

अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए ज्येष्ठ अर्तमानोब ने कुछ रीब और कठोरता से कहा—

‘तो फिर क्या ?’

याकाब हमेशा ही अनिच्छापूर्वक संक्षेप में परन्तु समझदारी से उत्तर देता था । उसके शब्दों में मिरोन के कबन का सारांश भी रहता था कि रूस को यूरोप की तरह ही रहना चाहिए । और गोरिस्वतोव का विश्वास था कि रूस का अपना अलग मार्ग है । इस अक्षर पर ज्येष्ठ अर्तमानोब ने बटे को जताना चाहा था कि इस सम्बन्ध में उसके अपने भी विचार हैं, पर वह जब रीब के साथ बोला—

‘अगर विदेशी लोग अपने यहाँ अच्छे हैं, तो वे हमारे यहाँ आकर क्या सुचते हैं ?’

परन्तु—यह विचार भी अलक्ष्मि का ही था। उसके अपने कोई विचार नहीं थे। अर्थात्मानोब बड़ी नाराजगी और गड़बड़ में पड़ गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि बेटे ने उसकी नाराजगी का यह कह कर और भी बढ़ा दिया था—

“इस प्रकार की बुद्धिमत्ता की बातों का कह बिना और इन बाद विवादां क बिना भी तो हम रह सकते हैं ।”

अप्यस्य अर्थात्मानोब भी बड़बड़ाया—

हाँ, रह तो सकते हैं। इनके बिना भी रह सकते हैं।

प्याय प्राय छोटी-छोटी नाराजगियों और अपमानों का सिकार हाथा हा रहता था। यही कारण था कि वह एक तरफ होता जा रहा था और अपने को एक ऐसे दशक क रूप में ही अनुभव करता था, जिसका काम पास-पास की सब बातों का देखना और सापना ही था। उसके पासपास की सब बातों में एक अदृश्य परिवर्तन होता जा रहा था और लोगों क चर्चा और हँसकता में एक प्रकार की नशीलता अस्वास्ति क रूप में शीघ्र-शीघ्र उठती थी। एक बार, पता नहीं किस कारण प्याय क समय आल्सा आसी—

“सत्य, सब हैजब तुम्हारी आत्मा पूरा हा अपन तुम्हें और किसी आन की आह न हो।”

‘ठीक है प्याय ने सहमति प्रयत्न की। परन्तु मिरान की एक शर्मकी और उसने अपनी माँ क कबन का ठीक करत हुए कहा—

‘यह ठीक नहीं। यह तो मौत है। सचार्थ कम में है—क्रिया में नहीं।’

जब वह कागजात क एक माट पुलन्द का बगल में सपट याहर पला गया तो प्याय ने आल्सा को टाका—

“तुम्हारा बेटा तुमसे बहुत घट है !”

‘बिल्कुल भी नहीं ।’

‘मैं तो बस रहा हूँ वह क्या और अधिक है !’

“वह मुझसे अधिक बुद्धिमान् है — घोल्गा न कहा । “मैं पढ़ी सिली तो हूँ ही नहीं, कभी-कभी मूर्खता की ही बातें कह जाती हूँ । साधारणतया हमारे बच्चे हमसे अधिक बुद्धिमान् है ।”

इस बात पर अर्थात्मानोव विश्वास नहीं कर पाता था । उसने हस्के से हँसकर उत्तर दिया—

ठीक है तुम मूर्खता की बातें करती हो । परन्तु हमारे बुजुर्गों का कहना है कि बेटों से कुछ होता है—समझें ?

अपने बेटों के बारे में बुद्धिमान् होने की बात से वह जरा चिढ़-सा गया था । क्योंकि यह इशारा घोल्गा ने असल में इत्या की ओर ही किया था । प्योत्र जानता था कि अलक्सेई इत्या का पसा भेजता है और मिरोन का उसके साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है । फिर भी अभिमान-वश उसने कभी भी उनसे नहीं पूछा कि वह कहीं रहता है और कैसा है ? घोल्गा ही कभी-कभी मौका देखकर बड़ी सतुराई से उसके अभिमान का विचार करती हुई इत्या के बारे में बात दिया करती । उसी से उसे पता लगता रहता था कि इत्या आरवेंगल्स्क में रहता था और अब वह विद्वान् बनना गया है ।

“रहने दो । मुझे उससे क्या ? बुद्धिमान् होगा तो अपने लिए हागा—बाद में स्वयं अपने भाप समझ जाएगा कि वही मूर्ख था ।’

कभी-कभी इत्या के बारे में सोचन पर उस अपने बेटों के जिद्दीपन पर आश्चर्य होता था । उसके भास-वास के सब लोग बुद्धिमान् होते जा रहे थे । फिर इत्या क्यों बर सगा रहा है ।

नाई के घर में वह प्रायः पापोबा और उसकी लड़की से मिलता। वह जैसी नुस्खे भी बनी ही चिन्तित गम्भीर और उदासीन भी थी। वह उससे बहुत कम बातचीत और जैसा कि उसके और इत्यादि की म प्राम बाते हाती या उसने साधा कि अपने बटे को उसने खामखा नाराज किया है। पापोबा उसे नेंपती थी। घात प्रवृत्तियों पर पापोबा की मूर्ति उसकी मूर्ति में नए रूप से जागृत हो जाती और प्राण्य के प्रतिरक्त और किसी प्रकार की भावना पदा न करती। वह विस्मय में मोक्षता—'दला क्या तात है? एक व्यक्ति का तुम चाहत हो उमके बार में सोचत रहते हो—समझ में नहा घाता कि तुम्हें उसकी क्या जरूरत है, और उससे बातचीत करना तो गूँगे-बहुरा का तरह प्रसम्भव है।

हाँ ठीक है। सब बदलता जा रहा है। यहाँ तक कि मजदूर भी बड़े नखरीले रूप और तपस्विक के मिश्रण होत जा रहे हैं। और औरतें और भी प्रपिकाधिक चिन्तान लगी हैं। मजदूरों की बस्ती में प्रचलित का कामाहन मुनाई दन लगा था। सम्प्रा समय ऐसा प्रतीत होता था कि वहाँ भेड़िया चिल्ला रहे हैं। और यहाँ तक कि गलियों की विष्टी रत भी नाराजगी के साथ भरमराती थी।

मजदूरों में एक प्रकार का भय और कहीं दूसरी जगह भटकन की प्रस्थिरता-सी दिखाई दे रही थी। बिना किसी कारण नाराज हुए नौबतान मजदूर प्रचानक दपतर में प्रा पुसव और माँव करत कि उनका हिस्सा कर दिया जाए।

'तुम साग कहाँ जा रहे हो? प्यान पूछता।
दूसरी जगह देखन के लिए!

क्या कारण है कि य साग एव नाराज दिखाई दे रहे हैं?' जवळ प्रतीमानोव न नाई से एक दिन पूछा—और घल

कसेई ने सोमड़ी अँधी भूषतापूर्ण हँसी से कन्ये हिंसाते हुए कहा—
 'मजदूर सब जगह ही नाराज हैं और आन्दोलन कर रहे हैं।'

'हमारे यहाँ तो अभी ये बहुत चुप हैं। जरा पीतर्सबग में जाकर तो देखो। हमारे यहाँ क सरकारी अफसर और मिनिस्टर भी जैसे नहीं उसे हाने चाहिए।'

धीरे धीरे चलकर उसने उसे कुछ ऐसी बातें सुनाई जो बड़े भाई का बड़ी विचित्र भ्रूषतापूर्ण धीरे भयाबह सर्गी जिसस बड़े भाई ने नाराज होकर तर्जनी उठाकर उसे टोका—

'यह सब अर्थ है। जार से राज्य-शक्ति हाथ में लेने से हमारे सरदारों और सामन्तों को ही लाभ है क्योंकि उनके हाथ से शक्ति निकलती जा रही है। हम लोग बिना किसी राज्य शक्ति के मानवार बनते जा रहे हैं। देखा हमारा पिता तीज त्योहार के दिन मामूली रंग के कूत पहन कर जाया करता था और हम बिदेशों से आयात किए हुए पेटेंट चमड़े के जूत और रेसमी टाइयाँ पहनते हैं। हमें जार के अन्धे धाजाकारी सेवक बनना चाहिए न कि सुपारों की तरह उसके साथ व्यवहार करें। जार हमारे लिए बेववार का एक पक्ष है, जिससे छोटे-छोटे साने के फस हमारी ओर भी गिरत हैं।

अलक्सई इन बातों को सुनकर धीरे जार से हँसा जिससे प्योत्र धीरे भी नाराज हो गया। ज्येष्ठ अर्त्तमानोव को बिसने भगा कि अब लोग प्रायः जरा-जरा-सी बात पर हँसते थे। धीरे इस नए स्वभाव में एक प्रकार की अग्रियता और भ्रूषता थी। उन सब लोगों में से कोई भी उतने आनन्द से सांत्वना पूर्ण परिहास नहीं कर सकता था, जिसना कि वह धमर वृद्ध बड़ई सेराक्रिम।

प्योत्र अर्त्तमानोव इस सांत्वना देन वाले सेराक्रिम का

घनिष्ठ मित्र हो गया। जब व्योम अधिकधिक उदात्त और दुखी रहने लगा और उसकी प्रबल इच्छा होने लगी कि कभी-कभी वह सराब पिपा करे। भाई के घर में पीन में उस समय घाती भी क्योंकि वहाँ सदा ही घजीब घजीब बाहरी सोग भी होत थे। और इसके प्रतिरिक्त वह विनेपत पानोश की नजर में घराबी नहीं होना चाहता था। घर में जब कभी वह नग में घा जाता था तो नतास्या भी नाराजगी में कन्धे इसकाण घाहत और मूक सी नजर घाती। वह चाहता था कि उस मोड़ो पर वह उस पर पिह्लाए और गाम्भी ने और उसके जबाब में यह भी उस गाम्भी द। पर इस खुप्पी का हासत में वह सुटी-ठमी भी निग्राई दती थी जिससे व्योम के हुबय में रोप पैदा होता था और उस अपनी पत्नी के प्रति दया-सी घाती थी। एक दिन घर्नामाताब सराक्रिम के घर गया और वाता—

‘बुद्धे ! कुछ पीना चाहता है ।’

प्रसन्नचित्त बड़ई जरा मुस्कराया और समथन के भाव में बोला—

“यह तो मामूली बात है जैन कि गमियों में मूरज ! प्रलोष होता है कि तुम थक गए हो। कोई बात नहीं हम तुम्हें पस्कि स भर देते ! और फिर-तुम्हारा काम भी तो कोई हल्का नहीं। तुम्हारे बालों पर यह दाढ़ी भी तो फिक्स नहीं आई !”

सराक्रिम घपन पर में घपन मानिक के लिए तरह-तरह के स्वाश की घरावें और निकर रभता था और बह रङ्ग-बिरङ्गी बातों का घर के सब कानों में निकाल कर साता और शीघे मारल लगता—

‘मह मेरा घपना घानिष्कार है और एक विषया सन्या सिनी इन्हीं पूर्ण पना देती है। घोह ! कैसी यम खी है !’ जरा

इसे बढा तो ! यह चीड़ के प्रकुरों से बनाई गई है, और वसन्त के रस से भरपूर है । जरा देखो तो सही कैसी है !”

वह एक कुर्सी पर बठकर अपनी ससज्जम की शराब का स्वाद लेता हुआ वहफने लगता—

‘घोह ! कैसी साधुनी है । बड़ी प्रमाग्यशासी स्त्री है । जिस किसी को भी प्यार करती है वही धोर निकलता है । धोर यह बिना प्रेमी के रह नहीं सकती यह उसका स्वभाव है । क्योंकि उसकी नसों में गरम खून बौढ रहा है !”

‘नहीं ! मैंने भी मने में एक को देखा था ।’ अर्थात्मानोव ने स्मरण कराया ।

“नि सन्देह ! सेराक्रिम ने उसका समर्पन किया धोर बोला—‘ठीक है वहाँ तो बुनियाँ के कोने-कोने से पुना हुआ मान आता है । मैं खूब जानता हूँ !

सेराक्रिम को सबके बारे में विस्तृत जानकारी थी । उसने बड़ी मनोरञ्जकता से क्लर्क धोर मजदूरों की धरेधू धातों की चर्चाएँ शुरू कर दीं । सबके बारे में वह एक जैसी ही परिहास प्रिय-ध्वनि म बात करता धोर इसी प्रकार अपनी सड़की के धारे म भी उसने ऐसे बिक्र किया जैसे कि वह उसक लिए पराई हो ।

“उस सैतान ने भी जङ्गली भी बोने शुरू कर दिए हैं । वह नाहार सेबोव के साथ रह रही है धोर हाँ देखो तो कैसी अच्छी छच्छे छच्छे छे हैं ! सब जंस का उसा मिस आता है ।”

सेराक्रिम का साफ-सुधरा कमरा बहुत अच्छा था । उसमें पीड़ की महक धा रही थी धोर एक धम धमकार कोने में दीवार क साथ टिन की एक सैम्प लटकी हुई थी ।

कुछ शराब पीकर अर्थात्मानोव न सागों के धारे में शिका

यतें पुरु करदीं । घुड़ वढ़ई न भीरज रखने का उपदेस दत हुए कहा—

‘यह कुछ नहीं, सब ठीक है । दुनियाँ भागी बसी जा रही है, यही सा सभार की वास्तविकता है । अब तक मनुष्य साया रहा—सोया रहा । अब जागा ता साचन लगा—साचन लगा । परन्तु अब उड़ा घोर बल पड़ा है । उम बमन दा । तुम्हें इसस क्या । तुम्हें मनुष्य पर बिश्वास करना चाहिए । तुम्हें प्रपन पर तो बिश्वास है ?

प्यात्र घर्तमानाव चुप रह गया घोर साचने नगा— प्रपन पर बिश्वास करता है या नहीं ? घोर सराक्रिम का साहमपूण ध्वनि न उस सम्भाषन करत हुए सात्त्वना दना दुरु किया—

सुम यह मत दखा कि कोन कैसा है प्रच्छा है या बुरा । इसस कोई साचन नहा । यह हमगा नहा रहेगा । आज कोई प्रच्छा है ता कल बुरा । प्यात्र इत्यत्र । मैं बहुत दया है— प्रच्छा नी घोर बुरा नी । घाह ! कितना दया है—सा दया है ! दयाता है—आज एक प्रच्छा है घोर कल नहीं ! घोर—मैं जरा दूर हुआ कि बह नहीं रहा हुआ म गद की तरह उड़ गया । घोर मैं नी क्या है ! किसलिए है ! लोगों क बाध एक मच्छर है । एक दिन मैं भी नहीं रहूँगा घोर तू भी !’

सराक्रिम न बड़े गोरज क साय समन्वत हुए उँसली उठाई घोर फिर चुप हा गया ।

उसकी बाठा का सुनकर प्रथामानोव का दुसनी प्रसन्नता हुई । उनम उम नि सन्तुह सात्त्वना मिमती थी घोर मनारजन भी हाठा था । परन्तु, साय ही प्रथामानोव को बह भी साक दिग्दर्श दता था कि यह बुद्धा उसम धारमा की सच्ची बात नहीं कह रहा बल्कि परोवर सात्त्वना दन बात की तरह उच्छा की है ।

बैठा रहा है। सेराफिम की खिलवाड़ को देखते हुए उसने साधा—

‘कैसा घेतान और चालाक बुद्धा है। निकिता ऐसा नहीं कर सकता।’

और जीवन में देख अनक सात्त्वना देन वाली की उस माद हा आई—जिनम निलज्ज वाजाक क्षिपी थी, सरकस के भाइ और नट जाबुगर जङ्गली जानवरों का सघान वाले, घराबी गबैए और काला स्यापा था। वह अपन को मनुष्य जाति का मित्र कहता था। माई घसकसई में भी किस प्रकार इन लोगों के साथ समानता थी। तिसान ब्यालाव में यह बात नहीं। और पावला मैनाती में भी नहीं है।

घराब के नथ में यह सेराफिम से बोला—“घेतान बुद्धा ! झूठ वालता है।

बुद्धा वई ने अपनी घस्मिल जाँधों पर हथेली मारते हुए गम्भीरता से कहना शुरू किया—

‘न-ही ! जरा साधो और समझो मुझे झूठ वालन की क्या जरूरत ? मैं तुमसे दिस की सच्ची बात कहता हूँ। मुझे सच्चाई का कुछ पता नहीं इसका मतलब है कि मैं झूठ भी नहीं बोलता ?

‘तो फिर चुप रहो।’

‘क्या मैं गुमा हूँ, जो चुप रहूँ ! —सेराफिम ने हँसते हुए पूछा और मुस्कराहट से दीप्त बहरे से वाला—‘मैं बुद्धा हा गया हूँ जब पाड़ी ही उम्र रह गई है। मैं सच का क्या समझ सकता हूँ। जब ता जवानों को चाहिए कि सच्चाई का समझन की काशिंग करें। इसीलिए ता उन्हें एनकें दी गई है। निरोन सक्सईबिच एनक पहन घूमता है और वह धार-वार देखता है कि कौन कहाँ,

कैसे घोर क्या है ।

सुराफिम क मिरान का न चाहत क कारण व्योम
मानाब को मुनी हुई थी । जब सुराफिम न अपना सिपरा उठ
वड़ प्रम क साथ मन्त्रीय म गाना शुरू किया—

‘फुदक-फुदक कटफाडा राडा

करपों क फमरा म जाए ।

नाक-नुकीसी प्यारी-प्यारी

जिस पर एक रह बनाए ।

बिषार उसका प्रच्छा कितना

मूर्खों स ससार नरा ह ।

अतुर न कोई अधिक ह उसम

घोर न अधिक खरा है ।

‘ठीक है । अर्थात्मानोब न समयन किया ।

घोर फिर अधिक नस म पूर हा वह पाँव पटक-पटक कर
गा उठा—

बाड नहीं वह नील नहीं वह

सष्व जिदियों क न्यट जा ।

सकिन है भगवान का प्यारा

नाम धनकसी उमुका ही ता ।

जस अर्थात्मानाब का यह घोर नी अधिक पनन्ध प्रापा ।

फिर सुराफिम न निनज्वता स याकोव क बार म नी गाना शुरू
किया—

वानामों क प्रालिगन का,

यागाजी रह्य प्रातुर ।

म्याल नहा घाग का उनका

भूम गए इतना बहादुर ।

इस प्रकार भोर तक वे धपना मनोरंजन करते रहे । फिर दरबाज को खटखटाता हुआ विलोन ग्यान्तोव धन्दर भाया और अपने मालिक को जगाना शुरू किया । वह उदासीन भाव से बोला—

‘उठा ! समय हो गया है । मिस की सीटी बजने वाली है । तुम्हें मजदूर इस हालत में देखेंगे—तो अच्छा नहीं ।’

अर्तमानोव बार से चिल्लाया—

‘क्या अच्छा नहीं ? मैं मालिक हूँ या कुछ और !’

दरबान थुप हा गया और मानी खरोर को भटकाता हुआ चला गया । प्योत्र फिर सा गया । इस तरह वह कभी-कभी सम्भा तक सोता रहता और सेराफिम के यहाँ ही फिर जम जाता ।

एक दिन यह धानन्दी सुयामिजाज वहाँ काम करते-करते मर गया । वह डाक्टर के कान सहायक के पुत्र के लिए जो डूब कर मर गया था ताबूत तैयार कर रहा था कि अचानक फर्श पर गिरा और वहीं ठेर हो गया । अर्तमानोव को इच्छा हुई थी कि वह उसे कश्गिस्तान तक पहुँचा कर आए । उसके बाद वह सार्थों से पचासवें भरे हुए गिरजे में गया । यहाँ उसने साम सिर वाले पादरी अक्सान्द्र की अन्वष्टि-प्राथना सुनी । यह बिनयी पादरी म्नेब का उत्तराधिकारी था । म्नेब पता नहीं किस कारण से एकदम पादरी पद को छोड़ कर ही चला गया था । पादरी अक्सान्द्र बड़ी गम्भीरता से प्राथना करता था । और आज वह मिस के स्कूल के मास्टर सुयमिठ सगीर पिस्स के समान लिखने वाले पैन्डोव द्वारा सगठित सन्नीस-मंडली के साथ बहुत अच्छा गा रहा था । इस भीड़ में अनेक नवयुवक भी थे ।

‘आज रविवार है अर्तमानोव न सार्थों की इतनी भीड़ होने का कारण सोचा ।

इस छाट-स हल्क ताबूत का नबयुवक मजदूर उठाए हुए प घोर बड़ी उम्र वाल मजदूर जरा दूर हा थ ।—जिनदा सरा फिम की बटी इस घबसर क धनुषयुक्त धमकीसे रङ्ग-बिरंग, प्लाउज को पहन उदास चहर घौर निरर्थु पीछ-पीछे चल रही थी । जिनका क साथ साफ-सुपर कपड़े पहन पीड़ कर्मा वाला एक पुख्य उसक बराबर बराबर चल रहा था तिखोन ब्यामाव के भारी कदमा स रेत क बजन की धावाज धा रही थी । मूय बड़ी तजी स धमक रहा था । नोजवान साथ सगठित रूप स गा रह थ । सकिन इस प्रमितम बिवाई क पीठ म बिपाद् की ध्वनि का एक बिचित्र प्रभाव था ।

“यह धक्की ही बात है कि इतन साग एकत्र हा गए हैं । अर्थात्मानाथ न धपन चहर स धीनू पाछठ हुए साथा । तिखोन उसक पास पहुँचा उसक पाँवा की धार निहारल हुए कुछ दर साध कर बोला—

“यह सबका मनोरञ्जन करता था । जरा-मा इगारा हाते ही धपना सिपारा बजाने समता था । घौर इतना कह कर उसन उसकी नकल में हवा म हाप हिमाया ।

“इसक साथ एक धबारागिद धुन्ना भी घौर होता था जिसके साथ एक सड़की भी सात्बना क पीठ गाया करती था ।

धपन मानिक की धार निहारल हुए उसने धनादर क नाथ म दु स्रद कठारता स कहा—

“सागा क बहु दिमाग तक केर दता था कभी किसी को नाराज नहा करता था परन्तु उसका जीवन ठीक नहीं था ।”

“ठीक था ठीक था ! —उसक मानिक ने म्दिक्कत हुए कहा । “नू इन बिषारों म ही जकड़ा पड़ा है । इस, कहीं उस कुत मुनुन की तरह पागत न हा जाना ।

और, फिर दरवान से मुह मोड़ कर अर्धमानोव पर की ओर घसा गया ।

धभी दोपहर धुरू हुई थी परन्तु गर्मी बहुत थी । रेतीला मायं नीली वायु और आसमान सब गर्म होते जा रहे थे । सध्या समय सूर्य सफेद बादलों के पहाड़ों पर जब पहुँच गया तो वे बादल धीरे-धीरे अन्तरिक्ष में धुँबं विधा की धार तैर गए । अर्धमानोव धोड़ी देर बगीचे में धूम लेने के पाद दरबाज से बाहर निकला । यहाँ तिसान दरबाजों की धूला पर भी तारकोस डाल रखा था । ये दरबाज भरसाठ क कारण अङ्ग लगने से धर-धरं करने लग थे ।

ध्यों धाज काम धयो कर रखा है धाज तो रविवार है ?—अर्धमानोव ने धसस भाव से धुछा और उसके पास ही बेंच पर बैठ गया । तिसान न कनधियों से उसकी ओर दसा और धीम स्वर में बोला—

‘सराधिम अन्ध धावमी नहीं था ।

“उसमें क्या धुरी बात थी ?

इसके उत्तर में अर्धमानोव ने बड़ी धत्रीय वात सुनी उस बात का मुनकर उसके धरीर पर काने-काने धीटे से रीगने लग ।

बहु अन्धी याददास्य माना ध्यक्ति था । बहुत धुस याद रगता था या धुछ दसता था उस याद रगता था । और क्या देखता था ? धुछई धमिधान और धदमीसता । और बहु इन्हीं के धारे में सब की अतमाता थ । उसने ही यह धसन्तोप फैलाया है, यह मैं साफ-साफ दस रखा है ।”

धपन धुछ से धूला में तारकोस ट्यकाते हुए तिसान धार कटुता से कहता गया—

मनुष्य से स्मृति छीन लनी बाहिए । इधी से धुछई बढती

। एसा ही होना चाहिए, ताकि, जब एक नस्ल मर जाए तो उसके साथ ही उसकी बुराइयाँ उसकी मूर्खता सब वफ़्त हो जाएँ । जब दूसरी नस्ल पैदा हो तो उन्हें पहली बुराइयों याद न रहें । वे सब पूर्व की बन्धी ही बातें याद रखें । और मुझे ही बसो । मैं बुढ़ा हो गया हूँ और क्षान्ति चाहता हूँ । परन्तु क्षान्ति है कहीं ? भूम जाऊँ तो क्षान्ति मिल जाय ।

जब से पहल सिखान न कभी इतनी दूर तक और इतनी दुसी करने वाली बात नहीं कही थी । सदा की भाँति मूख आज उसके घरों में पता नहीं किस कारण अर्तामानोव के प्रति विद्वेष था । इस दरमान की धनी बाँधी, तरल घाँखों और पत्थर म लकीरों पड़े जैसे माँके का देख अर्तामानोव का उसकी बढ़ती हुई विद्वति से आश्चर्य हुआ । विद्वान के माँके पर बस बस ही यहूर य जैसे कि टमन के पास जूँसे में गहरे दम होते हैं उसके ऊँचे गाल या घायु के कारण बाल रहित हाँथों के, जब भूरे पड़ चुके थे और उसकी नाक स्पंज के समान छिद्रित हाँथी थी ।

"यह सिद्धी और बुढ़ा हो गया है, अर्तामानोव ने साधा और इस बिचार से उसे प्रसन्नता हुई । जब यह बहुत बफ़वास करन लगा है, काम नहीं करता । इसका हिसाब कर देना चाहिए । मैं इस एक बन्धी रकम बेकर विदा किए देता हूँ ।

एक हाथ में प्रुध और दूसरे में तारफोल की बास्ती घाम हुए विधान अर्तामानोव के समीप आया । और अपने प्रुध से कामे लाने रङ्ग नामे कपथ माँस की तरह के रङ्ग की मिस की इमारत की ओर इशारा करते हुए यह बोला—

"तुन कभी मृना है कि यह छल-छद्मीला सिद्धी और उसका ऐंजाताना भाई अदार मरोबाब और जिर्नदा भी—क्या गुस्समगुस्ता कहा करते हैं कि जिस मिस को पराए हाथा ने

बनाया है—यह एक बुरा काम है, इसे नष्ट कर देना चाहिए ।”

‘प्रतीत होता है कि वे तेरे विचारों पर चम रहे हैं,’—
प्योन ने हँसते हुए कहा ।

‘मेरे विचार ! तिखोन ने घस्वीकृति में सिर हिमाते हुए
कहा—‘नहीं वे मेरे विचार नहीं । मैं ऐसी कल्पनाएँ नहीं करता ।
हर-एक प्रादमी अपने लिए काम करे तां किसी प्रकार की सुरक्षा
नहीं पैदा होगी । परन्तु, वे कहते हैं—सब कुछ हमने ही बनाया है,
हम ही मासिक हैं ! प्याच इस्पच ! धरा देखो धीरे सांचा कि
क्या यह ठीक है । वैसे सब कुछ उन्होंने ही तो बनाया है । उन्होंने
ही तुम्हें इस कारोबार में जोता है यह ठीक है । तुम इस सब
ठीक रास्त पर से घ्राए हो ।

घर्तमानोव गहन गम्भीरता से खड़ा हो उठा । जब में
हाथ बास तिखोन के सिर में ऊपर बावनों की धार निहारता
गड़बड़ विचारों को सोचता हुआ घासा—

‘दखो, मैं बेसक सब कुछ समझता हूँ । इतने बपों तक
तुम मरे साप रहे हा । धीरे तुम सब बुझे हो चुके हा धीरे सब
तुम्हारे लिए काम करना मुश्किल हा गया है ।

‘य सब बातें कहन के लिए तुम्हें सराफिम न होसमा
दिया है ।’ तिखोन ने मासिक की बात मनसुनी करते हुए
कहा ।

‘मुनो सब तुम्हें धाराम करना चाहिए ।’

“धाराम ता सभी को करना चाहिए । क्यों नहीं ?”

‘धीरे मुनो, तुम्हारे साप रहना बड़ा मुश्किल है ।’ तिखोन
म्यानाच अपने बर्जस्त होम में घ्राष्यार्थान्वित नहीं हुआ । परन्तु
बह धारे में बोला—

“घण्टा काई बात नहीं ।”

“मैं तुम्हें घण्टी रखन दूँगा—प्रतापानोब ने उसकी स्थिर भावभावना को दस्तक हुए बखन दिया । तिखोन ने अपने बर्तन पौतो को भङ्गित हुए काई जवाब नहीं दिया । प्रतापानोब ने कठोरता से कहा—

घण्टा ! नमस्कार !”

यहुत घण्टा दरबान न जवाब दिया ।

प्रतापानोब इस घाया से कि वहाँ ठण्डक मिनमी नदी के किनारे बना गया । यह उसी बबदाह के बीच गया जहाँ अपने बेट इत्या से उसका एक दिन भ्रमड़ा हुआ था । यहाँ सराफिन न पेह की सफेद-सफेद गायाघां से उसके लिए राजमही-सी बना ही थी । इस जगह से मिन, पर प्रांगन मजबूरा का बस्ती गिर्जा कनिस्तान सब-कुछ अभी भाँति दिखाई देत थे । प्रस्पताल और स्कूल की सफेद विडकियाँ बर्फ की तरह चमक रही थीं । मनुष्यों की छोटी छोटी मूर्तियाँ जमान पर इधर उधर चमकी हुई ताना बाना बनाती दिखाई दे रही थीं । वे साग मिन की बस्ती की रेत पर कम चमकते दिखते थे । गिर्जे के पास प्रांगन में बकरियों का झुण्ड खिलौनों के समान खर रहा था, जिन्हें पुराने जुलाहे बारिस्ता के पोत एक घाँस नाम कम्पाउण्डर मराजाय न पासा हुआ था । मिन की घोरतें उससे बर्बाद के लिए बकरियों का दूध खरोदती थीं । कारखाने के पास पास सहित जमीन के चौकार टुकड़े में छोटे पीस, पाय पहन साय घूम रहे थे । प्रस्पताल की पीसी सफेद टोपियों में वे पागसों के समान दिखाई दे रहे थे । मिन के पास-पास बहुत से पथी—कौवा, चिड़िया घुम्पिया इत्यादि भी चहुँक रहे थे और पासमान में उड़ते हुए अपने रङ्ग बिरंग पंखों का चमका रहे थे । इनके बीच जमीन पर नूर नील

क्यूतर नी खिलाई द रहे थ । खासतौर से वप्राक्षा नदी क किनारे घराबखाने के पास व बहुत बड़ी सख्या म उड़ रहे थे बहाँ उन डोकर सात बान किसान प्राय एकते थे ।

परन्तु, कुछ समय से अर्त्तमानाब को अपनी इस बड़ी मिल के कारोबार से किसी प्रकार का आनन्द और अभिमान अनुभव नहीं होता था । अब अर्त्तमानाब इस मिल को तरह-तरह की कुहाष्टियां नाराजगियां और अप्रियताओं का कारण समझने लगा था । उस यह दखकर दुःख हुआ था कि उसका भाई भतीजा और आस-पास के अन्य लोग किस प्रकार उसका निहारते थे, उसकी ओर भिन्नाकर हाथ दिखाते थे और खानाबदोश असम्भ सोचों की तरह उसक बड़प्पन का स्थान न कर उसस उमङ्ग पड़ते थ । मिल के बारे म जिन्क आते ही व उसकी सत्ता को घुल जाते थे और अब कभी वह उन्हें स्मरण करवाता कि वह उसका मासिक है ता सब चुप हा सहमत हो जाते । परन्तु किसी भी छोटे या बड़े मामले म वे लोग कहते थ अपनी मर्जी की ही । इस प्रकार की बातें बहुत दिनों पहल से ही हान सगी थीं, अब उसकी इच्छा के बिना मिल में बिजलीघर भी बना लिया गया था । लेकिन ज्येष्ठ अर्त्तमानाब का जल्दी ही मानना पड़ा कि बिजली की शक्ति सरती और सुरक्षा-दायक है परन्तु फिर भी वह अपनी नाराजगी नहीं त्याग सका था । व छोटी-छोटी नाराजगियां बहुत थीं, जो लगातार सख्या और ऋतुता में बढ़ता जा रही थीं ।

खासतौर स उन अपन भतीजे मिरोम स बहुत नाराजगी थी । वह अपनी पढ़ाई समाप्त कर चुका था । अब वह घ-वसी तरीके से चमड़े का फाट गुनहरी एनके पीस धूते पहनता और नाराजगी स नीहें चढ़ाता हुआ भौंकता—

“बाबा ! व सय पुरानी बातें हैं । बाबा, अब जमाना

पसट गया है।”

कभी कभी उसे ऐसा भी प्रतीत होता था, कि जैसे वह किसी कठोर स्वामी के सामने हो। फिर वह उससे डरता भी था। परन्तु उसका डर यहाँ तक ही सीमित नहीं था। वह उसकी और घातों से भी डरता था। मिरोन उसके सामने एक प्रायः ही अभिमानि और मनमानो करने वाला था। एक दिन उसम यहाँ तक कह दिया—

‘देखो चाचा ! आप जैसे लोगों से इस उन्नति नहीं कर सकता। तुम्हारे जैसे के साथ जीवन बड़ा मुश्किल है।’

अर्धमानोव यह सुनकर ठिठक गया। उसका हृदय को इतनी ठेस लगी कि उसने यह भी नहीं पूछा कि— क्या ?’ इस प्रकार अपमानित होकर वह घर चला आया और कई सप्ताहों तक न अपने माई के घर और न मिल में ही गया। उसे भय था कि कहीं मिरोन से उसका आमना-सामना न हो जाय।

मिरोन अब बीरा पापावा की सड़की के साथ घाटो करने के सफल्य कर रहा था। वह अपनी भूरे बाला वाली माँ के समान ही सम्भी पत्नी और बड़ो हो चुकी थी। बीरा की तरह वह सड़की भी अप्रियतापूर्ण हँसी में हँसती थी। वह यदन हिंसाती हुई अपनी बड़ो-बड़ो खुली घाँसो से घृष्टता और निलज्जता से निहारती जैसे कि घमहीन अविदवासी मांग किया करते हैं। वह घातों घातों में मनस्वी की तरह भिनभिनाती हुई गाती और मुबह से साम तक परों पर रग बिरसे धब्बे डालती हुई एक तस्वीर यमाती रहती। फूँड का घना उसका हैट उसकी टोका के नीचे जैसे फीस से पीछे का लटका रहता और उसके फुंन जैसे ही पीले पीले घातों का घूँप में अमकाता। वह नदरे तरीक से कपड़े पहन हाता और उसकी टाँगें पपरे के नीचे घुटनों तक दिखाई देती थीं।

मिठस्से गोरिस्वेटोव से भी उसे बड़ी घृणा थी। वह घर एकदम धा धमकता, घला जाता और फिर धा धमकता। प्राते समय वह लोगों की घोर रीव से छोटे पाससू फुत्ते की तरह उधमता और भौंकता -

“तुम सोच चाहते हो कि रुस की सम्पन्न प्राध्यात्मिकता को अमेरिका की आत्महीनता में बदल दो ? क्या तुम लोगों के लिए चूहेदानियाँ बनाना चाहते हो ?

गोरिस्वेटोव की इन सब चीन्हा में व्यात्र प्रर्तमानोव एक प्रकार की सच्चाई की झलक पाता। साथ ही वह इन सब में प्राय तिस्रोण भ्यासोव की मूर्खता के साथ समानता भी पाता। वह जानता था कि यद्यपि इस उधम-भूद करने वाले छोटे-से आदमी घोर भारी भरकम उदासीन ठिक्काम के बीच बहुत अन्तर था। एलिजाबेत पापोवा की घोर उधमकर गोरिस्वेटोव बिस्माया—

“तू क्यों घुप है तुझमें तो मानवता की धारमा है ?”

वह मुस्कराती ता उसके अस्थिर अहरे में बड़ी पतझड़ जैसी नीसी-नीसी धाँसे धमकती रहती। ज्येष्ठ प्रर्तमानोव इन सब अच्युत घोर समझ में न आन बासे धाँसों को सुनता रहता।

“यह कम्पनावाद की पीड़ा है।” मिरोन ने अपनी एक के धीरों को साफ करते हुए कहा।

धमकसेई कहीं मास्को में घूमता फिर रहा था। याकोव सगातार मोटा घोर भारी होता जा रहा था और वह मातृजीव से किनारा लिए रहता। वह कम बातता। परन्तु, कभी-कभी वह मिरोन घोर गोरिस्वेटोव से वहुत में उसके पड़ता। याकोव ने तासारों जैसी सास-सास बाड़ी रत सी थी और वह सदा सोषों की भिङ्कता रहता। ज्येष्ठ प्रर्तमानोव जब इन आन्वामित अघान्त भागों के प्रति अघन बट का घोलत सुनता तो प्रसन्न हा

जासा—

“सब्रता ! घाप लोग सड़क के गड्ढे में ही बठे रहें ।
लेकिन धरम्य हो, घाप जरा सादगी स रहुना सीखें ।’

ज्येष्ठ घर्तमानाव न देखा कि याकोब को उस समय बड़ी
हैसी घाई जब एलिजाबेथ पापावा ने मास्को जा कर गोरित्स्वेताव
से घादी कर ली । मिरोन इस बात स बड़ा नाराज था । बह
घपनो नाराजगी का भी न छिपा सका । एक दिन उसने घपनो
नुकीलो दाढ़ी का हिसात हुए—ओ ब्यापारिया की-सी नहीं दीखनी
थी—बातचीत छड़त हुए बड़ी स्पष्ट मक्कारी म कहा—

“स्तपान गोरित्स्वेतोव जब ब एक मृत जाति के लोग
हैं । संसार के किसी कान में एस बकार निठस्से लोग नहीं
मित्तेंगे ।’

याकोब ने उसक क्रोध को मुसगाव हुए कहा—

घोर, ऐसी ही जाति का एक घादमी मुन्हारी नाक
के नीचे स तुम्हारे प्रेम का टुकड़ा पुरा ले गया ।

घपने कंधों को उचकाते हुए मिरोन न उत्तर दिया—

“मैं कल्पनावादी नहीं ।

यह क्या ? यह क्या चीज है ?” ज्येष्ठ घर्तमानोव न
पूछा घोर मिरान न प्रत्येक पद का धीर धीर उग्धारण करत
हुए कहा—

‘कई मही समन्ता कि कल्पनावादी कौन होता है ? घोर
पापा तुम भी इस नहीं समन्त—यह मुन्धरता क लिए ऐसी
ही चीज है जैसे गज विर क लिए नकसी बान या किसी
पाखवाज क लिए नकसी दाढ़ी ।

‘धरम्य ! सगता है किसी न मुन्धाने नाक घपटी कर दी

है । ज्येष्ठ भर्तामानाव ने प्रसन्नता से कहा ।

इस प्रकार की छोटी-छोटी बातों से ज्येष्ठ भर्तामानाव मुग़ा हा जाता और इन नई रोज़नी के लोगों द्वारा किए गए अपमान का बर्षा से सता या उसका कारोबार का सयातार अपना हाथ में कर उस एक घोर फेंकते जा रहे थे । परन्तु अपने इस एकांत में भी उसने विपादपूर्ण ध्यान अनुभव करना शुरू किया । इस एकांत में ज्योत्र भर्तामानाव का नए-नए लोगों से परिचय होता ।

ज्योत्र भर्तामानाव एक अशुद्धा धारमी था । परन्तु जीवन ने उसके साथ कठोरता से सीतेसी माँ की तरह व्यवहार किया था । उसका जीवन ही बाप के आशाकारी मुक़ सेवक के रूप में शुरू हुआ था जिसने उसे जीवन के सुख की जगह एक मूर्ख नीरस स्त्री से ग्याह दिया था और उसके कंधों पर काम का भारी बोझ लाद दिया था । नि सन्देह उसकी पत्नी उससे प्यार करती थी । जीवन के पहले दिन उसके साथ बुर नहीं मुजर थे । परन्तु, जब वह अनुभव करने लगा था कि वह चरित्रहीन जुला-हन जिनका उसमें बड़ी उमङ्ग और गरमी से प्यार करती थी और उससे सहवास के धानन्द का आनन प्रदान करती थी । मला में पेदाबर स्त्रियों की उमङ्गा का सा वह विचार ही नहीं करना चाहता था । उसकी पत्नी का सम्पूर्ण जीवन भय में मुजरा था—पहन वह असबसई और फेरोसीन सैम्प से डरती थी और माद में बिजली की मय में खासतौर पर जब कभी उसकी कुपी फट जाती थी । बिजली की बली के एकदम जलन पर वह नौथक हो जाती और अपनी छाठी पर आस का निगाम करती । एक बार वह प्रामाफ़ाम की दुकान पर भयात हाकर उससे चिपट कर बोली—

माह ! जान बा । इस मत छरीदो !' उसने पति से प्राधना की— हा-न-हा कोई तु ली धारमा इसमें छिपी हुई है

तो चिन्ता रही है ।”

वह जब मिरान डाक्टर याकाबव और अपनी सड़की तथ्याना से भी डरनी थी और दिन भर सुबह से शाम तक साफ़ माटी होती चारही थी । इस पर उसका भाई भी घब्राना करता था । वषा न उसकी प्रवृत्ति करनी शुरू कर भी थी । एक दिन जब उसने बटे याकोव से छापी करन के लिए कहा था उसमें हँसत हुए कहा था—

‘माँ प्रकृष्टा हा तू कुछ और सा । इस पर वह प्रकृष्टा करी और प्रबिश्वासपूर्ण भाव से बोली—

‘क्या मैं समझती हूँ कि मुझे प्रबिक् नहीं खाना चाहिए ।’
और फिर खाने लगी ।

बाप याकाव से बोला—

‘क्या अपनी माँ की मर्जीम करत हा ? पायी तो तुम्हें करनी ही चाहिए—यही उसका समय है ।’

गृहस्थ के बचन में बचन का समय ही नहीं है ।
याकाव ने काराबारी गम्भीरता से उत्तर दिया ।

क्या कारण है तुम सब जमान से डर रहे हो ? —
बाप ने नाराज होत हुए कहा । बटे ने कोई उत्तर नहीं दिया
और अपने कर्ण हिंसा कर रहे गया ।

वह भी कभी-कभी कह उठता—

पिताजी ! बाप भी नहीं समझत ।’ वह यह बात धीमे से कहता । फिर भी प्राप्तिरकार कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे पिता बटे से कम समझता था । साग विद्यत जमान में नहीं रहे थे और जब समय कुछ और हा था गया था । और जमाना भी इसी तरह चल रहा था ।

बेहतर पर एक ऐसा अज्ञेय भाव था जो पक्षियों में दिखाई देता है। उसकी चोटी छोटी छाती चपटी और नाक नीची थी। वह अपनी बहिन के पास रहती थी और पता नहीं किस कारण से हाईस्कूल पास न कर सकी थी। वह यहाँ से बहुत छीन मनी चाहिए। कुछ समय से उसने सिगरट पीना भी शुरू कर दिया था। गर्मियों में जब वह मिस के पास घर में जाती थी और बाप के साथ दाँत भीचकर अनादर से जबाब देती। यह दिन भर किताब पढ़ती रहती। संध्या समय वह शहर में बाबा के घर चला जाती और वहाँ से छोटे समय मुनहरी दाँतो वाला डाक्टर याकाब्सब उस घर पहुँचा जाता। रात में वह कन्या-सुसभ श्रमिता से भलाभाति सो नहीं पाती थी और अपनी बप्पनो से मन्धरो का ऐस मारता जैसे कि पिस्तौल चला रही हो।

अर्थात्मानाब का अवन पारों और की बुनियाँ मिरोन की घृष्ठापुण वाता में नकर सुने-सँयड़े टकी कमर बिल्लरे बालो वास स्टोकर बास्का के निरर्थक गीतों तक—सब अजीब और उसकी रसोइन से प्रेम करता था रसाईपर की लिङ्की के बीच प्रायें बन्द कर हार्मोन्का पर माता—

ज्यों मधु का पाए बिना
तनिक न प्राए रैन ।
त्यों मुख तेरा देखना
चाहूँ प्रिय दिन रैन ॥

और काफी समय से आत्मा में उस इत्या के बार में कुछ नहीं बताया था। और धात्रकस अर्पित व्याज अर्थात्मानाब का यहूपा बड़े बेटे की याद प्राण सगी। हो सकता है कि इत्या

घपन दुरापह का पर्याप्त दण्ड मिल चुका था। इस बारे में उम तब अनुभव हुआ जब उसके प्रति प्रलम्बई के भावों का उसने बखलत देखा। एक दिन सच्चा समय जब वह प्रलम्बई के घर गया और सामने के हाँस में घपना काट उतार रहा था उसने मिरोन को कहल सुना जो घनी मास्को से वापिस आया था—

‘दल्पा उन घादमियों में से है जा दुनियाँ का किताना में दल्लते हैं तथा पाइ और माय में घन्तर नहा बता सकन।

‘झूठ है। प्रतमानाव न घपन बटे के प्रति नसीजे के विरोध का दम्भकर कूछ संताप के साथ सोचा।

प्रलम्बई ने पूछा ‘क्या वह घनी मारिस्स्वतोव के साथ एक ही पार्टी में है?’

‘उससे भी घन्ध्र। मिरोन ने उत्तर दिया।

बठक में घन्धर गुसले हुए ‘येष्ट प्रतमानाव ने उम्हें घपन विचार में ही निङ्कना— जब ठहरा जिस दिन दल्पा वापिस आएगा तुम्हें बता दगा वह क्या है।’

मिरान ने उसी समय मास्को के बारे में बताना शुरू किया। वह बड़े राय में सरकार की भूमता के विरुद्ध गिद्वायत करन लगा। जब मिरान कागत्र का कारखाना लगान की घाबदयकता का शिकर कर रहा था (जिसके कारण सब उससे ऊँच चुक ध) नताल्या बटे के साथ घन्धर आई।

‘बाधा! हमार यहाँ पैसा बकार पड़ा है वह बाता। नताल्या एकदम सास हाकर (यहाँ तक कि उसके कान भी नास पड़ गए) चिल्लात हुए घाप से बाहर हाकर बोली—

कदी है यह पैसा किसके पास है?

प्रतमानाव एकदम उदाडीन हो गया, उस एसा दिखन

सगा जैसे कोई देला भासा कमरा, जिसकी सब चीजों से यह परिचित था अब लानी घोर नीरस हो गया है। यह एक प्रकार की शारीरिक चिन्ता और पबराहट, एक गाढ़े घुस्य की तरह बाहर से घाती जो उसके कानों को बन्द कर शरीरों का बहक भयानक बिचारों में डूब जाता।

'मैं तुम सब लोगों से ऊब चुका हूँ' वह बोला। 'तुम सबसे मुझे किस दिन छुट्टी मिलेगी ?

याकाब बड़बड़ाया—

'परन्तु हमारे यहाँ तो पहले ही काफी मुसीबतें हैं।" और नताल्या चिस्लाई— और अभी भी इन मजदूरों कारण तुम कहीं बाहर नहीं निकल सकते ! सब जगह सराबीपन और दुराचार फैला हुआ है।

घर्तामानोव उठकर लिङ्कीक के पास पहुँचा। वहाँ बयीब मङ्गको को पङ्क पर सब दिखा रहा था।

भाह ! तू घावम। व्याज घर्तामानोव ने घपनी नीरसता मंग करते हुए कहा। इस प्रकार के बाह्य बिचार उसक विमाग म चूहों की तरह तजी से बीड़ जात और वह उनके प्राकस्मिक भागमन से प्रसन्न हो जाता। इनसे उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं हाती थी क्योंकि वे सिर्फ घपानक ही प्रगट हात और फिर छिप जात।

'सो ! बहु तिसोन है।' व्याज घर्तामानोव बहुत चिड़ गया, जब उसने देखा कि उसक भाई ने तिसान को एक सान तक इधर-उधर भटकन के बाद उसक बापिस घान पर उसे घपने यहाँ काम पर सगा लिया था। और तिसान ने घात ही यह

अप्रिय समाचार दिया था कि पता नहीं उनका छोटा भाई निकिता कहीं भला गया है। प्योत्र का विश्वास था कि यह बुढ़ा दरबान जानता है कि निकिता कहीं भला गया है परन्तु सिर्फ उन्हें चुप्पी करन के लिए ठीक-ठीक नहीं बताना चाहता। इस व्यक्ति के कारण ही ज्येष्ठ अर्थात्मानाव अपने भाई से मनमुटाव कर चुका था और अलससइ न फिर भी बड़े जोर से विश्वास के साथ उसकी परखी की—

'जरा सोचो एक आदमी न जीवन भर हमारे यहाँ काम किया है, और हमने उसे भट बाहर फेंक दिया। क्या यह ठीक बात है ?

प्योत्र भी जानता था कि यह बात ठीक नहीं है। परन्तु वह अपने घर तिलोम की उपस्थिति सहन नहीं कर पाता था। उसकी पत्नी ने भी साधक जीवन में पहली बार अलससइ का पक्ष लिया और अपने स्वभाव के विरुद्ध असाधारण दृष्टा से बह जाती—

'प्योत्र इन्धन ! यह बुरी बात है। चाहे तुम मुझे मरे ही मारो परन्तु बुरी बात है।'

आत्मा से मिसकर उन्होंने उस समझया और धात किया, परन्तु उसकी आहत अन्तरात्मा न विजय से कहा—

क्या ? तुम्हारी मर्जी किसी के लिए कानून नहीं देखती !'

अब उसकी आहत अन्तरात्मा अधिकाधिक स्पष्ट अनुभव होने लगी थी। अपने भारी शरीर को उठाते हुए ज्येष्ठ अर्थात् मानाव पहाड़ा पर पहुँचकर थोड़े के पड़े के नीचे आरामकुर्सी पर बैठ जाता और अपनी आहत अन्तरात्मा के प्रति हार्दिक अनुकंपा अनुभव करता। उस अनाम्यदानी अन्तरात्मा के बारे में कल्पना करते हुए यह एक प्रकार की मधुर-कटुता भी अनुभव करता, जिसके

उत्तम गुणों का कोई पारखी नहीं था। वह इस भन्तरात्मा के बारे में उतनी ही आसानी से कल्पना करता जिस प्रकार गर्मी में किसी दिन दमदमों के ऊपर से नीले आकाश में सफेद-सफेद बादल उठने लगते हैं।

मिल धीरे-धीरे उससे पैदा हुए आश्चर्य तथा उसके चारों तरफ की चीजों को देख वह पूछता—

‘क्या इन सब आश्चर्यों के बिना जीवन सम्भव है?’

परन्तु कारखानदार अर्तमानोव ने आक्षेप किया—

य सब तिल्लों की बातें हैं।

पादरी स्वयं गारिस्वेतोव और दूसरे लोग भी यही कहा करते थे। हाँ साग मक्की के जाने में फेंकी मक्खी की तरह पल्लू फटफटाते हैं।

‘मुफ्त में भी घोड़ा बिया जा सकता है’—मिल मानिक ने जवाब दिया। कभी-कभी इस प्रकार दो गुंमो भन्तरात्माओं के बीच काफी गरम-गरम बहस छिड़ जाती और आहत भन्तरात्मा बड़ी निश्चयता से लगभग चिल्ला उठती—

‘याव है मने में शराब पीकर तू लोगों के सामने चिल्ला रहा था और अशाहम की तरह बट इसाक की बसि चढ़ान की बात बनाता था और बकरे की जगह सड़का निकोमोव सामने आ गया। तुझे याव है या नहीं? हाँ ठीक है यह ठीक है! और इस सच्चाई के कारण ही तू न मुझ पर फेंककर बोलल मारी थी। आह! तू न मुझे बरबाद कर दिया। तू ला मरी भी बसि चढ़ाना चाहता था। और, किसकी बसि, किसका? क्या उस सीमा बान ईश्वर के लिए, जिसका निकिता जिकर करता था? उसी को? आह! तू।

दुन दो आश्चर्यों के बीच भयङ्कर याद विबाद की पहिर्मा

म जिस मानिक ज्येष्ठ प्रतीमानाव जोर स प्राल मोच सता ताकि सजा काष के कटुष प्रामुषा को रोक सक । परन्तु य प्रामू एकते नहीं ये घोर घोर घोर उसक गान्वा स मोच दाकी पर घोर फिर हाथों पर टपक घाते जिन्हें वह हयनी स पाछकर सुखाता घोर अपन मूज लाल-लाल हाथों की घोर कृष्टित दृष्टि स बसता । फिर वह बड़े-बड़े घूँटी म सीषा बातस स मदिरा-पान करता ।

परन्तु, इन कटुतापूर्ण दुःखद प्रामुषों क हाम हुए नी यह दु खी अन्तरात्मा प्रतीमानाव का बहुत प्यारी थी । वह ज्येष्ठ प्रतीमानोव का बसी थी प्यारी दीक्षती जन कि बाप्यस्नानागार में सबक द्वारा दी साबुन लगी सन की गरम-गरम छान पीठ पर रगड़ी जाती है जहाँ हाथ नहीं पहुँच सकता ।

घोर, प्रधानक मुद्गर साश्वरिया म रुस क खिलाफ एक भयकर मुक्का लगा ।

प्रलम्बई उद्यनता हुआ प्रलम्ब का हिंसाता हुआ पिस्ताया—

“यह डाका है । यह सूट है । घोर अपनी पक्षिया जसी हयनी का छत की घोर उठाठ हुए अगुसिया का जोर स पकड़त हुए वासा—

हम उन्हें बता देंगे ।

मुनहरी दाँतों वास डाक्टर न जब में हाथ डालत हुए घोर दीवार म लमी गरम अगाठी की धार भुक्त हुए कहा—

‘हो सकता है वे ही हम बता दें ।’

यह ताँप जस लाल-लाल बासा वासा भारी मनुष्य सदा ही बकबक करता खूता या घोर आह उसक सामन बुद्ध नी कहा यह मजोस कर उठता था । वह बीमार मरत हुए साया

से भी उसी प्रकार परिहासपूर्ण वातें करता जैसे किसी असफल साधु की भास में । ज्येष्ठ प्रतामानोब को यह प्रचीव विदेशी-सा विश्वास देता जो सदा भ्रम्य से हैसता, जिसे प्रजनवी सागों के लिए समझना कठिन था । प्रतामानोब उसे नहीं चाहता था और नाहो उस पर विश्वास ही करता था । इसी कारण बीमार पड़ने पर शहर के चुप रहने वाले जर्मन डाक्टर फोन से ही प्रपना इलाज करता था ।

“बड़ी आसुरता ने प्रपनो दाढ़ी को मरोड़ता हुआ जैसे कि उसके गनमुण्डों में दर्द हा रहा हा एक कोन से दूसरे कोन तक समझींग की तरह कदम रखता हुआ वह सब को बता रहा था—

“यह सब प्रपनो के पड्यन्त्र से ही हुआ दिखता है ।”

“ठीक है, मगर यह मामला क्या है ?”—ज्येष्ठ प्रतामानोब ने दो एक बार पूछा परन्तु, न उसका चतुर भाई ने और ना बुद्धिमान भतीजे न ही इस बारे में समझदारी के साथ बताया कि यह सड़ाई एकदम क्यों शुरू हो गई है । यह इन आत्मविश्वासों बुद्धिमान सोपों को भयातं दस्तकर खास तौर से खुश था । उसने प्रसमन्धे से एसी धुरकतों की जिनसे कोई ऐसा साधु सकता था कि इस प्रचानक सड़ाई से प्रपनोई प्रतामानोब को ही कोई मुकसान पहुँच रहा है और बही किसी महत्वपूर्ण बात का करन में प्रसमर्ष है ।

शहर में एक धार्मिक जन्मस निकाला गया । सारा दक्षिण व्यापारी मण्डल बड़े रौब और बहुर भक्ति से भारी गिरी बफ पर प्रपन भारी कदमों से धैलों के समूह की तरह चल रहे थे और उनके पीछे मुनहरी पाशाक पहन, पावरी इधनों और धार्मिक पताकाओं का उठाए सम्मिलित रूप से गाठे हुए चल रहे थे । गिरक की संगीत-महली के मान की प्रतिध्वनि उठ रही थी—

“अपने भक्तों की रक्षा करो भगवान्..।”

प्रार्थना के य शब्द जो एक मंत्र की भावना रूप थे। व्यापारियों के गोले गोले भक्तों से निकलती हुई सफेद भाप के साथ भौंहों, मूर्छों और दाढ़ियों पर जम कर उन्हें सफेद बना रहे थे। इन सब में खासतौर से मोटा साल-साल गालों वाला और सफेद सीपी के बदन-सी भाला वाला गाड़ी बनाने वाले का बेटा बरोपोनोव जोर से गा रहा था। इसने अपने माप की सम्पत्ति के साथ-साथ बिरासत में अर्धमानोव परिवार के प्रति दया भी प्राप्त की थी।

अर्धमानोव परिवार के सात व्यक्ति जुलूस में साथ-साथ चल जा रहे थे। सब से आगे अमरुई अपनी पत्नी का हाथ थामे सोंगडा कर चल रहा था। उसके पीछे मानोव माँ और बहिन तत्याना के साथ उसके पीछे डाक्टर के साथ मिरोन और सब से पीछे हुस्की कृतियाँ पहने ज्येष्ठ अर्धमानोव चल रहा था।

“यह क्या है ? धीरे से मिरोन ने पूछा।

“यह शक्ति का प्रदर्शन है।”—डाक्टर ने उत्तर दिया।

मिरोन ने अपनी ऐनक उतार कर स्मास से पाछी।
डाक्टर बोला -

तुम देखो, उन्हें अवश्य ही मजा भया दिया जाएगा !”

“हूँ ! यह ऐसा कच्चा मास नहीं जो जल्दी से जल जाए !”

“शुप रहो, ज्येष्ठ अर्धमानोव ने भतीजे को टोका। मिरोन ने अपनी लम्बी नाक के काने पर रखी ऐनक में स कन छियाँ स उभे बेरता और फिर उँगलियों से चरमे का ठीक किया।

“भक्तों की रक्षा करो भगवान् !” बरोपानोव ने ‘भक्तों’ शब्द पर जोर दते हुए गाना शुरू किया और अपनी मोटी गदन

का पता नहीं किस कारण, पीछे का मोड़ कर अपनी लम्ब टोपी को हिलाया ।

पम्पानाव की लड़की बहुत अच्छे ऊँचे स्वर में गा रही थी । वह चालीस साल की थी फिर भी थी ताज़ी गोम धौर भारी घन-वासी एक सुन्दरी । वह तीन बार विधवा हो चुकी थी । सारे सहर में बदनामी धौर निर्लज्जतापूर्ण जीवन में वह अग्रिणी थी । प्योत्र अर्तमानाव न सुना कि किस प्रकार वह धीरे-धीरे नसात्या को परामर्श दे रही थी—

“बयों सम्बन्धिन ! तू अपने पति को सड़ाई पर क्यों नहीं भज रही । यह ठरा इतना बरावना है कि उस देखते ही बुधन भाग जाएगा ।”

धौर, फिर याकोब की धार मुड़कर पूछने लगी—‘क्यों धमपुत्र धनी तू धादी नहीं करेगा क्या ? मुर्गा कहीं का !’

ज्यष्ठ अर्तमानोव ने यह सब सुनकर मुँह मोड़ लिया । उसके दिमाग में ये सब धब्बे मक्खी की तरह भिनभिना रहे थे धौर उसे कोई अत्यन्त आश्चर्यक बात साधन में आधक हो रहे थे, वह सोगा की पक्ति से एकदम बाहर निकल कर पमडंडी पर धीरे-धीरे चलन लगा । बराबर से निकलती सागों की भीड़ इस बर्फ जब धुध दिन में भी काली प्रतीत होती थी । साग धाग धम जा रहे थे चल जा रहे थे । उनके मुसों से भाप लौलते समबार की तरह बाहर निकल रही थी ।

इस भीड़ में पापोवा भी अपने कठोर बहरे के साथ अपने छात्राभा के साथ धागे धागे चल रही थी । उसके धिर क धूरे बालों पर गिरी हुई बर्फ किरणों की तरह धमक रही थी । जब उसने अर्तमानोव की धौर बलकर धिर हिलाया ता उसकी भोंहों से बर्फ नीच को ढूँढ़ी । अर्तमानोव क धिस में उसके लिए दया सी पदा हुई—

“मूसल । इन वस्तुओं को बरान का ही काम ले ली है । कट हुए बालों वाले सड़कों की सम्यो पैदलियाँ भी उसके सामने से गुजरी जो शहर के दो स्कूलों के सड़कों की थीं । इससे बावजूद एक नारा नहीं नीली मशीन के साथ सिपाहिया की प्राची कम्पनी गुजरी जिसका प्रमुख शहर का प्रसिद्ध लफ्टिनेन्ट मारविन था । मारविन की प्रसिद्धि उसके प्रतिदिन बसन्त में वर्ष के पिघलने से सड़क सड़ियाँ में जमने तक छोका नहीं में नहाने के कारण थी और वह पम्पासोना के साथ रहता था ।

उसके बाद भारी भरकम माटी बलख के समान जन्म भ्रष्टतर निस्वरन्को चल रहा था । उसकी जीनियार् त्रैसी ठणकी मूर्छे थीं । उसकी बीमार पत्नी भ्रमन भाई का हाथ धाम बन रही थी । इनमें निस्वर्किकन नी था जो शहर के पुराने मयर का लड़का और उसके बमड़े के कारखाने का उम्तराधिकारी था । निस्वर्किकन के बार में यह प्रसिद्ध है कि यद्यपि वह गिरब की साधु नियाँ के साथ रहता था परन्तु उमने सातसौ पुस्तकें पढ़ी थीं और बोल बजाता इतना प्रफुल्ल और पूर्ण रूप से जानता था कि क्रौमो सिपाही भी उससे यह कला खोरी छिप सीखत थे ।

स्तपान बाल्की खर्ची और मांस का एक पिण्ड-सा लग रहा था । वह अपनी स्तेज^४ में भ्रमन पियुङ्गुङ्ग जमाए और विरध्री पाँवा बाली लड़की के साथ जा रहा था । उसके पीछे-गाछ नोड़ के रूप में शहर के छोटे लोग चल रहे थे जिनमें मध्यम बग बमड़े का काम करने वाले टेल गाड़ियाँ बनाने वाले और भिगारो तथा बहुत-सी एसी बूढ़ स्त्रियाँ थीं जिनकी किमी को बकरत नहीं रही थी । वे स्त्रियाँ पुहियों का तरह बना जा रही थीं । प्रासमान से और और प्रत्येक गति से बक नोच गिर रही थी और सागा के सिरों और शरीर पर जमती जा रही थी ।

^४ स्तेज—यक पर चलने वाली बपहिए की पाड़ी ।

दूर से बरोपानोव की माँग करती हुई धनयक पीछ सुनाई दे रही थी— 'मत्तो की रक्षा करो भगवान !

“परमात्मा को इन लोगों की क्या जरूरत है ? समझ में नहीं आता कि क्या जरूरत हो सकती है । अर्थात्मानोव ने सोचा । वह शहर के लोगों को नहीं चाहता था । शहर में अपने कारोबार के असावा उसका लगभग किसी से कोई सम्बन्ध नहीं था । वह भी जानता था कि शहर वाले उसे नहीं चाहते हैं और उसे बहुत घमण्डी और क्रोधी समझते हैं । परन्तु सब शहरी मांग अस्तवसेई की बड़ी प्रतिष्ठा करते थे क्योंकि वह चाहता था कि शहर की बड़ी सड़क को कंक्रीट का बना दिया जाए, चौराह के पारों तरफ पेड़ लगाए जाएँ और छोका नदी के किनारे बगीचे लगा दिए जाएँ । मिरोन और याकोव से भी शहरी बरते थे और उन्हें बेहूब आसपी समझते थे, कारण कि आसपास की सब चीजों पर उनकी नजर रहती थी ।

धीरे धीरे चलते हुए इस गम्भीर जम्बूस का बखर अर्थात्मानोव ने नाक-भौं सिकोड़ी । इस भौड़ में उसके बहुत से जान बूझे बेहरे थे । नाना रसों की अनेक घाँसें उसकी ओर एक साथ बिद्वेष से निहार रही थीं ।

अस्तवसेई के दरवाजे पर पहुँचने पर तिस्रोत ने मुक कर उसका अभिवादन किया । अर्थात्मानोव ने उससे पूछा—

‘क्यों वृद्धे ! सड़ाई छिड़ गई है ?’

तिस्रोत ने मुकनाय से अपनी सुपरिचित भावभंगी में भारी हाथों को उठा कर अपने गालों की रगड़ा । आज जीवन में पहली बार अर्थात्मानोव ने इस आवमी से बिदवात के साथ पूछा था—

‘क्या तू सोचता क्या है ?’

बकार है । अर्धों का एक तिसबाड़ है ।’ ब्यालोव ने

एकदम उत्तर दिया जैसे कि वह इस प्रश्न की प्रतीक्षा ही कर रहा था ।

‘तरे लिए सब-कुछ बेकार और बच्चों का खम है । अनिश्चित भाव से अर्तमानोब ने कहा ।

‘क्यों नहीं ? क्या हम कृत्त हैं ? हम जानवर तो नहीं ।

अर्तमानोब हल्की बक से प्राण बढ़ गया । बक अब जार से पढ़न लगी थी । उससे विद्यास भीड़ के सिर बिस्कुस ढक गए । बकं टीनों पड़ा और छतों पर भी एकत्रित होकर वह उन्हें सफेद बना रही थी ।

क्योंकि उसका सांत्वना देने वाला सराफिम घब मर चुका था ज्येष्ठ अर्तमानोब ममारखन के लिए प्राय बिषया साधुनी ताइसिया पेराकिनताबा के पास जान गया । वह एक दुबली-पतली अनिश्चित आयु की जवान विधन वाली काली बकरी-सी स्त्री थी । वह बहुत घांघ स्वभाव की था और अर्तमानोब के साथ सवा ही सहमत रहती थी ।

‘हाँ-हाँ, प्यारे, हाँ ! यह कहा करती ।

उसके घर में अर्तमानोब बिना किसी किन्तक के धाराव पीता और धीरे-धीरे नद्य में जाता । कभी-कभी उस मुस्सा नी जाता कि उसे यह नया धीरे-धीरे क्या घा रहा है और उसके असम्बद्ध अस्पष्ट बिचार ताइसिया की मुस्वादु और तीव्र बोदका के नये में विचलन लगत । नद्ये के पहल कुछ घण प्रिय हाथ । वह अपने और दूसरों के बारे में कटुतापूर्ण बिचार किया करता । जीवन के पापा और धराब के हर दस-सी रण जैसे बिचारों की धारा उस और भुमा दती जिनमें कभी-कभी वह अपने का किसी भारे मनु में गिराने को इच्छा करता । अपने दांतों का फिट किटाता हुआ वह अपने अन्दर उल्लेख तुषान का सुनता और

देखता घोर फिर जार से ताइसा कौ घोर चित्साक्षा—

क्या तू चुप क्यों है ? कोई नई बात सुना ।”

बकरी की तरह वह खी उछल कर उसकी जाँधों पर घा बटती । वह आश्चर्यजनक रूप से हल्की घौर उच्छ्र थी । अपने सामने एक किताब को छिपाकर रखे, वह पढ़ती—

पम्पासाधा न मपटीनन्ट मावरिन का हिसाध कर दिया है वह फिर तीन सौ बीस सबम हार चुका है । वह अपनी हुण्डी माँसती है जा उसने सिखवासी थी । घोर जेन्दामं अपनी की का सहर में इसलिये नहीं रखता कि वह बीमार है, परन्तु इसलिये कि वह अपनी रखस से मिसत रहना चाहता है ।’

यह सब गन्द है । प्रतमानोव कहता ।

गन्द ! प्यार कैसा गन्द ?

सहर की घटनाओं के बारे में उसकी चर्चा से प्रतमानोव के विचार दूसरी तरफ चल पड़ते और इन मीरस पापा सहरियों के प्रति उसकी घृणा और बढ़ जाती । इन विचारों के साथ-साथ मसे का रगरनियों के टुप्पा की स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगतीं । मूख-नग घराबी भरपेट सलपाई घाँजों बाल सपना फूकन बाल जिन्हें किसी बात की भी परवाह नहीं थी जो कबल मात्र अपनी घारीरिक वासना की सृष्टि करने में व्यस्त थे वह परम शुभ सुन्दर खी जो काल पृथस्थल से अपनी निर्लज्ज निबसन-नभता का प्रदर्शन करती थी इत्यादि ।

प्यार प्रतमानोव गुरबाप विभिन्न रंगों की बादकाओं की पुमशियाँ मठा घोर तिसरने गुम्भ के प्रचार का चराता । एम समय अपनी नस-नस में उग ससार की सबम महान् शक्ति— एक भयदुर यास्तविक शक्ति उस खी में ही थी जो धन के लिए अपने नग्न शरीर का प्रदर्शन करती थी जिसका प्रसन्न करने

क लिए बड़े-बड़े प्रसिद्ध धनवान् धीर प्रतिष्ठित व्यक्ति धपन धन सञ्चा धीर स्वास्थ्य का हाम करत ध का अनुभव हाता सकिन उसक लिए इस कामी बकरो क धनाधा सार जीवन म धीर कुछ नही था ।

धपन कपड़े उतार फेंक धीर नाच ! धर्तामानाव गरज उठता ।

बिना सगीत क नाच कैसा ? साधुनी धपन कपड़ों का खासती हुई कहती— नम्काव गिकारी का बुलाधा बहु हारना नियम धच्छा धजाता है ।

इस प्रकार क मनारजना म समय धनवान में ही गुजरता जाता था धीर इन धंधधारपूग्ग दिनों म कभी एनी मातें नी हा पातों वा ममभ्र में ही न धा पाता था । सन्धियों म धफ्फवाह पुनो गई कि पीतसबर्ग म मञ्जुनों ने जार क मङ्गनों का नष्ट कर लिया है धीर लोग जार को मारना चाहन हैं ।

तिस्रोत ब्यालान धुनमुनाया—

धभी तो व गिरवा का भी ताङ्ग —धीर क्यों न मोड़ें ? सोम जाह क ता हैं नहीं ।

फिर धमियों म लोग धर्षा करते मुन गा क किसी-ममुद्र क किनारे एक कमी जंघी बड़ा गहरा पर गान धरना रहा है । इस पर तिस्रोत धामा—

‘धीर क्या न धरसाए ! नाग सङ्ग के घादी जा हा गए हैं । गहर म इकाना (इध प्रतीया) क माध क्रिग एक जन्म निकामा गया । धरापानाव धुरी पाशाक म जार की तस्वीर हाथ म धाम माध कर रहा था—

भस्त्र का रथा करा, नगवान् ।’

यह इस धार धीर धधिरु जार स धीन रहा था धीर

मजदूरों के प्रति 'नकार' में सहायता और भय की भावना छिपी हुई थी।

खराब के नये में नान गजे नगे सिर वाला भित्तीकिन चमड़े के कारखाने के मजदूरों के प्रागे-प्रागे एक बुनाली बन्दूक लिए चिन्ता रहा था—

साधियो ! यद्दियों के हाथ में इस का नहीं जान दोगे । रुस किसका है ? हमारा ! हमारा !!' —सहमति में सब खराब के नये में धुल मजदूर चिन्ताए । फिर घनत पुराने खनु—कपड़ा-मिम मजदूरों को देखकर ब सड़ने लग । उन्होंने डाक्टर याकोम्सोव का इण्डा मारा और बुदु कम्पारण्डर को घोका नदी में गिरा दिया । भित्तीकिन कम्पारण्डर क सड़के का दर तक शहर में पीछा करता रहा और दो बार उस पर मोती भी बनाई, परन्तु उसका निशाना भूक गया सकिन उसके कुछ घरेँ दर्जी घुस्कोव की पीठ में जकर लये ।

मिम में काम बन्द हा गया । मोजवान बुनाह मजदूरों में घपनी बाहें कहीं और मिरान तथा दूसरे समभवार मोयों के मनाने समन्धान चिन्ताने और औरता क घाँसुर्पा को भी घनमुना कर ब शहर की घार दोड़ पड़े ।

मिस आमी और निर्बम हो गई । वह उस घाँसी के सामने मुकुड़ी सिमटी-सी प्रतीत होती थी जिसने विश्रोह में पीछना और चकर घाना घुरू कर दिया था । वे बर्फीनी कुघारें मिस की दीवारों में टकरा रही थीं । उसने मिस की चिमनी का बफ स डँक दिया सकिन कुछ समय बाद वह गन गई ।

ज्यष्ठ घर्तमानाव लिङ्की क पास बीठा कुच्छित्त दृष्टि से पीटिया की तरह मर्वों और छिया की कापी-कापी मूर्तियों का शहर और शहर स बाहर की घार दोड़त हुए निहार रहा

था। खिड़की के बाहर उसे ऐसा लगा कि इस भाग-दौड़ से लोग बड़े प्रसन्न हैं। फाटक के बाहर उसे हारमोनिका* की धी-धी भी सुनाई दी जिस पर मजदूरों की भीड़ में लगड़ा कोयला भोकेने वाला वास्का कोताव था रहा था—

“कसी भूमि पर भारी भीड़ ।
सड़ रहे कसी घोर आपानी ॥
आपानी मुँह पर भारें मुक्का ।
हम मारें उन्हें इकोंनों स ॥

वायु के साथ एक सरसराहट की आवाज आई, जो ठीक किसी भीस से भरें हुए विशाल खोले सरावर के उबाल के समान थी। फाटक के बाहर अल्पसेई की झाड़ी गाड़ी आई, जिसमें से एक आँसू वाला कन्नाउग्जर मरोबोव बैठा था। गाड़ी में से घोंस से डकी आल्गा भी बाहर निकली अर्थात्मानाव जरा डर गया और अपनी टाँगों की पीड़ा को भी मूल जल्दी में उठा और उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा।

नया हुआ है ?’ आल्गा ठीक मुर्गी की तरह फड़फड़ाती प्यराई हुई वाली—

‘मझे के मजदूर ने हमारी खिड़कियाँ तोड़ दी हैं ।’

अर्थात्मानाव उसका रास्ता छोड़कर जरा मुस्कराते हुए गुनगुनाया—

‘सा मुँह पर पिस्ताते थे, बकवास करते थे। अब उसका नतीजा यह पार ही नहीं है ।’

घोर उस अज्ञानक, असाधारण रूप से आल्गा का आर-वार, पूणापूर्ण उत्तर मिला—

* हारमोनिका—एक प्रकार का हारमोनियम जसा बाजा ।

बस कर । चुप रह ! तेरा यह ऋार बड़ा बेईमान
घादमी है ।

ऋार के बारे में तू खूब जानती है,' उसने मद्दे तरीक
से कहा और अपने हाथों को कानों तक उठाया ।

इस छाटी-सी एकधारी बुढ़िया की जो सवा ही घात और
चुप रहने वाली थी और कभी किसी के बारे में बुरी बात न
कहती थी—रोप भरी आवाज से वह विस्मित हो गया ।
उसके सख्तों में एक प्रकार की विचित्र सझाई थी । नि सवह
यद्यपि उसका कोई महत्व नहीं था और वह पिन्नाहट ऐसे ही
निरर्थक थी जैसे कि कोई पूहा अपनी पूँछ पर बैल के पाँव पड़
जान से पिन्नाहटा हो और बैल को किसी प्रकार का नुकसान
नहीं पहुँचा सकता हो । अर्थात्मानोब अपनी आरामकुर्सी पर बैठ
गया और सोचने लगा ।

उसने नाराजगी के कारण आस्था के बटे को भी उससे अपने
किनारा-कदी के स्याम से कई हफ्तों से नहीं देखा था । यह घटना
गमियो के अन्त की थी, जब अर्थात्मानोब अपनी टाँग की सूजन के
कारण विस्तर में पड़ा था । इसी समय उसका शत्रु परोपेनाब
बड़े रीढ़ के साथ पसीने में लथपथ अन्दर आया और अपने नीचे
मोटे घोटों को पथपपाता हुआ अर्थात्मानोब से पार का भज जान
बाज एक तार पर हस्ताक्षर करने के लिए कहने लगा । उमम
प्रापना की गई थी कि पार भजवूस रहे और अपने हाथों से राग्य
शक्ति न स्यामे । अर्थात्मानोब नगर के मुखिया की इस धृष्टता-गुण
मोग से कुछ विस्मित हुआ, परन्तु उसने हस्ताक्षर कर दिए,
स्याफि, उम विश्वास था कि उमका भाई और भतीजा मिराम दोनों
इसमें नाराज हाग और पीतसबग से बरापानाब को भी घासी
भय पड़गा कि यह माटे घाटा बासा कैसा भूय है, जा अपने

स ऊँचे लोगो के मामला म निरर्थक हस्तक्षेप कर रहा है ।

बरोपोनोव न तार के कागज का अपने कोट की जेब म डालकर काट के गसे तक क बटनों को सगाते हुए प्रलम्बई मिरोन डाक्टर और उन सब मार्गा की जा यहूदियों क भड़कान से डार क खिसाफ काम कर रहे थ—जिनम से कुछ मूखता स और दूसरे अपने स्वाय की सिद्धि क लिए डार क खिसाफ चल रहे थ दिकायतों की । ज्येष्ठ अर्तमानोव न उसकी सब दिकायतों को सन्तोष के साथ सुना और सहमति प्रगट की । परन्तु जब उसने नीचे मोठों स वीर्य पापोवा के विरुद्ध जहर उगलना शुरू किया तो वह कठोरता स बोला—

वारा निकोलायवना का इसमें कोई हाथ नहीं ।

‘कस नहीं ? उसका पूरा हाथ है । हमें सब पता है ।

‘बस तुम्हे कुछ पता नहीं ।’

‘बहुत अच्छा इसका मतौजा तुम्हारे लिए कुछ ही निकसेगा ।’ यह कहकर वह बाहर चला गया ।

सध्या सन्ध ज्येष्ठ अर्तमानोव पर उसका मतौजा और लड़की, उसका उमर पर भी रहम न लाकर उस पर कुत्तों की तरह भपटे और भौंकने लग ।

पिता जी ! आप क्या कर रहे हैं ?” तत्याना पिस्ताई और उसके अनुन्दर चहर पर ब्याकुल भाँसे घूमने लगी । याकाव खिड़की क पास खड़ा उद्गलियों स धीगा बना रहा था । अर्तमानोव का लगा कि उसका बेटा नी उसक खिसाफ है । और मिरोन न बड़े विपाक स्वर म पूछा—

‘आपन पढ़ा था कि उस कागज म क्या लिखा हुआ है ?’

परन्तु, कारखाना अभी तक पूर्ण रूप से उसी के हाथ में था। मिरान कारखाने का सारा काम बड़ी समझदारी अतुराई और धारम-विश्वास से चला रहा था। मजदूर या तो उसका कहना मानते थे या डरते थे और वे लोग शहरी मजदूरों की अपेक्षा अधिक सान्त्वित थे।

बामुमखल घात हो गया फिर भारी वर्ष में बव गया हो। वर्ष बड़े-बड़े वर्षों के टुकड़ा में तेजी के साथ सीधी नीचे गिर कर खिड़कियों को घपन सकेस पदों से ठक रही थी जिसके कारण बाहर का कुछ नहीं दिखाई देता था। ज्येष्ठ अर्तमानोब से कोई भी बात नहीं करता था और वह अनुभव करता था कि उसकी पत्नी के अतिरिक्त अन्य सब उसे शहर के भगड़े भुरे मोसम और जार की असफसता और अयाम्यता इत्यादि के लिए अपराधी समझते हैं।

और, यासा कहाँ है ? मैं न क्याकुल हो पूछ—'यासा, मैं पूछती हूँ यासा कहाँ है ?'

मिरान न पूणा से घपनी नाक खिड़ाई और आँसु की धार निहारन लगा।

'भामूम पड़ता है कि वह अवश्य शहर के मुर्गीखाने में छिपा है।

'क्या किस जगह ?' मैं न भय से पूछ।

अर्तमानोब सोचने लगा—

अब्दा हा, यह न जान पाए। भूल है ! इतना भी नहीं जानती कि यासाब की एक प्रमिका है।

और फिर घपानके बड़ी इड़ता से बोला—

“बहुत अच्छा तुम जैसा चाहत हो वैसे ही रहा । बैसा ही करो । ठीक है प्रसन्न म मुझे कुछ पता नहीं । मरी समझ म कुछ नहीं आता । मैं बुझडा हू बुका हू । मुझे दिखाई दता है कि इसम पतान का हाथ है वही ये सब खिसबाड़ कर रहा है । इतनी उम्र तक मरी समझ में कुछ नहीं आया ।



२६ वर्ष की उम्र तक याकोव प्रतापानोव का जीवन अच्छी तरह और शांति से गुजरा । उसने कभी किसी प्रकार की विशेष प्रियता का अनुभव नहीं किया । परन्तु, उसके बाद एक ऐसा समय आया जब दान्त जीवन के प्रेमियों का धर्म याकोव के साथ भी बर्झमानी से भरे और गड़गड़ खल खेलने लगा । भ्रातृओं के तीस साल बाद जिससे एहर की दान्त आबादी में उषल-पुषल र्ववा हो गई । यह पहली प्रपेस की रात को शुरू हुई थी ।

याकोव सोफे पर सेटा सिगरेट पी रहा था और एक एसी संतुष्टि का अनुभव कर रहा था, जो किसी इच्छा रहित अवस्था में हाती है, जिसका कि वह जीवन में बहुत सम्मान करता था और इसी से वह अपने जीवन की पूर्ण-साधकता समझता था । यह संतुष्टि उस एक परम सुस्वादु भावन करने और एक आ पर पूर्ण अधिकार कर उसका दान्त उपमाग करने के बाद हुई ।

यह गाँस मगोल और मुगलित स्त्री कमर में उसके पास
 स्टूल पर खड़ी थी और रोप में जामुनी ज्वाला से जलते हुए
 काँजी के बतन के नीचे स्प्रिण्ट मम्प की धार विचारमग्न दृष्टि
 में निहार रही थी। उसकी नगी घाँहें और बच्चों जसा पहरा
 साम-गुलानी रंग की मम्प के प्रकाश में अच्छी तरह तले लाल
 समामे कम रङ्ग का दिखाई दे रहा था। उसके काल-काल बाल
 एक चित्र की तरह गदन और कंधों पर बिखर रहे थे। पोसीना
 के नग्न शरीर पर सुनहरा पीला बुन्दारे का चोगा पड़ा था और
 उसने माराङ्गी के हरे म्नीपर पहिन हुए थे। उसमें एक विद्यप प्रकार
 की लक्षक सुयङ्गता और प्र-भिमिता थी। उसका छाटा-सा सुन्दर
 पहरा कुमाराबस्या के सङ्का जंसा था फले-फूल प्यार घोठ
 जीवनभरी गोल-गोल चरी जैसी घाँवें थी और उसका सम्पूर्ण
 शीघा इस समय भी जबकि वह उनका पूर्ण धानन्द उपनाग कर
 चुका था पर्यन्त प्रिय और मनोहर स्मितसाईं दे रहा था।
 नि सन्देह अपनी जानकारों की अन्य लक्षकियों और स्त्रियाँ स
 वह धष्टर थी और यदि उसमें कुछ मूखता न हावी ता वह
 और भी अच्छी होती।

मैं काँजी महा पीता। मरी प्यारी घाम्र-नजरी।
 याकोव ने सिगरेट का घना घुघाँ छाड़त हुए और उसक बीच स
 दसते हुए कहा। पोसीना ने उनकी ओर बिना दन ही पूछा—
 और मैं ?

मुझे नहीं पता मू क्या चाहती है। याकोव ने पकान
 नरी जैनाई सेत हुए कहा।

हाँ हाँ मुझे क्यों नहीं जानाग ?' उसने सिर का झटका
 दकर फनी घाबाद म कहा। एक मिनट भर उसक चिङ्गान बाल
 घुभते हुए व्यर्गों का मुन याकाब ने सिगरेट धर्म पर फेंक दा
 और तूता पहिन साम सता हुआ बामा—

“मेरी समझ में नहीं आता कि यह तरा स्वभाव कैसा है कि भसीभाँति जानत हुए भी कि जबतक पिता नहीं मरता, मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकता ।”

“यह बात तो हमेशा ही होती है ।” पोलीना ने नाना प्रकार के अपशब्दों की बौछार करते हुए धाग कहा—

“बचक मकड़े कहीं के तुम्हें तो मच्छी मौज ही चाहिए ! मैं जानती हूँ कि अपनी इस खुशी और मौज के लिए तू मुझे किसी मुड्डे सातारी को भी बेच सकता है । हाँ हाँ तू ! बेईमान धादमी ।”

याकाब को खासतौर से सब बहुत बुरा लगता था, जब वह उस मकड़े के नाम से पुकारती थी । वैसे प्यार की घड़ियों में उसने उसका एक और नाम सलाने स्वाद रखा था । उस एसा प्रतीत हुआ कि कम-से-कम वह धाग के दिन तो इस भगड़े से बाज्र धा सकती थी, क्योंकि अभी दो पच्चे पहिसे ही उसने उस से ख्यल दिए थे ।

बिस्लाम से तरा कुछ नहीं बनना — याकाब ने उसे पताबनी दी और टापी पहन कर उसकी और हाथ बढ़ा — दस्वि दाम्पा ! (नमस्कार) कह कर बाहर चला गया ।

सुधर कहाँ का ! फर्श पर फिर सिगरेट फेंक गया है ! सड़क पर सीसी हवा चल रही थी । भूमि पर बादलों की ध्याया ऐसे सरक रही थी जैसे कि यह सड़क पर पड़े पानी के मड्डा को पाछ रहा हो । जब कुछ धराणों के बाद चाँद मरकाता मड्डा में भरा पानी बर्फ की पतली तरह से ठक कर काँस की तरह चमकन लगा । इस सान सर्दी भी यड़े जोर की पड़ी थी और बसन्त के धान पर भी जल्दी लिखकने का नाम मसती थी । अभी पिछली रात को ही जार की बर्छ पड़ चुकी थी ।

याकोब अर्थात्मानाब बिना किसी जस्दी क धीरे धीरे जेवों में हाथ डाले धीरे जगन में भारी डडा घाम भोगा की विविध, प्रत्यय मूलता के बारे में साक्ष्यता हुआ चला जा रहा था। इस प्यारी मूर्ख पालीना को धीरे क्या चाहिए ? वह मुक्त-मान्ति से रह रही है ? किसी तरह को फिर नहीं धीरे सगभग सी स्वस महीने स्वयं क मिस जात हैं। याकोब जानता था धीरे अनुभव भी करता था कि वह उसे चाहती है। धीरे फिर भी उस क्या चाहिए ! वह पारी क पीछे क्या पड़ी है ?

ठीक मुरख क अरतन में एक चूहे की तरह।" उसमें प्रपन मन-पसन्द कहावत में प्रपन बिचारा का समाहार किया। उस जीवन बहुत सीधा-सादा दिखाई दिया जो मनुष्य से जो कुछ भी उसके पास है उससे अधिक कुछ मांग नहीं करता। वस्तुतः यह स्पष्ट है कि सब मान इसी उद्दय-गुण पान्ति को प्राप्त करना चाहते हैं। दिन भर की महनत भी इस रात्रि की नीरबता की बहुत कुछ अप्रिय भूमिका है जब मनुष्य दिन भर की थकान के बाद किसी स्त्री के पासिगन में एकान्त सहवास करता है धीरे बाद में उसके प्रमासिगन सभाग धीरे प्रानन्द की थकान के बाद निस्सन्द गाड़ निद्रा में सा जाता है। यही वस्तुतः महत्वपूर्ण वास्तविकता है। लाग मूल हैं क्योंकि सगभग सभी स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से प्रपन का धीरों से अधिक नुजिमान समझते हैं। वे बहुत-सी निरर्थक कल्पनाएँ करते हैं। हो सकता है कि यह वे किसी मुड़ता धीरे प्रपता के कारण करते हों जिसमें प्रत्येक धादमी दूसरों से प्रपन का प्रसंग करना चाहता है ताकि वह नीक में स्वयं में गये जाए धीरे नजर से न प्रान्त हो जाए।

इसका भी मूल है, ' वह प्रपन विचारों कास से ही जब स्कून में पड़ता था छिताओं में ही गीया रहा। सब वह माधि

सिस्टों (समाजवादियों) के पीछे लगा हुआ है । याकोव की उससे पहिल ही बहुत-सी नाराजगियाँ थीं और जब वह साइ बेरिया में पहुँच गया है जहाँ उसे अभी कुछ दिन हुए याकोव में कुछ पैसा भेजा था । उनकी माँ भी घसह्य थी वह निपट मूल थी । उन सबसे बढ़कर उनका पिता घसह्य था—वह भी कोधी और सा इलाक मूर्ख बुड्ढा रीछ-सा था जो सोर्गों के साथ नहीं चल सकता था और सदा घराब के नदों में घूर और गवा रहता था । यह बाबा घसहसेई भी जो इधर-उधर भटकता रहता था उस पर उस हेँवी घाती थी जो इस बात की कोघिष में रहता था कि किसी-न किसी तरह सरकारी इधुमा में घा जाए और इसलिए बड़ी तृपणा के साथ घलबारों को पढ़तास करता । सब तरह के घहरी सोर्गों के साथ मोठा मूँठ-मूँठ मिठाव और घापसूसी की घातें करता और मिल की बुड्ढी घोरछों के साथ गम्भी मसोसेँ और दुराधार-गुण गवा जीवन बिताता । सबसे बढ़कर घूणा उस भयानक-मूल सम्बी नाक बाल कठफोड़े मिरोन स थी जो घपन घापको रुस का एकमात्र परम बुड्ढिमाम् ब्यक्ति समझता था । और, घपन घापको भाबी कैबिनेट मिनिस्टर समझ बठा था । गिघस दिनों स उसने घपन इस बिदबास की छिपाने की कोघिषों भी बढ कर ली थीं और घभिमानवघ कहता था कि बस वही जानता है कि घाग क्या करना घाहिए और वघ के घूसरे लारों को क्या साचना घाहिए । वह भी मजदूरों की सहानुभूति घ्राप्त करन की हरबन्द काघिस करता था और उनकें लिए तरह-तरह के मनोरंजन—जैस फुटबाल टीम, पुस्तकालय इत्यादि के सगठन से भेड़ियो का गाजर खिसान जैसी काघिस करता रहता था । तरह-तरह का सुन्दर कपड़ा बनान वाल मजदूर फटेहाल घिघडा मे गन्वा और घराघिया का जीवन ब्यतीत कर रहे थ । उन पर भी सामूहिक रूप से एक प्रकार की मूलता का नूत सघार था और उनम घृष्टता ता बहुत थी

किन्तु श्रीमती-सादी समझ धीरे धीरे बनाने का काम या जो एक
 मामूली किसान में पाई जाती है। याकाव मजदूरों के घर में
 बहुत कुछ सोचता रहता था क्योंकि उसके माय हो
 सबसे अधिक निकट का सम्बन्ध रहता था। उसकी नौजवान मज
 दूरों के साथ सड़किया के कारण नष्टपन में ही नाराजगी धीरे
 धीरे थी। उनमें से बहुत से विराधीता अपना पुरानी धिक्का
 यतों का धनी बूत नो नहा थे। धनी जब उसके शब्द भी नहा
 धाई थी मजदूरों ने दो बार राम के समय उस पर पत्थर फेंक
 प धीरे कई बार उसकी माँ ने थिछाती हुई प्रीति में घर लन
 पर उसकी बदनामिया को खरीदने के लिए पसा नी दिया था।
 एम घबमरों पर वह उस निडरता धीरे उसका गलती बतात
 हुए कहती—

'तू कसा पूरुं मुर्गा है। तुम्हें कार्म नी व्यवहारिक बात
 नहीं आती। धादी का तू इन्तजार क्या नहा करना या किमी
 को एस ही रखन बना म। यदि तर बाप तक व सब मित्रायतों
 पहुँची तो इत्या की तरह तुम्हें भी घर में बाहर खदेड़ दगा।

भगड़ा धीरे बगावत के इन दो-तीन मालों में याकोब ने
 मिस में कई शाम डरान बानी या खतरनाक बात नहीं दगा।
 परन्तु, मिरोन की व्याकुलता पैदा करने वाली बातें धनबन्दी की
 व्यापारों धाँहे धीरे मनाथार वन (जिन्हें याकाव धर्माभाव पढ़ना
 नहीं चाहता था धीरे जिनमें मूलमनुष्या ईर्ष्या राय धीरे डरबन
 भाषणों के समाचार हान प जा मजदूर प्रतिनिधिया ने व्युत्पा
 म दिए होत थे)—इन सब ने मिसकर सागों के प्रति याकाव के
 हृदय में धीरे अधिक घृणा धीरे ईर्ष्या पैदा कर दी थी। तब
 उस प्रतीत हान सगा कि वह मगौनों मुसक्यानो धीरे मामूला
 रियायतों के पीछे धरने धमसी भावों का धिराना सीध गना है।
 धन तक सब काम नसीभाति बना जा रहा था। यद्यपि

कभी-कभी मजदूरों में अज्ञानक एक प्रकार की बेचनी फैल जाती थी जैसे कि वे सोच रहे हो कि मिस का मानिक याकोव घर्षा मानाव उन मिस मजदूरों का महमान है जो उसक लिए काम कर रह हैं और जा उनक यहाँ बहुत समय से पड़ा हुआ है । वे सब उस महमान से ऊब चुके हैं और वे उसकी ओर ऐसे देखते हैं जैसे कि वे कहना चाहत हों—

क्यों अभी जाग्रोम नहीं । समय था गया है ।'

इन पढ़ियों में उस एक घस्पष्ट भय खड़ा दिखाई देता और मिस में एक प्रकार की गुप्त घस्पष्ट और घस्पन्त भयावह भाग सुनगती दिखलाई देता जिससे उस घपन लिए बहुत खतरा दिखाई देता था ।

याकोव का विश्वास था कि मनुष्य बहुत सीधा-सादा है और यह सादगी मनुष्य का बहुत प्यारी है । मनुष्य किसी प्रकार के भयावह विचारों का नहीं सोचता और न उनका बाज ही घपन में रखता है । य सब विपन्न विचार मनुष्य के कहीं बाहर रहत हैं और जब वह इनकी छूत से विपात्त हो जाता है तो वे डरावने और समझ से बाहर हो जात हैं । इन घृणित विचारों का जानम और बढ़ने न इन में ही भलाई है । फिर भी इन सब विचारों के विरुद्ध हान पर भी याकोव ने घन्य लोगों में उनका घस्तित्व स्वीकार किया और देखा कि वे सब लोग उसक पारों पार मूलता के भयकर बघनों में बधे हुए हैं और इस सबमें वे जीवन की स्पष्ट और उन सीधी-सादी बातों को गड़बड़ी में डाल रह हैं जिन्हें कि वह पसन्द करता है ।

उन सब सागा में जिन्हें वह जानता था तिसोने भ्यासाव सब से भसा दिखलाई पड़ा । माया के प्रति उसका घान्त भ्यबहार, काम के प्रति ममम और प्रेम का दसकर याकोव इस दरबान

स ईर्ष्या करल सगा । धब तिलोन उसे बुद्धिमान जेबने सगा । वह सोते समय धपन कानो को तकिए पर धच्छी तरह टिका कर सोता था जैसे कि वह सूमि की सब बातें मुनना चाहता हो ।

याकोव न बुड्डे से पूछा—

तू सपने बसता है ।

‘क्या ? मैं कोई धौरत हूँ तिल्लान न कहा धौर उसके सपनों न याकोव को एक ठोस तथा प्रबुद्धि शक्ति का प्रानाम हुआ ।

‘धौरतों के सपन याकोव प्रतामानोव ने सोचा । जब वह बाबा धसकसेई के वाद-विवाद इत्यादि क बारे में भी सोचता तो धन्दर ही धन्दर हूँसता ।

साधारणत सोष विचार करना उसके लिए कठिन था । वह धौर धीरे विचारमग्न भारी कल्पना न घसता जैसे कि किस बड़े बोझ को खींचते हुए मिर भुजाए धपनी टाँगों की धौर दग रहा हो । इसी प्रकार वह उस रास को पोलीना के धर न निकस कर घसा जा रहा था । तभी एक भारी कामी मूर्ति का उसने धँघेरे न ठीक धपने सामन उठत दला जिसन धपने हाथ धौर धौर उमी दण कोट की जब न रिवास्वर निकामकर मया धौर उमी दण कोट की जब न रिवास्वर निकामकर धाकमणकारी की टाँग पर गामो दग था । गामो का धड़ा धा हसका धौर कमजार था । पर वह धादमी एकदम पीछे न उछल पड़ा । उसक कंधे बहारखीवारी स टकराए धौर वह उसक पास जमीन पर मिर पड़ा ।

याकोव न ठीक इसक वाद ही धपन का बहुव प्रधिर भयभीत धनुभव किया । वह इतना भयभीत था कि प्रपन करन पर भी धिल्ला नही सका । उसक हाथ कपि रहे ध धौर जब उसन

खड़ा होना चाहा तो उसकी टाँगें कानून में न रही । उससे वो कदम दूर जमीन पर वह घादमी पड़ा था जो खड़ा होना चाहता था । इस घादमी के सिर पर टोपी नहीं थी और उसके घात पुषरान थे ।

बदमाश कहीं के । अभी गोपी मार दूँगा ।” याकोव न सहस्रडा कर उसकी और अपनी पिस्तौल उठात हुए कहा । सामन वाले घादमी ने उसकी और सिर उठाकर देखा और बड़बड़ाया—

पाली तो तूने पहले ही मार बी है ।

उस पहचानत हुए याकोव बिस्मय में वाला—

नस्कोव ? ओह ! नाच कहीं के । तू है !”

याकोव का मन एकदम प्रसन्नता में बदल गया । क्योंकि उस पता लग गया था कि उसने हमस का अच्छा जवाब दिया है और उस पर हमला करने वाला मित्र भजदूर नहीं परन्तु उससे एक प्रयत्न मनुष्य है । यह सिकारी नस्कोव था, जो घादियों के मौक पर हारमानिका बजाकर अपना गुजारा करता था । वह साधुनी पेरफ्लिनाबा के घर में ही रहता था और प्राय की रात तक किसी न उसके बारे में कोई बुरी बात नहीं कही थी ।

यह बात है, तूने यह क्या काम शुरू कर दिया है ?” याकोव ने पाँवों पर लड़कें होत हुए कहा । उसने चारों तरफ दया वायुमण्डल बहुत दान्त था और पाड़ी-पोड़ी हवा बाड़े के पास लड़े पड़ा की घालाघा के निरुद्ध स सर-सर करती गुजर रही था ।

“मैं क्या कर रहा हूँ ?” घसामक नस्कोव ने ऊँची घावाज में पूछा । मैं तुम्हें सिर्फ डराना चाहता था और कुछ नहीं । और

नहीं। तुम मानदार भक्त ही हो परन्तु मेरे खिलाफ कुछ सिद्ध नहीं कर सकोगे। मैं तुमसे कह रहा हूँ मैं मन्नास कर रहा था। मैं तुम्हारे दाप का जानता हूँ। उसक लिए मैंने कई बार हार मोनिछा बजाया है।

एक बड़े भटक से उसन सिर पर टोपी रखी घोर घागे को झुक कर भिख दातो से कराहते हुए, पतनून के पहुँचे को उठा कर जब से हमान निकाला घोर घुटनों से कुछ ऊपर जलम का बांधन लगा। इस दौरान मैं वह कुछ अस्पष्ट बातें भी बुदबुगाता रहा परन्तु याकोव न उसक अर्था पर ध्यान नहीं दिया घोर घागेन इस असफल हमसाबर क विभिन्न व्यवहार को देख उसका साहस जाता रहा।

याकाव अर्थामानोब बड़ी असाधारण तरीके से सारी परिस्थिति का साधन की कोशिश कर रहा था। नि सवेह वह इस बाड़क पास नस्काब को छोड़ रात क चौकीदार को बुनास ताकि वह घायल के ऊपर चौकसी कर सक घोर बाद म पुलिस स्टेशन जाकर अर्पण ऊपर हुए हमस की रिपोर्ट करे व। इसक परिणाम म सफ़्तगीय शुरू हो जाएगी घोर नस्काब उसक बाप घोर साधुनी क साथ रगरमिया का बिक करेगा। हो सकता है कि उसके जस ही गला-काट गिराह क घोर साग भी हो जा बाद म उससे बदला मन की काशिश कर। फिर नी ऐस आदमी को सजा दिए यतैर नहीं छाड़ना चाहिए।

रात घोर अधिक ठण्डी हावा जा रही थी। याकाब का हाथ रिबास्वर पकड़ने सदा कर रहा था घोर मुँह पड़ चुका था। पुलिस की चौकी तक रास्ता लम्बा था घोर वही सब सगभग सा चुक था। याकाब बड़े गुस्म म साँस से रहा था, मगर अमला कदम बपा सेना चाहिए—यह फंसला करने मे बिफन

रहा । उस घनत ऊपर ऋष घा रहा था कि उसने इस भारी बवमाघ का मार क्या नहीं बाला । यह टेढ़ी टांगो बाना नस्कोव ऐसा लग रहा था जैसे कि उसने घपना सारा जीवन वाबद क मझीम पर ही गुजारा हो । घीर घपानक उसने एसी परास्त कर वन बामी बात सुनी जिमकी उस घाघा नहीं थी—

‘मैं तुमसे साफ-साफ कहता हूँ बाह यह एक गुप्त रहस्य ही हो ’ नस्कोव न घपनी टांग को पकड़े हुए कहा— तुम्हें पता हाना बाहिए कि मैं तुम्हारी भनार्ई के लिए ही यहाँ हूँ ताकि तुम्हारे मिस के मजबूरा पर मजर रख सकूँ । हा सकता है कि बा कुछ मैंने कहा हा वह कारी बात हा घीर मैंने तुम्हें डरा विमा हो, परन्तु घसमिपत यह है कि मैं एक घीर सख्स को पकड़ना बाहता था घीर भूस त तुम पर घा पड़ा ।

‘घ तान ! याकोब न कहा— यह क्या बात है ?

हाँ यह ठीक है तुम नहीं जानत । इस साधुनी के घर क गुससमाने म साभमिस्ट नाग इकट्ठे हात हैं । व वहाँ गडबड घीर बगाबती की बातें करत है घीर मिसकर कितावें पढ़त है ।

‘भूठ है याकोब न घीर स कहा । घीर फिर उस पर बिदवास कर बोला— ‘हाँ, क्या कौन ? कौन लाग इकट्ठे हात हैं ?’

यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता । जब व पकड़ लिए जाएंगे, तुम्हें खुद पता लग जाएगा ।

बाह के तम्तों को पकड़ कर नस्कोव भाडा हा गया—

तुम्हे घपनी छड़ी द बा इसके बगैर मैं घर नहीं पहुँच सकूँगा ।

याकोब न भुकरर छड़ी उठा कर उस द बी घीर उसकी घीर गुपबाग दसत हुए पुछा—

‘यदि यह बात है, तो तुमने मुझ पर क्यों हमसा किया ?

“मैंने तुम पर हमसा नहीं किया था। मैं तुम्हें कोई और समझ बठा था। मुझे तुम्हारी तलाश नहीं थी किसी और घादमी की थी। अब तुम इन बातों का रहने दो। गलती हो गई है। तुम्हें जल्दी ही पता चल जाएगा कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ ठीक है। अब तुम्हें इलाज के लिए मुझे कुछ पता देना होगा।

घोर आँसू की धाराओं पर झुकता हुआ अपनी टाँगों से धीरे धीरे वह सड़क के बाहर एक धँधरे कान के एकान्त में अपने घर की ओर चल पड़ा जैसे कि वह बादलों की छायाओं का अपने सामने से इधर-उधर हटा रहा हो। घोर, बस-बारह कदम चलकर उसने जोर से बुलाया—

‘याकाब पेनाविच !’

याकाब एकदम उसके पास जा पहुँचा। तब नस्काब बोला—

‘दोस्त इस घटना के बारे में किसी से एक शब्द भी न कहना। नहीं तो तुम्हें अपने आप पता लग जाएगा।

वह अपनी छड़ी हिलाता हुआ, याकाब को मोंपबका घोर चुप करता हुआ धीरे बतला गया। इस समय उसे बहुत-सी बातों के बारे में एक साथ सोचना घोर कष्टना करना था कि उस नया करना है घोर इस सब का क्या नतीजा होगा है ? जिससे वह यदि नस्काब साहित्यिकों की निगरानी पर है, तो वह बहुत साभन्धक उपयोगी व्यक्ति है, घोर यदि वह झूठ बोल रहा है चाहा देना चाहता है घोर उसके असफल निदान का बदला लेने के लिए समय चाहता है, तो वह झूठ कहता है कि यह

उसे गमल घावमी समझा, और उसे डराना चाहता था। साफ यह है कि वह झूठा है ! हा सकता है कि मजदूरों ने उस मुन्हे मारने के लिए खरीद लिया हो ? मिल के जुलाहों के बीच नि संदह एक बड़ा गिराह धरारती और भगडामू मजदूर का है। परन्तु उनक बीच साभिसिस्ट हों यह समझना कठिन है। मजदूर का बीच—सिधाव, क्रिकूनाव मास्लाव और दूसर समन्तार मजदूरों ने धभी कुछ समय हुआ स्वयं मांग की थी कि नगडामू तथा वगार्ई व-समन्त मजदूरों का जा ठीक नहीं हा सकत हिमाव कर दिया जाए। सच यह है कि नस्कोव ने धाखा दिया है। क्या इसक धार में मिरान से त्रिक किया जाए ? याकाव की समन्त में नहीं धाया कि यदि उसने नस्काव के धार में मिरान से त्रिक किया ता क्या परिणाम हागा परन्तु इस बात को वह मली भांति जानता था कि उसक सामने त्रिक करने पर वह प्रदानत की तरह पूछ-साछ और पड़ताल करेगा और हा सकता है कि उसकी मलीन भी बनाए। यदि नस्काव आमूस है—ता इसका पता मिरान को भी हागा। और, धाखिरकार सबास यही है—यल्टी किसकी है, नस्काव की या मरी ? नस्कोव ने कहा भा था—

तुम्हें जल्दी ही पता चल जाएगा कि जा कुछ में कह रहा है वह सच है।”

याकाव शिकारी की धार सबतक दफ्तता रहा जबतक वह निधाभकार को छायाधों में लीन न हो गया। प्रथ उम प्रत्यक बात साफ-साफ और सीधी नजर धान लगी नस्कोव का स्पष्ट उद्दश्य था—उसे मूटना और इसीलिए उसने हमला किया था याकाव ने उस पर मानी चलाई और उसक बाद एक एसी गड़बड़ भयानक बुरी बात हो गई, जा एक स्वप्न के समान थी। नस्कोव प्रसाधारण चाल में बाड़ की धार जा रहा था और उसक पीछे प्रसाधारण सपनता लिए छायाएँ चली जा रही

थी। याकोव ने पहली बार ही मनुष्य के पीछे छायाओं को इतना सम्या सटकत घोर सरकत देला था। इन चिन्तापूर्ण बिचारों की पकान के कारण कनिष्ठ भर्त्समानोब न चुप रहकर प्रतीक्षा करने का ही फैसला किया। नस्कोव की चिन्ताओं से वह सगभग बीमार और निराश हो गया। जब दोपहर के भोजन के समय मजदूर अपनी बैरकों से बाहर आए वह मिस के दपतर की सिड़की के पास खड़ा था और सोच रहा था कि उन सब में कौन-कौन सोशलिसिट है? क्या यह सच है कि महामारी के चेहरे वाला संगड़ा कोयला भौकन वाला बास्का सोशलिसिट है जिसन तरखान छेरॉफिम से तुरत गड़कर हुसाने वाले 'बास्नुच्छियाँ' के टणे गान का खुब धम्यास कर लिया है।

कुछ दिना के बाद एक बार जब कनिष्ठ भर्त्समानोब एक सड़े चाड़े को साधन के लिए जङ्गल के कोने की घोर गया तो उसन जेंदाम (पुसिष्ठ का अफ़सर) निस्तरन्का को देखा जिसन स्वीडिया जेंकेट और लम्बे घुटना तक घान वाला जूते पहिन रख थे, उसके हाथ में दुनासी बन्दूक भी थी और उसके कन्ध पर पक्षियों से भरा टिकार का एक पैला सटका था। निस्तरन्को जङ्गल की घार मुँह किए और रास्ते की तरफ पीठ किए लड़ा था उसकी गदन किसी प्रकार भुकी हुई थी और वह दोना हाथा को ऊपर उठाए घोट करके सिगरट पी रहा था। उसकी सास पमड़े की पीठ पर सूर्य की किरणों पड़ रही थी जिनस वह जेंकेट मोह को बनी दिखार्ई द रही थी। याकाब उसी समय उसके पास पड़ेबा और जस्वी से पड़ेबा कर उसका धमिवादन क्रिया—

१ बास्नुच्छियाँ—हसी साऊ-मीठा का एक रूप, जिसमें मोह पर तुरत रज गए दाहों के समान पद गाए जाते हैं।

‘मुझे नहीं पता था कि आप यहाँ पधार रहे हैं।’

“हाँ, मात्र तीसरा दिन है। पत्नी बड़ी बीमार है। रोग बढ़ता ही जाता है। हाँ और।’

यह कुछ क्षण समाचार देने के बाद निस्तरेम्बो ने बड़े प्रामाण्य से अपना शिकार के खेल का दिखाते हुए कहा—

‘और इधर देखो! यह सब कुरा नहीं, क्यों?’

“आप शिकारी नस्काव का जानते हैं? याकोव ने बीमे से पूछा। पुलिस के अफसर की साम-त्याग भीहें एकदम प्राण्य स ऊपर को उठी उसकी भीनियों जैसी मूछ हिली और उसन भासमान की घोर निहारा जिसस याकोव और भी असमञ्जस में पड़ कर सोचन लगा— हा न हा वह झूठ बातता है। परतू ऐसा क्यों?”

‘नस्कोव? कौन है वह?’

‘वही शिकारी घुँघरास बालों और टेढ़ी टाँगों वाला।’

हाँ हाँ लगता है मैंने उसे यहीं कहीं जङ्गल में देखा है, जो बड़ी भटिया बन्दूक लिए फिरता रहता है? क्या उसस क्या बात हा गई?’

अब अफसर ने याकाव के चेहर की घोर लोत्रती हुई नीली धाँसों से दसा जिनकी सफ़ेद रदियों के बीच एक कन्ध था। याकाव ने जल्दी ही नस्कोव के बारे में सब बातें बता दी। निस्तरेम्बो ने जमीन की घोर दल कर बन्दूक के मुन्द से जमीन पर गिरी पीड़ की छाया को दनात हुए अन्त तक उसकी बातें मुनी फिर अपना धाँसा का उठाए बिना ही कहा—

‘तुमने तुरंत ही पुलिस में रिपोर्ट क्या नहीं की? यह उनका काम है और, तुम्हारा कर्तव्य है।’

‘मैं जो तुम्हें बता रहा हूँ कि वह कहीं हमारे मजदूरों पर जामूसी तो नहा कर रहा और यह भापका काम है ।’

‘अच्छा यह बात है । वेन्दाम ने बन्सुक को नासी से सिगरेट बुझात हुए कहा । उसने अपनी घाँसों को मरोड़ा और फिर ‘रौब से याकोव की ओर देखते हुए जा उसकी समझ में नहीं आया कहना शुरू किया । जिसका सार यह था कि याकोव ने कामून के विरुद्ध बात की है कि इस डाकूजनी की रिपोर्ट पुलिस में नहीं की और अब इस सब के लिए देर हा मई है ।

‘यदि तुम उसी समय पुलिस चौकी पर उस घसीट साते तो यह साफ-साफ केस बन जाता । हा सकता है बिसकुम एसा न हाता । परतु, अब तुम कैसे सिद्ध करोगे कि उसने तुम पर हमसा किया और वह फायस हा गया है ? हूँ हूँ हूँ ! डर से भी घादमी पर गाली बलाई जा सकती है अमानक भी हो सकता है और निरी सापरवाही से भी ।

याकाव ने अनुभव किया कि मिस्तरेन्को आभाकी कर रहा है और उस डराना चाहता है या उसे घमरा कर इस किस्स से हटाना चाहता है । और जब पुलिस क अफसर ने याकोव से भय में गोर्सा बलात का जिक्र किया तो उसका सन्देह और बढ़ हो गया—

‘भूँठ बोल रहा है ।

‘हाँ-हाँ, भरे भाई, यह बात ऐसी ही है । और उसने तुमसे अपन जामूस होने की जा बात कही है उसक लिए उस सजा मिलगी । हम पक़तास करेंगे कि वह क्या जानता है ।’ और याकोव क कंधों पर हाथ रखत हुए मिस्तरेन्को बोला—
‘दगा तुम्हें मुझे बचन देना होगा कि यह बात हम तक ही रहगी । यह तुम्हारी भलाई के लिए है । समझे ? बचन मत हा न ?’

‘बेशक, बिदेबास रहा।’

तुम इस बारे में अपने चाचा और मैं मिरान पर
बसेईबिच से ही कुछ कहाम बस तुमन उनसे ता जिक्र भी नहीं किया
होगा। दखा हम इसको एस भी मत है—तुम इस बारे में कहीं
जिक्र न करना! समझे! चिकारी स्वयं पायस हा गया।
तुम्हारा उससे कोई बास्ता नहीं।
याबाय मुस्कराया। अब उसक साथ यह भादमी बड़ी
पुसमिजाजी के साथ बात कर रहा था।
अच्छ नमस्कार उसन कहा। ‘याब रखना तुमन बचन
दिया है।

कनिष्ठ घर्तमानोब बहुत कुछ हुस्का और शान्त हाकर
पर पला पाया। सभ्या समय उसक चाचा न उसक सामन
गुबरनियी (जिसे) केन्द्र जान का प्रस्ताव रखता जिसे उसन
बड़े सताप से स्वीकार किया। सात दिन के बाद जब वह पर
सोटा और वापहर मोजन के समय चाचा के पर में गया, तब
मिरान का बार्तालाप सुनकर उस एक नई ब्याकुलता का अनुभव
हुया—

‘निस्तरन्का एसा मूर्ख और बेकार नहीं निकला जैसा कि
मैं उस समझता था। उसन एहर में तीन ब्यक्ति पकड़े हैं—एक
मास्टर मोदस्ताप और कई और।’

‘हमार यहाँ से सिदाब, किनुनाब घशामाब और अन्य पाँच
नोजवान पकड़े गए हैं। यद्यपि पकड़न के लिए गाबरन की
पुलिस भाई थी परंतु स्पष्ट है कि यह निस्तरन्का का काम था,
और इस प्रकार उसको पला स्पष्ट है कि यह निस्तरन्का का काम था,
पकी हुई है। हाँ, वह मूर्ख नहीं। यह डरता है कि कहीं कोई
उस मार न डाले।’

“धन लोगों ने हत्या करना बन्द कर दिया है।” प्रस
क्सेई ने कहा।

घोर हाँ मिरोम ने कहा शहर में उस शिकारी को
भी पकड़ लिया गया है।

नस्कोव को ? याकोव ने धीमे से डरते हुए पूछा।

‘मुझे पता नहीं। वह उस साधुमी के घर में रहता था।
उसी के घर के स्नानागार में इन क्रान्तिकारियों की काँग्रेस हो
रही थी। घोर, उसके घर में उसी के साथ तरा वाप रंगरसिया
कर रहा था जसा तुम्हें पता होना चाहिए। कितनी घटिया
बात है।

‘हाँ बड़ी बुरी बात है — प्रसक्सेई ने प्रपन गंजे सिर का
हिमाते हुए कहा। उसका क्या किया जाए ?

याकोव की धार्मिक मतिन पढ़ने लगीं घोर वह अपने बाबा
घोर भाई से अधिक बात न कर सका। उसने सोचा—“नस्कोव
पकड़ा गया है इसका मतलब है कि वह भी सोशलिस्ट है घोर
डारू नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि मजदूरों ने उसे मुक्त मिल
मानिक का मारने के लिए कहा है। वह जिन मजदूरों को
(जस सिखोव वह साऊ-गुपर कपड़े दमियानी उन्न का सुख-
मिजाज हँसोड़ लोहार क्रिकुनोव वह गुजमिजाज प्रसामोव जो
गबया और कुसल फारीगर है) बड़े प्रच्छ मजदूर समझता था
सब उसके धनु हैं।

धन उस अपने बाबा के घर में भी सारी सासाइटी बढ़ी
घोर-सराबा करने वाली दिव्याई देती थी। सुनहरी दाँतां वासा
डाक्टर याकास्वय वा कभी किसी के बार में प्रच्छी बात नहीं
बहता था, धन तटस्थ दूर सड़े दगक की तरह एक प्रजनभी
वाह्य व्यक्ति की तरह जोर-जोर से ब्यक्त में बात करता था।

घोर, वह धपन प्रखवार को हिमाता हुआ नयनीत कर देने वाली बातें किया करता ।

हाँ, हाँ' अपने सुनहरी दाँतों को चमकाता हुआ वह कहता— हम हिल रहे हैं । जाग रहे हैं । नाग एम आलसी मौकरोँ क भुण्ड के समान दिखनाई व रहे हैं जिन्हें प्रचानक पता लगा हा कि उनका मासिक धा रखा है घोर व बन्धी-बन्धी डर स धपनी जगहा पर तैमान हा जात है घोर न्यङ्गन बुहारने घोर पर का व्यवस्थित करने की काशिय करन सगत है ।

'डाक्टर, धाप दाहरी घातें कर रहे हैं मिरान न बँहरा बनात हुए कहा— यह सब धापकी घराबकता घोर धापका सवह है ।'

परन्तु, डाक्टर की घाबाज घोर ऊँधी हो जाती उसक भापण घोर सन्वे हो जात जिनस याकोब क मन म घोर अधिक चिन्ता के बीज पड़ जात । एसा प्रतीत हाता था कि सब सोम किसी बात से डर रहे हैं । सब एक-दुमरे स दुर्वटनाएँ इत्यादि का शिक कर परस्पर भय की धाग का हवा व रहे थ घोर उन्हें धपन ही घाबों कामों घोर विचार स भी डर हाता था । याकोब न धपन चारा घार एक मूखता का बड़ते हुए दखा । वह स्वयं एक चिन्ता घोर भय क वायुमण्डल में रहे रहा था जब कि उसका स्वयं का भय उतना ही यथार्थ था जितना कि गर्दन पर फाँसी क स्पग स पीठ में पैदा हुई सनसनी म होता है । वह फाँसी का फरा दिखाई नही द रखा था परन्तु सगातार तन्न होता जा रहा था घोर उस किसी भयकूर धनिवाय धापति की धार खीन न जा रहा था ।

धगसँ दा-तीन महाना म उसका नय घोर अधिक उग्र हा गया । घाहर म नस्कोव घोर कारग्रान म—दुबला पीला, कट नामा नामा धशामोव सीट घाया था ।

'क्या मुझ बूढ़ को प्रायः काम पर लगा देंगे?' उसने मुस्कराते हुए पूछा। याकोव उस इन्कार न कर सका।

'नया जेसूसा ने मैं बहुत कड़ाई है?' उसने पूछा। प्रायः मोव ने उसी मुस्कान में उत्तर दिया—

'वहाँ भीड़ बहुत है। यदि जेल के अधिकारियों को टाइफाइड न मदद नहीं की ता पता नहीं वे लोगों को कहाँ बालम।'

हाँ, ठीक है याकोव ने जुनाहे के धले जाने के बाद साधा—'तू मुस्करा रहा था मैं जानता हूँ, तू क्या सोच रहा था। उसी दिन संध्या-समय प्रामोव के घारे में मिरोन ने एक नज़ारा लडा कर दिया। वह जमीन पर पाँच पटकता हुआ याकोव की घोर जैसे कि वह उसका नीकर हा, चिल्लाया—

'तू पागल तो नहीं हो गया है?' वह भीखा तो उसकी नाक गुस्से से लाल हो गई। 'कल ही उसका हिसाब कर दे।

कुछ दिनों के बाद सुबह के समय जब वह घोड़ा में स्नान कर रहा था याकोव ने लैपटीनेष्ट मावरिन और निस्तेरेन्को को दया जो किनारे की तरफ चप्पू मारते हुए फिरती में उसकी घोर धम धम रहे थे। उनका हाथों में तरह-तरह के मछली पकड़ने के काँटे इत्यादि थे। ठण्डे गून वाले घान्त सपटीनेष्ट ने याकोव से उदासीनता में सिर हिला कर खुपचाप अभिवादन किया और सुरन्त नदी की मरुपार की घोर जाता गया। परन्तु, निस्तेरेन्को ने कपड़े उतार कर उसके पास पहुँच कर भीम स्वर में कहा—

तुमने प्रामोव को घामघाँ नहीं रखा। बड़ा घफसोस है। मुझे भी कुछ है कि मैंने तुम्हें पहल भेठावनी नहीं दी।'

"मैंने नहीं मिरोन में उस हटाया है।" फनिष्ठ प्रथमानोव

न बोम से कहा। उसने अनुभव किया कि पुलिस के प्रफ़्तर के पक्ष में घराब की तरफ़ ग़ब थी।

घण्टा ? निस्तरम्का न पूछा। 'तुमन एसा नहीं किया ?'

'नहीं ?'

'मुझे बरश दु ग़ है। यह घादमी बड़े काम का था। यह बहुत घण्टी घाड़ रहती।

घोर याकोव की घोर उसने सहयोगी पड़्यभकारी की तरह दया। मूय की किरणों से उसका धाम मुनहरी उद्यतती हुई मछली की खात के समान चमक रही थी।

पुलिस प्रफ़्तर ने फिर पूछा—

'तुमन घपन मित्र वा भी दबा है ? बही निकारी ? घोर निस्तरम्का बीमे से प्रारम सम्नुष्ट ब्यक्ति की तरह हँसा।

'तुम जानन हो किस कारण उसने तुम पर हमला किया था ? वह दुनासी बंदूक खरीदना चाहता था। भाई ! यह भी लोगों के अपने घपन दोक है जिनमे लोग प्रबीब प्रबीब काम करत है। खेर, बात एसी ही है। वह निकारी है घोर काम का घादमी है। तुम्हार साथ उसने जा गली की है उससे उसकी गदन मरे हाथ में है।'

'कोन-सी गलता, घाप क्या कहत है।'

गलता भीमान् मरी गलती। 'पुलिस के प्रफ़्तर न जात से दोहराया घोर नगी छाती पर ब्रस का निमान कर पाड़ की तरह पानी का बरसता हुआ नदी में घाग को बसा गया।

'तुम सब को घैठान उठात। याकाय न पराजित भाय से कहा।

उसे ध्यानक ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी कमरे का दरवाजा खुल गया है जिसमें रोना धाना हा रहा है और मोठ हो गई है।

रात के समय उसकी माँ ने उसे रोते हुए जगाया—

‘उठा जल्दी उठो तिखोन भागा हुआ धाया है। कहता है— तुम्हारा पापा धनकसेई मर गया! याकोव एकवम बिस्तर से उठा हो गया और बोला—

कम ? यह कम हा सकता है ? उस तो कोई बीमारी भी नहीं थी।

मारी माँस मत हुए दरवाने का धक्का देकर उसका बाप धम्बर धाया।

तिखोन। वह बाला— तिखान कहाँ है ? उससे कभी कोई गुप्त बात सुनने की धाधा नहीं। याकोव उक्त ! इतना ध्यानक। रात के कपड़े पहन प्यास न धपन कंधों पर धोगा डाला और काना को रगड़ते हुए धारो तरफ कमरे में धपरिचित का तरह दलकर गना कलपना शुरू किया—

उक्त ! धाह धोह !

यह कसे हा गया ? याकोव न धबग कर पुधा।

धपन पापा का प्रायश्चित्त किए बिना ही। उसकी माँ ने कहा। वह धाट की एक धारी धारी के समान दिग्गर्द द रही थी।

व सब एक गुली यात्री में धल पड़। याकाव साईस की जगह धैठा धाड़े हाक रहा था। उसने धाग धैठे हुए दगा कि पाइ की नीठ गर धैठा हुआ तिग्यान किस प्रकार हिल रहा है, और उसका धाघाएँ जमीन पर एस पड़ रही हैं जैसे कि व जमीन पर लकीर-सी धालधी जा रही ह।

प्राणा उन्हें प्रांगन में हाँ मिरवी। वह नकड़ियाँ क काठे
 से फाटक क बाँध सफ़ेद पापन घोर रात का पांगक में बस रहा
 यो। वह पौंद क प्रकाश में हल्की-नाना पारदर्शक मूर्ति-सी दिखाई
 दे रही थी। उसकी प्राकृति में प्रांगन क पथरा पर बिचित्र
 प्रकार की नाचो छाया पड़ रही थी।

प्राह! मरा जीवन ता स्रम हाँ मियाँ घोर में वह
 वाली। काना कुत्ता कुपुम उमक कर्मा व पीछ-पीछ बस
 रहा था।

रसाई की विडका क नीच एक बच पर मिरान कमर
 नक़ाए बठा था। उसक एक हाथ में मिगन्न मुमग रहा था
 घोर डूमर हाथ में वह प्राणी एक का एक हिना रहा था कि
 उसक पीछ बसक रहूँ य घोर एक पमसा मुग्ग उछार हुआ
 में हिनती दिखाई दे रही थी। बिना एक क मिरान की नाक
 अधिक बढ़ी लग रहा थी। याकाब पुपभाप उमक बगबर में बठ
 मया घोर उसका बाँध प्रांगन क बाँध स्रम कुत्ता विडका का
 घोर एम नीक रहा था जम काई निखाग नाय का प्रतीता में
 बढ़ा हा। घाममान का घोर दक्ता हुइ प्राणा ऊँचा घामात्र में
 ननात्या का बुद्ध बता रहा थी—

मुझे पता नहीं कब घबानक उमका कथा मोन का
 तख़ ठंडा हा गया घोर उसका मुह खुन पड़ा। मरा प्याग।
 मुझमें प्रपन प्रस्तिम वध भी नहा कह सका। कन हा उमन
 दिम क दर का तिकापन की थी।

प्राणा धार-धार बहती जा रहा थी घोर एसा प्रतीत हा
 रहा था कि उसक शब्द भी छायाघाँ क साथ नीच का गिर
 रहे हैं।

मिरान न घायनी मुसगनी मिगन्न का पत्रा घोर याकाब

के कर्णों पर मुककर धीरे-धीरे सिसकना शुरू किया—

तु-म नहीं जानते, वह कितना घब्र्रा था ।”

‘क्या किया जाए ?’ याकोव ने घब्र्रे शब्दों के प्रभाव में उत्तर म कहा । चाची से भी कुछ-न-कुछ सात्वना के शब्द कहने चाहिए । परन्तु क्या ? वह चुप रहा । जमीन की घोर दस्तरे हुए उसने अपनी टाँगें बैच के नीच को कर लीं ।

उसका पिता भी सिसक रहा था । जब वह सावधानी से घर म घुसा ता उसके पीछे-पीछे पत्नी के बल चुपचाप याकोव भी घुस गया । उसका चाचा सफेद चदर से ढका पड़ा था । उसके सिर स बँधे हुए रुमाज की उठी गठिं सींगा की तरह दिखाई दे रही थी । उसकी टाँगों की सम्बी उङ्गलियां चदर से बाहर निकलती हुई ऐसे दीख रही थी जैसे कि व चदर को फाड़कर बाहर निकल आई हा । आकाश क एक कोने म उलटा हुआ था चिड़की स अपन प्रकाश क साथ भँक रहा था । चिड़कियों क पर्वे फरफरा रहे थ घोर घागन में कुचुम भँक रहा था । ज्येष्ठ घर्तमानाच ने छाती पर आस का निघान करते हुए, एक घना बदयक ऊँची आवाज म कहा—

आराम स जिया आराम स ही मर गया ।

चिड़की से आकाश म दला । घागन म उसकी चाची के बराबर बीरा पापाबा सम्पूर्ण फासी पाशाक पहन सयासिनो की तरह चम रही थी । घोर घोला, ऊँची आवाज में उस अपने दोर्भास्य घोर घापसि का सिर स बखान कर रही थी— ‘वह नोव म ही खरम हा गया ।

“बबूक मत बन !’ धीरे स ग्यामोन चिह्नाया । यह वूसिया क एक टुकड़ से पाड़ की गर्दन रपड़ रहा था घोर घोड़ को घाठों म अपन कान पकड़ने क सिग राक रहा था । ज्येष्ठ

प्रार्थमानोव ने भी खिड़की की ओर दसा घोर बासा—

‘बक रहा है बवकूफ ! इसने जरा नी प्रकृत नहीं ।

‘यह समय कहामुनी का नहा’ याकोव ने साधा घोर बाहर बरामद में जाकर काली घोर सकेद पायाक वासी खिया की छायाओं का दखन लगा कि बे किस प्रकार घागन म विद्य पन्थरों की गद का बुझार रही हैं । पत्थर लगातार चमकील दिखाई दे रहे थे । उसकी माँ तिखोन के साथ धीर-धीर सिर हिलाती हुई सहमति से वार्तालाप कर रही थी और साथ ही भाषा नी सहमति में घपना सिर हिला रहा था । उसकी घाँस में एक ताम्र बच्चा दिखाई दिया । पिता घर से बाहर भागा और माँ उससे बोली—

‘एक तार निकिता इल्सच का नी भेज देना चाहिए । तिखान उसका पता जानता है ।

प्रण्डा तिखान जानता है ! राप म पिता ने दाहराया—
मिरोन, तार भेज दो ।

मिरान पड़ा हुआ घोर दरवाज की तरफ चले पड़ा । दरवाज की चौखट से कपड़े लपक कर उसने हथेली से सक्की पकड़ा ।

‘एक तार इत्या का नी भेज दो । स्पष्ट प्रार्थमानोव ने उससे बोले से कहा । दरवाज घोर चौखट के बीच काली धिर से मिरान ने तुरन्त उत्तर दिया—

इत्या नहीं था सकला ।

‘दसा, सोस सास मैंने इससे साथ जिन्दगी गुजारी है ।’ प्रोत्या ने कहा, और उस स्वयं विस्मय हान समा कि वह क्या कह रहा है । और हाँ, पादा के पार सास पहन से हमारी मित्रता थी । पर मैं क्या करूँ ?

प्योत्र याकोव के पास आ गया ।

इन्सा घब कहीं है ?

मुझे कुछ पता नहीं ।

‘भूठ दोसते हा ।

पिताजी ! घब इत्या के बारे म जिकर का समय नहीं ।”

घाँगन म डाक्टर याकोस्वव भी बड़ी तेजी स घाया घोर
पूछन लगा—

सोन वाले कमर म है ?

‘बेबकूफ ! याकाव न सोचा— तू क्या घब उसे जिन्दा कर
देगा ।

यह इन पाक की भड़ियों की अनिचायता घोर दुख स
बहुत व्यथित-सा अनुभव कर रहा था । चारा तरफ सब चीजें
बड़ी दुःखद घोर अनावश्यक थी लोग घोर उनकी बातें चाँदनी रात
म सोह-मूर्ति की तरह अमकत हुए घाड़े—सब बड़े दुःखद प्रतीत
हा रह थ । उसकी भाषा आत्मा भी उसे प्रतीत हा रहा था
कि अगन पति क साथ सीनाग्य घोर गृहस्थ-मुख की निरपक
ओगें मार रही थी । एक वान म उसकी माँ भूठ-भूठ सिधकियाँ
भर रही थी घोर उसक पिता की घाँवें पधराई हुई-सी थी ।
उसका पहरा बड़ा विकृत-सा हो गया था । घास-घास का सभी
भोज बढी दुःखद घोर घाकास लग रही थी ।

भाषा घसराई क अनाज क दिन अथ उसक घरीर का
कमर म नाथ उतारा जा चुका था घोर उस पर मुटिया स पीनी
रत गिराई जा चुकी थी निश्चिन्ता या पठुषा ।

सा ! तुम भी आ गए । याकाव न सोचा घोर वादरी
की काणीसी घाकृति का टूटन लगा । यह घाकृति चीड़ क पेड़

क पास कमर नुकाए खड़ा थी ।

पल्ल म बहुत दर कर ले । ज्येष्ठ घनामानात्र न घपने
नाई की तरफ पहुँच कर घपन बहर क घामू पाएन हुए कहा ।
पादरी न कछुए का तरह घपनी कृत्र स मिर निकामा । उनका
सब शीषा घोर पहनावा निम्बागिया की तरह था । उनका पागा
मनिन घोर घूप स पाना-मा पड चुका था । इन क घोर एङ्गियों
स बिस गए थ । गाल बिकृत घोर गुन म डक हुए थ । घपनी
धुमनी घान्नों स घाम-घाम मड सागा क पाछ म लमन हुए वह
ज्येष्ठ घनामानात्र म मकर शशी त्रिमाना हुआ घामा घाबत्र में कुछ
बासा । नाकाव पागा तरफ निगाह शीघा रता था । दन्तों घाम्ने
एक बिकृत घाकृति क पात्र पर टिका हुड था । घोर पात्रा
का नाई एक सम्मप्र परिवार का था । इनर साम दानों भाइयों
क बाब किसी प्रकार क नमइ की घागा कर रह थ । नाकाव
जानता था कि गहर क नामों का यह बिन्बाम था कि घनामा
नाब न इस कुबड़ नाइ का उबरदम्ता नापुगुह म घकन दिया
था त्रिमस कि बाप का सारा मन्नि क उसक उतराधिकार क
हिस्स का ना हकप सक ।

माटा प्रसन्नचित्त पादरी पिता निकामात्र बड़ आर स
मन्द ध्वनि म घाम्ना म कह रहा था—

‘हम परमपिता परमात्मा का रान धान म घपमान नहीं
करना चाहिए । जा हुआ वह ता परमात्मा की इच्छा है ।

घाम्ना ऊषा घाबत्र म बाली—

सन्निध में न ता रा रहा है घोर न निकामत हा कर
रहा है ।

उसक हाथ कीर रह थ । घोर वह घवाब नटक म घपन
पापर की जबा का टटालता दृढ़ घामुघा स भर समाप्त का बही

विरुद्ध काम कर रहा हूँ ।'

“कितना स्वया चाहिए ?” याकोब ने पूछा ।

नस्कोव ने तुरन्त कहा —

पतीस रुबल ।'

याकोब ने उसे कौरन उतना पैसा दे दिया घोर नि
कोष के साथ भयभीत हो सोचने लगा—‘यह मुझे बेबकूफ बन
गता है । यह समझता है कि मैं इससे डरता हूँ नीच ! बग
प्रश्रया पुरा ठहर ।

फिर वह धीरे-धीरे घर की घोर चल पड़ा । याकोब,
इन्हीं बिचारों में मग्न था कि यह व्यक्ति उसे कैसे बहका रहा
है घोर निःसन्देह उसे बल की भाँति कुल्हाड़े के नीचे—काटने के
लिए ले जा रहा है ।

घोर, मृत्यु-भोज भी बहुत दूर तक घोर-घराने के साथ
चलता रहा । मेहमान बहुत घोर कर रहे थे । वे सब कुछ थे ।
‘घकोन’ कस्सेव घोर ‘घनन्त स्मृति’ का गीत गाने वाले,
सभी लोग उसमें सम्मिलित थे । मित्राईकिन खूब घराब पी गया
घोर घपना काँटा उठा कर वह बड़े प्रचिष्ट तरीके में घोर स
गान लगा—

“मित याद करें रण-बाँकुर गौरवमय इतिहास ।

मुद भूमि सहू-लास थी घरु घघरों पर मधुहास ॥”

स्तेपान बास्की, जब भारी नरम तर्किए की तरह घपने
घपने घरीर को लेकर घपनी गाड़ी में चढ़ रहा था तो प्रशंसापूर्व
ऊँधी घाबाज में बोला—

‘घश्रया प्योत्र इत्यथ । निःसन्देह तुम घपने भाई को

१ घकाम—बड़ा पादरो ।

प्यार करते हो ! ऐसे धानदार मृत्यु भोज को अस्वी ही नहीं मुसाया जा सकता ।

घपन खूब घराब पिए हुए पिता को याकोब न चिढ़कर कहते हुए मुना था—

‘परन्तु, तुम यह जल्दी भूल जायाग । और सब तुम्हारा तौंद क फटन म अधिक देर भी नहीं ।

प्यत्र घर्तमानोव न भित्तईकिन बास्की वरापानोव और घनेक प्रतिष्ठित नागरिकों का मिरान की इच्छा के विरुद्ध घामयित किया था । मिरान इस कारण स्पष्ट रूठ बैठ था । मृत्यु भोज की मेज पर बाड़ी दर बैठन क बाद घ्राघ घण्टे से नी पहल वह उठकर बसा गया और सारस की तरह प्रकडता हुमा चहल कदमी करन लगा । उसक पीछे ही घाल्या भी चुपचाप बाहर बसी गई, और फिर पादरी निकिता जो घर्ष मबिरामत्त सोया क साधुगुह सम्बन्धी प्रश्नों स कि बहाँ वह कंस जीवन व्यतीत करता है, तङ्ग घाकर बाहर बसा घाया । प्यत्र घर्तमानोव का व्यवहार बहुत ही घापतिजनक था । एसा दोलता था कि वह सब उपस्थित लोगों को नाराज करना चाहता है । याकोब को मृत्यु भोज क घन्त तक डर बना रहा कि कहीं नगरवासियां और उसक पिता क बीच कोई नगडा न खड़ा हो जाए ।

नतास्या भी नाराज होकर घपन पर बनी गई । उमे इस कारण नाराजगी थी कि घाल्या पापोबा के साथ बहुत घुममिल कर बात कर रही थी । और फिर पता नहीं किस कारण स उसके पिता ने घाघा घलनसई क कमर में ही रात गुजारन का फमसा किया था । इन सब बातों और पिता की घनावस्यक और फिजूल इच्छा स बहु चिढ़कर दुगो हो गया । दा एक घण्टे यह सोफे पर पड़ा-पड़ा साने की कागिण करता रहा । फिर

बाहर चला गया। वही उसन रसोई की लिङ्की के नीचे
 भाँगन म पड़ी बेंच पर तिकोन क साथ निकिता की कद्दुए जैसी
 बिभिन्न भाकृति को देखा, आ एक टूटी-फूटी मशीन क समान थी।
 निकिता न धोगा उतार रखा था। तिर गंजा और अधिक
 चौड़ा होने क कारण उसका वह अप्रिय बेहरा बच्चों के समान
 बीस रहा था। उसके हिसते हुए हाथों में एक गिलास था और
 बराबर बच पर 'वास' की एक बानस रखी थी।

'यह कौन है ? घीम स उसन पूछा और तुरन्त स्वय ही
 उसका उत्तर दिया— यह—याधा' है। याधा याधा ! हम बुझो
 क साथ भी चाड़ी दर बैठा।

और, उसन अपना गिलास चाँद की ओर ऊपर उठाकर
 उसक धुँधले ड्रब का निहारा। चाँद गिरजे क पष्ठापर के पीछे
 प्रभकार म छिप रहा था और रात्रि क प्रभकार म वह बड़ा
 बिभिन्न-सा दिखाई दे रहा था। वादन पष्ठापर के ऊपर मलिन
 बपका क टुकड़ा क समान आ नीमी-कापी मलमन पर सिन हों,
 कुत्ता कुचुम बड़ी व्यग्रता स भाँगन क मूँपता हुआ प्रभकार का व्यारा
 कभी वह जमीन का मूँपता हुआ चलता तो कभी प्रसमान की
 धार अपना घूपनी उठाता और हल्की प्रदनात्मक भीव-सी निका
 सता था।

धुप, धुप कुचुम ! तिकोन न घीम स कहा।
 कुत्त न उसकी धार धाकर अपना भारी मुँह उमक घुटन
 न घँसा दिया और फिर चिकापत क रूप म चिल्लान लगा।

१ वास—घर या फलों स बनाया एक प्रकार का गूदा
 मुन्बावु पय जिसका कस में बहुत रिवाज है।
 २ याधा—शरीर का व्यार का परमू नाम।

‘यह अनुभव करता है समझता है,’ याकाब ने कहा।
 किसान ने उसका उत्तर नहीं दिया। परन्तु याकाब की बहुत इच्छा
 थी कि वह कुछ बातें ताकि बिचार उसके दिमाग में न उठें।

वै कहता है कि यह समझता है उसने हक़त से कहा,
 और दरबान ने प्रत्युत्तर में भीम से कहा—

‘हाँ, क्यों नहीं।’

हमारे यहाँ मुज्दान के साधुगृह में कुत्ता गन्ध से ही चारा
 का पता दता था पादरी ने याद कर कहा। किस वारे में
 निकल चल रहा था? याकाब ने पूछा। पादरी ने पाड़ा-सी
 बवास और पीकर भाग की बाँहा से आठ पाँच और पापम मुँह
 से जस कि वह सीड़ी से नाच का सरक रहा था बाला—

‘तिस्रान कहता है कि साग फिर बगावन करने वाले हैं
 ऐसा दिखाई दे रहा है। सब साम समन्दार हान जा रहे हैं।’

‘सोग समार के भाषा में भयन का भूत बठ है,’ तिस्रान
 ने कुत्त के जाना में खिनवाड़ करते हुए कहा।

‘दस कुत्त का पत्नी से बगाधा। याकाब ने हुकम दिया—
 यह विस्मृष्टों में नरा पड़ा है। दरबान ने कुत्त के पत्नी का
 घपनी जीभा से हटाकर उम पर प्रकथ दिया। कुत्ता घपना टांगा
 में पूँछ देवाकर दूर जा बठा, और घत्पिक बिरह-बिपाश में
 तिर ऊपर का उठा बिल्लान मगा। ताना घादमिया ने उसकी
 घार निहारा और उनमें से सम्भवत एक ने माथा कि तिस्रान
 घोर पादरी जमीन में गई उमके मानिक के घात इम बिरहो
 नुस के लिए घषिक दुखी है।’

बिनाहू तो घमत्त हागा याकाब ने धाम से कहा और
 फिर मावधानों में घौगन के धँधेर कान की घार दगन मगा।
 तिस्रान मालूम है सिदाव और उमके साधिया का परत कर

से गए ?”

‘हाँ, क्यों नहीं ।’

पादरी ने अपना बोमो की जेब से टीन की एक डिब्बिया निकाली और उसमें से थुटकी भर नस्वार लेकर सूँपा और अपने भतीजे से कहा—

इस नस्वार का इस्तमाल करता हूँ इससे घाँसों को जरा मरव रहती है । घब मुझे कम दीखने लगा है ।’

छींकने के बाद वह फिर बोला—

‘पकड़-भकड़ तो गाँव में भी हो रही है ।’

“सब जगह जामूस फैल हुए हैं’ याकोब ने साधारण भाव से कहा ।

‘सब पर निगरानी है ।

तिखोन बुदबुवाया—

‘हाँ निगरानी न रखें तो कुछ पता भी न चले ।

और, याकाब ने अनिश्चित भाव से लड़खड़ाती ध्वनि में पता नहीं रात को सर्दी के कारण घबना भय से फुसफुसाहट में कहा—

‘और जामूस हमारे यहाँ भी हैं । उस विकारी नाकोब के बारे में घजीब-घजीब चक्रवाहें हैं । कहा जाता है कि उसने सिदाब और नगर के सोर्गों के वार में मुम्बरी की है ।’

“घोह तू कितना बबकूफ है’—तिग्रान ने कुछ रुक कर प्रत्युत्तर में कहा और फिर कुत्ता की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसी क्षण उस अपने थुटकों पर रज लिया । याकोब ने अनुभव किया कि उसने चिन्तन यह बात धुरु की ओर सापने लगा कि सामग्री मैं तिखोन का क्यों चौकन्ना कर दिया—

'देखो, नस्काब क वार में कहीं कुछ न कहना ।

"न्यों, मुझे क्या जरूरत पड़ी है ? मरा उसमें कोई वास्ता नहीं । प्रायःकस किससे बात की जाए किस पर विश्वास किया जाए ?'

'ठीक है,' पादरी ने कहा । घब सागों में विश्वास कम हा गया है । लड़ाई के बाद मैंने कुछ घायल सिपाहियों से बातें कीं मैं देखता हूँ कि सिपाही भी लड़ाई में विश्वास नहीं करते माना ! यह सोहा है । सब जगह सोहा ही सोहा घोर मशीनें हो गई हैं । मशीनें सब काम करती हैं मशीनें ही गाती हैं, मशीनें ही बोसती हैं । मशीनों वाल इस कारखान में रहने को भी दूसर ही सोगा को जरूरत है—जा सोहे क हों । बहुत सोग यह बात समझते हैं । मैं एस बहुत म लोगों से मिला हूँ—जो कहते हैं हम तुम सब धाराम-पसन्द सागा को मजा चया दोगे । घोर बहुत से इससे नाराज हा जाते हैं । जब मनुष्य घपन चारों तरफ हुकुम चलाता है,—ता साग उसक घम्यासी हा जाते हैं । परन्तु, जब सोह के खिसाफ हाठ हैं ता सोहा नाराज हा जाता है ! पहिल हथौड़े-कुल्हाड़े घोर घन्य एसी हो चीजें जा हाव म उठाई जाती थीं उनको साग स्वयं उठाते थ परन्तु घब तो सो-सो मन को मशीनें जाबित मनुष्य की तरह स्वयं उठ लड़ी हाती हैं ।

तिप्रोन ने ध्राह मरो । याकोब के लिए य सब बातें घन मुनी थी । यह हंसते हुए बोसा—

'धोड़े क घाम गाड़ी दीड़ रही है । ध्राह ! गतानो !

'घोर सोग बहुत नाराज हैं पादरी ने घाम-धीम घपना कहना जारी रखा—'तीन साल तक मैं घूमता रहा हूँ । मैंने रसा है कि साग किसने नाराज हो गए हैं घोर यह पता

नहीं चलता किस बात से नाराज है। सब एक दूसरे से नाराज हैं। एक बात है अपराधी सब हैं—कोई अपनी बुद्धि के कारण तो कोई मूर्खता के कारण। यह बात मुझे पादरी भोज ने बतलाई थी। यह तो बहुत अच्छी बात है !

‘बहु पादरी अभी ज़िन्दा है ? तिल्लोन ने पूछा।

बहु अब पादरी नहीं रहा। भिक्षुता न कहा। ‘बहु पादरो का भया खाब चुका है। अब देहाती—भक्तों में किसावे बचता फिरता है।’

‘पादरी बहुत अच्छा आदमी है’ तिल्लोन ने कहा। ‘मैं उसके पास अपने पापों को स्वीकार और प्रायश्चित्त करने के लिए जाता करता था। बहुत अच्छा आदमी है। पादरी तो बहु गरीबी के कारण बन गया था। असल में उस परमात्मा पर कोई विश्वास नहीं था। मेरा तो ऐसा ही सपान है।

‘तहीं ईसा में विश्वास रखता था। अब आदमी अपने तरीके से ही विश्वास करते हैं।

‘इसी से तो सारी गड़बड़ शुरू होती है’—तिल्लोन ने हड़सा से कहा और फिर बड़े भद्दे तरीके से हँसा—‘बया, खुब साधा है !’

इसी समय बरामद से ज्येष्ठ वर्तमानाक नग पर्वत चुपचाप बाहर निकला उसने रात के कपड़ पहन रग था। उसने पीले धुंधले साकाश की धार देखकर तिङ्की के नीचे बैठे लोगों से कहा—

“नींद नहीं आ रही। कुल्ल ने दुखी कर दिया है। मुझे सोग मही क्या बातें कर रहे हो ?

कुल्ल प्रांगण के बीच बैठा था। उसके कान पीछे लड़े थे और वह गुनी तिङ्की की मधरा भिन्न की ओर इतना रहा

था। लगता था, जैसे वह घन मालिक की चुनाहुट की प्रतीक्षा में हा—

“घोर तिघोन तू अपनी क्या रट लगाए हुए है ?
प्रथमानोब न कहा। वह याकाब ! यह किसान घन एक
बिचार पर ही मुका हुआ है जस कि भड़िया जाल म फँसा
हा। घोर भाई तू भी एसा ही है। निकिता ! तुझे इत्या क
बार में कुछ पता है ?

हाँ, मुना ता है।

‘हाँ ! मैं उस घर स निकाल दिया है। वह पराए
पाड़े पर सवार रहता था घोर यहाँ स पता नहीं किपर भाग
गया। यह बात ठीक है सब उसकी तरह सम्पति छाड़ कर
नहीं जा सकत घोर अज्ञातवाम नहा कर सकत जैसा उसन किया
है।’

“अससई” भी ता परमात्मा का आत्मी था उसन नी
ऐसा हा किया था।’ निकिता न धीम म बात कराया।

अस प्रथमानोब न अपना हाथ माथ की घार उठाया।
दूध घर पुप रह कर वह वयाथ म बना गया घोर याकाब स
बाना—

“मरा बिन्तर कम्बन घोर तकिया इपर स मा हा सकता
है यहाँ नीद घा जाए।

वह भारी भरकम सकत बाग म सिर पर बिचर यासा
घोर चूर चूर सून चहर याना लयभग बहुत डरावना दिग रहा
था।

मयाना क बार म, निकिता, तू फिजूम बाँधे क रता है

१ अससई—सत असनसई।

उसने प्रांगन के बीच खूबे हुए कहा—'तू मशीनों के बारे में क्या समझता है ? तेरा काम है परमात्मा के बारे में बताना । मशीनों कभी कोई स्कावट नहीं पदा करती ।'

तिल्लान ने बड़े अनावर भाव में घृष्टता से कहा—

'मशीनों के कारण जीवन में हंगा और धीरे-धीरे वासा बन गया है ।'

अप्यष्ट अर्त्तमानोव हाथों का फेंक कर भीमे से एक धीरे हटा धीरे बगीचे की ओर चला गया । उसके प्राये प्राय याकाब तकिया उठाए अस्पष्ट रूप में सोच रहा था—

'पिताजी और चाचा तो दोनों सगे भाई हैं । मुझे इनसे क्या ? मैं मरी क्या मदद कर सकते हैं ।

अप्यष्ट अर्त्तमानोव न अपना छोटे भाई पादरी निकिता को अपने घर रहने को आमन्त्रित नहीं किया । पादरी घोला के घर में ही पीछे के एक खोबर में ठहर गया और उसने उस बताया—

मैं कुछ समय तक यहाँ ठहर कर जल्दी ही चला जाऊँगा । वह बहुत कुछ अज्ञात रूप से रह रहा था । जब तक उस नीचे बुलाया न जाता तब तक वह नीचे कमरों में न जाता । वह बगीचे में पड़ों की फाट-छाँट करता रहता और फट्टुए की तरह चलता हुआ जमीन से घास फाटता । दिन प्रति दिन उसके अहोर की भूरियाँ बढ़ती जाती थीं । उसका धीरे धीरे हावा जा रहा था और अन्त समय उसकी आवाज बड़ी मन्द पड़ जाती थी जैसे कि यह किसी कद से बाल रहा था । गिरने में भी वह कभी-कभी धीरे अतिशयपूबक जाता और प्राय बीमारी का बहाना कर घर में भी बहुत कम प्रापना करता । रात आत में भी वह परमात्मा के बारे में बहुत कम चिन्तन करता और अत्यन्त इस विषय पर अतिशय में भी अतिशय कर जाता ।

याकोब ने देखा कि घोस्गा पादरी से बहुत अनिष्ट हो गई है और बीरा पापोबा तो उसका बड़ा भावर करती है। यहाँ तक कि जब कभी उसका पादरी चाचा अपनी मात्राओं और लोगों के बारे में बिक करता तो मिराम भी न तो नाराज ही होता और न नाक-भौं ही सिकोड़ता। इन दिनों मिरोन अपने बाप की मृत्यु के बाद बहुत रुखा और कठोर हो गया था कारखाने के बन्दोबस्त में ऐसे हुकम चलाता जैसे कि वह उसका सबसे बड़ा मासिक हो और याकोब पर किसी नौकर की तरह डाट बपट करने लगता।

जब कभी नतास्या सामने आती तो पादरी उसके सामने गोल-गोल चेहरे पर वैसी ही व्यापूण हृष्टि डालता जसी कि बीरा पर डालता था। परन्तु, वह बीरा की अपेक्षा नतास्या से बहुत कम बोसता। नतास्या भी इन दिनों बहुत कम बोसने की आदी हो गई थी। वह सदा दोष स्वार्थें भरती। उसकी आसो पीछे वैसी आँखें कभी-कभी अपने पति के स्वास्थ्य के बारे में प्रस्पष्ट रूप से मिहारतीं। मिरोन को देख उस डर लगता और मोटे भारी बंटे—याकोब को देखकर उसमें मानु प्रेम का आह्लाद उमड़ आता। पता नहीं किस कारण से पादरी तिसान के साथ प्रसहमत रहता था और वे दोनों आपस में एक-दूसरे के सामने से एस ही गुजर जाते जैसे दाँधे गुजर जायें।

याकोब के जीवन में अब अपने पादरी चाचा की कोणा कार, कछुए जसी आकृति से एक और चिन्ता की छाया हा गई। पादरी का मलिन विषमता हुआ चेहरा उसके अन्दर एक भारी मृत्यु की आसका आशूत करने लगा। याकोब अर्थात्मानोव ने देखा कि पर में नई-नई चिन्ताएँ बढ़ रही हैं। और, क्योंकि उसकी निजी चिन्ताएँ हा काफी थी इस कारण उस परमू चिन्ताएँ और अधिक व्यथित करने वाली प्रतीत हा रही थीं। उसने जैसे अतुर दूरदर्शी अनुभवी प्रेमी ने देखा कि पालिना ने अब उसकी

घोर से विमुक्त होती जा रही है और उसके सन्देश स्पष्ट, वसिष्ठ सपिटेनेष्ट मावरिन पर हड़ हान सम । घब याकोव से घामना सामना हाने पर सैपटीनेट अभिवादन के लिए बड़ी उपेक्षा से अपनी उल्लसियाँ हेट से छूता और घाँसा को ऐसे उरेरता जैसे कि वह अत्यन्त दूरवर्ती क्षुद्र वस्तु को निहार रहा हो । पहले वह कभी सामाजिक मुझाकारों के समय या सहर म साध मे हारी रकम का कर्ज मन के लिए, घषबा कर्ज की मियाद का मन्वा करम के लिए बड़े घादर से प्रार्थना करता । घनेक बार पाप सूती के भाव से उसने प्रशसा म कहा था—

‘अर्नामानोब तुम्हारा ढाँपा विमकुल तोपखान के अफसर का सा है ।

घषवा वह इसी प्रकार की घम्य प्रिय बातें बनाता जि हैं याकोव खुदाभव समझता था । इस अभिमानी प्रसन्नचित्त अकसर की सान्नि के प्रति निरान्त उपेक्षा तथा उसका सक्ति और फुर्ती का दम सही सोग भीषक रह जाते थे और साध ही उसक गुप्त साहस और वीरता म नी बहुत विदबास रक्तन थे । वह सामा के अहर की घार घपनी मान-म स परपर जैसी घाँसा म दलता और हुकुम दतो हुई मावाक म कहता—

मैं ठंड गुन वासा पुर्य हूँ । मुझे प्रतिघयाक्ति सहन नहीं ।

एक दिन सहर के बुद्धे पान्टमास्टर शानोव स यह सागा पर अगड़ पड़ा विमकी तज हाजिरजशाबी म सारा सहर किन्त बता था । मावरिन न उसय कहा—

मैं प्रतिघयाक्ति नहीं कर रहा । परन्तु तुम एक बुद्धे बयजूक हा ।

याकाव मावरिन पर घपना प्रम प्रतिद्वन्द्वी हान का सहर

करता था और साथ ही वह उसके साथ सपप स नी डरता था । परन्तु उसे यह कमी नहीं मून्घ कि वह श्री जिम यह सब और अधिक प्रेम करने लगा था । मावरिन क सामन आत्मसमर्पण कर दगी । उसन उस कई बार घटावनी नी दी थी—

‘दख ! यदि मुझे जरा-सा नी पता चसा कि तरे और मावरिन क बीच कुछ मामसा है—तो मैं तुम्हे धाड़ दूँगा ।’

इसक साथ-साथ टिकारी नस्कोष के बारे म भी उसका भय बढ़ता जा रहा था । वह शहर क एक कोन म बधाक्षा क पुल के पार रास्ते पर अमीन से अचानक निकल आता जैसे कि उसे कोई कर्ज सेना हा और अपनी टापी म दखत हुए टुकता से माँग कर बठता ।

इस टिकारी के बारे म एक विचित्र और अप्रिय बात यह थी कि वह सदा एक ही स्थान पर प्रगट हाता था, जहाँ सन और भास घनी उम रही थीं और जहाँ पास लासकर दा बसों की धासाओ क बोध बहुत घनी भ्रङ्गी थी । दा वर्ष पहल इस अगह एक बागवान पैनक्रिस का छाटा-सा घर खडा था । परन्तु उसे किसी म भार कर उसका घर जसा दिया । वसा की प्राग स मुलसी धासाएँ अभी तक कान म कासी-काली दिन्वाई द रही थीं । मरदकी^१ उसन बाला न रात्र का मिट्टी क साथ मिलाकर उम सज्ज बना दिया था । मकान के खंडहरा क बीच इटों की बुनियाद और चिमनी अभी खड़ी हुई थी और चाँदनी राता म उस पर एक हरा तारा प्रासमान स मोचे लम्कना दिखाई देता था । नस्काव इस चिमनी के पीछे स झारे-भीरे भ्दियों का हटाता हुआ अपना सिर उठाता और टापी उटाकर बढ़बडान

१ मरदकी—कई इण्डों का एक रसा घस जा बहुत न इण्डों को फेंक कर घसा जाता है ।

सगता—

मैं घापकी सेवा न हूँ। घापक कारखाने में फिर एक विरोह खड़ा हो रहा है।

इन गिराहों से मेरा क्या वास्ता याकोब गुस्स म कहता और नस्काव की बुस्समबुस्सा धूमना का भागे सुनता -

'नि सदेह घापका इन विरोहों से कोई वास्ता नहीं परन्तु उनका भापसे वास्ता है।

अफमास है मैंने इस उस रात को नहीं मार डाला।' याकोब न दसियों बार इस पर अफमास किया होगा! और जामूस को पसा देकर कहता—

देखो, बचकर रहना।

हाँ-हाँ मैं जानता हूँ।

मुझे गड़बड़ म मत डालना।'

'क्या?' घाप अफिकर रहें। ऐसा नहीं होगा।

बेशक यह मुझे निपट भूय समझता है नस्काव को काम का घादमी समझत हुए जो याकोब का बिस्वास था कि टेड़ी टीगा और अफटे अहरे बासा यह घादमी उससे बदला भी सना चाहता है। वह यह जरूर चाहता है। यह या तो उस डराना चाहता है या उससे पसा ऐंठना चाहता है। जो कुछ उस वह दगता रहता है नायव उसी से यह मजदूरों को खरीद कर उन मर पाना चाहता है। याकोब का ऐसा भी प्रतीत हुआ कि पिछले दिनों से मजदूर उसकी अर राय से बहुत गौर से दसते हैं।

मिरान ने कई बार कहा था कि मजदूर बगावत पर उठाक हैं—इसलिए नहीं कि वे अपनी अयस्था में उन्नति करना चाहते हैं परन्तु, इसलिए कि बाहर से तरह-तरह के मूखता

पूर्ण विचार उनक विचारों में डूबे जा रहे हैं कि उन्हें वैसा कारखानों और दस की सब सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लेना चाहिए ।

इस बारे में जिक्र करता हुआ वह अपनी सम्पा-सम्बन्धी बातों से बहुत क्रोधमा करता और कसिर में उंगली फँसा गदन मोड़कर घूमता मद्यपि उसका कामर काफी ढीला था और गर्दन भी काफी पतली थी ।

‘यह तो सादसिज्म भी नहीं । चलान ही जानता है यह क्या है ? और इस प्रकार के चिन्ताप्रण विचारों का प्रचार करने वाला खेरा सगा भाई है । हमारी सरकार में भी बड़े-बड़े बुद्धिमान कोए हैं ।

याकोव जानता था कि ये सब बातें जा मिगेन करता है, मुझे वालों का यह बखान के लिए ही करता है कि सरकारी खूमा पद के लिए वह भी योग्य व्यक्ति है । परन्तु फिर भी भाई के पूणापुण भाषणों से याकाव के हृदय में एक प्रकार का भय उत्पन्न बढ़ता ही गया । वह धान वाली घापति का और अधिक निकट धनुभक्त करने लगा । एक दिन मुबह जामन पर उसन मिस के धांगन में सोना की चिल्लाहटें सुनीं । तक्रिए स सिर उठत समय उसन देखा कि गोशाम की सकेद चिकनी दीवार पर सागा की भीड़ की काली-काली छायाएँ दोड़ रही हैं । वे नाम उछन कूद कर रहे हैं हाथ तब मार रहे हैं और एसा लगा कि माशाम का सारा पिछना भाग खीबकर बाहर लिए जा रहे हैं । याकाव पसीन-पसीने हा गया और एरुदम पीछ उठा—

“बगावत ! बगावत !”

भीड़ की ये छायाएँ, जा उन सोना की घपथा अधिक नयानक थीं, एरुदम मुप्ट हा गई । याकाव का याद थाया कि

से लमकते कुल्हाड़ों की घमक और मिरान की सुनहरी ऐनक खिड़कियों के प्रकाश का प्रतिबिम्ब फेंक रही थी। मिरान, ने पुरानी सस्ती तस्वीरों के एक बहादुर जनरल की तरह अपना हाथ फेंका, जैसे कि वह किसी चीज को जमीन पर बिथर रहा हो।

याकाब न बपतर की खिड़की से उसे देखा था। उसे भी अपना बहनाई बड़ा प्यारा लगता था। उसके साथ उसका जीवन आनन्द में गुजरता और वह व्यापारपूर्ण विचारों को भूल जाता। याकोब इस व्यक्ति के स्वभाव से ईर्ष्या करता था। परन्तु साथ ही उसे एक भविष्य दृष्टा की तरह विदवास भी था कि वह किसी भी दिन एक उड़ते पक्षी की तरह जला जाएगा और एक्टर या नाई बनकर अज्ञानक लुप्त हो जाएगा। मीत्या का एक बिदाप गुण यह था कि उसमें भासप का सर्वथा अभाव था। तत्याना के विवाह में उसने बहुत ही भी माँग नहीं की थी। हो सकता है तत्याना की यह कोई बात हो। ज्येष्ठ अर्धमासाय मम से भुनभुनाता—

दसो ता किस छोटे से भास सिर वाले के लिए मैंने कमाई की है।

इसपर मिरान ने भी विवाह कर लिया था।

‘कृपया मुझे अपनी पत्नी को उपस्थित करने की आज्ञा दीजिए।’ उसने मास्को से बापिस आकर अपनी गाल-मटोल नीली घाँगीं सुपरास बासों और टेढ़ी गर्दन वाली छोटी-सी गुड़िया जैसी पत्नी को सामने किया। यह था एक विमान के से छोटे घाकार की भी और उसका सब लम्ब-लम्बा बड़ी सफाई के साथ बन हुआ था। लेकिन यह याकाब की दृष्टि में उसका आना अस्त बर्त की बटक में समी पड़ी के साथन दोनों की छोटी मूर्ति के समान रक्त मांस की बनीं स्त्री थी। इस चीनी की मूर्ति की गर्दन

टूट चुकी थी और उसे गोंद से किसी प्रकार टेढ़ा बिपका दिया गया था जिससे उसकी घाँसे कमर में बड़े सागों की प्रपेक्षा सामने लग शीघ्र में पड़ती थी। मिरोन ने बताया कि उसकी पत्नी का नाम घन्ना है। वह सत्रह साल की है। परन्तु इस घारे में चुप रहा कि वह काद्य के एक मिन-मालिक की एक मात्र लड़की है और वह अपने साथ बार्ड-मालक रुयन भी लाई है।

‘यह तरीका है कुछ लोग कस विवाह करन है। पिता याकाव को और लाल-लाल घाँसे स देखत हुए बड़बड़ाया— और तू पता नहीं क्या गड़बड़ कर रहा है। और इत्या यहाँ से कूड़े की तरह बाहर फेंक दिया गया है।

प्याज अपने भारी बकार शरीर को उठाता हुआ कठिनाई से चल रहा था। याकाव को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका पिता अपने शरीर के बाँध से तड़प रहा हुआ है और जान-बूझकर अपने बाँधों से शरीर का प्रदर्शन कर रहा है। वह रात के अंधकार में नग पाँव सलीपर पहन जाग के बदन बन्द किए बिना ही खुली कमीज में घूमता था जिससे उसकी मोटी चरबी बरी छाती नङ्गी दिखाई देती थी। ऐसा वह अपनी बड़ी लड़की के घान के समय उस तड़प करन के लिए किया करता था। कभी-कभी वह मित के दफतर में घा बैठता और अपनी घनन्त बंकार माता से याकाव के काम में विघ्न डालता और कहता कि उसने अपने बच्चा के लिए ही इस मिस में जीवन को बलिदान कर दिया है और उसने एक अल्पसायी की पत्थर डोन वाली गाड़ी में जुन पाई की तरह अपनी सारी जिन्दगी खरम कर दी है। यह सदा घनन्त विस्ताषा से विरत रहा है और उसने कभी एक पड़ो के लिए भी जीवन का मुन नहीं दिया।

याकाव इन बातों को सुनता और चुप रहता। वह दम्बता था

कि इन शिक्षायतों से पिता को कुछ संतोष मिलता है । इससे वह बटे को नज़रों में इतना फस जाता और उँचा हो जाता जितना कि गिरजे का घण्टाघर—ज्यों कि घर क घरों क सोना से पहले मूय उसे ही देखता है और सध्या-काल म सब से पहले उस ही बिदाई म जाता आता है । परन्तु, पिता की इन सप शिक्षायतों से बटे ने यह शिक्षापूर्ण परिणाम निकाला कि जीवन में उसे इस प्रकार निरर्थक नहीं रहना जैसा कि उसका पिता रहा है ।

और, उसने हमेशा देखा कि एक बच्चे भरपेट भोजन क बाद उसका पिता शिक्षायतों की सीढ़ देखने से परिपूर्ण हो कर घपन घास-घास के सोनों को खूब नाराज करना चाहता था । उसकी बूढ़ा पत्नी बगीच म सिडकी के पास घपन घुटनों पर घनामशक हाथा का टिकाकर घपनी सूजी-सूजी घाँघा स घासमान म एक बिन्दु की घार दसती हुई बैठी रहती । वह उसके बराबर में आकर उससे छड़झाना करन लगता—

'तू क्या सोच रही है ? तू माटी तो है परन्तु दिवाई नहीं दता । बच्चे भी ता तुझे कुछ नहीं समझत । वज, तस्याना ही तरी घपधा रसाईवारिन स घधिक प्यार से बासतो है । एसीना भा तुझे घूम चुको है, घब वह यहाँ घाँघी ही नहीं । क्यों ? मामूम हाता है किता और नए घमो स फंस गई हागी । और दस्या कहाँ है ?'

परन्तु घपनी पत्नी से भयङ्क करना घडा नीरस था । क्याकि उसका साल-गुलाबी पहरा एकदम घाँघुघों स भर जाता था । य घाँघु कबल घाँघां क कान स ही नहीं परन्तु उसके गाला की ताल स और कानां क पीछे स भी उमकत-उपम्त दिवाई दत था ।

घरघा घब घपन घाँघु मुधा स ।' पति बडा पूणा स

कहता और उसके पास से एक घुंए की तरह दूर हा जाता ।

याकोब की माँ उससे कभी मगहन की काशिघ नहीं करती थी । और, बेट न उसकी नजर में एक ठु मव दगा का भाष दखा था । कभी-कभी उसका पिता घाह नर कर कहुता—

घोह खासी घाशों बास ।

मिरान उसकी छेइखानी और मखीस से पर था । प्यान उससे डरता था और परे-परे ही रहता था । याकाव इस बात को जानता था ।

मिन म और घर म उसकी माँ और बीनी की बनी मूर्ति जसी पत्ना से लेकर नीकर लड़क पीघा जा सामन का दरबाजा बन्द करता था तक सब डरते थे । जब मिरान घागन म पत्ता जाता तो एसा प्रतीत हाता कि उसकी सम्नी-सम्बी छापारै भी उसके पीछे नीरखता पना करती जाती हैं ।

घपन सास सिर बास जंवाई से भी छेइखानी म बिरोप घानन्द नहीं घाता था क्याकि वह स्वयं छेइखानी और मखीस म कुमस था और घपने पर शोट होने से पहिल ही उस पर शोट करना शुरू कर दता था । तत्याना क पेट म बसा था, वह बहुत कुस पुकी थी उसके घाठ किसी कदर सिकुड़ म रह था । दापहर क भाजन क बाद वह सट जाती और तीन कितानें एक साथ पढ़न लगती । उसके बाद वह घपने पति के साथ पूमन पनी जाती । उसके बराबर म उसका पति तीतर की तरह चलता रहता ।

कभी ज्यघ घतामानोब माङो में घाह जुतवा घहर में भाइ निश्चिता और तिघोन के साथ मशज मारने और छेइखानी करन पत्ता जाता । याकोब म कई बार उम एसा करत दखा था ।

“क्यारे बिद्यार्थी ! चाग म क्या कहीं परमात्मा को सो बैठा है ?”—वह पादरी स उलझ जाता । निश्चिन्ता अपनी कुछ क साथ हिनता और अपनी हथेली को प्रस्थित भुटनी पर रखता हुआ बोले स ससाहना देता कहता—

‘ओह ! तुम ऐसा क्यों कहते हो । यह बेकार है ।’

‘बेकार क्या है ? तूने अपनी टोपी तो पहनी नहीं है । यह तो सर सिर पर झूठी टोपी है । यह तरा बोगा और यह नावा सब झूठा है । तू कैसा साधु है ?’

‘यह मेरी अन्तरात्मा की बात है ।’

‘अच्छा तम्बाकू भी सूखता है । मैं कहता हूँ तू गलत रास्त पर है । अच्छा होता तू अपनी जवानी क दिनां म किसी गरीब, अनाथ लड़की स विवाह कर मता जो कृतमतापूर्वक तेरे लिए यत्ने जनती । और अथ तू वादा हा मता । परन्तु, मून यह मौका पा लिया । याव है ?’

पादरी निश्चिन्ता एक बड़े कष्टुण की तरह धीरे धीरे इधर उधर सरक जाता और व्याप्त अर्त्तामानाथ फिर भोला की ओर जा पहुँचता और उस मम म अलकसई क ब्यभिचार और रङ्ग-रनिया क फिस्स सुनाता । परन्तु इसस भी उस कुछ संताप न जाता । क्योंकि वह छोटी-सी बुद्धिवा पति की मृत्यु क बाद एक प्रकार की बंधनी का गिनार हा चुकी थी, और वह पर क फरमीचर, व अन्य सामान का सदा इधर-उधर झलट-झलट करती या खिड़की स बाहर झँकती रहती । वह अपने सिर को पुपचाप हिलाती हुई बसती और अपनी नाक पर भारी गोदां वाली एक पहन छड़ी क साम दायां हाथ बाय क फेंगाए टटानती हुई जनता । व्याप्त की इर्ष्याभरी कहानियां का मुन कर वह मुस्करा कर जवाब रती—

“जा तुम्हारी मर्जी है कह जाओ परंतु मरे घाल्योमा को जैसा कि मैं जानती हूँ काह नुकसान नहीं पहुँचगा । तुम कोई अच्छी बात तो कह नहीं सकते ।

“बहु सरे बारे म ठीक ही कहता था कि तू एक घास स बसती है ।’

“मुझे ता सब दोनों ही स नहीं दिखाई दता । घास्मा न कहा, सब विल्कुल दिखाई नहीं पड़ता । कस उसकी प्रिय चीनी की मूर्ति का मैं अपने प्रयेपन स ताह बनी ।

प्यस घर्तमानोष तिस्रान से नी उलभन को काशिय करता । परंतु उमस उमभना घासान नहीं था । तिस्रान नाराज नहीं हाता था और अपने कथ स पीछ को देखता हुआ वह खुप बाप सधेर म जबाब दता ।

तू बहुत दिन जिणगा —घर्तमानाब न कहा । तिस्रान न अपनी मूर्तती बाबाज म उत्तर दिया—

हाँ, सोय जीते हैं और अपिक जीत है ।’

‘और, तू क्या जी रहा है ? बता ?’

सभी जीना चाहत हैं । उस उत्तर मिलता ।

‘ठीक है ! परंतु सब सोय जिन्दगी भर घासन में भ्रष्ट ता नहीं मगाते ।’

तिस्रान क अपने घस्य विचार से ।

यह ठीक है कि पंदा हो जाते हैं । परंतु, जीना तो मौत तक पड़ता है । —बहु जबाब दता । पर घर्तमानाब उसकी मुने बिना अपनी पाठ कहता जाता ।

‘दस ! तून अपनी सारी जिन्दगी हायां म भ्रष्ट तिर गुजार दो । न ठरे खी है न मरु घौर न किसी प्रकार की

तुम्हें चिन्ता है। ऐसा क्यों? मेरे पिता ने तुम्हें दूसरा अच्छा काम दिया था। परंतु तुम्होंने उससे आग्रहपूर्वक इन्कार कर दिया। क्या कारण था?’

“यह पुश्त का तुमने समय निकाल दिया प्योत्र इत्यर्थ !”
तिष्ठान ने एक तरफ निहारते हुए कहा।

प्रतापमानोव ने फिर नाराज हाते हुए दृढ़ता से उत्तरना शुरू किया—

सू खरा देख लो कि तरे जीवन में कितने लोग मासदार हो गए। सब नाम जीवन के सुख चाहते हैं उन्होंने धन भी एकत्रित कर लिया है।

ठीक है धन एकत्रित करते रहे मूल्य जमा किया और घतान का करीबा ५५। तिष्ठान ने अपने धा' को विशेष जोर के साथ सम्बा उच्चारण करते हुए कहा।

याकोव इन्तजार में था कि पिता नाराज होगा और तिष्ठान का गालियाँ सुनाएगा। परंतु कुछ पिता चुप रहकर कुछ प्रस्पष्ट रूप से बुदबुदाया और फिर दरवान के पास से हट गया। तिष्ठान भी उल्लेख के साथ-साथ सुस्त पड़ता जा रहा था, उसके बान कम और एक ही रङ्ग के धौसे पड़ गए थे। उसकी खास मटियासी पड़ती जा रही थी परंतु फिर भी वह आयु के प्राक्रमण के बिच्छु बहुत अच्छी तरह डटा हुआ था। शरीर उसका पहिले जैसा ही दृढ़ था और अब उसके सहारे पर एक प्रकार का मोरब और शांति धा गई थी। वह महत्वपूर्ण उपदेश देता हुआ वापस करता। याकोव का ऐसा प्रतीत होता था कि तिष्ठान उसके पिता की प्रपरा अधिक 'अधिकार और स्वामित्व' से बाध करता था।

याकोव भी अनुभव करता था कि अपने परिवार के बीच

वह फासतू आदमी है। पर भर म उसे एक पराया ब्यक्ति मीत्या भोंमीनाव ही पसन्द आता। मीत्या उसे न मूझ और न ही बुद्धिमान विस्तता था। वह उस इन्हें किसी भी धेणी म नहीं रख सकता था। वह और सबसे भिन्न था। और उसका महत्व उसक प्रति मिरोन क ब्यबहार स स्पष्ट था। मिरोन सब क साथ रोव और भमण्ड बरतता था, सब पर हुकुम आनाता था और अधिकार जमाता था। परंतु मीत्या क साथ समय २ पर बहस मुबाहिम क धाबजूव बहुत प्रन्ध्या था। मिरोन उसके साथ कठोर जवान-जोरी नहीं करता था। पर म सुबह स सकि तक नाना प्रकार का पार होता रहता।

मीत्या !—उस्याना चित्साती। कहाँ है मीत्या ? —
मौ पूछती और कभी-कभी प्योत्र भी लिङ्की क बाहर खिर निकामकर जोर से चित्साता—

‘मित्री,— भोजन का समय हो गया है आधा।’

मीत्या मिस म सामकी की तरह तजी मे पूमता होता और अपनी हँसी-मखौल की फवी-फली पूछ स मजदूरों औरों क साथ मिरोन की कठारता और नाराजगी का पाछ । मजदूरों को वह मित्र कहकर पुकारता।

वसा मित्र। यह बात एसी नहीं। वह दाढ़ी वाले रो मरकम बड़ई फोरमन स कहता और अपनी जब स माटी स चमड़े की जिल्द वाली किताब को निकाल कर पास क त पर पेसिम स कुछ चित्र बनाता और फिर पूछता—

‘वसते हा ! यह एसा है ! और यह एसा है ! और और ऐसे ! सब समझ आया ?’

ठीक है, फोरमैन सहमत हा जाता। ‘सकिन हम ता पुपन ही ठरोक से काम करने क प्रन्यासी रह है !’

किस प्रकार मर रहा है। वह कठिनता से चीवारे की सीढ़ियों पर चढ़ता और पादरी के विस्तर पर बैठ जाता और अपनी सुन्नी लाल घाँवों से स्थिर दृष्टि से उसकी ओर निहारता। निकिता चुनचाप लटा रहता, साँसता और पथराई हुई नजर से छत की धार देखता रहता। जब उसके हाथ काँपने लगे थे। उसका शरीर पर सारा बोना भी काँपता रहता था जैसे कि वह किसी द्रव्य की काँच से भरा हुआ हो। कभी-कभी वह लड़ा हाता और साँसता हुआ हाँफता।

‘क्या गिरा जा रहे हा ? भई पूछता।

निकिता भाई के कचे विस्तर और कुर्सी की पीठ का पकड़ता हुआ सिड़की की धार सरकता। उसका बोना एम दिलाई देता था जैसे कि दूरे मस्तूल पर फटी पास। सिड़की के पास बैठकर वह चुन मुह बगीच में नीचे सुदूर फल काल-नाम नुकीसी कुनगिया बाज नज़्जस की धार निहारता।

बन्धा धाराम करो उसका भाई अपने काना को रगड़ता हुआ कहता। और फिर तीन से नीचे उठर घोला का बताता—

निकिता ! धीरे धीरे, घोला से वह कहता— यह धीरे धीरे गिर रहा है। जली हो सतम ।

एक माटा पादरी—पिता मरदारी चाया। उसने कहा कि निकिता को साधुगृह के नियमा के अनुसार प्राथम में भव देना चाहिए क्योंकि इसकी मृत्यु और अन्त्येष्टि यहीं हानी चाहिए। परन्तु पुत्रों ने घाला का मनास हुए कहा—

जब मैं मर जाऊँ तभी मुझे वही भजना।’

और तीन बार उसने प्रायनामा से धारह किया—

‘मरे कफ़न का ढक्कन जरा ऊँचा रखना ताकि दब न सकूँ । इसे भूलना मत !’

सड़ाई शुरू होने के चार दिन बाद निकिता मर गया । मरने से एक दिन पहले उसने साधु माधम से सूचना भेजने के लिए कहा—

मरणा है बे मरे बाद ही घाएँ । जब तक वे यहीं घाएँगें मैं खतम हा सूँगा । निकिता की मृत्यु के दिन सुबह याकाब ने अपना पिता को चीनार की सीढ़ियों पर चढ़ाए हुए सहारा दिया । पिता ने अपना धाता पर कास का निदान बनाया और भाई के मस्तिष्क पर—उसके पित्रके मुँह और अधनुमी घाँका की घोर निहारा । निकिता ने अस्वाभाविक ऊँची आवाज में कहा— मुझे क्षमा करो ।

‘इसमें क्षमा की क्या बात है ? किस लिए ? —यों प्रसन्नमानाथ बुवबुशया ।

‘मरी मूर्खतामा के लिए ।

मुझे नी क्षमा करो ज्येष्ठ भाई ने कहा— मैं तुमसे समय असमय मन्त्रोप करता रहा हूँ ।

‘परमात्मा, मन्त्रोप के लिए सजा नहीं देता पादरी ने हुन्की आवाज में उसे विश्वास दिलाया । और भाई ने कुछ कर कर पुनःपूषा—

‘पर कैसे तमिपस है ? कियर हा ?’

‘मैं नून गया, पादरी ने भाई का टोकते हुए जल्दी में कहा । याता, नू तिपान में कह देना कि वह मपस का पड़ जाट जान । उस पर मरना नहीं रहना चाहिए ।

१ मपस—एक पद ।

हड्डियों वाली छाती साधारण मनुष्यों से विपरीत, एक कोनदार डब्बे की तरह बार-बार उठती और नीचे को गिरती थी। उसके घने से निकलते मृत्यु के निरपेक्ष शब्दों को याकाव के लिए मुनना बड़ा प्रसन्न हो रहा था। अब इन गतिहीन हड्डियों के ढेर में, जो काला पड़ चुका था तथा जिसने बड़े हाथों में पुराने ढर्रे का साथ का आस धामा हुआ था, साधारण मनुष्यों के समान कोई बात नहीं रह गई थी। उसे अपने भाषा के लिए बड़ा शोक था परन्तु साथ ही यह सच रहा था कि यह क्या रियाज है कि मुहूर्तों का, और सासतौर से घरमें सम्बन्धियों को, सागों की नजर में मरन दिया जाए।

अपने भाई का इन्तजार किए बिना कि वह क्या कहना, श्वशुर घर्तमानाव याकाव की बाह पकड़ चुपचाप खिचिरे मुकाए बाहर निकल आया। नीचे आकर वह धाला—

मर रहा है।

अच्छा ? कुर्सी पर बैठे अलवार के बड़े आंगन से अपने घरीर को, भाषा छिपाए मिरान न पूछा। यह कहते हुए उसने अलवार से नजर नहीं हटाई परन्तु इसके बाद अलवार का मज पर फेंकते हुए कान में बठी पत्नी से बाला—

मैं ठीक था सा यह पढ़ो।

उसकी गाल-भटोल पत्नी कमरा पार करके मज के निकट आई ता सिद्धकी के पास बठी उसकी माँ धाला उत्सुक हो बाली—

‘क्या यह सच नहीं, मिरान ? लड़ाई अपनी छिड़ी नहीं ?’

सा अब द्वितीय घर्तमानाव भी समाप्त हो जायगा।’
प्यात्र घर्तमानाव ने ऊँची आवाज में स्मरण कराया।

‘सच झूठ है, कोई सच नहीं —मिरान न अपनी पत्नी

तथा याकोव से कहा । वे दोनों प्रभुवार के ऊपर मुक्त भयङ्कर
 प्रलंबारी तारों को पढ़ रहे थे । जब कि वह यह समझत हो
 कोसित कर रहा था कि इससे उस क्या डर हा सकता है ।
 व्यष्ट प्रसन्नानोष वड़े मुस्स में हाथ भटकाकर घ्रागन में जाता गया
 जहाँ मूरज न बिछ हुए पत्थरों को इतना तथा दिया था कि मज
 मसा कामस पूता क प्रन्दर पाँवों की छात्र तक पर्या भनुभव हा
 रही थी । लिङ्गी क पास स मिरोन की मूखी निङ्गकियों की
 प्रावाज घा रही थी और याकाव न लिङ्गी क पास हाथ में
 प्रभुवार लिए देखा कि उसका पिता अपन नाम-गुसावी मुक्त से
 फिती का डर रहा है ।

तीसर दिन सुबह ही साधु सोग निकिता की साग को लने
 पागए । वे साथ में जिनका प्राकार और ऊँचाई प्रथम प्रथम
 होत हुए नी नबजात सिधुषों क समान एक एम बीस रज् प ।
 उनमें सिफ एक पादरी ही सबम ऊँचा और पठना था जो उनक
 प्राप प्राग जस रहा था । उसकी दाढ़ी बड़ा घनी थी और उसकी
 ऊँची तथा प्रसप्रतापुण प्रावाज प्रबसर क लिए उग्युक्त नहीं
 थी । वह एक कामा क्रॉस गसे में सटकाए सब के प्रागे-प्रागे
 जस रहा था । वरने में एसा समता था जैसे उसक प्रहरा हा
 नहा है क्योंकि वह गजा था उसकी चौड़ी पपटी नाक गालों में
 प्राकर बिगुल्ल थी हा गई थी और प्रहर पर उसकी पञ्जी पाँद
 और दाढ़ी क बीच दा छाट छाट छिद्रा क प्रमात्रा मुछ दिखनाइ
 नहीं पड़ रहा था । जब वह जसता तो अपन पाँवों का एम पीर
 उठाता था जैसे कि वह प्रग्था हा । वह तीन तरहु को घनियों
 में गा रहा था—

‘पवित्र परमात्मा ’ हस्ता प्रावाज में ‘पवित्र सवयत्ति-
 मान ’ ऊँचा और ‘पवित्र प्रभा हम परदया कर । एसी प्रज
 और पार होने वाली पठती प्रावाज में कि गवियों-के प्रज

उसकी दाढ़ी की भार प्राणधर से देखत कि यह सीना प्राणधर
 एक ही मुह से कैसे निराम रही है ।

जब जनाजा शौराह पर पहुँचा तो मामूम हुआ कि मार्ग
 नागरिकों और लेफ्टिनेंट मावरिन की सुरक्षित फौज के सिपाहियों
 से घिरा हुआ है जिनके साथ शहर के कुछ अधिकारी और पादरी
 भी भेड़े में हैं । अधिकारियों उस्ताह वासा लेफ्टिनेंट एक मूर्ति
 की तरह अपने सिपाहियों के प्रागे फौजी पोशाक पहने खड़ा था ।
 पादरी और अन्य धार्मिक विचारों के लोग अपनी कोणाकार
 पाशाकों तथा अपनी निष्प्राण भावितियां में बही मौजूद थे । उनके
 कपड़े धूप में पिघलते हुए सोने की तरह चमक रहे थे जिसकी
 चमक लेफ्टिनेंट मावरिन पर भी पड़ रही थी । मावरिन देन के
 लिए बनाए हुए मक के प्रागे एक मोटा प्रकसर टोपी रख अपने
 छाटे-स सिर का हिलाता हुआ इधर-उधर घूम रहा था ।

तीन दरनियों वासा पादरी अपने कामे काँस को हिलाता
 हुआ जामा की शीवार के प्रागे रुका और अपनी मंद ध्वनि में
 वासा—

राज्ता वाऽऽ ।

परन्तु भीड़ दन पादरियों के लिए नहीं बल्कि इस प्रावनिक
 के सहायक प्रकसर के साल सम्ब धोड़े के लिए हटी था । यह
 प्रकसर अपने संकेद दस्ताने पहन हाया का तजी से हिमा रहा
 था । पाड़े पर पादरियों के सामने प्राकर यह यलो के शीन की
 तरफ मुड़ा और निडकतो रावपूर्ण प्राणधर में वासा—

क हाँ ? तुम माम इतर नहीं रहे ? पीछे हटो !

प्राणधर न अपने काँस ऊपर का लिए और चिह्नान सम—
 'त कि त व र मा रमा ।

हुरा ! प्रकसर जोर से चिल्लाया और शौराह पर सड़े

हजारों कंठों से आवाज निकली— हु र र र घा ।

अफसर अपनी रकावों में खड़ा हाकर जोर से चिल्लाया—

‘व्यात्र इन्वय ! कृपया गली में हो जाओ ! मिरोन प्रसन्नसहस्रविच वापिस हो जाय प्रायना करता है ! शक्त नहीं यहाँ इतना जोर है और आप साग यह क्या है ?’

ज्येष्ठ अर्तमानाब न जा अपनी पत्नी और याकोव के सहारे जनाब के प्राय प्राय चल रहा था नीचे से ऊपर अफसर के स्थिर चहर की ओर देखा और बड़ा निराशापूर्ण गम्भीरता के साथ साबून को उठाने वाले पादरियों में बाना—

पितामो ! वापिस हो जा । और फिर लम्बी साँस भरता हुआ आगे बोला—

सगता है यह मग आखिरी हुकुम है ।

याकाब का यह सब घटना बड़ी बड़ी और उपाहासात्म्य प्रतीत हुई । परन्तु, व सब साग उसी गमी में मुड़ गए जहाँ पालीना रहती थी । याकाब ने पोनीना को देखा जो सफेद पाशाक में गुमाही पैरासास^४ लिए जनाब की आर धा रही थी । उत्तन बड़ी जल्दी से अपने उन्नत बस पर काँस का निधान किया ।

यह याकरिन से प्रेम करने जा रही है । उसी वक्त याकाब ने साधा और गद में परेगान हाकर एक अग्रियतापूर्ण आह नी । मापु जल्दी-जल्दी चल पड़े । लम्बी दाड़ी बाना सापु भीर पारे सोचता हुआ गान लगा उसके पीछे चलते वाली संगीत मडली सगनय पुप हां गई । बाहर के बाहर कसार्गान के सामने एक अजीब आश्रुति की माड़ी लड़ी थी जिस पर कामा कपड़ा पड़ा हुआ था और जिसमें बितकरबर पाई जुड़ हुए थे । इन गाड़ी

^४ पैरासास— क्रिया की छत्रा ।

उसकी फौजी पोशाक की जैकेट के बटन बन्द नहीं थे। और उसकी पतलून के भी बटन खुल थे। पासोना टाँग-पर-टाँग रखे साफे पर बठी थी और उसकी टाँगों की जुराबें पिङ्गलियों तक सरकी हुई थीं। उसकी चमकीली धरारती विभिन्न गाल-गोल भाँसें और गाल सज्जा से लाल पड़े हुए थे।

क्यों ?

स्विर ठंडे-खून सप्टीनेंट ने पूछा तो इस प्रश्न से याकोव का सम्बन्ध बिल्कुल टूट हो गया। उसने आगे को बढ़कर अपनी टोपी मुर्सी पर रख दी और एक बवसती हुई भर्राई तथा बिबिध भावात्म में कहा—

“मैं जनाबों को पहुँचाकर और स्मृति भोज से लौटकर आ रहा हूँ।

‘अब छु !’ सैप्टीनेंट ने स्वाभिमूर्धक भाव से प्रश्न के रूप में कहा। पासोना सिगरेट पीती हुई लिललिलान सगो और उपद्रवा से जस कि उसने कोई अपराध नहीं किया, घुर्घा उड़ाती हुई बाली—

इप्पासित् स्परेगइविच मुझे कह रहे हैं कि मैं फौज में नस का काम करूँ।

‘नस ? हूँ ! याकोव ने ध्यम्य से हँसते हुए कहा। तो फिर स्विर व ठंडे खून वाल सैप्टीनेंट ने आगे को कदम बढ़ाकर जवाब में पूछा—

“इस मसौल का क्या मतलब ? मैं आपको याद कराना चाहता हूँ कि मैं प्रतिशपाति पसन्द नहीं करता ! मैं यह सहन नहीं कर सकता।

इन दो तीन शर्तों में याकोव ने अनुनय किया कि उसके

दृश्य में एक क्रोध घोर घृणा की सहूर दौड़ गई है और उसे अधिकधिक व्यथा इसलिए अनुभव होने लगी क्योंकि यह छाती भी उसे उसके लिए एसी ही आवश्यक और प्यारी थी जस उसके शरीर का ही कोई अङ्ग है—ऐसा अंग जो अपने स समय न किया जा सकता है। लेकिन इस अनुभव स उसके शरीर में घृणा की एक कपकपो दौड़ गई और वह अपनी बेबा म हाथ डालकर बिस्मिल सा लड़ा हा गया।

‘सबखार जा प्रागे वड़े।’ उसन लपटीनेन्ट को साबधान किया। उसकी प्राँतें दद स फनी जा रही थी।

‘ए -सा क् यो?’ लपटीनेन्ट ने पूछा और एक कदम प्रागे को बढ़ प्राया। याकाब को लपटीनेन्ट के बोहरी प्रावाज के शब्द बड़े प्रप्रिय लगते थे। और प्राज तो वे असह्य ही हा गए थे। वह गुस्से म पागल हुया जा रहा था। जवा स प्रागन हाथ निकालत हुए वह पिस्ताया—

‘मैं तुम्हें मार दूंगा।’

लपटीनेन्ट भाबरिन म उसकी कसाई पकडतो और उस पीड़ित करते हुए दबाया। याकाब को पिस्तौल जस म ही पली गई। उस की बाँह म कोहनो क पास जा र की पीड़ा हुई तो वह जब स बाहर निकल प्राई। लपटीनेन्ट न उसकी निदोषे उभसियों स रिवास्वर खीनकर उस पास पड़ी घायल कुर्सी पर फेंक दिया। फिर वह वासा—

यह धकार है।

पागा पागा!’ अर्धमानोब ने ऊँची फुसफुसाहट म सुना इशानिज्ज सगोइमिय। भल प्राइमिया। तुम पागल तो नहीं हो गए? यह सब किसलिए? दगत नहीं मानगा भगड़ा यड़ा हो जाएगा। यह सब किसलिए?

“घ-प्-छा ।’ ठण्डे धून घाले सफ़ीन-ट ने गरजसे हुए कहा उसने याकोब की दाढ़ी पकड़कर उस नीचे को घपने पाँव की धार मूकाया घौर बाला—“मुझसे माफ़ो माँगता है या नहीं, वेवकूफ़ कहीं का ।

घौर प्रत्यक शब्द के साथ उसने याकाब की दाढ़ी को नीचे मूटकाया घौर फिर उसकी ठोड़ी पर मुक्का मार कर उस खड़ा होन के लिए मजबूर किया ।

“घाह ! कितनी सज्जा की बात है घोह ! घोह !” पोलीना सैपटीनेन्ट की कोहनी पकड़से हुए चिल्लाई ।

याकोब का दाँया हाथ हिस नहीं सकता था परतु उसन दाँत भीचकर बाँए हाथ से सैपटीनेन्ट को घसग हटाना चाहा । उसका सहरा रुझासा-सा हो गया घौर उसके गालों से घाँसू नीच डलक घाए ।

“सबरदार घगर तुम मुझस घड़े !” सपटीनेन्ट चिल्लाया घौर याकाब को उसन घाराम-कुर्सी पर घकस दिया जहाँ रिवा स्वर पड़ी थी । याकोब न हथेली स घेहरे को बाँपकर घपने घाँसू छिपान चाहे फिर बहु गतिहीन मूर्च्छित-सा होता हुआ बैठ गया । उसने घपने कानाँ म सपटीनेन्ट पर चिल्लाती हुई पोलीना को घावाज सुमी -

“ह परमारमा, कितनी बुरी बात है ! घौर यह तुमन ! कैसा भगड़ा ! घौर किस लिए ?

“नौजबान खी ! तुम जाओ जहम्नुम !” सैपटीनेन्ट ने भारी सारु की घी घावाज म कहा—

“यह सो ! तम्हारी बगणीस क लिए यह तुम्हारे लिए काफ़ी है ! मैं घतिशयाक्ति सहन नहीं कर सकता । तम बिसकुत मामूनी धोरत हो ।

घपनी टाँगों से भारी घाबाज करत हुए सफ़ीनेन्ट दरवाज़े को जार से बन्द करके खसा गया और घपन पाछ लटकती हुई सम्प की खटखटाहट और पामाना की हल्की शीशें छाड़ गया । याक़ोब घपनी निबम टांगा पर जा क़ाय रही थी खड़ा हुआ था । था, उसका सम्पूर्ण शरीर ही क़ाय रहा था जस घाठ लग रहा हो । पोसीना कमर के बोध सम्प के नीचे मुँह फाड़ गहर-गहर साँस मती हुई खड़ी थी और बह हाथों में मन नाटा का सिए निहार रहा था ।

कमीन कहाँ की । याक़ोब बासा । पून यह सब क्या किया ? तू तो हमारा मुन्ड ही कहती थी तुन्ड तो मार देना चाहिए ।

खी ने उसकी धार निहारा और नाटा का फटा पर कंक दिया । फिर बराई हुई बिणादपूग ध्वनि में बाली—

“भाह ! कैसा गुब्बा बदमाश है । यह कहन हुए बह धारामकुर्सी में पिर पड़ी और घपन दाना हाया से सिर का पकड़ कर बैठ गई । याक़ोब उसकी पीठ पर जार से मुक्का मार कर पिल्वाया—

हट ! रिनात्वर मुन्ड द !

वह बिना हिंस उसी प्रकार दुखी स्वर में बाली—

तो तू मुन्डे प्यार करता है ?

नहीं नफ़रत करता है !

‘नू ठ ! तू प्यार करता है !’

बह तबो से उदसकर याक़ोब की गाँ में घा बटी और उसको गदन में बाहें डालकर बड़ी टड़मा से लिपट गई । फिर बह उसे बड़े उमत्त प्रेम में चुम्बन लगी और उसकी घाँग और मुँह पर नाथे उप्पणदपाठ छगती हुई धीमे से बाली—

‘भूट है तू प्यार करता है प्यार करता है ! घोर मैं भी घोह ! मरे कोमल सस्रान प्यार ।

सलोना उसका प्यार का दाव्य था जो वह याकोब के प्रेम में पागल हो रहा करती थी जिसने उसके हृदय में एक परम कामल मधुर पापबिक्रमा जागृत हो जाती ।

इन घड़िया में भी बैसा ही हुआ । वह उसके सामने फिर द्रबित हो गया घोर उस अपने हाथा में पकड़कर भीचता हुआ उसका पुम्बन सने लगा । बोब बीब में सांस भरता हुआ वह बढ़वड़ाता भी जा रहा था—

‘बेहूनी ! छिनाम कहीं की ! जाननी नहीं ।

घण्टे भर वह नोफे पर उसके साथ बैठा रहा घोर वह उसके पाँवा में लगी रही । अपने पाँव से उसे भुलात हुए वह विस्मय के साथ साधन लगा—

‘यह सब किन्तनी बस्ती हा मया !’

वह घकान भरी आवाज में बोली—

मुझे बड़ा गुस्ता था गया था । मैंने तुममें किनारा करने तक की साँची थी । तुम अपने ही कामों में मये रहते हा । लोगों के बनावट में बस जात हो घोर मैं यही भक्ती । फिर मैं नहीं जानती थी कि तुम मुझे प्यार करते हा अब जान गई । अब तुम मुझे घोर अधिक प्यार कराग । तुम अब हिरस कराम क्याकि अब हिरस होती है ।

यहाँ से हम कहीं दूर बस जाना चाहिए । याकोब ने भर्राए स्वर में कहा ।

हां ! गरिम चनें ! मैं फौज भापा भी बान सकती हूँ ।’

उन्होंने अभी लम्बा नहीं जलाई थी । कमरे में प्रवेष्ट

छाया हुआ था। बाहर सड़क पर रलित सना क मियाहा प्रापी रात निकल जान पर खील रह थ घोर खियाँ उन खीला का उत्तर द रहा थी—

'प्रब हम बिदग नी नहा जा सकन बहो नी सड़ाई छिदा हुर है,' याकाब न याद कराया—'सड़ाइ पतान इत स जाए ।

पानिना न फिर घसन बिचार सामन रस—

'ईप्या क बिना कुस हो प्यार कर सकन है । तुम ही जग दसा कि सब नाटक-उन्मासा में इप्या-हा ईप्या है ।

याकोब जरा हूसा घोर कीपा

प्रच्छा हुआ गानी बन पडा गाली मरी जीप में नी सग मकती थी । प्रनी ता मरो पतमून म हा छद हुआ है ।

पानिना न पतमून क छद म उँगनी डानी धार फिर बिसकती हुई, प्रचड पूगा स पीम स बाया—

घाह ! कितनी पारम की बात है तुम उन वाली भी नहीं मार सक ! तुम उसक रबड़ जैस लपकाल पट में गानी नहीं मार सक ।'

तुन ! याकाब उन ऋठ-भोरत हुए बिन्नाया परन्तु बहू उमी प्रकार घसन दाँठा का नाचनी हुई उनम साटा का सी पाबाइ निकालत हुए पायलगन म कहती म—

नीब ! मुपर कहीं का ! मुन्के भी गापियाँ मुताकर गया है ! तुम सब पुग्ग कैय हा तुन हम घोड़ों का कुछ नी नहीं समन्त ।

घोर फिर घसन माट-माट घाटा का हिलाकर लोनही बस तब दाँता का दिगासा हुई बहू बाया—

‘देखा यदि घोरत तुमसे विमुक्त रहने जाती है, तो इसका यह मतलब नहीं कि वह तुम्हें प्यार नहीं करती।’

‘शुप रह ! मैं कहता हूँ शुप रह !’ याकोब पिछाया घोर उस एम भीषा कि वह पीड़ा न सिसकियाँ भरने लगी—‘धोह ! अब मैं समझी तू मुझे प्यार करता है ! याथा ! मेरे ससोने याथा !’

घोर हाते ही वह बड़ी हस्की बात से बस पड़ा। वह एक एम व्यक्ति की तरह अनुभव कर रहा था जिसने किसी सहर नाक सस में कोई कीमती उपहार जीत लिया था। उसके हृदय में ध्यानसे उमड़ उठा था। बाहर जाने से पहले उसने पोसीना से छिपा कर रखी हुई अपनी रिवास्वर भाँप ली। पोसीना उसे बताना नहीं चाहती थी। परंतु याकोब उस यह बताने के लिए बाध्य हो गया कि रिवास्वर के बिना वह बाहर जाने से डरता है। तब उसने नस्कोब के साथ हुई घटना का ज्यों-का-र्या सुना दिया। नस्कोब के प्रति पोसीना के मन से यह प्रसन्न हो गया घोर उसे विश्वास हो गया कि वह वास्तव में ही उस प्यार करती है। पोसीना ने अपना हाथ मुन कर घाह ! घाह ! कष्ट हुए उस भिड़का—

‘तुमने मुझे इस बारे में पहले क्यों नहीं बताया ?’

घोर फिर यह भयभीत होकर साधन लगी—

निस्संश्रेह यह बड़ी दिनचर्या बात है। सचमुच में एक जामूस ! यह तो घोरताक ह्याम्स जैसी मिसाल है तुमने कहा है ? परंतु हमारे यहाँ तो य जामूस भी बरमाथा घोर मुझे हैं ?’

इसमें क्या सन्देह, याकाव ने समझन किया।

उस रिवास्वर दत हुए उसने द्रष्टा प्रगट की कि रिवास्वर

कैसे गोपी दागती है यह देखा जाए और याकोब को इस बात पर राजी किया कि वह घोंगीठी की चिमनी में गोली मारें। इसकी लिए याकोब को फर्श पर पेट के बस सेटना पड़ा ता वह भी उसकी साथ सेट गई। जब याकोब ने गोली चलाई तो लिङ्गको से बहुत-सा धुँआ निकला। इस पर पोसीना धाँहें भरती एक तरफ हट गई। और फिर लड़ी होकर पीरे से बोली—

‘देखा तो !’

पासिध किए हुए फर्श पर छोटा-सा एक गहरा तिर्खा छद् हो गया था।

‘बरा साचो यहाँ से मौत निकली है ! पोसीना अपनी सुन्दर काली पतली मोहा को तरेरती हुई बोली—

याकोब ने उस कभी इतना निकट सुन्दर और प्यारा अनुभव नहीं किया था। उसकी धाँहें बच्चा की तरह विस्मय करती देख रही थीं। और जब उसने उसे नस्खाब के पार में बलाया तो उसके बाल-मुसमल चेहर पर गुस्से का कोई भाव नहीं था।

‘इसमें अपराध को कोई भावना नहीं,’ याकोब ने साधा और उसे यह बात बड़ी प्यारी लगी।

उस बिदाई बड़े समय याकोब की दाढ़ी को कंधी करत हुए वह बोली—

‘आह याधा ! इसका क्या मतलब हा सकता है ? कितना गभीर मामला है ? आह मेरे परमात्मा परतु यह नीच !’ फिर अपने फले-फन हाथों की मुट्टियाँ कसत हुए वह कापती हुई कोप के साथ बोली—

‘ह परमात्मा, सग्य कितन नीच है !’

परन्तु प्रधानक याज्ञीय का हाथ पकड़ कर उसने कुछ सोचा और माथे पर खौरियाँ बड़ा कर बोली—

“ठहरो ठहरो ! एक सड़की और है चाह यह स्पष्ट ।
और बड़े ध्यानन्द और लज्जा में उसने याज्ञीय का विदाई दी—
“जाओ मर प्यारे समोने !”

प्रभात का वह समय बड़ा शीतल था मोस पड़ी हुई थी ।
घग्गीचा की, धार से घाने वाली धानु नीलिमा हरित घासमान क
साथ सब की गंध से भरी हुई थी ।

‘बड़ाक उसने यह सब नाराजगी में किया होगा । ज्यो ही
पिता का देहान्त होगा मुझे उसमें पादी कर लनी होगी । उसने
बड़ी उदारता से साधा था उस शान्ति दन बाल सराक्रीम क
मज्जीस वाम सख्य प्रधानक बाद आ गए ।

‘प्रत्येक सड़की एक दूजत हुए मनुष्य क समान है जो
किसी भी तिनक का पकड़ सता है । वही तिनका घन कर उस
पर तुम अधिकार करा ।

म्हिर टण्डे गुन वाम संपिटमण्ट क बार में विचार परसानी
करन वाले थे । वह तिनका नहीं है । नि सन्देह यह नाराज था और
घवदय ही कोई प्रियता पैदा करेगा । परन्तु सम्भव तो यह है
कि वह सड़ाई पर भज दिया जाएगा । नस्काव क बार में भी
याज्ञीय प्रतीमानाव का भय कम हा गया । यद्यपि ऐसी ही भड़िया
में शिकारी उसकी पाठ में रहता था और उनक सामन था गड़ा
हाता था । उसने प्रपमा जेव क रिबास्यर को जार से पकड़ा और
साक्ष्यानी से चारा तरफ का घाहटा का मुनन लगा ।

परन्तु एक-दा सपनाह ही मुजर हागे कि याज्ञीय प्रतीमानाव
क सामन शिकारी का भय फिर से एक कजुए भुए क समान उठ
गड़ा हुआ । रबिनार क दिन जब वह जयल में बरापानाव से

उसने देखा कि धिक्कारी नस्काब मछड़ियों के बीच से कंधे पर पैसा डाल घोर कमर की पेटो में ठरह-ठरह के काटे लस्काए पसा घा रहा है ।

‘घापक साथ की मुसाकान मुखकर हो । समीप घात हुए उसन कहा फिर उसन सिपाहिया के कौन म पहनी टोपी का दाईं भौंहों पर झुकाकर कोन स उठान के बघाय टोहरी की ठरह बीच स ऊपर उठा लिया ।

उसक इस अनोख अभिवादन का उत्तर दिए बिना याकाब न दाँत भीष घोर फिर जब म पड़ी रिवास्वर का पकड़न लगा । नस्काब चुप था वह अपनी टोपी के अस्तर म याकाब स नजर बघात हुए उज्जतिमा मार रहा था ।

अच्छा अब क्या बात है ? अतमानाब म पूछा । नस्काब ने अपनी कुल जैसी पालिं ऊपर उठाइ घोर अपनी गुरदर रूप बासा पर हाथ फेरते हुए स्पष्ट स्वर म बाला—

‘घापकी प्रेमिका अर्थात् पैतामिया आन्धिरबना न पाली स्वादुकाप्यस्वय की लड़की म मित्रता कर सी है । घोर उस समन्ध दें कि वह उसका साथ छाड़ दे ।

क्या ?”

यह बात गती ही है ।

घोर गहर के गिरजा की पटियों को मुनठ हुए गिहारी फिर बोला—

यह मेरी हार्दिक सलाह है । मैं घापका भला चाहता हूँ । घोर मुझे कुछ खर्च दो । इतना कह वह गिहारी पासमान

परंतु प्रधानक याकोव का हाथ पकड़ कर उसने कुछ सोचा और माथे पर थोड़ीसी धड़ा कर बोली—

'ठहरो ठहरो ! एक लड़की और है माहू यह स्पष्ट !'
 और बड़े धानत्व और सजा स उसन याकोव का विदाई थी—
 'आमा मर प्यार समोन !'

प्रभात का वह समय बड़ा शीतल था घोस पड़ी हुई थी । बगीचों की, घास से घाने वाली घायु नीलिमा हरित घासमान क साथ सब की गंध स भरी हुई थी ।

बेचक उसन यह सब नाराजगी में किया होगा । उमों ही पिता का बेहान्त होगा मुझे उसस घादी कर लनी होगी ।' उसने यकी उदारता से सोचा तो उस घास्ति बन वाल सराफिम के मसौल वान घब्द प्रधानक याव घा गए ।

'प्रत्यक लड़की एक डूबत हुए मनुष्य के समान है जो किसी भी तिनक का पकड़ लेता है । वही तिनका बन कर उस पर तुम अधिकार करा ।

स्थिर ठण्डे घून वाल संपितनष्ट क बार म विचार परधानी करन वासे थ । वह तिनका नहीं है । नि सन्नेह वह नाराज घा और प्रवश्य हा कोई अप्रियता पना करेगा । परंतु सम्भव ता यह है कि वह सझाई पर नज विषा जाएगा । नस्कोव क बार म नी याकोव घर्तमानाव का भय कम हा गया । यद्यपि एसी ही परिधियों म गिफारी उमनी पात म रहना घा और उसक सामन घा लड़ा होगा घा । उसने अपना जब क रिवास्वर की जार स पकड़ा और सावधानी स पारा तरक की घाहूटी का मुतन लगा ।

परंतु एक-थी सप्ताह ही गुजरे हाग कि याकाव घर्तमानाव के सामन गिफारी का भय फिर स एक कहुण घुए क ममान उठ लड़ा हुआ । रविवार क दिन जब वह जमत म बराधानाव स

खरीदे देवदार के पेड़ों के टुकड़ों का निरीक्षण कर रहा था तब उसने देखा कि शिकारी नस्काव मछड़ियाँ के बीच से कन्चे पर पैसा डाल, और कमर की पटी में तरह-तरह के कांट लटकाए जाता था रहा है ।

‘आपके साथ की मुनाकाम सुलभ हो । समीप घात हुए उसने कहा फिर उसने सिपाहियों के फ़ैशन में पहनी टारी को बाईं भीतों पर झुकाकर कोन से उठान के बजाय टाट्टरी की तरह बीच से ऊपर उठा लिया ।

उसके इस अनोखे अभिवादन का उत्तर दिए बिना याकोब ने वाँट भींच और फिर जब में पड़ी रिवास्वर का पकड़ने लगा । नस्कोब चुप था वह अपनी टारी के अस्तर में याकोब से नज़र बचाव हुए उन्नीसियाँ मार रहा था ।

अच्छा अब क्या बात है ? अर्थात्मानाब ने पूछा । नस्काव ने अपनी कुल जैसी अर्धों ऊपर उठाई और अपने सुरवर सन बासों पर हाथ फेरते हुए स्पष्ट स्वर में बाला—

आपकी प्रमिषा अर्थात् पनामियाँ आन्त्रियधना न पादरी स्माओप्यन्सव की लड़की से मित्रता करनी है । आप उस समन्त्र हैं कि वह उसका साथ छोड़ दे ।’

क्या ?’

यह बात ऐसी ही है ।’

घोर शहर के गिरजा की पंढिया का मुनत हुए शिकारी फिर बाला—

“यह मेरी हार्दिक सलाह है । मैं आपका भना चाहता हूँ । घोर मुझे कुछ रुबस दो । इतना कह वह शिकारी पासमान

की तरफ देखते हुए कुछ गिनते-सा लगा । फिर साफ कर बोसा—

मुझे पैंतीस स्वस था ।’

इस कुत्ते को घाली मार दनी चाहिए । याकोब ने नोटों को गिनते हुए साधा ।

चिकारी ने नोट हाथ में धाम लिए और धपनी टेढ़ी टाँगों पर कंटा को खनसनाता हुआ टोंगो का पहिने बगैर भाड़ियों में चला गया । याकोब ने अनुभव किया कि यह घावमी उस घब घधिक घसल्ल तथा बुरा लग रहा है ।

नस्कोव ! याकोब ने धीम से पुकारा । और जब वह भाड़ियों में घाया छिप गया था तो याकोब ने एक प्रस्ताव रखा—

‘तू इस काम को छोड़ क्यों नहीं देता ।’

क्यों छोड़ दूँ ? नस्कोव ने घाग को बेहरा करत हुए पूछा । घर्तमानाब ने चिकारी की खाली घाँसा में एक भय और ईर्ष्या की नमक दली ।

यह उतरनाक काम है । याकाव ने कहा ।

हमें घपने काम का तरीका घाना चाहिए । नस्कोव ने जघाव में कहा और उसकी घाँवा की वह भयक नष्ट हा गई । उतरनाक उसक सिए है जा काम करना नहीं जानता ।’

घमघा, मुम्हारी इब्दा ।’

‘तू घपनी भनाई क ही बिरुड सलाह द रहा है ।’

घत्रुता में क्या भनाई हा सकनी है’ याकोब धीम में बाना और फिर उसने साधा कि वह इस आमुख से घामलाँ घासा ।

‘यह क्या सोचता होगा इस वक्कूफ से कहना ही फिजूस था ।

नाम्कोब ने उसे गिरा दत्ते हुए कहा—

‘इसके बिना तो जीवन व्यर्थ है । सब की अपनी अपनी मनुताएँ और आवश्यकताएँ होती हैं । अच्छा नमस्कार ।

और वह याकाब की ओर पीठ कर फिर चीड़ की सपन झड़ियों में छिप गया । याकोब दर तक नुक्रीपी भाड़ियों की घासाओं की सरसराहट तथा उसक पाँव के नीचे फूँसलन हुए पत्तों की आहट सुनता रहा । उसके बाद वह साफ मैदान की ओर भा गया जहाँ घोड़े उसकी प्रतीक्षा में बैठे थे । इसके बाद वह बड़ी तेजी से शहर में पालाना के घर पहुँचा ।

‘सा सुभार कहीं का ! लगभग प्रसन्नता और आश्चर्य में पासोना ने कहा । ‘मुझे पहल ही पता था कि तुम मरी तरफ भा रहे हो बताओ सा ! तुम्हें कम पता लगा कि वह मर यहाँ जाती है ? जरा बताओ तो सही !

तू एम लागों से परिचय हो क्या रखती है ? याकाब ने गुस्से में झिड़कते हुए कहा । इस पर उसने भी अपने पीने गुनूबन्द की गुस्से में अटकते हुए कहा—

‘पहली बात तो यह है कि इसकी जिम्मेदारी तुम पर है और दूसरी यह कि क्या मैं कुन-बिस्मियाँ पालूँ घबरा माबरिन का रम् । मैं यही दिन भर जसमान की तरह झकली रहती हूँ, और बाहर जान के लिए कोई साधो नहीं । वह बड़ा मनोरञ्जक है । मुझे उपन्यास रिकारण इत्यादि सी है राजनीति पर बहस करती है और बहुत-सी बातें बताती है । मैं उनसे साय पापावा के स्नून में भी पड़ी हूँ । उसके बाद हम शाना में सड़ाई हो गई थी ।

उसके कपों में अपनी उद्दमियाँ फेंकाते हुए वह बड़ी निराशा और प्रतिवाद से भागे वासी—

“जरा साधो तो क्या गुप्त प्रेमिका के रूप में रहना आसान है ? स्लाव्कापेक्सेवा कहती है कि प्रेमिका का जीवन रबड़ के गमागा’ की तरह है, जब कीचड़ हो वा उन्हें पहन लिया नहीं तो फेंक दिया । वह भी तो तुम्हारे डाक्टर से प्रेम करता है पर न इस छिपाते नहीं । तुम मुझे ऐस छिपाए हुए हा जस कि मैं कोई गुप्त फोड़ा हूँ । तुम्हें मेरे साथ सज्जा घाता है जैसे कि मैं लूसी-लगाड़ी या कुयड़ी हूँ । मैं कुस्प या बिकृत तो बिलकुल नहीं ।

“जरा ठहर तो याकोव न कहा ‘घावी कर लूंगा । गम्भीरता से कहता हूँ घावी कर लूंगा यद्यपि तू हूँ निरी सुधरिया ।

‘यह सवास दूसरा है कि हम में स कोन सुधर है !’ वह बच्चा की तरह तिलचिसाठी हुई भाग वाली— सुधर वा गुनाहगार कोन हममें स सुधर है कोन धरामी है । घोह ! मैं बहुत गड़बड़ में पड़ गई । मेरे प्यार ससान मेरे प्यार तुम स्वार्थी नहा कोई और हाता ता वह खुप रहता । क्या वास्तव में वह जासूस सरे लिए फायदमन्द है ।

सदा की तरह याकोव उसको बातों से प्रसन्न और हल्का पन-सा अनुभव करता हुआ बाहर निकला । सात-आठ दिन के बाद की ही बात है कि एक दिन प्रात कास पचक के बाण और टेढ़ी नाच याम नाटे कद के टाइम-कीपर धसागिन न उस सुधना दी कि आज गुबड़ ही जब बहुत स मजदूर काटों से मछालियाँ

१ घनात—रक्त के पत्र हुए जूत जा घरसाठ और घरक के समय धमड़ के जूतों पर पहन जात हैं ।

पकड़ रहे थे, जुलाहा मोदिनोव डिकारी नस्कोव का डूबने से बचाने में खुद भी मुश्किल से बच पाया और वह जब घस्पताल में पड़ा है। जैसे ही याकोव ने उसकी नाक से बाली रिपाट को सुना वह बरा टाँग फैलाकर धँस गया ताकि अपनी जवा में हाथों का और अधिक छिया सक।

“तुना दिया” उसने वही उदारता से कोमल खियों जैसे चेहरा मास मोदिनाव के बार में साधा। उस विश्वास ही नहीं आ रहा था कि वह व्यक्ति किसी का मार सकता है।

‘बहुत अच्छी घटना है’ उसने सोचा और सन्तोष का साँस लिया। पासिना ने भी इस घुन समाचार के लिए सहमति प्रकट की।

‘नि सन्दह यह अच्छा हुआ’ उसने गम्भीरतापूर्वक भौंह बढ़ाकर कहा ‘नयाकि यदि किसी और तरीके से उस मारा होता तो बहुत बुरा होता।’

फिर भी उसने छाक प्रकट किया—

अच्छा होता कि उस पकड़कर उससे सब बातें मन पाकर सब उस फाँसी दे दसे या पाली ही मार दठ। तुमने कभी पढ़ा है ?

‘क्रिजूस मत बक पास्का* !’ यानाव ने उस रोऊठ हुए कहा।

कुछ दिन छान्ति से मुरपाव गुजर। याकोव बरोमोराव हा आया और जब वह वहाँ से सोटा तो मिरान ने चिन्तापूर्ण भाव से माथ पर ग्योरियो बढ़ाए हुए कहा—

* पास्का—पासिना पास्का इत्यादि नाम प्राप्तिया के प्रथम के नाम हैं जो इस उपन्यास में यानाव की प्रेमिका है।

‘हमार कारनामे में फिर से मड़बड़ी शुरू हो गई है। एक्के के पास जिन के घाए हुए भाईर के अनुसार उन घबस्पाघा की ठण्ठोपा हा रही है जिनम कि यह घिकारी नस्कोब हुआ है। माडिनोव, क्रियाकोव और कोयला मोंकन यासे उस खुशमिजाबी कोतोव को भी पकड़ लिया गया है। वे सांग उस दिन घिकारी के साथ मछलियाँ पकड़ रहे थे। मोडिनोव का मुँह और कान सब फटे हुए हैं। पुलिस इसम कोई राजनैतिक रहस्य देख-सोच रही है नि सदह इन नुब-सुबे फानों म नहीं ।’

यह पियानो के पास खड़ा घपनी ऐनक को नाक पर सलुलित करता हुआ और घाँसों से टकटकी सगाए कमरे के कोने को घूर रहा था। घपनी सिकुड़ी स्वीडिश जैकेट लाभ काली-सी पतलून और घुटनों तक लम्बे बूटों म बहु मेकनिक की तरह लग रहा था। उसका जँबा घस्मिस जवड़ा और बारीक हजामत किए गाल और घँटी हुई मूछ किसी फौजी घफखर का स्मरण करा रही थी। मिरान के भावा के प्रघसन करने और कुछ कहने से उसक घान्ना म कोई कम्पन नहीं हाता था।

यह घासघिक बलित हो घाम कहने लगा— ‘बड़ा गराम जमाना घा गया है। इधर घष हम सड़ाई म भी फँसे हुए हैं। हमशा की तरह हम घाज भी लड़ रहे हैं ताकि घपनी मूयताघों की घार से जनता का घ्यान घटा सके। परन्तु हमम इतनी वलित नहीं कि घपनी मूयताघों के विरुद्ध सड़ाई छड़ सके। हनारी सब समस्याएँ दध की घान्तरिक समस्याएँ हैं। क्लिखान और मजदूरों की पार्टीगो राज्य वलित को घपन हाप म लना घाहती है। इन पार्टी की एक वलित म एक व्यवसायी का बटा दम्बा घर्मानाघ भी है—उस परिवार का बटा त्रिसन दध को घ्यावभासिक और टकनाक की दृष्टि म मुराए के समान बनान का महान क्लम्व पूरा ठिया है। मूयता पर मूयता की ना रही

हैं। अपने वग के हितों को धोखा देने वालों के लिए इस भारी अपराध का दण्ड मिलना चाहिए। यही नहीं यदि इस अपराध की वास्तविकता तक पहुँचो तो यह सरकार के साथ—अपने देश के साथ द्रोह करता है। मैं पढ़े-लिखे लोगों को ब्रैसा कि गारि-स्वेतोव भी है, ऐसा समझ भी सकता है क्योंकि इनका किसी वन विधाय से सम्बन्ध नहीं और न उनका पास कोई काम ही है। क्योंकि उनमें किसी प्रकार की प्रतिभा नहीं और पढ़न-लिखने के अलावा उनमें कोई कार्य करम की शक्ति भी नहीं। वस वे पढ़ते हैं और बकवास करते हैं। मेरा तो विश्वास है कि हम में साधारणतः कान्तकारी गतिविधियाँ न वही लोग भाग लेते हैं जिनमें किसी और प्रकार की योग्यता और प्रतिभा नहीं है।

याकोव का ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका भाई उसे बोल रहा है जैसे कि वह कमरा धातारों से तरा हुआ है। उसने अपनी धाँसों को इतना अधिक सिकोशा कि वे बिस्तूल बंद हो गईं। याकोव ने उसके आग्रह को सुनना बन्द कर दिया और वह अपने ही विचारों में डूब गया कि मस्काव की मृत्यु का क्या परिणाम होगा और उसका पक्षर कहीं मुझ पर भी न हो।

इतने में ही मिरोन की गर्भिणी पत्नी जो होस-सो हो रही थी, उसकी ओर मड़ी हुई धाँसों से दगती हुई बारी—
 बला, कपड़े बदलो !

मिरोन ने पर्याप्त प्रसन्नता से अपनी एनरु को नाक पर ठीक किया और बाहर चला गया।

सगनम एक महीने बाद सब बंदी छाड़ दिए गए। मिरोन ने बड़ी कठार धाँसान में किसी प्रकार का बाठ न मुनते हुए याकोव से कहा—

‘इन सब को बरगास्त कर दो।’

याकोब बहुत दिनों पूर्व ही भाई के कठोर हुकमों के सामने झुकने का घांसी हा चुका था। यह एक तरह से धमका भी था क्योंकि मिसल के मामलों के सम्पूर्ण उत्तरदायित्वां से वह मुक्त हो जाता था। परन्तु, इस बार वह यामा—

‘कोयसा भौंकन वाले को तो रख ही लेना चाहिए।’

‘क्या ?’

‘वह धानन्वी स्वभाव का है और हमारे यहाँ एक सन्धे समय से काम कर रहा है। वह लोगों को मुक्त रखता है।’

धमका खलो उसे रख भा।

और धपन धाओं को पघाता हुआ मिगेन बोला—

‘हाँ माँक भी कभी-कभी उपयोगी होते हैं।’

कुछ समय तक याकोब को ऐसा दिखलाई दिया कि सब ठोक-ठोक चल रहा है। सड़ाई के कारण सब सांग धक धुके थे। वे सब सोग सान्ध विचारनील और धधिक बढ हुए से थे। परन्तु धव याकाब में भी धप्रियताओं का धकुर फट चुका था और वह धनुभव करता था कि कम-से-कम उसके लिए मुसीबतों का धन्त नहीं हुआ है। वह धदृश्य कठिनाइयां की प्रतीधा कर रहा था। और यह प्रतीधा भी उस धधिक न करनी पड़ी। निस्तेरन्का सन्धे ऊध की एक महिना के साथ हाप में हाप धान सहूर में दिखसाई दिया। यह महिना पापोवा के सभान ही दिखसाई देती थी। सड़क पर याकाब के साथ मुसाकाठ होत ही उसने दूर से कनगियों से देगा और समीप धाकर धभिवादन के बाद पूछा—

क्या धाप एक घण्ट के बाद मर पास था सक्त है ? मैं धपन स्वमुर के महौ हूँ ! धापद धापको पता हो कि मेरी पत्नी मर रही है ! मैं धाप से प्रार्थना करूंगा कि सामन के

कमरे की पंखी न बजाएँ उमन बीमार को बेचैनी होती है ।
भाप पोछ क डार स घा जाएँ । नमस्कार ।

यह एक घंटा बहुत नारी और सच्चा प्रगात हुआ । और
पकित याकोब घर्तमानोत्र कमरे में कुर्सी पर बैठ गया । उस
कमर में किताबों से भरी घममारियाँ लगी हुई या निस्तरन्का
न उसे धाम न जन कि वह किता और घाहट का सुन रहा
हो कहा—

क्या ? हमार मिय का उन्हाने खान कर दिया है ।
नि सन्दह हुआ एसा हो । परन्तु इस माखिन करना कठिन है ।
क्याकि बहुत सफाई न बह काम किया गया—इसकी
तारीफ करनी पड़ेगा । अब बात यह है कि तुम्हारी प्रमिका—
पोलीना नाझाराबा का स्मारकापस्मबा नामक सड़की में परिषय
है, जिस कुछ दिन हुए बरागोरोद में पकड़ा गया है । क्या वे
परिषित हैं या नहा ?

“मुझे नहीं पता याकाब बाना । परन्तु वह एकदम
पनीने से तर-बतर हा गया था । जन्दाभ घरन हाथ को नाक
तक माया और घरन नामुना को दस्ता हुआ गाठ नाब से
बोला—

‘भाप जानत हैं ।’

‘ठीक है मुझे बिश्बास हाठा है कि वे दानों घापस में
परिषित हैं ।

मरा मतलब यही था ।

यह पाहता क्या है ? याकोब न मोचा । वह उमक
मह सात-भान घग्वा माटी नाक क पपट चहरे और खुपी

खुपी घागों को दस्तकर बिल्लुस जब मया था । उसक घघर
से घघर की नू घा रही थी ।

‘ मैं घ्रापस एक अक्षर के रूप में बात नहीं कर रहा । परन्तु एक परिचित के रूप में ही जो घ्रापकी बनाई चाहता है और जिमके लिए घ्रापके व्यवसायिक हित पराए नहीं । याकाव न इस भागी घ्रावान को भी सुना भर प्यारे निधानेबाज ! तुम जानते हो घ्रासस में बात क्या है ? जम्शर्म हँसा, और थोड़ा घुप रह लेने के बाद उस स्पष्ट करता हुआ बोला—

मैं निधानेबाज इसलिये कहता हूँ । क्योंकि मुझे पता है कि एक बार तुमने धम्मिक्षेपक यत्र का असफलतापूर्वक प्रयोग किया था । भय बात यह समझ लो कि स्तादकोपेस्सबा नामक लड़की तुम्हारी नजारावा—तुम्हारा प्रमिका की परिचित है । धन तुम्हीं जरा साधा—इस विकारी नस्काव की हुरकता के बारे में तुम्हारा और भर मलाबा धन्य ऋणी का कुछ पता नहीं था । मैं इस बारे में परिचितों की लड़ी को धनम रखता हूँ । नस्काव महा जकर था परन्तु यह बेवकूफ नहीं था और । इतना कह कर निस्तरन्को ने एक गहरा साँस सिया और फल पर कुर्सी के नीचे निहारा—

‘ कोई चीज धमर नहीं । एक तुम्हीं सेप हो जो इस रहस्य को समझ सकते हो । याकाव अर्धमानाय का प्रतीत हुआ कि इस पुनिस अक्षर के मुँह से दाढ़ नहीं परन्तु फाँसी के फंदे निकल रहे हैं जो अदृश्य रूप से उस धर रहे हैं । उनसे उसका मला पुटता जा रहा है । उसकी छाती जकड़ती जा रही है । उसके दिम की पड़कन एकदम रुक रही है । और उसका सिर एसे घूमन लगा था जब कि सदिर्वा की कन्यावात से सब चीजें हिलन लगी हों परन्तु निस्तरन्को धीरे-धीरे टकता से फड़ता जा रहा था—

मैं ऐसा सापता हूँ और यह भर विष्वास भी है कि

बात कह दन की प्रसावधानी घाप स ही हुई । घापको याव हागा क्यों ।”

“नहां, ऐसा नहीं याकाव घीम स्वर म सावधानी से बोना ताकि कहीं उसकी आवाज फिर भाका न द ।

ऐसा ही है ?” पुनिम धक्कर न घपनी मूँछो को साम कास उङ्गनियों स मरोडत हुए कहा ।

“नहीं,” याकोव म सिर हिलान हुए दाहरया ।

‘बहुत धजीब बात है । खर फिर भी हम इन मुसन्ध सकत हैं । देखो, नस्काब की बगह दूमर घायमी का साना बहुत जरूरी है जो तुम्हारे लिए भी बडा सामनायक हा । तुम्हारे पास मिनायव नामक एक घादमी घाएगा तुम उस काम पर सगा सें । ठीक है ?

‘ठीक है ।” याकाव सहमत हुआ ।

“बस, यही बात घी । हाँ म तुमन प्रपना कऊंगा कि तुम बहुत सावधान रहाय । घपनी इन घोरता स एक गळ भी नहीं । समन्त गए ?

यह एम कह रहा है जेम किमी छाटे-स बबूफ बच्च का । याकाव न सोचा । इनक बाद पुनिम का धक्कर घान बामी पतन्ड म पधिया का उद्यान घार सडाद का बिक करत नगा । उसन यह भी बताया कि अब उसका पत्नी की सबा उसको बहिन कर रही है ।

‘परनु हमें बुर-स-बुर समय स मुछाबसे की तयारी भी करनी चाहिए,’ निम्तरन्को ने घपनी मूँछा क छारां को माट-माट कानों की तरफ म जात हुए कहा ता हाठा क ऊपर उठ जान म उमरु पीस-पीस दांत बमक उठे ।

मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए ।” याकोव ने सोचा ।
 यह मुझे कहीं फँसा कर मारेगा । अब चलना ही चाहिए ।

तुम सबको शतान उठा ले । अब वह धाका नदी के
 किनारे जा रहा था तो उसने सोचा । ‘मुझे तुम्हारी क्या जरूरत
 है ? क्या-क्या जरूरत हैं और किसलिए ?’

हस्की पतझड़ के प्रारम्भ की वर्षा असल गति से धरती
 पर छीटे मार रही थी । नदी का पीला पानी बूँदों के बम्बों से
 घिरा हुआ था और हवा की गला बोटन धासी उष्णता से
 याकोव अर्तामानोव की निराशा और भी अधिक उग्र हो गई ।
 ‘क्या इन मूर्खतापूर्ण अभावश्यक भयों के बिना अब सीधा-सादा
 शान्तिपूर्ण जीवन नहीं हो सकता ?’

परंतु, तूफान और भीषण म गुजरती हुई मानगाड़ी की
 तरह महीन असाधारण आँकड़ा और भया से भर कर मन्द
 गति से गुजरन लगे ।

सड़ाई से मरोड़ोव परिवार का जखार बापिस था मया
 था । उसकी छाती पर सेंट जार्ज का तमगा लगा था । उसके
 नाम उड़ चुके थे धाम से झुलसी उसकी छोपड़ी सास-सास
 जर्मन से ठकी हुई थी । उसका एक कान कट चुका था और
 उसकी दाईं भौंहा के नीचे एक मुन्हासी निघान था और उसमें
 एक निष्क्रिय प्राँख हिमती हुई दीखती थी । दूसरी प्राँख से वह
 कठारता और साबधानी से दबता । जखार म कोयला भ्रंजन
 वाले वास्का कोठाब से मूब वास्ती कर सी । यह कोयला
 भ्रंजन वाला सराजिम का पला था । वह मए-नए गीठ और
 टप्प गड़ता रहता था । उसने एक नया गीठ यह छड़ा—

पाँबी हा या पानी हो
 या पालों की हा बोछार ।

खाई में हमका है रहना
 चाहे बरस मूसलाघार ।
 सकिन हैं हम मूरख कितने
 जा बन आत है रमकट ।
 फ्रान्चिजनों की मदद करन
 यागोप में जा करन छूट ।

याकाव ने मराजाब से पूछा—

“क्यों ज़ुबार, हम सागा का मड़ना ठीक नहीं है क्या ?”

“ठीक कैसे लड़ सकेंगे जब लड़ने का सामग्री नहीं । जखार ने उत्तर दिया । उसका प्रायाज ऊँची घोर प्रमथतापुण थी घोर उसका दृष्टों में भी वही निमग्न घृष्टता थी जो कामला भ्रुकन वाले के गीतों में रहती थी ।

“याकाव पत्राविष । हमारे यहाँ के दखानान करन बाल ठीक नहीं ।” उसने मालिक के चहर की धार निहारते हुए कहा । धात्र बदमाग भाकबात्र सागों के हाथ में दग का बाग डार है । व ही मालिक बन बटे है । जिधर दखा उधर यही बात है ।”

जखार घोर फोयता म्येकन बाला बास्का मजदूरा के बीच एम लड़े में जैसे कि पतभड़ की रात में संभ्य हा । इसी समय जब गुगमिबाज तस्याना का पति बहुत विधिन हास्यास्पद पतसून जा जखार के फोबी काट के रङ्ग की थी—पहन सामन धाया था बास्का ने उस दखकर तुरन्त टप्पा मड़कर गाया—

यह पतसून मनावी दया
 कितना है इसमें प्रमथर ।
 किशा का यदि बड़ता है सिर
 था यहाँ दगा बड़न पूतड़ ।

हामल म देखत हूँ । पाकोव की बहिन तस्याना दिन भर बस बारा क पत्तों को पनटती रहती और वह ऐसी बरी बिसलार्ई देती थी कि सदा उसके कान सास-नास बिखाई रहत । मिरोन पक्षी की तरह कमी जिस म कमी मास्का और कमी पीत संवय की उबाने करता और लौटकर थोड़ी ऐड़ी वास भागी अमरिऊन पुर्ता म बहल-कदमी करता हुआ बड़े ईर्ष्यापूर्ण प्रसन्नता स उस पिपहुड़ किसान रास्पातिन* का निक करता जो जोक की तरह जार स बिपका हुआ था ।

‘ मैं नहीं मानता कि कोई ऐसा जिन्यादिम किसान भी है, साफे पर अपनी पुत्रबधू क साथ बटी अधी धोस्या ने बड़े भाइय क साथ कहा, बही उसका दो वर्ष का पोता प्ततोन चित्ता रहा था । यह जानबूझकर मुझे पाठ क लिए दिया गया है ।”

‘यह बहुत ही बड़िया है । तस्याना क प्रसन्नचित्त पति ने कहा— यह ता बहुत बड़िया है । लो, गाँव भी बदला सने लग । घहा ।

उसने बड़ी खुशी से अपने छोटे-छोटे माटे हाथों का मसा । उन पर सास-नास घान ऊन की तरह उगे हुए थे । इस सम्पूर्ण परिवार म बही एकसा एसा था जा किसी घान बान त्योहार की प्रतीक्षा बड़ी प्रसन्नता और बिश्वास क साथ कर रहा था ।

‘परमात्मा ! बड़े दु रा स तस्याना न बिदते हुए कहा । ‘तुम्हें किस बात की खुशी हो रहा है, समझ म नहीं आता ।

बड़े भाइय स मुँह खालकर भीत्या बामा—

* रास्पातिन—एक किसान पादरी जिसन जार और जारिना पर अपना प्रभाव बढ़ा लिया था और उनक कारण कसी राज मोति पर बड़ा रूपित प्रभाव पड़ा । अन्त म वह मार दिया गया ।

'क्या ? तुम्हारी समझ में महा घाता ? ता समझ सा !
 घब तक ता दहाती किसान सब कुछ सहन करत रह हैं । परन्तु
 घब व बदना स रह हैं । इन किसानों क रूप में दहास न
 एक बिनागकारा विष तयार किया ।

"जरा धमा कोजिए ! मिरान न मुँह बनात हुए कहा—
 'घनी कुछ दिनों पहन ना तुम कुछ धौर हा तरह का बातें किया
 करत य ।'

परन्तु मात्या बड़े आश्चर्य क साथ घपनी बात को तीखी
 हन्की आवाज म हाँकत हुए कहता गया—

'यह ता एक सकत मान है । य निर सीध-साध किसान
 नहीं । आरसाही का घपना ३०० वा बर्षे गोट का मनाए ता न
 बप ही बात है कि घब यह ।

'फिरम ! मिरान न बडा तवा स कहा । डाक्टर
 याकोव्चक सदा की भीति खिमखिमा रहा था । याकाब घर्ता-
 मानाब न साधा—'यदि यह बात कहो पुलिस क घफ़्फर निस्त
 रन्का तक पहुँच गई ता ?

तुम साथ एसा बातें क्या करत हा उसन पूछा—
 इनम रखा ही क्या है ?

धीर वह साथ समझता हुआ बोला—
 "बस चुप रहा !

नाकाब न दखा था कि मिरान भी इन दिनों घसाधारण
 रूप म घपराया धौर भयनात रहता है । इसल वह धौर भी
 चिंतित हा गया । घाखिरकार इस परिवार क मार्गों म मात्या
 ही एक घनता एसा रह गया है जा पहल जंभा हा तन्दू का तरह
 प्रसप्रक्षित घूमता है सब क साथ मगोस म खिमखिमाता धौर
 सध्या समय घपनी तुनतुन करता मितार का तकर मान सगता है—

मरी पत्नी कम में है ।”
परन्तु तस्याना को भी प्रब उसके रागों में कोई धानन्द नहीं
मिलता था ।

घा ह ! कितना ऊब गई है ! वह कहती थीर यकषों
के पास बाहर चली जाती ।

मीत्या मजदूरों को दान्त करने में बड़ा कुशल था । उसन
मिरान को सताह दी कि वह घाटा दाम, मटर और घामू
इत्यादि देहानी इमाका स खरीद स । क्याकि वहाँ यह न्वाव
सामग्री सस्ती मिल सकती है । और मिल क मजदूरों को सिफ
तुमाई का खर्च मगा कर दाम-के-दाम में बच द । मजदूरों को
यह बात बहुत पसन्द आई और प्रब याकोब का भी साफ-साफ
धनुमब हान मगा कि मिल क सब मजदूर मिरान और उसकी
प्रपला इस प्रसन्नचित्त मीत्या का अधिक चाहत है । याकाब ने
यह भी दखा कि प्रब मिरान और तस्याना क पति मात्या क
बीच भगड़ा नी काफो होता है ।

तुम मूषा की तरफ झुकना चाहत हा ? मिरोम न धपन
भाबा और ईर्ष्या का न छिनात हुए तजी सपूछा । परन्तु मीत्या
न मुस्करात हुए जबाब लिया—

यह ता जनता का इच्छा है जनता का अधिकार है ।
मैं गूध्रता है तुम गुद फोन हा ? मिरान बिल्लाया ।

बस करो यह क्या चार-गुन है ? ज्यष्ठ घर्तामानाव
बिल्ला कर विक्रायत करता । परन्तु याकाब यह भी खतता था
कि पिता की पु धनी घागां में एक प्रकार की मुष्ठा रहती थी । वृद्ध
ध्याप का यह दखकर प्रसन्नता हाती थी कि उसका भतीजा और
जैबाई कैस नगड़ रह है । यह तस्याना का नस्नानापूर्ण पतली
भापात्र का मुनकर विलगिलाता और बिनाप कर जब और भी

घषिक खिलखिना उठता जब नमास्या डरत हुए कहती—

‘मुझे धाकी भय घोर दो तान्या एक प्याना घोर ।’

प्रत्येक नई घटना के साथ एक नया भय भी घाता दिखाई देता था । सब घटनाएँ एक-दूसरे से प्रसम्बद्ध घोर प्रभूतपूर्व-सी प्रतीत होती थीं । इन्हीं दिना प्रचानक घाला जा सगभग प्रघो हा चुकी थी, टण्ड के कारण दो दिन के घन्दर ससार से भस बसी । उसकी मृत्यु के कुछ दिना बाद ही मिन घोर घाहर जार न सिहासन छोड़ दिया समाचार से ब्यवसात की तरह हिल पड़ा ।

घब क्या होगा ? क्या प्रजातंत्र स्थापित हागा ? याकोब न भाई से पूछा । वह बड़ी प्रसन्नता के साथ प्रउधार न घाँख पाड़े पड़ रहा था ।

‘नि सन्दह प्रजातंत्र बनगा । मिनोन न उभर दिया । घोर उसन मज पर भुवसे हुए गुप्त प्रउधार के पत्रा पर प्रपना हाप रखा तो उसके बोके के कारण पन्न दो भागों न फट गा । याकाव का यह प्रपणकुन गिया घोर मिनोन ने उसकी घोर प्रसाधारण दृष्टि से दस्रा घोर फिर प्रपनी पतला घावात्र न मुस्करात हुए बाना—

‘नि सन्दह उस की नवीनता घोर राजनतिक स्वस्पता गुरु हायो । भाई यही प्रतीत हाता है ।’

उसन प्रपनी बाँहें फनाद जस कि वह याकाव का घामि गन करना चाहता हा । परन्तु दूमर ही धरग उनम से एक घाँह को पाठ के पाछ की घार किया घोर दूनगी का प्रपनी एनके टीके करन के लिए उठाया । फिर उसन प्रपना हाप एम फनाया कि यह रसप के मियनसे की तरह सगन मगा घोर फिर बाना

‘मै कस गान का भास्का जा रहा है ।’

मीत्या अपने हाथ को फेंकता हुआ घोर झाड़वर की तरह
खसखिलाता हुआ बोला—

‘भव सब ठीक रहूँगा। भव जनता अपने प्रवल भावों को
बारबार घबराएँ म कह सकूँगी जो बहुत दिनों से उसके दिलों में
दब हुए हैं।

मिरान न उसके साथ किसी प्रकार की बहस करना ठीक
न समझा और वह सोच विचार करता हुआ घोठों का भाटता
रहा। याकोब ने भी देखा कि भव प्रत्यक्ष बात ठीक हो रही
है और साग तुल है। मीत्या ने मिल के प्रांगन में एकत्रित
मजदूरों को घेरे पर सड़े होकर बतलाया कि पीतर्सबर्ग में क्या
हुआ है। मजदूरों ने प्रसन्नता से ‘हुर्रा’ की जिल्साहट की और
फिर उसको हाम और टाँगों से पकड़ कर नाचे में घाएँ और ऊपर
झाकाज में उस उठान लये। मीत्या एकदम गेंद की तरह गाल
हा गया और उन्होंने उसे काफी ऊँचाई तक उछासा। सामा
ने मिरान का भी उछाना जिससे उसे ऐसा दिला कि वह टुकड़े
टुकड़े हो जाएगा हवा में उसके हाथ और पाँव घसग हुए जा
रहे हैं। मात्या का पुरान मजदूरों की भीड़ में घेर लिया और
उनमें से एक बसवान् मजदूर गिरासिम बादनाथ उसके पहले की
धार देखकर बोला—

मित्री पाबसाय ! तुम बहुत यकिया घादमी हो, बहुत
यकिया, समझे ? घाभा सायिया विमित्री के लिए फिर हुर्रा !’
मजदूरों ने फिर ‘हुर्रा’ की घाबाज की और कायसा
भौंकेन वाला यास्का अपनी गजो सापकी घमका कर नाघता
हुआ विलकुल घराबी की तरह गान लगा—
‘घर, जनता साथ जो नीच
घोर जार का विहासन ऊँचा पा।

बढ़कर जब सीधों ने दस्ता—
तस्स पर कौशा हूँ बठा या ।”

“भास्या, धीर गाभा । मजदूर न उसका उत्साहित
या ।

मजदूर साग याकाव को भी हवा म उद्यालना चाहत थ
रस्तु वह वहाँ स भाग कर घर म छिप गया । क्योंकि उस
बस्वास या कि मजदूर उस एक बार ऊपर फेरु कर नीच
परत पर धामेगे नहीं धीर उस जमीन पर ही गिरन देंगे । धीर,
ज्या समय मिन क दफतर म बठे हुए उसन पिङ्की क बाहर
पामन म तिसान की घाबाज मुनी—

‘तुम विस्स का क्या न गए ? मुझे बेच दा । मैं उसे
मन्दा कुत्ता बना दूँगा ।

‘धरे मुत्तु ! क्या धव कुत्ता को पालन का समय है ?”
खयार मरोजाव न कहा ।

धीर तू उसका क्या करमा ? मुझे बच द स, यह पूरा
एक रुबस । टीक है न ?

‘इस बात का रहन दो ।’

याकाव न पिङ्की क बाहर म्झका धीर कहा—

“क्या तिसान बार ता ?

‘हाँ ’ मुत्ते ने स्वीकृति म कहा धीर घर के कान म दखता
हुया धीरे स बासा—

“बार ..ता हटा दिया गया ।

तिसान धपने ऊँच ऊँचाँ का सीपा करन क लिए मुका
हुया या । यह जमीन का धार मुक हुए हा बासा—

व हार पुठ । सा यही हुमा जैसा मान्दान कहा करता

पा—'गाड़ी का पहिया गुम हुआ !'

उसने अपने सरीर को सीधा किया और घर के जाने की ओर घीरे से यह कहता हुआ चला गया—

'मुमुन—तुलुन ।

कुछ और सप्ताह आनन्द एवं प्रसन्नता से एक सप्ताह की तरह गुजर गए । मिरोन सत्याना और डाक्टर तथा दूसरे सब लोग आपस में प्रसन्नतापूर्वक रह गए । इसी बीच शहर से कुछ अपरिचित लोग आए और सोहार मिनायब का अपने साथ ले गए । इसके बाद ही सूर्य की उष्ण धूप से चमकती हुई बसन्त श्रुतु पा गई ।

मुनो मेरे प्यारे सन्तान ! पानिना बोली । 'मरो समझ म नहीं आता कि यह सब क्या हो रहा है ? चार न हुकूमत करने से इन्कार कर दिया है । सिपाही मूले-सैंगड़ हो गए हैं और मर चुके हैं । पुलिस क महकम का भय कर दिया गया है और कुछ नागरिक साग इधर-उधर हुकूम खमात हुए घूम रहे हैं—घब केम रहा जाएगा । हर तरह के बदमाश और पैतान जा पाहेंगे यह करेंगे । किनईकिन ही मुझे पान्ति से नहीं रहने दे रहा । जिन सागा का मैंने ठुकरा दिया था । वे साग जा मरा पाछा करत रहे हैं सब नहीं है । अब मैं यहाँ प्रधिक नहीं रह सकती । यहाँ सब गड़बड़ और उपन-पुपल हो रही है । मैं एमी जगह रहना चाहती हूँ जहाँ मुझे न फाई जान न फाई पहचान ! और साथ ही अब फामिस्त हो चुकी है, स्वतंत्रता मिन चुकी है ता प्रत्येक मनुष्य जैसा चाहे पमा रह भी सकता है ।

पानिना न य सब बातें काची सम्व शब्दों में हकतापूर्वक कहा और याकाय न उसकी बातों में एक प्रकाश्य तर्क पाया । वह उस पान्त करता हुआ बोला—

'जबतक यह सब घान्त नहीं हो जाए, थोड़े दिन घोर प्रतीक्षा करा ।'

परन्तु, उस घब बिम्बाम नहीं था कि उसके चारों तरफ जो घगान्ति घोर घान्दावन उठ रहा है—मिस म हान वामा गार जो प्रतिदिन घषिकाधिक बढ़कर नवदुर हाता जा रहा है, कनी घान्त हागा भी या नहीं । जो मनुष्य डरन का घादी हा जाता है उस डर क कारण नी घनका मिस जान हैं । याकाव का अक्षार मगजाव का उम भुससा हुई खापड़ी स डर लगन मगा । अघार मत्रदुरा क बीच गार की तरह वनता घोर मत्रदुर उसक पीछ गडरिए क कुस क पीछ-पीछ भडा क समान चलन रहत । मीत्या उनक चारा तरफ पामनू कोए का तरह फुलना रहता । इन दिना अघार का रूप भा उस बड कुस क समान हा मया या तिस मनुष्य की तरह सीमा वसन क लिए सपाया गया हा । घपनी नुससा हुई खापड़ी का लियान म उम कना-कभी लग होना पड़ता था । वह घपन सिर पर लत्याना क मुकी म्नाना गार ने तीलिय का सपट लता तिम मात्या न उस तिया या तिसस उसकी यह बड़ी पमड़ी उसके थोड़े क्यों घोर भारा गरीर पर डलकती गायती । वह मोट पुलिस अफसर क सहायक एक का तरह घड़ रोब ने इपर-उपर जाता घपन घेंगूठ को नहीं फौजी पतलून की पटी पर टिकाठा घोर घपनी मुक्त उँयसियों का मछपा की पाव के समान दपर-उपर दिघाता घोर जब-तब गार स चिझाता—

'साधिया घाडर, घाडर ! उसन तीन नौबवान मत्रदुरा का भी न्याय क्रिया जिन्होंने मिस स कपड़ा पुरया था । मिन के घांगन म सब सागा का गार स मुनाव हुए उमन चारों स प्रलन दिया—

'तुम जानत हो, तुमने किसकी चारी की है ?'

घोर फिर स्वयं ही उसका उत्तर दिया—

“तुमने खुद अपनी घोर हम सब की जोरी की है ! सुमर के बच्चे, क्या यह खारी बच्ची बात है ?”

उसने अपराधियों को बेत की सजा दी । इस पर वो मज दूर बढ़ी खुशो से उन पर बत लगाने लगे । उस समय कोयला भौंकने वाला बास्का नाचता हुआ पागलों की तरह गा रहा था—

घोर उल्लूकों पर प्रहा ! दसो
पड़ती कैसी बेंतें धाज ।
घोरा की जो सूट करे है,
याय है होता उनका धाज !

सहसा गाना बन्द हो गया । बास्का अपने हाथों को हिलाता हुआ एकदम बिस्ताया—

“रक्षा करा हे भगवान अपने भक्तों की ।”

इस पर मौलिया जोर से बिल्लाया—

‘दावान !

मौलिया नीली पतलून पहने रहता था घोर पोछ की घोर भुकी हुई बमक की टापी भी सिर पर सदा रखी होती । उसके मुसाबी चेहरे पर स्वयं-विन्दु बमकस्त रहत थे घोर माँदा में मादकता घोर प्रसन्नता लिए यह इधर-उपर बढ़ता रहता था । पिछली रात को उसका पत्नी से बहुत झगड़ा हुआ । प्रारम्भ में याकाब ने कमरे की घोर से घाती हुई बगीच में ऊँची फुसफुसाहट सुनी घोर फिर लत्याना की जोर से उठती हुई पुकारें धान मगीं—

‘तुम भीड़ है ! तुम बड़ बर्दमान घारमी हो । क्या यहो तुम्हारे बिचार है ? गरीबों का भी क्या कोई विद्वास होता है ! नूँठ है । महीन भर पहल तुम्हारे कंसे बिचार ये कंसा-ईसी

बातें करते थे । बस, धब हा गया ! मैं कन ही छहूर म धपनी
 बहिन क यहाँ जा रही है घोर मर साथ बन्ध भी ।

याकोब का ये बातें सुनकर कोई धपम्भा नहीं हुआ ।
 वह बहुत दिना से दख रहा था कि साल दानों वाला भीत्या
 उनक सिनाऊ हो रहा है । परतु, याकाब को इस बार मं प्राश्य
 घोर एक प्रकार स अभिमान भी जकर हुआ कि उसन इस साल
 बासा बासे घासमी की अधिश्चसनीयता को पहल स नाप लिया
 था । धब उसकरो माँ नी जा कनी भीत्या को मुँगे का तरह प्यार
 करती पो कहती—

यह क्या बात है यह हम स सिनाऊ क्या रहता है ?
 कहीं यह यहुदी ता नहीं ! सा इन राटी घोर सिनासा ।

भीत्या जार स कहता था—

“सब चीजें बहुत प्राश्यजनक हैं । जीवन एक सुन्दर,
 बुद्धिमान श्री है । परतु, धब समय था गया है कि हम भड़िए
 घोर बकरियाँ क एक साथ रहन क बनावटी किस्त को भूस
 जाएँ । तत्याना पेयाब्ना ! धब इन बाता का भूल जाओ !

मिराम न बड़ गुस्स में कठारता स पूछा—

‘घोर कस तुम क्या कहाग ?’

‘वही जा जीवन बताएया ! बस, यही बात है, घोर कुछ
 नहा ।

उसकी पत्नी घोर मिराम उसस एस बच कर चलन सग
 जैसे कि उनके कपड़ों को वहीं कासिख न सग जाए । कुछ दिनों
 बाद भीत्या धपन सब सामान को उठाए, त्रिसम पुस्तका क तीन
 बड़-बड़ बदन स घोर बैठ का बना कपड़ा स भय एक बक्सा
 भी था, सकर छहूर चसा गया ।

याकाब का हर जमह पाग मुसगती हुई दिखन सगी ।

सोय एक प्रकार की स्पष्ट भूमता का पूर्वा छोड़ रहे थे। और
 ऐसा कोई चिह्न नहीं था जिससे पता चले कि ये गड़बड़ के
 दिन कभी समाप्त हो सकते हैं।

एक दिन वह पोसिना में घाबर वाता—

'अच्छा मैंने फसला कर लिया है कि हम यहाँ से चले
 जाएँ। पहले मास्को जाएँगे और वहाँ पहुँचकर फिर प्राग की
 सोचेंगे।'

'बहुत अच्छा। प्राक्सिकार तुमन साधा ही। पोसिना
 उस प्रासिगन में बाँधकर भूमती हुई बानी।

जुलाई की संघ्या बगोचे का गुमाबी प्रथकार से परिपूरित
 कर रही था। सिडकी के बाहर भारी बरमास के पानी के
 कारण सीनी भरती में तीव्र गन्ध उठ रही थी। घरती प्रथ सूय
 की धूप में तप रही थी। मौसम बहुत अच्छा था परन्तु था
 चिन्तापूर्ण बिचारों से भरा हुआ।

याकोब पोसिना के उपाग और सीस हाथा को धपन कंधों
 से हटाकर चिन्तातुर हो बोला—

धपनी छाती का जरा ठक सा और कपडा को ठीक-ठीक
 पहनो! हमें गभीरता से साधना है। वह विर उसक घुटना को
 छोड़कर दो तीन उच्छासों में पमग के पास पहुँची और धपना
 बागा पहिनकर गम्भीर भाव से उसक बराबर में धा बठी।

मुनती है 'याकाय न धपनी हपनी से गाला का इतना
 रगड़ा कि उसक साम रगड़ से बदन लगे। हम गम्भीरता से
 विचार करना है। ऐसा दस और ऐसा सरकार तसाग करनी है,
 जहाँ हम गान्ति से रहे सकें जहाँ साम दूमरा के कामों के बार
 में समन्त और साधन का क्रिक न करे। हमें ऐसा ही जगह
 चाहिए!'

‘नि सन्तुह पालिना न क्हा ।

‘घोर यह सब बड़ी सावधानी से करना है । मिरोन चाहता है कि रेलगाड़ियाँ घाज़कस मगाड़े सिराहिया से बरो हुई हैं । इसलिए हम गरीबों क धेप न जाना हागा ।

हौ घोर तुम धवन माप घधिक-स घधिक पैसा ले बसना ।”

‘हौ, यह बात सा ठीक है । में इस प्रकार निबल जाना चाहता हूँ कि किसी का कुछ पता न बस । में घर स बाराया रोद का नाम सकर बसूंगा । समभी ?

घोर इसम छिपान की क्या बात है ? घाध्य घोर घबिश्वास स पालिना न पूछा ।

यह उसकी भी समझ न मही घा रहा था कि एमा क्यों करना है ? यह विचार घभी उसक दिमाग न उठा पा । बस उसने धनुनब किया था कि यह विचार ठीक है ।

बात यह है मर पिता घोर मिरोन तरह-तरह क सवाम करेगे । बिनका काई जकरत भी नही । पसा तो माम्को में काफ़ी है, हम पैसा बही गूब मिस जाएमा ।

‘ता फिर जल्दी करा ! पालिना न क्हा । तुम जानत हा कि पस क बगर बही गुजारा नहा हा सकता । बही सब-कुछ मेहगा हाया । हो सकठा है कि काई हमस नूट न छीन न तब क्या हागा ।

उसक कन्धा क ऊपर स दरमाब की घार बसती हुई यह बोली—

‘सा ! जरा मरो रसाइन का भी दरता । पहन यह बटून नसी पो । घोर घब बड़ी डीठ घोर सदा सरास न धुल रहती

है। हा सकता है किसी दिन वह मुझे नींद में ही काट दे। इस गड़बड़ी के दिनों में सब सम्भव हो सकता है। कम मैंने उसे— एक घावमो के साथ कानाफुसी करत सुना था। हे परमात्मा ! मन सोचा कि यह क्या है ! और जब मैंने चुपचाप दरवाजा खोलकर देखा तो वह घुटनों के बल बेठी धिछा रही थी। बड़ा मुरा नबारा था !'

'चुप रह,' याकोव ने उसे जल्दी से टाककर उसकी डरी हुई फुसफुसाहट का बन्द किया और भागे कहा 'पहले मैं यहाँ से चमता हूँ।

'नहीं' वह अपने मुँहके का घुटना पर मारती हुई बाली— 'पहले मैं ! और तुम मुझे पैसा दो और ।'

'क्यों तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ?' याकोव ने नाराज हाथ हुए गुस्से में पूछा। उस तुरन्त ही हड़ उठार मिला—

'नहीं। मैं ईमानदारी और सरस भाव से कहती हूँ— नहीं ! क्या आजकल किसी पर विश्वास भी किया जा सकता है जबकि साग बार को धाका दे चुके हैं और सब साग सब के साथ धाका कर रहे हैं ? तुम किस पर विश्वास कर सकते हो।

उसका तर्क बड़ा प्रकाण्ड था। इससे भी अधिक बोये की परता में छिपी उसकी मझी छाती हड़ और कठोर थी। घासिर याकोव प्रथमानोव उसका सामन चुप हो गया और उसकी बात मान गया। उसने फसला किया कि पालिना अपना सामान संभाल कर कम घरागारोद चला जाए और यहाँ उसकी प्रतीक्षा करे।

अगले ही दिन याकोव ने पट के दर्द की विक्रमता की जो बिलकुल ठीक जैसा था। पिछले कई महोना से यह बहुत

कमजोर हो गया था। उसमें सुन्ती घोर भुतबूढ़ान बड़ पया था। प्राठ दिन बाद वह रेलव स्टेशन की धार एक ऊबड़-खाबड़ भाग पर जासा हुआ दखा गया। चारों धार सबक क निकल हुए पत्थरा स बन गये और कीचड़ क वेत बिलर पड़े थ। वह अपन पीछ एक भयन अस्त-व्यस्त जीवन छाड़ता जा रहा था। सामन पूर्ण क बादला क बीष स सूय एक गड्डे में स चमक रहा था।

एक महीन बाद मिरान अर्थात्मानाव मास्का स लोटकर आया। उसन तस्याना क सामन सिर मुका कर और अपनी हपनी का निहारस हुए कहा—

‘मै तुम्हें एक बहुत डु गद समाचार दन आया हू। मास्को में मर पास वह निर्लज्ज लडकी आई थी जिसक साथ याकाब रहता था। और नासी कि कुछ समयों न याकाब का पाटा और फिर रस क बिल्ल स बाहर फर दिया। हू याकाबन नाग भी कैस हा गए हू।’

‘नहा! तस्याना पिल्ला कर कुर्वो स उठन की काधिया करने लगी।

“हाँ उस समय माझे बलन का हा थी। दो दिन क बाद यह मर गया और उम विदू-हो स्टेशन के पास गाँव क एक कपिस्तान म दफना दिया।”

तस्याना न पुपथाप अपन कमाल स धाला का उक लिया। उमक ऊँचे कपे हिलन लग थ और उसकी कासा पागाक फर्न पर मीष गिरी हुई थी। मगठा था कि यह पठसी सम्प्री गरदन वाली खा द्रवित हाती जा रही है।

मिरान न अपनी एक की ठीक कर अपना उद्गनियाँ पटफार्द और एकांत म गड़े गिरथ का पटिया का मुनन समा।

यह घंटी सच्चा की प्राप्ति के लिए घुसा रही थी। यह फिर कमरे में पहुँचकर बस करती बसती—

घब राने से क्या फायदा ? तुम घोर में दोनों ही जानते हैं कि सच्ची बात यह है कि वह एक विलकुल बेकार आदमी था असम्य घोर मूल था। मुझे इन सब के लिए क्षमा करना, निःसन्देह तुम सब को है।

हू परमात्मा। तस्याना न स्वयं से साम हुई पसकों का हिलान हुए कहा। उसने अपनी जीभ से उद्गसिया को गीला करके भीता पर फिराया।

‘घोर यह साहसी सड़की मिरान न अपने हाथा को चंचा म डालत हुए कहा “एक बनावटी दोकार्स बिषया क रूप म मरे पास आई। उसकी बढिया पोसाक से साफ होता था कि उसने याकोष पर गूब हाथ साफ किया है। उसने मुझसे यह भी कहा था कि उसने घर वालों को बिट्टी लिखी है।

तस्याना न सिर हिला कर यह प्रस्वीकार किया।

‘घर नहीं भी मजी हा। मुझे ता ऐसा ही घताया था। मरा विचार है कि माँ-बाप को इस बारे म कुछ नहीं बताना चाहिए। मर्यादा हा, य यही सापत रहें कि मान्योष जीवित है। गीक है न ?

हाँ यह ठीक है तस्याना म सहमति प्रगट की।

सब ता यह है कि चाचा की समझ म अब कुछ नहीं था रहा। परन्तु जब माँ का पता लगगा ता यह प्रामुखी म हा दूब मरेगी।

सिर हिलात हुए तस्याना बसो—

लगता है हम सभी लोग अब मृत्यु क निश्चय हैं।’

'यदि यहाँ रहे तो यह भी हो सकता है। मैं बीमा-बच्चा का जल्दी ही यहाँ से दूर भेज रहा हूँ। तुम्हें भी मैं सप्ताह देता हूँ कि जखार मरोजाब से पहले किसी बात की प्रतीक्षा किए बिना तुम यहाँ से दूर चला जाओ। बात ऐसी ही है। बुझा का कुछ मत नतलाओ। मुझे धमा करा मैं पर जा रहा हूँ। पर पर पत्नी बीमार है।

उसने अपनी सम्पत्ति बाँह से बहन का हाथ पकड़ा और प्यार नसत बाला— घाबकन सफर भी बड़ा कठिन हो गया है। माग बड़ा बुरा हालत में पड़ है।

जबसे प्रतामानाव प्रद—निश्रावस्था में रहता था जम कि वह भार और एक भारी नीच में डूबता जा रहा था। बहु दिन रात अधिकतर विस्तर में ही पड़ा रहता और जब समय खिड़की के पास धाराम कुर्सी पर बैठा रहता। जब कभी उसकी पत्नी उधर आती। बहु उम पर भुक्कर उम हिलाती और गना भाबाब में बहती— यहाँ से तुम्हें कहीं और चले जाना चाहिए, इलाज करवाना चाहिए।

'पर हट यहाँ से, बहु प्रलसभाव से बहता। पाड़ी कहीं की मैं तुम्हें ढब गया हूँ। जरा पान्ठि से तो बटन दे।

घरसे बटा बहु पुपचाप भागन और बपोच में तथा पर के पास-पास सब जगह तीव्र प्योहार के दिन जसा लागे का दाग-नाराबा मुनता। परन्तु, कारगान में एकत्र स्तम्बता था। उसकी प्रभारमा का माधी जिसके भ्रम दूर हो गए थे और जो अपने ममभरी विचारों से प्रतामानाव का सचित्र चरित्र रहता था अब मर चुका था। और यह एक प्रकृत्य ही बात हुई। अब प्याय प्रतामानाव के लिए साधना भी कठिन था। और यह भी स्वयं साधना नहीं चाहता था। क्योंकि बहु समझन लगा था कि साधना बरकार है और फिर उसका समझ में भी कुछ नहीं आता

या कि ये सब लोग याकोव, सत्याना, जेवार्ड—सब कहीं चले गए हैं ?

कभी-कभी वह अपनी पत्नी से पूछ उठता—

“क्या इत्या वापिस आ गया है ?”

नहीं ।

अभी नहीं आया ?”

नहीं ।

और याकोव ?

‘और याकोव भी नहीं ।

‘ता सब अभी इधर-उधर ही घूम रहे हैं और भन्व का मिरोस्का’ ही जोक की तरह घूम रहा है ।

‘तुम अब इस बार में न सोचो ।’ मतास्या उस सप्ताह बती ।

‘भाग यहाँ से ।’

वह वहाँ से हटकर कोने में बठ जाती और अपनी निस्तेज आँखा से इस बूढ़े पुरुष की धार निहारती जिसके साथ उसने अपना सारा जीवन गुजारा था । मतास्या का सिर अब हिसन लगा था हाथ काँपने लगे थे, जब कि उसका सब जाड़ कील हाँ गए हों । वह पर्वी की एक मामूली क समान पिपल-पिपल कर चुपन हाती जा रही थी ।

ज्योय मर्तामानाच अजनवियों के घर में आ जान पर हान वाले शार शराब से जब-सब बन जाता था । वह उनकी धार पूरता । उनकी बातों का समझन की काशिश करता । उस पत्नी का राना ना मुनाई बसा—

१ मिरोस्का—प्यार या अपना म मिशन का नाम ।

“हे परमारमा ! यह तुम क्या कर रहे हो ? देखत नहीं, वह मालिक है, हम सभी इस घर के मालिक हैं ! तुम मुझे इसे बाहर न जाओ दो । इसे इसाब की जकरत है । इस घर से जाना चाहिए ! हाँ मम-न-कम हम यहाँ से बाहर ठा निकलन दो ।”

यह मुझे छिपाना चाहती है परन्तु क्या ? व्याप घर्ता मानाव ने सोचा । मूल है हमेंगा मूल हो रही । याकोब इधक जैसा ही पदा हुआ घोर वाकी भी सब ऐसे ही निकल ! बस इत्या मुक्त जैसा है वह धा जाण तो सब-मुक्त ठीक-ठाक हो जाए ।

बरसात शुरू हो गई उमने बाद यर्क भी मिग्न सगी । सर्दी पारा की हो गई और सी-सी करते नूफान घान लगे ।

इस अदृशस्थान्य भवस्था में प्योष घर्तामानाव का एक लख भूय अनुभव हुई और वह कुछ होत म घाया । उसने घान का वगीव के प्रीप्यहालीन कमरे म पाया । सामने घीप की दीवारों से पेड़ों की नाग्याएँ खरुख रही थीं । उगन साल-नाम घबीब भासमान का भी वेगा जो पृथों क बहुत नजदाक ही सटका हुआ-सा दिवाई पड़ रहा था । इतना नजदाक कि उस हाथ से भी छुआ जा सकता था ।

कुछ घान का चाहिए, घर्तामानाव न कहा । परन्तु फिदा म उठता जयाव नहीं दिया ।

बगान म नीना बग्यदार छाया हुआ था । उस प्रीप्य-गूह क सामने से पाड़ गड़े पे, जिन्होंने घपनी गर्दने एक दूसरे पर टिकाई हुई थी । उनम म एक कापा घोर दूसरा भूरा था । पास म एक घादमी सफर कमाय पहने बटा था जा रस्य क एक बड़ मुफ्त को मुतभ्य रहा था ।

‘नतास्या ! सुन रही हा ? कुछ खाने को दो ।’

इससे पहले वह जब कभी अपनी अदृष्टमयता से जागता था तो यह पहली पुकार का ही उत्तर भेकर तुरन्त उसके समीप भा जाती थी । परन्तु आज वह नहीं आई ।

‘क्या वह नहीं है ? स्पष्ट प्रतीतमानाव न सोचा । उसके विमात्र में अब विश्वास उठा— कहीं वह बीमार ता नहीं ?’

उसने अपना सिर उठाया तो भ्रष्टियों में से स्नानागार के द्वार के समीप कोई चीज चमकी । फिर उसे लगा कि वह सगीन लगी बन्दूक एक ठरी बर्तन नाम कीजो की पीठ पर रखी है । वह पड़ा के भुरभुर से साफ-साफ दिखाई नहीं दे रही थी । तभी प्रांगण में से कोई चिल्लाया

‘क्या साधियो यह क्या मजबूत है ?’ एतत् तो सुधर भी नहीं पकड़े जात । और यह मुस गीना हान का बाहर क्या छाड़ दिया गया है ? तुम तास सग स्नानागार में भी घुसना चाहत हा क्या

मफ़्त कमीज वाला घादमी न रस्ती का गुच्छा अपने पुटना से जमीन पर गिरा दिया और सिपाही की धार मुड़कर ऊँचे स्वर में बोला— एसा घाया है घाममान में ! रीतान से उठाल ।

पहले की घग्धा आजकल कमाखर बहुत हा गए है ।

परन्तु इन रीताना का मुकरर कोन करता है ?

य म्बय ही बन जात हैं । भाई ! आजकल सब-कुछ प्राचानकास की कहानी-किस्सा की तरह हो हा रहा है ।

तभी एक घादमी पीड़ा के पास घाया और उन्हे गदन से पकड़ लिया । ज्येष्ठ प्रतीतमानाय गूब जार से चिल्लाया—

‘ए ! मरो पतना का ता मुनाघो !’

“बुप हो बुद्धे,” उस जबाब मिला । घोह धनी भी तुम्हे परतो की इच्छा है ।”

बाढ़ चल गए । अर्थात्मानाथ न हयली स चहर घोर दाड़ी का छुमा । घोर फिर धपना ठण्डी उन्नसी स कानों का छूकर चारों घोर देखन समा । यह बिना घीघ की छिड़किया बाल घीघ्म-गृह में सब क पड़ क एक चित्र क समीप सेटा हुआ था । उस चित्र म सात-सात सब जगती बेरियों क मुच्छ का तरह सटक रहे थ । वह किसी कठोर चीज पर सटा था । वह सामझी की खास सगा भद्दा-सा सदिया का कोट पहिन था जिसक नीच एक गर्म जैकेट भी थी । परन्तु फिर भी उस सर्दी सग रही थी । उसकी समझ में नहीं था रहा था कि यह यहाँ क्यों रखा गया है ? हो सकता है पर में त्यौहार क लिए सफाई हो रही हो ? परन्तु, कौन-सा त्यौहार ? घोर बमीष म य घाड़े घोर स्नाना गार के पास सिपाही क्यों हैं ? घोर दरबाज क बाहर य कौन चिन्हा रहा है, साधियो ! तुम सब बबकूफ क बन्ध हो ! क्या मामला है ? क्या सोग पक गए हैं ? पकना ता धनी नहीं चाहिए ! बबकूफा क बिना ।”

बिज्ञाने बाल य सोग दूर थ परन्तु, फिर भी उस चिन्हा हट स कान बहर हुए जा रहे थ घोर सिर घूमन सगता था । उस एसा धनुभव हुआ जैसे कि उसक पाँव ही नहीं हैं । घुन्नो स पाँव हिलते हो न थे । दीवार पर सब का पड़ रगसाज बान्का सूकिन न चित्रित किया था । यह घादमी थार था । उसन बाद में गिरज म ना चारी की था घोर जम में पड़े-पड़े मर गया । एक बहुत ऊँचा घादमी जिसन रोंएदार ऊँची टोपी पहिन रखी थी घीघ्म-गृह म घाया । धपन साप वह एक भारी ठण्डी छाया घोर तारकास का तीव्र यथ भी लाया ।

कौन है ? क्या विज्ञान ?

“हाँ धीर कौन हो सकता है !”

यह कौन चिल्ला रहा है ?”

‘बखार का मरोमोप ।’

धीर, य सिपाही यहाँ क्यों है ?’

“सड़ाई है, सड़ाई ।’

पोड़ी वर घुप रह कर, धर्तमानाब न पूछा—

तो क्या दुश्मन ही यहाँ तक घा गया है ?

‘नहीं । यह तुम्हारे ही खिलाफ सड़ाई है, प्योप
इत्येषु !’

मानिक न बड़ी कठोरता से कहा—

‘बुझा बबकूफ कहीं का ! मेरे साथ मखीस करता है ।
मैं कोई तरा साथी ता हूँ नहा ।

फिर उसन धाम्त उत्तर मुना—

“यस यह धागिरी सड़ाई है । धागे धीर सड़ाई नही
चाहते, धब सब साथी हैं । धीर यहाँ तक बेबकूफी की बात है
नि सदेह में बहुत बुझा भी हो चुका है ।’

यह स्पष्ट था कि तिगोन मरौम कर रहा था । धब यह
बिना किसी परवाह क धाने मानिक क पाँव को धीर बिना
ठोपी उतार बैठ गया । धामन में कोई फटी ऊँचा धाबाब में
हुकुम ह रहा था—

वतता घाठ धब क बाव काई गलियाँ में न पाया जाए,
एक धाबमी भी नहीं ।’

“धीर मरो पत्नी कहीं गई है ? धर्तमानाब न पूछा ।

“रोटी की तलाश म ।

‘यह क्या कहा ! क्या रोटी की तलाश करन ?”

'घोर क्यों नहीं ? रोटी काई इट पत्थर ता है नहीं जा जमीन पर पड़ी मिस जाएगी !'

अज्ञान में नीला धन्धकार घोर बना होता जाता रहा था। स्नाभागार के पास पड़े कुँबो न जोर से जम्हाई ली। वह धँधेरे में दिखाई नहीं पड़ रहा था। बस उसकी सगीम ही पानी में मछली की तरह घूम रही थी। वह तिस्रान से कई तरह के सवास पूछता चाहता था परन्तु अर्त्तमानोच धुप रहा। तिस्रान से कोई बात हासिल भी ता नहीं होती थी। फिर भी उसके दिमाग से सवास बाहर का निकल कर भापस में उलझ रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनमें से कौन आवश्यक और सबसे बड़ कर है। उसकी इच्छा कुछ खान को थी।

तिस्रान धासा—

'मैं बेबूक जकर हूँ परन्तु सचाई को सबसे पहले समझ गया था। दरतो, जिन्दगी न क्या पमटा आया है। मैं पहल ही कहता था—तुम सबको कठोर कारनाम मिममा। घोर एसा ही हो गया। तुम्हें बुराद की तरह रगड़ा जा रहा है जम कि रद से सचड़ी छोली जाती है। प्योत्र इत्यथ। क्या ठोक नहा। हाँ हाँ पताम सजी से रदा जनाता रहा—घोर तुमने उम मदद की। घोर यह सब किस लिए ? तुम पाप करत गए—पाप करत गए घोर उन पापा का काई हिसाब नी है ! मैं यह सब देखता था—धधम्भा करता था ! इम सब का कर धन्त होमा ? धानिरकार, तुम्हारा एसा धन्त भा गया घोर धब तुममें उसी तरह बदसा मिया जा रहा है गाड़ी का पहिया गुम हुआ ।'

क्या बहवास कर रहा है ? अर्त्तमानोच न धाधा। परन्तु फिर भी उसमें पूछा—

“मैं यहाँ क्यों हूँ ?”

“तुम्हें घर से निकाल दिया गया है।

‘और मिरोन ?

“सब को निकाल दिया गया है।

‘और याकोब ?

वह तो पहले से ही नहीं है।’

‘और इत्या कहाँ है ?’

सुना है, वह इन लोग के साथ है। होना भी चाहिए।
तभी तुम जिन्या हो क्योंकि वह इनके साथ है। नहीं तो ।

प्रसन्न हो बकवास कर रहा है’ उसने फैसला किया।
ज्योत प्रतापमानाव यह सोच कर चुप हो गया— ‘बुढ़ा प्रकृत हो
बैठा है। यह उम्मीद भी थी।

छोटे-छोटे, क्षीण प्रकाश के तार घासमान में बिलर हुए प
पहले कभी ऐसे तार नहीं दिखाई दिए थे। और इन तारों की
इतनी अधिक संख्या तो कभी भी नहीं थी।

तिर्योन में प्रपनी टोपी पकड़ी और हाथों में उस इपर
उपर घुमाता हुआ फिर बोला—

‘तुम्हारी सब प्रकृतपूर्ण प्रकृतपूर्ण अब तुम पर ही बन्द
रही हैं। भित्तमसे और परीव प्रपना जीवन सरसता से बिताए
हैं।’

इसके बाद उसने दूसरी घाबाज में पूछा—

“याद है उस छोटे से बच्चे की—उस बसके के सड़के की ?

‘क्यों ? उससे क्या ? उस बात को क्यों उठाते हो ?’

“तुमने उस ऐसे ही मार दिया था उस बच्चे के पिता

रा । बताओ हा उस क्यों मारा था ?'

धन प्रतमानाव की समझ में साफ-साफ ध्यान लगा ।
न ने ही उस पर धाराप समा कर गिरफ्तार कराया है ।
वह बीमार घोर बिबस है । परन्तु वह इस बात से
नहीं । उस इस प्रमानुषिक मूर्खता पर हा धक्का हो रहा
। धपनो कोहनियों को सिर क नीचे समा उसने सिर उठाया
र धीमे-धीमे झिड़कता हुआ मसौस में कहन लगा—

'तू यह सब झूठ एक रहा है । फिर सब धपराधा की
रिधि भी तो होती है । बस तू मौका पहन ही खा चुका ।
र दण तरी धक्का भी ठिकाने नहीं । तू भूस चुका है कि
मन क्या देखा था उस दिन तुमन मुभम यही कहा था ।"

'हाँ-हाँ मैंने क्या कहा था बताओ ?' बुढ़े में उम टाफत
ए पूछा । 'नि सन्देह मैंने नहीं देखा था । परन्तु, मैं सब-कुछ
उमझ गया था । मैंने कहा जकर था घोर बात को छिपा गया
कि तुमन क्या किया होगा ? मैंने उस समय झूठ कहा था घोर
तुम इस झूठ को सुमकर लगे थे । मैं दखता रहा घोर इन्तजार
करता रहा घोर तुम सब वस-ऊ-बसे ही रहे । धनकसई इत्यध
ने ही धपन मुसर को सिखाया था कि वह नास्की की सराय का
जमा बे । तरा बाप सब जान गया था फिर भी उसने उस
धराबी को इसना पिटबाया कि यह मर गया । निश्चिता इत्यध
भी इन सब घाता का जानता था । वह समझदार था घोर पुप
रहता था । परन्तु उसने मुभ्रसे गुम्स में तर बार में सब कह
दिया । मैंने उस बतसाया कि तुम पादरी हो व सब बातें
भुना दनी चाहिए । मैं इन्हें याद रनरूया । लेकिन फिर तुमन
धपन कारनामों से उस डरा दिया । उस फाँसी क फरे पर नेत्रा
घोर फिर उस सापुगूह में हा भन्न दिया— जाया हमारे लिए प्रार्थना
करा । घोर वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करत हुए भी डरता था—

यही कारण है नहीं कर सका ! और यही कारण है कि उसने परमात्मा में विश्वास छो दिया ।'

एसा प्रतीत हान लमा कि जिसोत प्रलय तक ऐसी बातें हो किए जाएमा । वह धीरे-धीरे साधते बिचारत बिना किसी इर्ष्या और श्राप के कहता जा रहा था । रात के पिछम पहर के बढ़त हुए घने अंधकार म वह अगभय अदृश्य बना कहता ही रहा । रात के भीगरो की मद्धार में उसक बोझने स अर्त्तमानाव का कोई डर नहीं हुआ । परन्तु अन्त में वह उसक बोझ के नीचे दब कर अघानक अचेत पड गया । उसे अब और भी डड विश्वास हो गया था कि यह अज्ञय व्यक्ति बुद्धिहीन हो चुका है । तिलोन न अघन कम्भों स भारी बोझ को उतारते हुए एक लम्बी आह भरी । अपनी नीरम आवाज म भीतो हुई निरर्थक बातों को खोदता हुआ वह कहता हो गया—

'तुम अर्त्तमानाओं न मुझे अमें और विश्वास से भी अचित कर दिया है । निश्चिता इत्यथ न भी तुम्हारी अजह से मेरा विश्वास सा दिया । पहल वह स्वयं परमात्मा पर विश्वास या अंग और फिर बाद म मुझे भी वंसा हो बना लिया । तुम मरमायावार्ता का न कोई परमात्मा है न कोई दीवान । तुम अर में दवी-दबताओं की मूर्तियाँ रखते हो परन्तु यह तुम्हारा अाग है । तागों का आला देने क लिए है । तुम लोमा का क्या विश्वास और क्या अम ? यह समझना कठिन है । अस भोला ही तुम्हारे यही सब-कुछ है । योग म ही तुमन सारी अिम्बगी गुजारी । और अब साक है कि तुम्हारा अर्त्तकाल हो गया है ।'

अही कठिनाइ स अघने अरार का हिनाकर अर्त्तमानोय ने अपनी भारी टांगा को अना पर नीचे रखा । परन्तु उसक अलर्बा की सात को अना का कोई अनुभव नहीं हो रहा था । अज अ्यात्र अर्त्तमानाव का अनुभव हुआ कि उसकी टांगें टूट गई हैं

घोर बहू हवा में सटका हुआ ३ । भयभीत हाकर उसने तिखोन के कन्धों को पकड़ा ।

“कहाँ को बस ? दरवान न पूछा ।

फिर अपने हाथों को हिमात हुए उसने भूँ तरीक स कहा—“खबरदार जा मुझे छुआ । तुममें अब कोई ताकत नहीं रही । तरे बाप में शक्ति थी—परन्तु वह दम्न करत-करते ही खत्म हो गया । मैं कहता हूँ कि तुममें ही मुझे बिस्वासहीन बना दिया—ईश्वर रहित बना दिया । मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे मरूँगा । तुम लोगों की नीचता पगुता और पैठा नियत की चासबाजियों का दस्तले-दस्तल ।

अर्धमात्रा की प्रबल इच्छा कुछ खान की थी, परन्तु टाँगों की दया का दस्तकर वह डर गया था ।

क्या समझ ही मैं मर रहा हूँ ? अपनी ता मेरी पक्षर की भी उन्न नहीं हुई हूँ परमात्मा ! वह फिर सेटन की काशिरा करने लगा । परन्तु उसमें टाँगों का उठान को भी ताकत नहीं रही थी । उसने तिखान स कहा—

“जरा मेरी मदद कर, मेरी टाँगों को ।”

उसने अपने पुराने मानिक की मृत टाँगों को एक बेंच पर रख दिया । घोर फिर उसके समीप ही झुक कर अपनी टापी का झुकाता हुआ उसके बराबर में बैठ गया । उसके हाथों में कोई बीज धमक रही थी । अर्धमात्रा न ध्यान स देखा, यह एक मुई थी जिससे तिखान अंधर में अपनी टापी छीं रहा था । अब उम उसकी मूर्खता पर बिस्वास हो गया । उसके ऊपर एक मोली तिठसी उड़ रही थी । तभी बाहर समीच में तीन पीले प्रकाश क स्थल दिख और दूर स किसी की निश्चिन्ता हुई आवाज भी सुनाई दा— साधिया अब हम पीछे नहा जा सकते ! हमारे लिए कोई जगह नहा ।’

ही कारण है नहीं कर सका। और यही कारण है कि उसने परमात्मा में बिश्वास तो दिया।”

ऐसा प्रतीत हुआ लगा कि निश्चय प्रलय तक ऐसी बातें ही किए जाएंगे। वह धीरे-धीरे सोचते बिचारते बिना किसी तर्पण और क्रोध के कहता जा रहा था। रात के पिछले पहर के अंत हुए घने अंधकार में वह लगभग अहम्य बना कहता ही रहा। रात के भीतरों की भ्रष्टाचार में उसका सोचने से अर्थात्मानाव को कोई डर नहीं हुआ। परन्तु अन्त में वह उसके मोक्ष के नीचे दब कर अंधकार में चले पड़ गया। उस अंध और मोड़ बिश्वास हुआ गया था कि यह अज्ञेय व्यक्ति बुद्धिहीन हो चुका है। तिस्रो न अपने कंधा से भारी बोझ को उतारते हुए एक सन्धी आह मरी। अपनी नीरम आवाज में भीती हुई निरर्थक बातों को उदता हुआ वह कहता ही गया—

‘तुम अर्थात्मानाव ने मुझे अपने और बिश्वास से भी अंध कर दिया है। निकिता इन्धन न भी तुम्हारी बजह से मेरा बिश्वास आ दिया। पहल वह स्वयं परमात्मा पर बिश्वास आ बैग और फिर बाद में मुझे भी बसा ही बना लिया। तुम अरमायादारों का न कोई परमात्मा है न कोई राजान। तुम पर न देवी-इबताओं की मूर्तियाँ रखत हा, परन्तु यह तुम्हारा ढाग है। लोगों का धारा दन के लिए है। तुम लोग का क्या बिश्वास और क्या धर्म? यह समझना कठिन है। इस धोखा ही तुम्हारे यही सब-कुछ है। भाग में ही तुमने सारी जिन्दगी गुजारी। और अब साफ है कि तुम्हारा पर्दाछाया हुआ गया है।

वही कठिनाई से अपने अंधी का हिंसाकर अर्थात्मानाव ने अपनी भारी टांगा का फल पर नीचे रखा। परन्तु उसका उसका को सात का पद का कोई अनुभव नहीं हा रहा था। पूरे पत्र अर्थात्मानाव को अनुभव हुआ कि उसकी टांगें टूट गई हैं

घोर वह हवा में सटका हुआ * । भयभीत हाकर उसने तिरछान
क कन्धों को पकड़ा ।

“कहाँ का भय ? इरमान न पूछा ।

फिर घपन हाथों का हिसात हुए उसने भदे सरोके स
कहा— ‘खबरदार जा मुझे लुभा ! तुममें सब कोई ताकत नहीं
रही । सर बाप में शक्ति थी—परन्तु वह दम्भ करत-करत ही
सत्त्व हा गया । मैं कहता हूँ कि तुमने ही मुझे बिदबासहीन
बना दिया—ईश्वर रहित बना दिया । मेरा सम्झ में महा प्राता
कि मैं कस मरूँगा । तुम सागा की नीचता पगुता घोर पीता
नियत की शालवाजियों का दलत-दसत ।

प्रतीमानोब की प्रबस इच्छा कुछ खान का भी परन्तु
टाँगों की दया का दलकर वह डर गया था ।

“क्या समुच्च ही मैं मर रहा हूँ ? प्रती ता मरी पञ्चतर
की नी उन्न नहीं हुई हूँ परमात्मा ! यह फिर सटन की काधिया
पगन समा । परन्तु उसमें टांगा का उठान का भा ताकत
नहीं रही था । उसने तिरछान स कहा—

‘जरा मरी मदद कर मरी टाँगों को ।’

उसने घपन पुराने मालिक की मृत टाँगों को एक बेंच पर
रस दिया । घोर फिर उसक समीप ही धुक कर घपनी टापी
का मुकाता हुआ उसक बराबर में बठ गया । उसक हाथा में
कोई बीज थमक रहा थी । प्रतीमानोब न ध्यान स दया यह
एक मुर्द थी जिसस तिरछान प्रथर में घपना टापा सों रहा था ।
सब उस उसकी मूखता पर बिदबास हा गया । उसक ऊपर एक
नीसी तिरसी उड़ रही थी । ठनी बाहर बगान में तीन पीस
प्रकाश क स्पन बिध घोर दूर स किसी की निडकती हुई प्राबाज
ना मुनाई दो— माधिया सब हम पीछे महा जा सकत । हमार
लिए कोई जगह नहा ।’

तिखोन ने उस आवाज को अपनी आवाज से हुनो दिया—

घोर तुम्हारे बाप ने मेरे भाई को भी मार दिया था ।”

“भूँठ बोलता है,” प्योत्र अर्तामानोव ने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर उसी क्षण आगे पूछ उठा, “कब ?”

‘तभी !’

“वेबकूफ ! तू क्यों भूँठ बोल रहा है ?” अर्तमानोव ने गुस्से में कहा । उसे भूख सता रही थी, जिसके कारण वह अतिहीन बना हुआ था, ‘अब तू मुझसे क्या चाहता है । क्या तू मेरी आत्मा है जो मरा न्याय कर रहा है ? इस तीस बरस से भी अधिक समय में क्या चुप रहा ?”

“चुप रहा, इसका मतलब है कि मैं सोच रहा था !”

‘अपने गुस्से को इकट्ठा करता रहा ? क्या ? ओह ! तू ! हट यहाँ से जा पुलिस में रिपोर्ट कर दे !’

‘अब कोई पुलिस नहीं है ।’

‘जा, उनसे कह कि सारा जीवन इस व्यक्ति ने मुझे खिलाया-पिलाया—घोर अब इसका न्याय करो ! घोर रिपाट तो तूने पहले ही कर दी होगी । तू मुझसे क्या चाहता है ? अब मुझे दवा, मुझे सता और मुझे पैसा माँग लूँ—।’

‘तुम्हारे पास अब कुछ भी नहीं रहा है । घोर, न्याय करने के लिए मैं तुम पर पूरता हूँ । मैं अपना न्याय स्वयं करूँगा । तुम विद्वान्मयाती शृण्ठ दुष्ट मनुष्य है ! मुझे क्या घमकी दे रहे हो ?’

परन्तु, तिखोन ने अस्पष्ट रूप से अनुभव किया कि वह किसी प्रकार की घमकी नहीं दे रहा था । तिखोन ने फिर भीम में शिकायत की— तुम क्राइम के पुर्कों का अर्थ अर्थ ही है ।

मरे भाई का तुमन क्या मारा ?'

"भाई के बारे में तू झूठ बोल रहा है।"

बोनों कुछ पुरख्य—पुराना मासिक और नौकर जल्दी-जल्दी एक-दूसरे को टोकते हुए बातें करने लगे।

"मैं झूठ बोलता हूँ ? मैं उस रात उसके साथ था।"

"अपने भाई के साथ, जब तेरे बाप ने उसे मारा। मैं भाग गया। तेरे बाप ने उसका खून बहाया। खून का बदला तो खून से ही होना चाहिए ? और नहीं तो उस दिन मरते समय उसे खून पीने की आवश्यकता ही क्या थी ?"

"मैं तू मौका ढूँढ गया।"

"काई बात नहीं, जब तुम सबको जलम कर दिया है तुझे दिया है, बस तू ही अकेला असमर्थ बचा हुआ है। और मैं तेरे बराबर मैं सदा की भाँति तेरे पास खड़ा हूँ।"

"तू सदा की भाँति बरकूफ ही है।"

धर्मानोब ने अनुभव किया कि यह पुराना साई गोदन वाला उसे किसी प्रपकार पूर्ण कोन में धकेल रहा है जहाँ कुछ भी समझ में नहीं आता और जा भयकर है। उसने फिर बाहराया—

'तू मौका ढूँढ गया। अपने भाई के बारे में सब झूठ कह रहा है, तेरा भाई ने कभी या न कभी हुआ। तू जैसा कभी कुछ नहीं होता।'

"मायमा तो होती है ?"

"तूने मरे बेटे इत्या का बंधका दिया और उस उल्ट रास्त पर हास दिया।"

“मैंने ? तुम अर्तमानोवों ने ही मेरी बुद्धि का नष्ट कर दिया । निकिता इत्यध मे मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी ।”

‘वह तो कहता था कि तू उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी !

‘कितनी बार मैंने चाहा कि तुम्हारे पिता को मार दूँ । मैंने कई बार फावड़ा उसके सिर की ओर उठाया भी मगर तुम तुम वड़े चासाक सोग हो ।’

‘तू कम है क्या ?’

‘तुम्हें सेराफिम जसा घावमी चाहिए था । उसने भी मुझे बहुत मटकाया और गलत रास्त पर बासा । सच है कि वह किसी का नाराज नहीं करता था, परन्तु, उसका जीवन दूषित था । यह क्या बात है ? जिधर देखो उधर ही चासबाजी और घोषबाजी ।

‘यह कौन जा रहा है ? कि पर ? कोई अघेर म जोर से थिल्लाया । ‘तुम हरामजावों का कहा है कि घाठ बज क बाद कोई न हिस ?’

तिखोन उठा और दरवाजे की ओर अन्धेरे में गया । अर्तमानाव कोप, बिस्मय, भूख और थकान से कुछ हुआ पड़ा था । उस प्रकाश के तीव्र मन्व स्पसां के नीचे वगीथ म एक लम्बी कामी मूर्ति दिखाई दी । उसने किसी बिमाशकारी भयकर बात की घाता करत हुए अघमी अर्से बन्द कर ली ।

‘कुछ मिसा ? तिखान मे पूछा ।

‘सा यही सब है ।

यह उसकी पत्नी का आवाज थी । वह कहीं गई थी क्यों गई थी, मुझे अरुसा इस मूग बुद्धे क साथ क्या छाड़ गई थी ? अर्तमानाव न अघनी अर्से खासी और कोहनी के अल

सिर हिसा कर दरवाज की घोर दखा, जो वा काली मूर्तिया स
 छिपा हुआ था। प्रबानक उस याद प्राया कि सारी जिन्दगी भर
 वह इसी बार म साबता रहा है कि कौन प्रपराधी है, किसक
 कारण उसका जीवन इतना गड़बड़, निराश घोर प्रतारणापूर्ण
 रहा है। घोर, प्रम उम साफ-साफ दिखन लगा।

उसकी पत्नी पास आई घोर भुक्कर घीम स बाती—
 “परमारमा तेरी बड़ी हुना है !

तिलान, बस यही घोरत सब बातों के लिए प्रपराधी
 है। प्रतमानाव ने बड़ी दृढ़ता के साथ एक हथकी साँस भरत
 हुए कहा— यह सासभी था घोर इमने मुझे एसा बना दिया।
 यही बात है। हाँ हाँ।” घोर फिर बह विजयास्मास क साथ
 बोला—“इसी क कारण मरा भाई निकिता भ्रष्ट हा गया था। तू
 मह भसी नीति जानता भी है।”

प्रतमानाव बड़ी कठिनाई स साँस म रहा था। उस दस्त
 हुए प्रपन्ना हो रहा था कि उसकी पत्नी किसी नी तरह नाराज
 नहीं हुई न वह डरी घोर न रोई। वह उमक सिर क बालां
 का प्रपयपाती हुई बिन्ता घोर प्रम स बानी— पुप रहा क्या
 घर करत हो। यहाँ, सब हमार तिनाक है, नाराज है।”

“तान का व कुछ।

उसकी पत्नी न सार का प्राधार घोर राटी का एक बड़ा
 डुकड़ा उसके प्राप म पमा दिया। छोरा गरम या घोर राटी
 मई की तरह उसक हाथों स चिपक गई। प्रतमानाव बड़े
 बिस्मय घोर पिपाद स पिस्लाया— यह क्या है ? यह मर
 लिए ? बस ?

‘मैंने ? तुम घर्तमानोर्वों ने ही मेरी बुद्धि को नष्ट कर दिया । निश्चिन्ता इत्येष न मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी ।’

‘वह तो कहता था कि तू न उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी !’

‘कितनी बार मैंने आहा कि तुम्हारे पिता को मार दूँ । मैंने कई बार फायड़ा उसके सिर को घोर उठाया भी मगर तुम तुम बड़े जानाक लोग हो ।

‘तू कम है क्या ?’

‘तुम्हें सराफिम जैसा आदमी चाहिए था । उसने भी मुझे बहुत भटकाया और मनुष्य रास्ते पर बाला । सब है कि वह किसी को माराज नहीं करता था, परन्तु, उसका जीवन दूषित था । यह क्या बात है ? जिधर देखो उधर ही चासबाजी और घोखवाजी ।

‘यह कौन जा रहा है ? कि भर ?’ कोई आघेरे में जोर से चिल्लाया । ‘तुम हरामजावों का कहा है कि बाठ बज क बाब कोई न हिन ?’

तिखोन उठा और दरबाज की घोर आघेरे में गया । घर्तमानाव श्लेष, बिस्मय नूख और पकान से कुम हुआ पड़ा था । उस प्रकार क तीन मन्व स्पर्तों के बीच बगीच में एक सम्बी कासी मूर्ति दिखाई दी । उसने किसी विनायकारो भयकर बात की आगा करत हुए अपनी आँखें बन्द कर ली ।

‘कुछ मिसा ?’ तिखान न पूछा ।

‘सो यही सब है ।

यह उसकी परनी की आवाज थी । वह कहीं गई थी क्यों गई थी मुझे भक्तना इस मूल बुद्धे क साथ क्या छाड़ गई थी ? घर्तमानाव न अपनी आँखें छोसी घोर कोहनी के यल

सिर हिला कर दरवाज की घोर दला, जो दो काली मूर्तियाँ स
 दिया हुआ था। प्रथमक उस याद आया कि सारी जिवन्गी भर
 वह इसी बार में साबता रहा है कि कौन प्रपराधी है, किसक
 कारण उसका जीवन इतना गड़बड़, निरास और प्रतारणापूर्ण
 रहा है। घोर, अब उस साफ-साफ दिखन लगा।

उसकी पत्नी पास आई और मुकुर पीम स बासी—
 "परमात्मा तेरी बड़ी कृपा है !"

'तिलान, अब यही घोरत सब बातों के लिए प्रपराधी
 है। प्रथमानोव ने बड़ी हड़ता के साथ एक हमकी सौंस मरते
 हुए कहा— यह मानधी पी घोर इसन मुझे एसा बना दिया।
 यही बात है। हाँ हाँ।' घोर फिर वह विजयास्तास के साथ
 बोला— इसी के कारण मरा भाई निकिता भ्रष्ट हा गया था। तु
 यह मसी भाँति जानता भी है।'

प्रथमानाब बड़ी कठिनाई स सौंस ल रहा था। उस दखते
 हुए प्रथमना हो रहा था कि उसकी पत्नी किसी भी तरह नापज
 नहीं हुई न वह डरी घोर न रोई। वह उसके सिर क बानों
 का पपमपाती हुई बिन्ता घोर प्रेम से बोली— "बुप रहा, क्या
 पार करत हो। यहाँ, सब हमार खिलाऊ है, नापज है।'
 "घान को दे दुस्र।"

उसकी पत्नी न खोरे का प्राधार घोर राटी का एक बड़ा
 डुकुबा उसके हाथ में पमा दिया। खोरा गरम था और राटी
 सई की तरह उसक हाथों स पिपक गई। प्रथमानाब बड़े
 बिस्मय घोर विपाद स पिस्साया— यह क्या है? यह मरे
 लिए? अब?

“शुप रहो ! परमात्मा के नाम पर शुप ही रहो ।” नता स्या ने बीरे से कहा मेरे पास घोर कुछ भी नहीं ! देखते नहीं यहाँ फ़ौजी सिपाही ।”

“तू मुझे यही दे रही है । मेरे सघ कुछ किए का यही बदला है ? जिन्दगी मं मैने जो मुसीबतें उठाईं, जो चिन्ताओं घोर भयों को सहा उनका यही फल है ?” अपने हाथ में रोटी को घामे बह बुदबुदाता घोर सोचता रहा । उसे पता लगा कि कोई असह्य, अपमानजनक घोर मृत्युपूर्ण बात होने वाली है । घोर, इस सब के लिए नतास्या अपराधी नहीं !

“मुझे यह नहीं चाहिए ।” कह कर उसने रोटी के टुकड़े को द्वार की घोर फेंक दिया उसका स्वर धीमा तो था, परन्तु उसमें दृढ़ता थी ।

सिखोन ने रोटी को उठा लिया घोर उसे उलट-पुलट कर साफ किया । नतास्या ने अपने हाथ में रोटी लेकर फुसफुसा कर कहा—“घासो, पालो, मारज न हो ।”

उसके हाथ को असह्य हटाते हुए अर्तमानोव ने जोर से घायें भींच ली घोर मुस्के से बात भींच कर बासा—‘मुझे नहीं चाहिए । मेरे पास स हट जाया ।’

